# योगेश्वरी

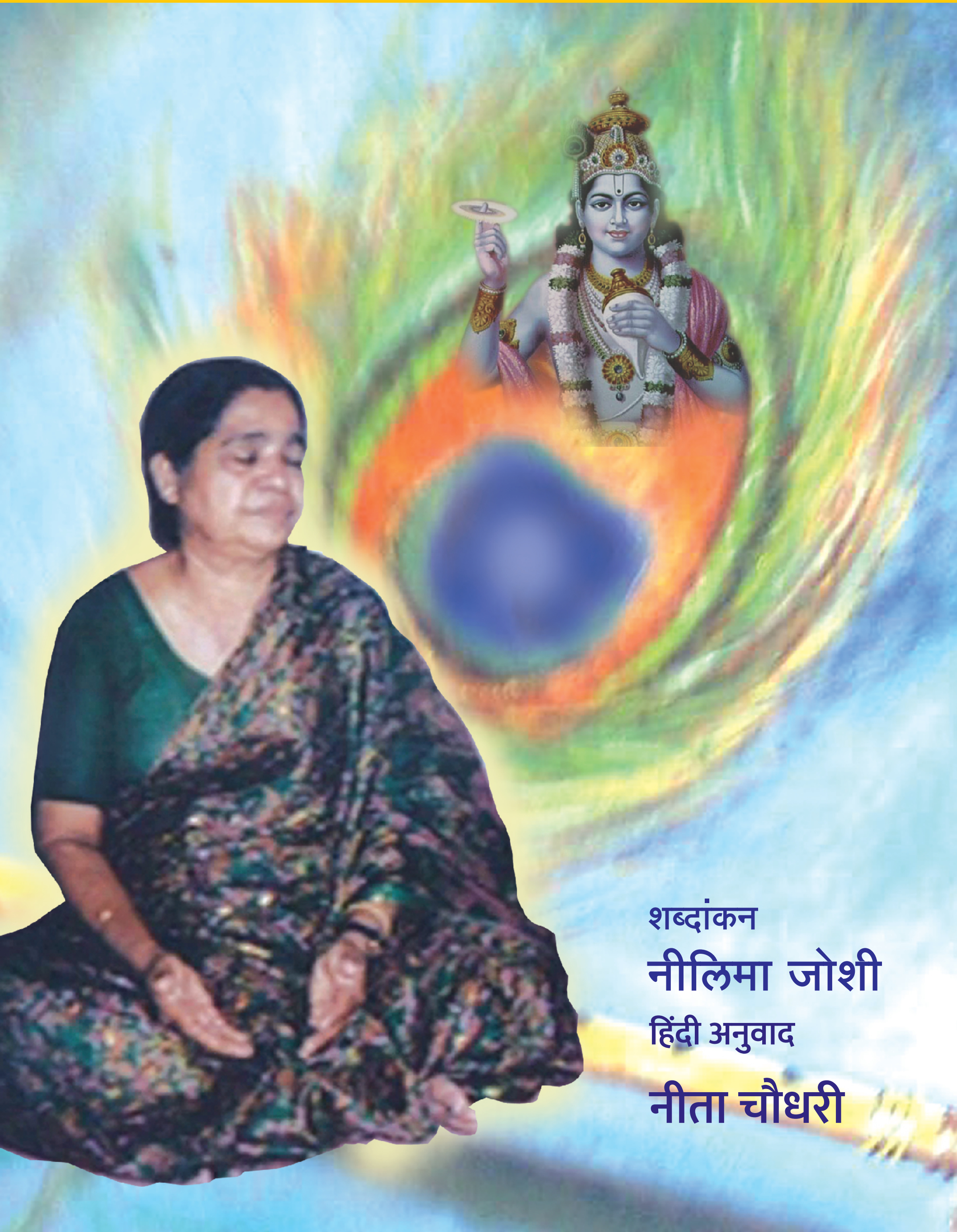

शब्दांकन

**नीलिमा जोशी**

हिंदी अनुवाद

**नीता चौधरी**

मी काळाप्रमाणे बदलतो.

आजच्या काळात प्रेमाची, आपुलकीची, भक्तिची, श्रद्धेची व कर्तव्याची फारच गरज आहे.

कर्तव्यामध्ये मला पहा, प्रेमाने मला जिंका, श्रद्धेने मला आपलासा करून घ्या, विश्वासाने माझ्याजवळ या.

या तत्त्वांचा उपयोग केला तर ओंकाराची जागृती व्हायला फारच मदत होणार आहे.

माझा मदतीचा हात आपल्याला लाभावा असे वाटत असेल तर कर्तव्याला विसरू नका आणि कर्तव्य करीत असताना प्रेमाने करा. म्हणजे माझा कृपाशिर्वाद सतत आपणास मिळत राहील.

या, वरील सर्व गोष्टींतच मी आहे. याची पूर्ण जाणीव ठेवा, म्हणजेच तुम्हाला तुमच्यातील ओंकाराची जाणीव होईल.

* इस संदेश का हिंदी अनुवाद पृष्ठ क्रमांक २१८ पर है।

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

।। ॐ महान शक्ति देवताय नमः ।।

# योगेश्वरी

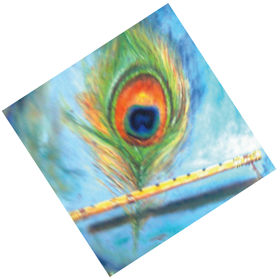

संकलन और शब्दांकन

श्रीमती नीलिमा जयंत जोशी

हिंदी अनुवाद

श्रीमती नीता सतीश चौधरी

योगेश्वरी

संकलन एवं शब्दांकन

**श्रीमती नीलिमा जोशी**

१०, कस्तुरकुंज हाउसिंग सोसायटी, ब्लॉक नं. सी २०४,
आय सी एस कॉलनी, अपोझिट युनिव्हर्सिटी रोड,
आनंदमयी माँ आश्रम के पीछे, कॉसमॉस बँक हेड क्वार्टर के पास,
भोसले नगर, पूना ४११००७
मोबाईल नं ९९२१८२८४१८/ ९९२३०११८९४

हिंदी अनुवाद :

**श्रीमती नीता चौधरी,**

मुलूंड (प), मुंबई ४०००८०.
मोबाईल नं. +९१ ९७६९५८७२१९
ई-मेल : neeta.chaudhari75@gmail.com

संपादन:

**श्रीमती नीलिमा शिकारखाने**

पूना, फोन नं. +९१ ९८९०५०८०९१/+९१ ९२८४४९११६८

प्रथम आवृत्ती (मराठी) : १० फरवरी २०१९ (प. पू. ताई की पुण्यतिथी)

**हिंदी अनुवाद :** डिजीटल प्रकाशन - www.shrikrishnaleela.com

**दिनांक : ७ अक्टूबर २०२१** (घटस्थापना, प्रथम श्री विश्वजननी स्थापना वर्धापन दिन, एलए, युएसए)

निजी वितरण के लिए मुद्रित एवं प्रकाशित

मुद्रक : नवरंग ट्रेडर्स, पूना

**प्रकाशक © : श्रीमती नीलिमा जयंत जोशी**

**मुखपृष्ठ: श्रीमती सुप्रिया जोगदेव**

**सुचना : श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की सूची एवं कृष्ण केंद्र/प.पू. ताई संबंधित अन्य लेखन, फोटो, ऑडियों, व्हिडियों के लिए कृपया** www.shrikrishnaleela.com **वेबसाईट देखें।**

# अर्पण पत्रिका

जन्म : २९ मई १९३४

निर्वाण : १० फरवरी २००३

जन्म जन्म से मेरा हाथ पकड कर
मुझे जीवन विद्या देने वाली मेरी सद्गुरु
प.पू.लीला ताई कर्वे के चरणों में
यह भावसेवा अत्यंत कृतज्ञतापूर्वक
समर्पित करती हूँ।

|| गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः ||

# आशीर्वचन

**।। श्रीगुरू: शरणम् ।।**

“मुकुंदा,  तुम्हारी बाँसुरी के मधुर सुर सारे विश्व में चैतन्य प्रदान करें।”

● प. पू. ताईमहाराज कर्वे, बदलापूर इनका चरित्र अत्यंत भक्तिभाव एवं परम् श्रद्धाभाव के साथ श्रीमती नीलिमा जोशी, पूना ने लिखा है। क्लिष्ट शब्दों का उपयोग न करते हुए, सहज, सरल भाषा, रम्य शैली में उन्होंने उसे साकार किया है। सभी सर्वसामान्य पाठकों को यह जरूर पसंद आएगा।

● श्री ताई महाराज कृष्णमय हो गई थी। वे उनके लाडले कन्हैया को घर घर ले गई। देश-विदेश की गोप गोपीयाँ बालमुकुंद के गोकुल में अनायास शामिल हो गए। एक बहुत बड़ा विश्व कुटुंब योगेश्वर श्रीकृष्ण ने निर्माण किया !

इस चरित्र निर्माण के कार्य में श्रीमती नीलिमा जोशी को जिन भक्तों की ओर से सहायता प्राप्त हुई उन सभी के ऊपर देवकीनंदन की अखंड कृपा दृष्टि रहे। हे परम् कृपालु यदुश्रेष्ठा! आपके पावन चरणों में प्रार्थना करता हूँ,

“मुकुंदा, तुम्हारी बाँसुरी के सुर (अथांगता, निरपेक्षता, प्रेम, सहृदयता, प्रसन्नता, मंगलमयता, परिपूर्ण आनंद अवस्था, चातुर्यता, उद्योगप्रियता आदि दैवी गुण)

सारे विश्व में चैतन्य प्रदान करें।”

शेष शुभ, श्रीकृपा

**विनीत**

**आनंदस्वामी**

२२/१४ डी, झावबावाडी,
ठाकुरद्वार, मुंबई ४००००२
मो. ९६१९७६१९५९

## ।। श्रीगुरू: शरणम् ।।

## लीला कृष्णकी

जिनके चरण कमलों से उगम स्थान प्राप्त हुई भागवत गंगा हजारों वर्षों से भारत में हजारों भक्तों को पावन करती आ रही है, प्राचीन काल से एक ओर नारद, प्रह्लाद, उद्धव जैसे तीर्थ उसके पावन तीर पर अपनी उपस्थिति दर्शा रहे है; तो दूसरी ओर ज्ञानदेव जैसे संतो ने जिसका पवित्र तीर समृद्ध किया है। वह भक्ति की गंगा आज भी पूरे जोर-शोर से उफनते हुए पूरे उन्माद से आगे की ओर अग्रेसर हो रही है। यह हमें ब्रम्हलीन/कृष्णभक्त लीला कर्वे इनके स्मृति चरित्र को देखने पर ध्यान में आता है। श्रीमती नीलिमा जोशी को जो अनुभव करने मिला, उन्हें जो साहचर्य मिला उसका वस्तुनिष्ठ चित्रण दर्शाने वाला यह चरित्र है। इस चरित्र की निर्मिती हमें गुरुचरित्र के समान ही आनंद, प्रसन्नता एवं पावनता देने वाली हुई है।

**आत्मचरित्रात्मक चरित्र-**

वैसे देखा जाए तो इसमें लेखिका का 'मैं' कही भी नहीं है, उन्होंने अत्यंत तटस्थता के साथ चरित्र नायिका के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उसमें लीला ताई के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक के सभी भावचित्र व क्षणचित्र को दर्शाया गया है। भक्ति भी एक  प्रकार का विज्ञान ही है यदि यह जानने की किसी को जिज्ञासा है तो उसने इस स्मृति चित्र का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। चरित्र इस वाङमय प्रकार में सत्यता श्रेष्ठ मूल्य होता है। इसमें वस्तुनिष्ठता अपेक्षित रहती है। श्रीमती नीलिमा जी के द्वारा कही भी किसी प्रकार का काल्पनिक प्रस्तुतिकरण किया गया नहीं है। भावनात्मक सौंदर्यीकरण और सत्यप्रतिपादन एक दूसरे का हाथ थामे हुए है इसलिए एक तरह से देखा जाए तो यह आत्मचरित्र ही है। चरित्र नायिका लीला ताई इनके मुख से एवं इनके आप्तजनों के मुख से ही इसका प्रकटीकरण हुआ है। कहीं किसी प्रकार का अभिनिवेश या आत्मप्रदर्शन नहीं है, न ही किसी प्रकार का कोई गिला-शिकवा या वंदना है!

सगुण भक्ति का सुंदर दर्शन!

यह एक ऐसे अनन्य भक्त की कहानी है जिसके मन में ईश्वर की लालसा, मिलन की उत्सुकता, आशा-निराशा की गर्तता, सच-झूठ इस प्रकार के अनेक भ्रम जिनके जीवन में कभी आए ही नहीं!

यह चित्रपट है ऐसी बालिका का जो बचपन में ही सलोकता, समीपता आदि

सीढ़ियों को छोड़ कर सीधे सायुज्य स्थिति की पदवी को पहुँची और उसका रूपांतरण ताई नामक साध्वी के रूप में चरण दर चरण कैसे होता गया यह लेखा-जोखा है। जहाँ संदेह और अश्रद्धा (अविश्वास) का कहीं कोई स्थान ही नहीं, लेकिन व्यवहार को छोड़कर तर्क को छेदकर जहाँ कभी कुछ घटित हुआ ही नहीं, ऐसा लीला ताई का समग्र वर्तन एवं यह सब कार्य करते हुए उन्हें और उनके परिवारजनों को जो वस्तुनिष्ठ अनुभव आए हैं उसका समावेश इसमें संग्रहित किया गया है। मराठी भाषा में प्रथम ही कहलाया जाएगा कि तर्कवादी या निर्गुणता का अधिकार न रखने वाले जिज्ञासुओं की आँखें खुल सके इतना स्पष्ट भक्तिसाधना का मार्ग वास्तविक रूप में कथन किया गया है। इसमें चरित्र नायिका ने जो स्वयं देखा, अनुभव किया एवं उनके सहवास में आए हुए व्यक्तियों को जो अनुभव दिया उसका (आत्म) कथन है लेकिन कहीं भी किसी प्रकार की फिजूलता या स्वयं के प्रति बड़प्पन दर्शाया नहीं गया है।

अनेक सुशिक्षित जन ‘उस‘ अलौकिक शक्ति पर विश्वास करते हैं; लेकिन उनकी साथ वही छोड़कर वह व्यवहारिक बन जाते हैं। संतो के अनुभवों की ओर देखने की उनकी दृष्टि भी विकृत बनती है। संतो के अनुभव उन्हें मन का खेल या Mental projection लगते है। रोजमर्रा के जीवन में आने वाले ईश्वरीय अनुभव का वे अस्वीकार करते हैं। प्रस्तुत पुस्तिका में इन सभी संदेह के जंजालो से परे शुद्ध भक्ति व परमार्थ की राह जो ‘ताईने‘ दी है उसका दर्शन इसमें भली-भाँति होता है।

एक बार पढ़ना शुरू करने पर जब तक वह समाप्त नहीं हो जाता तब तक उसे नीचे रखना असंभव होता है। पाठकों के मन की ऐसी पकड़ और निवेदन इसमें है। आत्मज्ञान एवं प्रसन्नता का जगह जगह दर्शन होता है।

श्रीमती नीलिमा जोशी ने लेखन कार्य करते समय स्वयं का अस्तित्व एक ओर रखते हुए, किसी भी प्रकार का कोई भोला भक्तिभाव न लाते हुए अत्यंत निश्चलता एवं तटस्थता के साथ मराठी सारस्वत वाङ्मय साहित्य में एक मूल्यवान सेवा का योगदान दिया है।

**डॉ. प्रभाकर नारायण दीक्षित**

‘आशीर्वाद‘ बंगला

लक्ष्मी नगर, डेक्कन चौक के पास,

ता. फलटण, जि. सातारा ४१५५२३

# अनुवादक की कलम से

सभी श्री कृष्णभक्तों को सविनय सादर प्रणाम,

आज “योगेश्वरी“ पुस्तक का हिंदी अनुवाद आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

योगेश्वरी पुस्तक का हिंदी अनुवाद करने का विचार आने के पीछे की पार्श्वभूमी कुछ ऐसी है कि मेरी परम् पूज्य ताई से मुलाकात ११ जुलाई २००१ को हुई। ३० मिनिट के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में जैसे जीवन के अनेक अनसुलझे सवाल सुलझ गए लेकिन हमारी केंद्र जाने की साधना अभी शुरु नहीं हुई थी इसलिए हम दूसरे के यहाँ केंद्र में जाने लगे। धीरे धीरे श्रीकृष्णलीला परिवार से हमारा परिचय बढ़ने लगा। मेरे मानस पटल में हमेशा एक जिज्ञासा बनी रहती की अपना घर संसार संभालते हुए, नौकरी करते हुए कृष्ण कार्य अविरत करना, सदैव भक्तों को मार्गदर्शन देने के लिए तत्पर रहना, कृष्ण के आदेश पर देश परदेश में केंद्र स्थापना करने के लिए यात्राएँ करना, यह सब कैसे संभव हुआ होगा? ताई का व्यक्तिगत जीवन कैसा रहा होगा? कृष्ण ने उनसे साधना कैसे करवाँ ली होगी? यह सब जान लेने के लिए मैं अनेकों अपरिचित भक्तों से भी बात करती थी ताकि मैं ताई के बारे में जान सकूँ, लेकिन मेरी जिज्ञासा शांत नहीं हो रही थी। मुझे कृष्ण के संदेश जान लेने थे, उन्हें समझना था, उन्हें आचरण में लाने का प्रयत्न करना था लेकिन मुझे जैसा चाहिए वैसा समाधान प्राप्त नहीं हो रहा था।

वर्ष २०१९ में योगेश्वरी पुस्तक श्रीमती नीलिमा जोशी द्वारा लिखी गई मैं इसे पुस्तक कहूँ या मेरी जिज्ञासा शांत करने वाला कृष्ण, ताई द्वारा भेजा गया स्रोत कहूँ? मेरे मन में उठने वाले अनेकों प्रश्नों के उत्तर मुझे इस पुस्तक में मिल गये। हम कृष्ण से हमेशा अपने मन की बातें कहते हैं लेकिन कृष्ण हमें क्या बताना चाहते हैं वह पूज्य ताई के माध्यम से इस पुस्तक में पढ़ने मिला। पुस्तक कई बार पढ़ा लेकिन हर समय एक नये पहलू का दर्शन हुआ। आत्मानंद की प्राप्ति हुई। इस माध्यम से मैं परम् पूज्य ताई को मेरी अल्पमति से थोड़ा बहुत जान सकी, समझ सकी।

कुछ समय बीत जाने पर मेरे मन में विचार आया कि मुझे बताने के लिए कई साधक मिले लेकिन आगे आने वाली युवापीढ़ी के मन में भी अनेक प्रश्नों के भँवर

उठते रहेंगे, जो जिज्ञासा मुझे रही वह उन्हें भी रहेगी। परम् पूज्य ताई का कार्य सिर्फ महाराष्ट्र में ही नहीं अपितु पूरे भारत और देश परदेश में फैला हुआ है। अनेक हिंदी भाषिक भक्तों के मन में भी उन्हें जानने पहचानने की जिज्ञासा होती होगी। इस बात को मध्य नजर रखते हुए इस पुस्तक का हिंदी में अनुवाद करने के बारे में मैंने सोचा।

इस पुस्तक की लेखिका श्रीमती नीलिमा जोशी जी का मैं तहे दिल से शुक्रिया अदा करूँगी कि उन्होंने मुझे इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद करने की अनुमति प्रदान की और समय-समय पर मार्गदर्शन भी किया। प्रूफ रीडिंग के कार्य में श्रीमती डॉ. अविता कुलकर्णी जी को मैं धन्यवाद प्रदान करूँगी जिन्होंने इस पुस्तक का प्रूफ रीडिंग अपने व्यस्त दिनक्रम में अल्प समय में करके दिया। श्रीमती अनुराधा गुप्तेजी की समय-समय पर प्रोत्साहन तथा मदद मिलती रही। बुक फार्मेटिंग एवं वेब पब्लिशिंग की पूरी जिम्मेदारी श्रीमती संध्या पालखे जी ने उठाकर अपना अनमोल सहयोग प्रदान किया, उनका तहेदिल से शुक्रिया अदा करना चाहूँगी।

इस पुस्तक का अनुवाद करते समय श्री प्रकाश गाडगील काका का समय-समय पर प्रोत्साहन मिलता रहा। उनका धन्यवाद अदा न करते हुए मैं उनके ऋण में रहना पसंद करुँगी।

कृष्ण-गुरु माँ, आपकी सेवा में किया गया यह एक छोटा सा प्रयत्न, जो आपने पूरा करवाँ लिया है, कृपया इसका स्वीकार कीजिए। इस पुस्तक के माध्यम से आपने हमें जो सीख प्रदान की है वह आचरण में लाकर हम अपना जीवन आगे की दिशा में अग्रेसर कर सकें। हमेशा आपके कृपा छत्र में रहे ऐसा आशीर्वाद हम सभी को दें ऐसी आपसे प्रार्थना करती हूँ।

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

।। ॐ महान शक्ती देवताय नमः ।।

**श्रीमती नीता चौधरी**

# मनोगत

यदि किसी ने मुझे पूछा ‘तुम्हारे जीवन का सुवर्ण अवसर कौन सा?‘ तो मैं अपने हृदय के अंतः करण से बताना चाहूँगी कि वर्ष १९८५ में जब मैं सर्वप्रथम बदलापूर कृष्ण कुटीर में अपनी गुरु माँ और कृष्ण से मिली। वही मेरे जीवन का सुवर्ण अवसर! वैसे देखा जाए तो मैं ईश्वर के प्रति भोला भाला भक्तिभाव रखने वाली बिल्कुल नहीं हूँ। मेरे पीहर के संस्कार तो यह बताने वाले थे कि इंसान में ईश्वर देखना और समाज हित के कार्य करते हुए उसे ही पूजा समझना लेकिन उस दिन जब मैं बदलापूर के उस मनमोहन के सामने खड़ी हुई तब मेरे हृदय में भावनाओं का बांध कुछ ऐसा उमड़ आया कि वह आँखों से लगातार अश्रुओं के रूप में बाहर आने लगा। भावनाओं का बांध टूटने लगा। मुझे अपने आप से ही शर्म महसूस होने लगी यह क्या हो रहा है अचानक? कोई कारण न होते हुए ऐसा दिखावा क्यों करना? लेकिन उन अश्रु धाराओं का रोकना असंभव प्रतीत हो रहा था। ताई ने अत्यंत स्नेहभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा और कहा, ‘अरे बैठो, पानी दूँ क्या? तुम्हें प्रसाद देती हूँ।‘ ऐसा बोलकर वे अंदर गई।

मैं अपनी आँखें पोछतें हुए ‘उस‘ कृष्ण को जैसे अपने हृदय की गहराई में उतार रही थी, कृष्ण मतलब ‘आकर्षण’ यह कैसा होता है। इस बात का एहसास उस समय उसने मुझे करवाँ दिया। आगे मुझे एक जानकार साधक ने बताया ‘अरे आपको आपके पुण्य स्थान की प्राप्ति हो गयी है इसलिए भावनाओं का बांध टूट कर आँखों के द्वारा अविरत बह रहा था। एक ही बात बताता हूँ अब जीवन भर ‘उन‘ चरणों को मत छोड़िए। यही आपका सद्गुरु स्थान है।’ जैसे उनके मुख से कृष्ण ही बोल रहा था। आज भी मैं उन क्षणों को याद करके अभिभूत हो रही हूँ।

सर्वप्रथम तो मैं वहाँ इस उत्सुकता के साथ गई थी कि कृष्ण बोलता है मतलब क्या और कैसे? जब मैं वहाँ सबसे पहले गई तब कृष्ण कुटीर का वह कृष्ण, वात्सल्य मूर्ति स्वरूप ताई, वहाँ का सात्विक, स्नेह पूर्ण वातावरण इन सभी के प्रेम पाश में बंध गई। फिर आगे अलग-अलग कारणों से वहाँ जाना होता ही रहा। कभी प्रश्न पूछने, कभी ऐसे ही, तो कभी सखा संबंधियों को कृष्ण की पहचान करवाँ देने के लिए। ऐसे करते करते बारह साल बीत गए। १९९७ में कृष्ण ने भारत में सामुदायिक आराधना करने के लिए श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना करना शुरू किया। इन कारणों की वजह से ताई का कई बार पूना आना भी हुआ। तब से

लेकर आज तक मैं श्रीकृष्ण के अनाकलनीय मोहपाश के बंध का अलौकिक अनुभव ले रही हूँ।

मुझे पता ही नहीं चला कि ताई ने मेरा हाथ कब थाम लिया और भक्ति मार्ग के पथ पर कैसे चला जाता है यह मुझे सीखा दिया। ताई ने कभी भी सामने बैठकर प्रवचन या ऐसे व्यवहार करना चाहिए, वैसे करना चाहिए ऐसा आग्रह कभी नहीं किया। कभी किसी बात पर रोष प्रकट नहीं किया। माँ अपने बच्चे को अत्यंत स्नेह से छोटे छोटे निवाले जिसे वह खा भी सके और उसे पचा भी सके, इधर-उधर की मन बहलाने वाली बातें बताकर खिलाती है वैसे ही ताई ने भक्ति रुपी प्रांगण में श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, कृष्ण प्रेम, गुरु प्रेम, गुरु सेवा, गुरु कार्य, सच्चा धर्म, सच्ची पूजा इन सभी बातों का अर्थ समय-समय पर अनेक अवसरों पर हमें खोल कर दिखाया। यदि हम अपने जीवन को स्वर्णिम बनाना चाहते हैं तो हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए, सच्चे परमार्थ की शुरुवात अपने घर परिवार से करनी चाहिए। यह सिर्फ दिखाया ही नहीं तो प्रत्यक्ष आचरण में लाकर हमें वह समझा भी दिया। सच्ची शांति, सच्चा समाधान सभी लोग प्राप्त कर सकते हैं वह प्राप्त करने के लिए क्या करना आवश्यक है, यह हमें वे लगातार अनेक उदाहरणों से, अनुभवों के द्वारा बताती थी। उस अनुरोध से आगे उनके कार्य का स्वरुप भी बदलता गया।

ताई के जीवनपट का प्रथम चरण देखने पर हमें साधारण बचपन, शिक्षा, नौकरी ऐसा सब दिखाई देता है। द्वितीय चरण में विवाह, घर-संसार, नौकरी और उसके साथ साथ गीता का प्रचार-प्रसार व भक्तों को व्यावहारिक व पारमार्थिक मार्गदर्शन करना दिखा। सेवानिवृत्ति के बाद उनके जीवन के तृतीय चरण में लगातार ध्यान धारणा, भ्रमण करते हुए किया गया कृष्ण कार्य, सामुदायिक आराधना के लिए श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की योजना और शक्ति की आराधना के लिए विश्वजननी की स्थापना करना, और यह सब करते करते महानिर्वाण मार्ग पर अग्रेसर होना।

इस पूरे कालखंड में कृष्ण के द्वारा समय-समय पर करवाँ ली गई उपासना, साधना, ध्यान करना और वह सब करते समय कृष्ण को दिए गए वचन और उन वचनों का पालन अत्यंत निष्ठा, समर्पण भाव से, कष्टों की, प्राणों की परवाह न करते हुए करना। यह सब याद करने पर शीश अत्यंत आदर भाव से उनके सामने नतमस्तक हो जाता है।

उनके महानिर्वाण लेने के पश्चात मन में यह विचार बार-बार आने लगा कि उन्होंने बताए हुए अनुभव, उनके साथ बिताये हुए अनेक यादगार पल बार बार याद करने

पर ऐसा लगा इन सब के द्वारा वह हमें कुछ देना चाहती है? सीखा रही हैं क्या? क्या हम उनकी अपेक्षा के हिसाब से वह सब समझ सके हैं? अपने रोजमर्रा की जिंदगी में व्यवहार करते समय उसका परिणाम हो रहा है क्या? यदि सच्ची गुरु सेवा हमारी ओर से होनी चाहिए ऐसा हमें लगता है तो हमें अपने दृष्टिकोण में, स्वभाव में, व्यवहार में, नातेसंबंध में व्यवहार करते समय जिस आमूलाग्र बदलाव की अपेक्षा हमारे गुरु हमसे अपेक्षित करते हैं वह बदलाव करने का हम कम से कम प्रयत्न तो भी कर रहे हैं या नहीं? ऐसे अनेक विचार चक्र मन में घूमते हैं और मन अंतर्मुख होने लगता है। एक एहसास अत्यंत प्रकर्षता के साथ हुआ इन अविस्मरणीय अनुभवो, अनुभूतियों के रूप में जो अनमोल खजाना कृष्ण ने अपने भक्तों को दिया है उसका एकत्रीकरण, संकलन किया जाना चाहिए और उस खजाने को ताई की यंग जनरेशन को सुपर्द करना चाहिए। यह भी एक प्रकार से गुरु सेवा ही होगी।

ऐसा विचार करके २९ मई २०१६ के दिन कृष्ण को प्रार्थना की, ‘तुम कहते हो कार्य कभी किसी एक का हो नहीं सकता। जब तक उसे दस हाथ नहीं लग जाते तब तक वह आकार नहीं लेता है। वैसे ही तुम अनेक कृष्ण भक्तों को प्रेरणा देकर इस संकलन के कार्य को हमारी ओर से करवाँ लो। हम सभी को गुरु सेवा करने का मौका दो।‘ अनेक कृष्ण भक्तों के उत्स्फुर्त सहयोग से आज यह संकलन पुस्तक स्वरूप में आप सभी के सामने आया है। यह सब करते समय इस बात का अनुभव प्रकर्षता से आया कि गुरु तत्व एक ही होता है और कोई भी कार्य सिर्फ उनकी प्रेरणा से ही होता है।

संकलन के कार्य का श्रीगणेश किया और मुंबई से प. पू .आनंद स्वामी जी का फोन आया (आनंद स्वामी जी अर्थात् प. पू. श्री वासुदेवानंद सरस्वती (टेंबे) स्वामी महाराज, माणगांव और स्वामी समर्थ अक्कलकोट के कृपांकित अंतरंग शिष्य) “आप ताई महाराज, बदलापूर, इनकी स्मृतियों का संकलन कर रही है। इस कार्य के हेतु अनेक भक्तों की मुलाकातें लेने वाली हो। मुझे महाराज (टेंबेस्वामी) का आदेश आया है कि मुलाकात लेने के लिए उन्हें एक प्रश्नावली तैयार करके दो।” इस प्रकार बाद में उनकी ओर से मुझे आशीर्वाद एवं प्रश्नावली से संबंधित पत्र आया और इस कार्य को गति प्राप्त हुई।

आगे प्रूफ निरीक्षण के लिए एक प्रतिलिपि निकाली। उस समय एक दिन मुझे श्री गोंदवलेकर महाराज के अनुग्रहित साधक श्री विनीत जोशी जी का फोन आया एवं उन्होंने कहा, “दो दिन पहले आपके घर से आते समय महाराज ने मुझे पूछा

की पुस्तक की प्रतिलिपि तुम्हें दी क्या?“ “उन्होंने पुस्तक के संबंध में मुझे कुछ भी नहीं बताया है इसलिए पूछने में संकोच लगा।” ऐसा मैंने उन्हें कहा। इस पर महाराज ने कहा “जल्द ही वह प्रतिलिपि तुम्हारे पास आएगी।“ दो दिनों के पश्चात ही आनंद स्वामी जी का फोन आया और वे पूछने लगे कि, “नीलिमा की पुस्तक का काम कहाँ तक आया है?“ “बाबा मुझे सचमुच कुछ पता नहीं है।” इस पर आनंद स्वामी जी ने कहा, ”तुम खुद होकर उन्हें पूछो कुछ मदद चाहिए है क्या? वह अकेली वहाँ लढ़ रही है, तुमसे जितनी हो सके उतनी मदद करो।” इसलिए ताई आज मैंने आपको फोन किया है कृपया वह प्रतिलिपि मुझे दीजिए। मुझसे जितनी मदद हो सकेगी वह सब मैं करुँगा।”

दूसरे दिन श्री जोशी जी को गोंदवले जाना था। वे आकर मेरे पास से वह प्रतिलिपि लेकर गए। गोंदवले जाने के दिन उनकी नींद सुबह तीन बजे के ब्रह्ममुहूर्त पर खुली और उन्हें श्री गोंदवलेकर महाराज ने वह प्रतिलिपि अपने साथ लाने की प्रेरणा दी। इस प्रकार वे उस प्रतिलिपि को लेकर गोंदवले गए एवं महाराज की समाधी पर तथा छोटे राम मंदिर में जहाँ महाराज ने इस्तेमाल की हुई चरण पादुकाएँ रखी है वहाँ पर रखकर लाए। इस प्रकार इस पुस्तक को प. पू. टेंबे महाराज एवं प. पू. गोंदवलेकर महाराज के आशीर्वाद प्राप्त हुए हैं ।

ऐसा संकलन होना चाहिए यह साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण की इच्छा है। इस बात का एहसास निश्चित रूप से हुआ। सभी संत, अधिकारी साधक यह उसी के रूप है। उनके चरित्र का गायन करना यह भगवान श्रीकृष्ण की सेवा करने जैसा है। ऐसी सेवा करने की स्वर्णिम संधी उसने हमें (सभी कृष्णभक्तों को) दी है। यह पुस्तक उसी का एक छोटा सा भाग है। संकलन का काम इस प्रकार से लगातार चालू रख कर, समय-समय पर कृष्ण जैसी प्रेरणा देंगे उस प्रकार से पुस्तकें, ऑडियो क्लिप, e-book वगैरह के स्वरूप में इन स्मृतियों को, अनमोल शिक्षाओं को हमें जतन करना है, संजोना है और वह खजाना आने वाली भावी पीढ़ी के सुपुर्द करना है। यही हमारा प्रामाणिक प्रयत्न रहेगा।

आप सभी से नम्र विनंती है कि किसी को भी यदि अपनी अनमोल स्मृतियाँ, अनुभव, फोटो, ऑडियो-व्हीडियों टेप्स, ताई के लिखित आशीर्वाद ऐसा किसी प्रकार का यदि कोई साहित्य या सेवा कृष्ण चरणों में अर्पित करना है तो कृपया वैसा सूचित कीजिए।

इस पुस्तक को मैं चरित्र कहने की हिम्मत कभी नहीं करूँगी। यह मधुर स्मृतियाँ

तो ताई के जीवनपट के हिमशिखर का दवबिंदू है। संतो के ‘चरित्र लेखक‘ को तो जन्म लेना पड़ता है। इस प्रकार का लेखन करना अत्यंत दुर्लभ एवं सूक्ष्मद्रुष्टी का कार्य होता है। यह कार्य कष्ट के साथ-साथ कृपा से ही साध्य हो सकता है। ज्यादा से ज्यादा मैं यह कह सकती हूँ कि भविष्य में समग्र चरित्र लेखन के कार्य में इस संकलन का उपयोग हो सकेगा। उस कार्य में मेरी ओर से अल्प सी यह सेवा निश्चित रूप से रहेगी। मुझे लेखन, साहित्य से संबंधित किसी भी प्रकार का कोई पुर्वानूभव नहीं है। यह जो भी कार्य हुआ है वह सिर्फ और सिर्फ कृष्णकृपा से पूर्ण हुआ है।

वे पाठक जिन का परिचय प.पू.ताई से नहीं है उनके लिए कुछ बातों का यहाँ प्रकटीकरण करना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है ।

१) ॐ महान शक्ति देवता नमः और लक्ष्मी देवी महामाये...... यह दोनों मंत्र साथ ही साथ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय इस मंत्र का अर्थ ताई को कृष्ण ने ध्यान में जिस प्रकार से बताया है वैसा ही यहाँ दिया हुआ है।

२) कृष्णभक्तों के मन में ताई और कृष्ण ऐसा द्वैतभाव कभी नहीं रहता था इसलिए पाद्यपूजा करते समय ताई पूर्ण ध्यानावस्था में रहती थी एवं उनकी पाद्यपूजा की जाती थी।

प्रत्येक समय ताई कृष्ण के बताएनुसार ध्यान करती थी मतलब कभी बैठ कर, आँखें बंद करके, कभी आँखें खोल कर, कभी खड़े होकर तो कभी कर्पूर होम करते हुए तो कभी लेट कर। बाहर यात्रा करते समय नजरें घुमा कर भी ध्यान चालू रहता था। समुद्र के किनारे बैठकर एकटक उसकी ओर निहारते हुए उसकी अथांगता पर भी ध्यान करती थी। ध्यान करते समय साथ आए हुए भक्तों के लिए उनका हमेशा आग्रह रहता कि वे हमेशा की तरह उनके नित्यक्रम, खाना-पीना, हँसी मजाक, नि:संकोच करते रहे। कई बार वे बातचीत करते करते गहरे ध्यान में चली जाती थी और उनकी वह अवस्था बहुत समय तक टिकी रहती थी। कृष्ण ने अनेकों बार उन्हें ‘मृतशरीर‘ की तरह ध्यान करने के लिए भी कहा।

३) ताई कभी-कभी बातचीत करते करते कृष्ण भाव में जाकर बोलती थी। उस समय वे कई बार पुल्लिंग शब्दों का इस्तेमाल करती थी ।

जैसे हम एक दूसरे से बातचीत करते हैं वैसे ताई का संवाद कृष्ण और नवदुर्गा से चलता था।

ताई हमेशा कहती थी ‘मैं कृष्ण भक्तों के प्रेम पर जीती हूँ। कृष्ण भक्तों का प्रेम यही मेरा खजाना है, मेरी अलौकिक धरोहर है। मेरे जीवन में कृष्ण भक्तों का प्रेम, गीता और कृष्ण इनके सिवा दूसरा ऐसा कुछ भी नहीं है। ऐसी अपनी अनन्य भक्त रही सद्गुरु माँ प. पू. ताई को हार्दिक वंदन करते हुए प्रार्थना करती हूँ कि हम सभी भक्तों की सेवा भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पण करवाँ लीजिए।

**श्रीमती नीलिमा जोशी**

**।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।**

**।। ॐ महान शक्ति देवताय नमः ।।**

**।। श्रीकृष्णार्पणमस्तु ।।**

# ऋणनिर्देश

मुझे यह संकलन कार्य करने के लिए प्रेरणा, संधि, बुद्धि, मती और ताकत देने वाले परब्रह्म और गुरु माऊली ताई कि मैं अत्यंत ऋणी हूँ।

गुरु तत्व एक ही होता है। आप व्यक्ति विशेष के पीछे मत जाइए। मुझे कृष्ण द्वारा दिए गए इस वचन का मानों प्रत्यय आया। यह लेखन कार्य करने में प. पू. टेंबे स्वामी महाराज कृपांकित आनंद स्वामी (बाबा), गुलवणी महाराज के अधिकारी सत् शिष्य पू. दीक्षित सर, शंकर महाराज कृपांकित प.पू. अम्मा (बाबा) पटेल एवं शैलेश काका पटेल, जेष्ठ एवं श्रेष्ठ देवी भक्त प. पू. सुरेश भाऊ जोशी, वैसे ही जिनके माध्यम से मुझे प. पू. ब्रह्मचैतन्य गोंदवलेकर महाराज के मार्गदर्शन से मैं लाभान्वित हो सकी ऐसे श्री विनीत जोशी जी। इन सभी का समय-समय पर मुझे मार्गदर्शन प्राप्त हुआ और यह लेखन कार्य मेरी ओर से करवाँ लिया गया। उन सभी को मै अंतः करण से वंदन करती हूँ और सभी से निवेदन करती हूँ कि सदैव इसी प्रकार मुझे अपनी कृपा छाया में रखिए।

सतारा के तत्वज्ञ संत प. पू. डॉ. सुहास पेठे काका जी द्वारा लिखित अनेक सर्वोत्तम पुस्तकों के द्वारा सत्संग एवं मार्गदर्शन लगातार मिलता रहता है वैसे ही उनके द्वारा स्वरचित मानस पूजा एवं ताई के लिए विशेष रूप से रचित की गई एक श्लोकी मानस पूजा को उन्होंने इस पुस्तक में समाविष्ट करने के लिए अनुमति दी। मैं उनकी अत्यंत आभारी हूँ।

अपने स्वयं के व्यवहार के द्वारा जिन्होंने मुझे मेरे जीवन में इंसान में ईश्वर दर्शन करना सिखाया; आज सिर्फ उनके पुण्य कर्मों के कारण मुझे सद्गुरु का दिव्य लाभ प्राप्त होकर गुरु कृपा का अक्षय कवच प्राप्त हुआ वे है मेरे पिताजी आदरणीय स्व. श्री दिनकर नारायण बोडस एवं माताजी श्रीमती विद्या दिनकर बोडस इन के ऋणों तले मुझे जन्म जन्म तक रहना अच्छा लगेगा।

ताई की इन मधुर स्मृतियों को पुस्तक के रूप में मूर्त स्वरूप देने में अनेक कृष्ण भक्तों ने आगे बढ़कर सहयोग एवं स्नेह प्रदान किया। मैं मन:पूर्वक आभार व्यक्त करती हूँ सभी कर्वे कुटुंबियों का अर्थात् श्री नंदा (मुरलीधर) एवं श्रीमती रेशमा कर्वे, श्री संतोष (मुन्ना) एवं श्रीमती पुष्पलता कर्वे, श्री संतोष एवं श्रीमती वैभवी श्रॉफ का तथा श्री रमेश एवं श्रीमती रश्मि नारकर काका काकी का, जिनका अमूल्य योगदान अतुलनीय है।

मैं अंत:करण से आभार व्यक्त करना चाहूँगी श्री नारायण काका एवं श्रीमती आशाताई देशपांडे का जिन्होंने ताई के अमेरिका दौरे के समय आयोजित किए गए सत्संग के वीडियो रिकॉर्डिंग अत्यंत परिश्रमतापूर्वक उपलब्ध करवाँ दिए।

समय-समय पर मुझे प्रोत्साहित करने वाले, अपनी मदद के हाथ हमेशा आगे देने वाले कृष्ण भक्त श्रीमती विभावरी शेंडे, श्रीमती अनीता एवं श्री विलास दामले एवं श्रीमती रेखा गोडबोले इनके प्रति आभार व्यक्त न करते हुए मैं इनके प्रेम और ऋण में रहना ही ज्यादा पसंद करूँगी।

अपनी व्यस्त जीवनशैली में समय निकालकर अत्यंत आत्मीयता के साथ संपादन का कार्य करने के लिए नीलिमाताई शिकारखाने इनके प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

डीटीपी कार्य के लिए श्रीमती राजश्री जाधव, मुद्रित शोधन के लिए श्रीमती प्रीतिताई केतकर एवं श्रीमती माधवी ताई कोल्हटकर, अत्यंत समर्पक मुखपृष्ठ के लिए श्रीमती सुप्रिया जोगदेव और मुद्रक पिक्सो प्रिंटर्स के प्रति मैं आभार व्यक्त करती हूँ।

ताई हमेशा कहती थी जब कोई कार्य कार्यान्वित किया जाता है तब वह कभी किसी एक का नहीं होता है। जब तक उसे दस हाथ नहीं लग जाते तब तक वह कार्य का स्वरूप धारण नहीं करता। यह वचन सार्थ सिद्ध करने वाले एवं अनंत प्रकार से मदत करने वाले अनेक कृष्ण भक्त जिन्होंने अत्यंत आत्मीयता के साथ स्मृतियाँ, पुस्तकें, फोटो, सीडीज् उपलब्ध करवाँ दी उन सभी कि मैं तहेदिल से आभारी हूँ।

इस पूरे प्रकल्प में मुझे हर पल साथ देने वाले मेरे परिवारजनों के मैं ऋण में रहना ही ज्यादा पसंद करूँगी।

जाने अनजाने में यदि किसी का उल्लेख करना रह गया हो तो मैं उनसे क्षमा प्रार्थी हूँ।

कृष्ण, गुरु माऊली, हम सभी को सदैव अपने चरणों तले रखो, आपका कृपा छत्र सदैव हमारे साथ हो, ऐसी मैं सभी के लिए, सभी की ओर से प्रार्थना करती हूँ।

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

।। ॐ महान शक्ति देवताय नमः ।।

**श्रीमती नीलिमा जोशी**

बालगोपाल को गीतापाठ करने पर
पू. ताई की ओर से मिली हुई शाबाशी

अंदमान में यंग जनरेशन की ओर से करवाँ ली गयी पाद्यपूजा

## ताई के हस्ताक्षर

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ 18/8/93

अमेरिकेला कामासाठी १९९० साली आलो. आणि माझ्या बऱ्या-
च भक्तांना भेटून गेलो. १२ मे १९९० माझ्या आगमनाची
तारीख आणि १७ जुलै १९९० कार्य संपून परत जाण्याची तारीख
होती. त्याचवेळी मी निश्चित ठरवले होते की, मी परत तीन
वर्षांनी येईन, माझ्या भक्तांना भेटेन. आणि त्यांच्यासाठी
एक योजना आखून जाईन त्याप्रमाणे आज १८ ऑगस्ट
१९९३ ला एक केन्द्र स्थापन करण्याचे निश्चित ठरवले.
ती वेळही निश्चित केली आणि सकाळी बरोबर १० ते
११ च्या दरम्यान माझ्या "श्रीकृष्ण लीला केन्द्र" याचा
पाया घातला. पहिले केन्द्र मस्कत, दुसरे केन्द्र सोंदलगा
आणि तिसरे केन्द्र ओंटारिओला म्हणजे कॅलिफोर्नियाला
स्थापन केले. हे जेव्हा मी करते त्यावेळेला मला माझ्या
भक्तांसाठी याची अत्यंत गरज असते. कारण तुम्ही
शिकत असताना "एकीचे बळ फार मोठे असते" हे वाक्य
अनेक वेळा ऐकले असेल तसेच Union is strength
हेही अनेक वेळा वाचले असेल त्याचप्रमाणे सामुदायि-
क प्रार्थनेलाही तितकेच की बहुना त्याहून ज्यास्त
महत्त्व असते. आणि ह्या उद्देशाने तुम्ही एकत्र येता
त्या उद्देशाला पुष्कळच बळकटी येते. आज आता ही
ह्या कलीची येणाऱ्या काळाची गरजच झाली आहे.
कारण त्याशिवाय आपल्याला आनंदाने, उत्साहाने,
प्रेमाने वावरता येणार नाही. प्रत्येकाला आपुलकी,
प्रेम, समंजसपणा, नम्रता व सचोटी ह्या गोष्टींची
फार गरज असते. आणि ती गरज आपल्याला मान-
वता धर्मातूनच मिळवता येते. आज सर्व काही मिळते
आहे परंतु मानवता धर्म मिळणे फारच कठीण झाले आहे
आपला मूळ धर्म मानवता तो हळूहळू लोप पावला जात
आहे आणि इतर धर्मांचे मात्र हळूहळू जाळे पसरून
त्यातून हेवे दावे निर्माण होऊन विनाशाकडे माणसा-
ची वृत्ती झुकत चालली आहे. तो कल थांबवण्यासाठी
हो आतापासूनच जर प्रयत्न झाला नाही तर दिवसें-
दिवस काळाची पावले जड, कठोर पडणार आहेत

ताई द्वारा ध्यानावस्था में लिखा गया जप

विविध भावमुद्रा

भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा भक्तों को इस फोटो में देवी स्वरूप में दिया गया दर्शन

प. पू. ताई ने सन् २००२ की अंदमान (भारत का सीमावर्ती इलाका) ध्यान यात्रा में पोर्ट ब्लेयर के जंगली घाट परिसर के राधा कृष्ण मंदिर में जाकर ध्यान किया। वहाँ के पुजारी को कृष्णाई कैसेट एवं कृष्ण का फोटो दिया। वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करने के लिए कहा। कुछ समय के पश्चात वहाँ सुनामी आ कर गया; उस समय मंदिर का नूतनीकरण किया गया। मार्च २०२१ में एक कृष्ण भक्त ने वहाँ योगेश्वरी पुस्तक एवं अमृतवाणी सीडी कृष्ण के चरणों पर अर्पण की। प. पू. ताई द्वारा बताया गया महामंत्र 'ॐनमो भगवते वासुदेवाय' ऊपर मार्बल में अंकित किया हुआ है।

# ।। ॐ ।।

गोवा के दक्षिण भाग में प्राकृतिक सौंदर्य से सुसज्जित एक नितांत सुंदर गाँव "मंगेशी"। वहाँ श्री रघुनाथ जी एवं श्रीमती लक्ष्मीबाई शेणवी एक सत्शील एवं हरिभक्त परायण दंपति रहते थे। मंगेश (शिव मंदिर गोवा का) की कृपा छत्र में रहकर अपना छोटा-सा भोजनालय का व्यवसाय सँभालते हुए श्रीमंगेश एवं नवदुर्गा की मन:पूर्वक सेवा करते एवं उसी में अपने जीवन की धन्यता मानते हुए प्रसन्नचित्त होकर जीवनयापन करते थे लेकिन उनके इस सुखी जीवन में दु:ख की एक लकीर भी थीं। लक्ष्मी बाई के बच्चों की जन्म के बाद मृत्यु हो जाती थी।

एक दिन आश्चर्यकारक घटना घटी। लक्ष्मीबाई अत्यंत आनंदित होकर सुबह नींद से उठीं और बोली, 'अजी सुनते हो, मुझे आज नवदुर्गा ने दृष्टांत दिया। वह बोली, "अरी, सुन तुम्हारी कोख से जन्म लेने वाला बच्चा आगे बड़ा ईश्वरीय कार्य करने वाला है इसलिए तुम सप्तशती का पाठ करो।"'

"अरे, कैसा दृष्टांत और कैसा क्या? वह कहते है न, जो मन में बसा होता है वही सपने में दिखता है। तुम्हारे साथ कुछ ऐसे ही हो गया है। हमेशा बच्चे के बारे में सोचती रहती हो इसलिए ऐसे ही सपने देखती हो।"

"अजी, ऐसे क्यों बोल रहे हो आप? इतने दिनों में तो कभी कोई सपना आया नहीं। आपका विश्वास नहीं है, तो रहने दो, हम भगवान के पास कौल *(भगवान के शीश पर फूल चढ़ाते हैं यदि फूल बाईं ओर गिरा तो अनुकूल उत्तर समझते हैं और यदि फूल दाईं ओर गिरा तो प्रतिकूल उत्तर समझते हैं।) लगाकर देखते हैं। बाद में पाठ के बारे में सोचेंगे। अब तो आपको चलेगा?"

'हाँ, यह ठीक कहा तुमने।' दूसरे दिन दोनों मंदिर गये भगवान से प्रार्थना करके कौल लगाया। भगवान ने भी हाँ में जवाब दे दिया। लक्ष्मीबाई की खुशी का ठिकाना न रहा। दोनों ने मिलकर भगवान से प्रार्थना की 'हे ईश्वर, हम आज संकल्प लेते हैं, यह सेवा आप ही हमसे पूर्ण करवाँ लीजिए।'

पंडित जी के द्वारा पाठ भी पूरा करवाँ लिया गया। थोडे ही दिनों में लक्ष्मीबाई के

पाँव भारी हो गये। दोनों की खुशी तो जैसे आसमान छू रहीं थी, थोड़ी चिंता भी रहतीं थी, सब ठीक से निभना चाहिए। एक ओर यह भी विश्वास था कि इस बच्चे का जन्म होना तो ईश्वर की इच्छा है। अतः दोनों सारा भार ऊपर वाले पर डालकर साधना भक्ती में लगे रहते।

आख़िर वह शुभ दिन, शुभ मूहूर्त आ गया। २९ मई १९३४ को लक्ष्मीबाई ने सुंदर सलोनी कन्यारत्न को जन्म दिया। बुआजी प्रसुति के लिए आयी थी। वे बोली "अरे, हम बच्ची को पड़ोस की मथु की गोद में डालते हैं। हमारे पहले अनुभव अच्छे नहीं हैं। इस बार तो भी बच्चे की सेहत अच्छी रहनी चाहिए।"

इस प्रकार नवजात शिशु को मथू की गोद में डाला गया। बच्ची दिन मास अब बड़ी होने लगी। नन्हें क़दमों की घर में किलकारियाँ गूँजती। पड़ोस की मथू से भी खूप लाड़ प्यार करवाँ लेती। आने वाला हर दिन खुशी से बीत रहा था। यह ख़ुशी भगवान से देखीं न गई और छोटी सी बीमारी कारण बन गई। श्री रघुनाथ जी माँ-बेटी को अनाथ करके स्वर्ग सिधार गये। लक्ष्मीबाई के ऊपर तो जैसे आसमान ही फट गया। एक ओर आर्थिक अभाव तो दूसरी ओर साथ में नन्हीं सी जान की जिम्मेदारी। 'अकेले कैसे सब निभेगा।' इस विवंचना की स्थिति में बुआजी मदत के लिए भागकर आयी, जैसे भगवान ने ही उन्हें मदत के लिए भेजा था। दोनों ने मिलकर फिर से भोजनालय का व्यवसाय घर में शुरू किया। यात्रियों के रहने खाने का इंतजाम करना और इस तरह अपना गुजरनिर्वाह करना। दोनों कमर कसकर मेहनत कर रही थी।

आज मामी (लक्ष्मीबाई) के घर सत्यनारायण पूजा थी। पंडित जी ने पूजा करके कथा पढ़नी शुरू की और देखा तो इतने समय से इधर उधर खेल रही बाया अब चुपचाप कथा सुनने बैठ गई। पंडित जी प्रेम से बोले, 'बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?' 'बाया' 'बाया?' बुआजी बोली, 'अरे, पंडित जी, अभी बच्ची का नामकरण संस्कार नही हुआ है फिर नाम कैसे रख सकते है? हम सब उसे बाया ही कहकर पुकारते हैं। पंडित जी बोले, 'ऐसा करो बुआजी, आज से इसे लीलावती नाम से पुकारना। सत्यनारायण कथा में यहीं नाम हैं। इतनी छोटी सी है लेकिन कितनी मन लगाकर कथा सुनी।' लक्ष्मीबाई (मामी) और बुआजी को पंडित जी का यह विचार बहुत ही अच्छा लगा। इस प्रकार छोटी बच्ची 'बाया' अब 'लीला' बन गई।

इधर बच्ची की बाल लीलाएँ दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। गोरी गोरी सुकुमारी

लीला मंगेशी में सभी की लाड़ली थी। अड़ोसी-पड़ोसी, आने जाने वाले सभी उसके साथ खेलते, उसका लाड़-दुलार करनें उत्सुक रहते लेकिन लीला का मन तो मंगेश के मंदिर में जाने के लिए लालायित रहता। घर से मंदिर कब पहुँच जाती किसी को पता नहीं चलता, माँ और बुआ तो आवाज देकर थक जाती।

मंदिर मे प्रतिदिन संध्या समय पर आरती, कीर्तन इत्यादि रहता। माँ और बुआ आए चाहे ना आए, यह छोटी बच्ची अपनी उपस्थिति समय पर जरुर दर्ज करवाती।

एक बार मंगेशी के मंदिर में तीन साधू आये। तीन दिन उनका मंदिर में कीर्तन था। कीर्तन के पहले दिन ही छोटी लीला सबसे आगे की कतार में बैठी थी। कीर्तनकार आरती से पहले तीन ईलायची और कुछ दूसरा प्रसाद, भगवान को अर्पण करते। इस प्रकार आरती के पश्चात उन्होंने लीला को आगे बुलाया और प्रसाद की ईलायची देते हुए कहा, “बेटी, इसे ऐसे ही मुख में डालो छिलका भी मत निकालो।” दूसरे दिन कीर्तन हुआ वह कीर्तनकार कल की बच्ची को ढूँढ़ने लगे बोले, “उसे प्रसाद दिए बगैर किसी दूसरे को प्रसाद नहीं दिया जा सकता। कीर्तन की समाप्ति नहीं की जा सकती। वह बच्ची किधर है, उसे लेकर आईए” ऐसे लगा जैसे उस दिन उन्हें देवी के सगुण रूप का, उसकी शक्ती के अस्तित्व का दर्शन उस छोटी सी लीला में हो गया था। आख़िर किसी ने जाकर खेल कूद कर, थक कर सोई हुई लीला को प्रसाद लेने गोद में उठाकर लाया।

लीला की एक विशेषता थीं, मंदिर में कोई भी साधू संत कीर्तनकार आते, वह उन्हें अत्यंत आग्रह के साथ अपने घर आने का न्यौता दे देती और वे भी उतने ही प्यार से न्यौता स्वीकारते लेकिन माँ इस बात पर बहुत नाराज होती। घर में चाय के सामान का ठिकाना नहीं रहता। दूध की समस्या भी रहती। कभी कभी तो नारियल का दूध निकाल कर चाय बनाकर देनी पड़ती।

माँ और बुआ के पास आस-पड़ोस की औरतें कभी कभी बैठने आती उनका यह अनुभव रहता, जो बातें लीला सहजता के साथ बोल जाती है, आगे वैसा ही होता है। माँ तो कभी कभी चिढ़कर बोलती, ‘रुको, पहले इसको खेलने बाहर भेजते हैं। इसके सामने कुछ मत बोला करो। नहीं तो यह कुछ भी बोल जाती है।’

इनके पड़ोस में चित्रे नाम के ज्योतिषी रहते थे। वे लक्ष्मीबाई से हमेशा कहते, ‘मामी इसका गुस्सा मत किया करो। इसके घर के सामने भविष्य में गाड़ियों की लाइनें लगने वाली हैं। उस समय माँ सात्त्विक गुस्से से कहती, ‘गाड़ियों की लाइनें

लगने वाली हैं तो ऐसा करो पहली गाड़ी पर सिर पटककर तुम अपनी जान देना। तुम्हारे ऐसे बोलने से ही वह और ज्यादा शरारती होती जा रहीं है।'

धीरे धीरे दिन बीत रहे थे। देखते देखते लीला अब सात साल की हो गई। एक शाम लीला आरती के लिए मंदिर गयी। आरती ख़त्म होने तक बाहर बिजली गरजने के साथ धुआँधार बारीश चालू हो गई। चारों ओर अंधेरे का साम्राज्य फैल गया। सभी लोग अपने अपने घरों की ओर जल्दी जल्दी निकल गये। अंधेरे में छोटी लीला की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। चारों ओर अंधेरे का साम्राज्य देखकर लीला की नन्हीं सी जान घबरा गई। मंदिर की दहलीज पर खड़ी होकर माँ और बुआ को जोर जोर से पुकारने लगी। घनघोर अंधेरे में तेज़ बारिश की आवाज में लीला की पुकार किसी के कानों तक न पहुँच सकी। थोड़ी देर बाद माँ और बुआ को पुकारते हुए जान मुठ्ठी में लेकर लीला किसी तरह भागते हुए घर आ पहुँची। माँ और बुआ उसकी राह देख ही रहे थे। लीला का रोना रुक नहीं रहा था, रोते-रोते बोली, 'मुझे लेने क्यों नहीं आए? मुझे कितना डर लग रहा था!' लक्ष्मीबाई गुस्से में बोली, 'अच्छा हुआ जान छूटी। जब देखो तब मंदिर में जाती हो, जाओ जाकर कपड़े बदल कर खाना खा लो और सो जाओ।' 'मुझे नहीं खाना, खाना' नाराजगी के सुर में लीला बोली और कपड़े बदल कर रोते-रोते ही नींद के आगोश में चली गई।

दूसरे दिन प्रसन्न उष:काल का आगमन हुआ। अचानक हुई बारिश के कारण मिट्टी की सोंधी सोंधी महक वातावरण को प्रफुल्लित कर रही थी। लीला सुबह हँसते मुस्कुराते हुए उठी। दौड़ कर माँ से लिपट कर बोली, 'माँ एक मजे की बात बताऊँ क्या?' 'अरे सुबह सुबह क्या मज़े की बात बता रही हो; जाओ जाकर मुँह धो लो।' 'अरे, माँ ऐसे मत बोलो। सचमुच मज़े की बात है, कल मेरे सपने में नवदुर्गा आयी। अपने मंदिर के गर्भगृह से उतरकर आगे आयी, मेरे पास आकर बोली, "बेटी, आज से मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुम्हारी सारी जिम्मेदारी आज से मेरी हैं। तुम्हें क्या चाहिए, क्या नहीं आज से तुम मुझे बताना।" देखो न माँ, मैं हमेशा मंदिर जाती हूँ तो तुम मुझे गुस्सा करती हो। आज से मैं तुम से कुछ नहीं माँगूगी। मेरी नवदुर्गा माँ मुझे सब कुछ देंगी।'

लक्ष्मीबाई बेटी के बदले हुए रूप और सहज श्रद्धा भाव की ओर आश्चर्यमिश्रित नजरों से अपलक निहारती रह गई। कितनी मासूमियत के साथ सब बता रही है। उनके हृदय में बेटी के लिए अपार स्नेह भाव उमड़ आया। उन्होंने उसे अपने हृदय से लगा लिया और बोली, "अच्छा हुआ बेटी अब मुझे तेरी कोई चिंता नहीं रही।

जगत् जननी ने मेरी फरियाद सुन ली। देखो, यह दो पैसे लो और चम्पा के फूल लाकर देवी के लिए गजरा बनाओं।” अपनी छोटी सी मुठ्ठी में पैसे रखकर लीला फूल लाने बाहर भागी।

फूल लाकर बुआ जी से अच्छा सुन्दर सा गजरा भी बनवा लिया। दोनों को साथ लेकर लीला पूजाघर में देवी के फोटो के पास गयी। फोटो पर गजरा चढ़ाया और प्रार्थना की, ‘नवदुर्गा माँ, गजरे का स्वीकार करो।‘ और क्या आश्चर्य, लक्ष्मीबाई और बुआ जी को स्पष्ट स्वर सुनाई दिया, ‘मैंने तुम्हारा गजरा स्वीकारा।‘ उनका तो जैसे उनके ही कानों पर विश्वास नहीं बैठ रहा था। आगे जाकर देखा तो गजरे के ऊपर दो तीन लम्बे बाल लगे हुए थे। लक्ष्मीबाई तो भावविह्ल हो गयी। उन्होंने लीला को पास लेते हुए कहा, “ननंदजी, आज हम जल्दी जल्दी काम खत्म करके अच्छा सा भोग बनाकर मड़कई में नवदुर्गा के मंदिर में होकर आएँगे।”

लीला के घर की ऊपरी मंजिल पर, मामा दलवी नाम के कृष्ण भक्त दादाजी अपनी साधना करने के लिए आए हुए थे। उनका वास्तव्य ऊपर की मंजिल पर था। पूरा दिन जपजाप्य करना, साधना करना, पढ़ना लिखना ऐसा कुछ न कुछ चालू रहता। छोटी लीला आश्चर्यचकित होकर देखती रहती। कभी कभी तो उनके कमरे से बातचीत करने की आवाजें भी आती। उनके अलावा तो उस कमरे में कोई है नहीं फिर आवाजें कहाँ से आती है। वे किसके साथ बातचीत करते है? वह भविष्य भी देखते थे इसलिए उनके पास लोगों का आना जाना लगा रहता। कभी कभी वे लीला से कहते, ‘लीला मैं साधना करने के लिए बैठ रहा हूँ, कोई मेरे से मिलने के बारे में पूछें तो बताना मामाजी घर पर नहीं है।‘ लीला को बहुत मज़ा आता हमेशा सच बोलना सिखाने वाले मामाजी आज खुद झूठ बोलने के लिए कह रहे है। उसे समझ नहीं आ रहा था। आखिर एक दिन उसने जिद्द की, ‘मामा आप दरवाजा बंद करके क्या करते हो? किससे बात करतें हों? किसकी भक्ति करते हो?‘ ‘अरे अरे, कितने प्रश्न पूछोगी? मैं कृष्ण की भक्ति करता हूँ। मैं कृष्ण से बातचीत करता हूँ लीला।’ ‘देखो मामा, नहीं तो कभी आपका कृष्ण आएगा और मैं झूठ झूठ कह दूँगी आप घर पर नहीं हैं तो वह मुझसे बात करता रहेगा। सोच लो, आपको चलेगा न?‘ जैसे उस दिन भगवान लीला के मुख से भविष्य में घटने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी ही कर रहें थे।

आज सुबह से लीला के दिमाग में कुछ अलग ही चल रहा था। बार बार ऊपर जाकर देखती और नीचे आती, लेकिन उस दिन मामाजी का कमरा बंद ही था।

आखिर भोजन के समय पर उन्होंने दरवाजा खोला और लक्ष्मीबाई को आवाज दी 'मैं खाना खाने आऊँ क्या?' उनका आवाज सुनकर लीला जल्दी जल्दी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर गई और मामाजी से कहा 'मामाजी, आज आपको मुझे कृष्ण दिखाना ही होगा। मुझे भी उससे मिलना है। ऐसे कैसे वह सिर्फ आपसे मिलकर चला जाता है? मुझसे मिलेगा न वह?' मामाजी ने कहा "हाँ, ज़रूर मिलेगा, लेकिन उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। भक्ति करनी होगी। साधना करनी होगी।" 'नहीं नहीं ऐसा कुछ नहीं है, मैं तों बहुत छोटी हूँ। मुझे पता है आप बोलेंगे तो वह तुरंत मुझसे जरुर मिलेगा। मामाजी, आप कहिए न मुझसे मिलने। गोकुल में कैसा वह अपनी मित्र मंडली के साथ रहता था। आप बोलेंगे न उसे?' लीला का मामाजी को प्रेमपूर्वक मनाने का आग्रह चल ही रहा था। मामाजी उसे समझाते हुए बोले, 'अच्छा लीला, मिलेगा वह तुम्हें, जब मुझे वह बतायेगा, तब मैं तुम्हें बताऊँगा।' 'नही नहीं मामाजी मुझसे झूठ मत बोलो। मैं आपकी लाड़ली बेटी हूँ न, फिर बोलों अपने कृष्ण से मुझसे आज ही मिलने के लिए' लीला तो अपनी जिद्द छोड़ नही रही थीं। मामाजी को लीला की सात्त्विक ज़िद्द के सामने हारना ही पड़ा। उन्होंने आखिर आँखे बंद की, कृष्ण का दो मिनिट के लिए चिंतन किया और बोले, 'मैं जैसा कह रहा हूँ वैसा कल करो। इससे तुम्हें कृष्ण के आने का विश्वास हो जाएगा। कल इस कमरे में एक पीढ़ा रखो उस पर खाली गिलास रखो लेकिन तुम नीचे खड़ी रहना उसकी निशानी के स्वरुप वह तुम्हें पीढ़े पर रखे हुए खाली गिलास में दूध भरकर देगा लेकिन यह तुम्हारे और मेरे बीच की बात है, अभी से किसी को बताना मत बेटी।'

लीला खुशी-खुशी उछलते हुए घर चली गई। मामाजी ने भरी हुई आँखों से उसकी ओर देखते हुए कृष्ण से प्रार्थना की, 'कृष्ण इस नन्हीं सी जान की ज़िद्द जरूर पूरी करना।' दूसरे दिन सुबह लीला ने जल्दी उठकर स्नानादि नित्य कर्म जल्दी निपटाये। अच्छा सा फ्रॉक पहनकर दौड़ते हुए मामा के पास ऊपर गयी। 'मामाजी, मामाजी मैं आ गई। मुझे बताइए पीढ़ा किधर रखूँ।'

मामाजी देखकर हैरान रह गए। मन ही मन कृष्ण से बोलें, "कृष्ण दया करो, छोटी बच्ची को नाराज मत होने देना, मेरी लाज रखना प्रभु, लाज रखना।" ऐसा बोलते बोलते दोनों ने मिलकर सारी तैयारी की। पीढ़ा रखा, सुंदर सी रंगोली निकाली, उसपर एक गिलास रखा। अब मामाजी बोले, 'लीला तुम नीचे जाकर अब इंतजार करो।' 'ऐसे नहीं मामाजी मुझसे झूठ नहीं बोलना, मैं अकेली नहीं जाऊँगी आप

भी मेरे साथ नीचे चलो।' 'अच्छा बेटी चलों, मैं भी नीचे आता हूँ।' ऐसा बोलकर दोनों नीचे बरामदे में आकर बैठ गए। मामाजी कृष्ण की कुछ बातें लीला को बता रहे थे। इतने में गाय का बछड़ा भागते हुए गेट से अंदर आया। सामने की सीढ़ियों से सीधे ऊपर गया और एक मिनिट में ही नीचे उतरकर बाहर चला भी गया। मामाजी तो आश्चर्य चकित, 'लीला, तुरन्त ऊपर जाकर तो देखो, क्या हुआ है?' वे लक्ष्मीबाई और बुआजी को पुकारने लगे। लक्ष्मीबाई रसोईघर से हाथ पोछते हुए बाहर आकर बोली, 'अरे बाबा, मामा क्या हुआ, जैसे शेर पीछे लगा हो ऐसे आप जोर से चिल्ला रहे हो।' 'आश्चर्य हुआ भाभी, आश्चर्य हुआ, मेरी और लीला की प्रार्थना कृष्ण ने सुन ली।' तब तक बुआ जी भी आ गई। इतने में लीला धड़धड़ करते हुए सीढ़ियों से नीचे आते हुए चिल्लाकर बोली, 'मामाजी मुझे कृष्ण ने दूध का प्रसाद दिया। पूरा गिलास दूध से भरा हुआ था, मैं पीकर ही नीचे आयी हूँ।'

लक्ष्मीबाई और बुआ जी को मामाजी ने पूरी हकीकत विस्तार से बताई। लक्ष्मीबाई दोनों हाथ जोड़ते हुए बोली, 'हे प्रभु, मेरा दृष्टांत लगता है सच साबित होगा। मेरी लीला को सँभाल लेना प्रभु।'

अब धीरे धीरे लीला की शरारतें कम होने लगीं थीं। वह मामाजी से हमेशा अलग-अलग प्रश्न पूछती। 'मुझे साधना बताओं, मैं क्या करूँ, आप क्या करते हो? उसके प्रश्नों के उत्तर देते देते वह थक जाते और कृष्ण से प्रार्थना करते, 'भगवान अब इसकी जिज्ञासा तुम्ही शांत करो।'

लीला अब पूजाघर में बहुत समय तक शांत बैठने लगीं। कभी आँखे बंद करके बैठती। कभी मन में उत्पन्न गहरे विचारों में डूब जाती तो कभी मन ही मन खुद से ही मुस्कुराती। माँ और बुआ जी को उसकी शरारतें कम हो गयी, इसलिए एक ओर अच्छा लगता तो दूसरी ओर उसका बदला हुआ व्यवहार देखकर चिंता भी होती। मामाजी दोनों को समझाते 'आप लोग चिंता मत करो। भगवान उसका ध्यान रख रहे हैं। समय आने पर सब योग्य कार्य वह करवाँ लेंगे। आप विश्वास रखिए।'

लक्ष्मीबाई रोज की तरह आज लीला को सुबह उठाने गयी। देखा तो लीला अपना सब काम निपटा कर पूजा घर में खिड़की के सामने का हिस्सा गोबर से लीप रहीं थीं। 'अरे, बेटी सुबह सुबह यह क्या कर रही हो?' लीला ने इशारे से ही उन्हें चुप रहने को कहा। लक्ष्मीबाई खुद से ही बोली, 'क्या करूँ मैं इसका जो दिल में आता है वही करती हैं।' लीला ने जमीन अच्छे से लीप पोत ली। सुंदर सी रंगोली

निकाली, उसपर पीढ़ा रखा और दोनों हाथ जोड़ते हुए वहाँ बैठ गई। पाँच दस मिनिट बीते होंगे। उतने में खिड़की से एक तेज प्रकाश पुंज अंदर की ओर आते दिखाई दिया। लीला ने उसे पकड़ने के लिए अपने हाथ जैसे ही आगे बढ़ाए, उसके कानों पर धीर-गंभीर स्वर सुनाई दिया। ”स्पर्श मत करो सहन नहीं कर पाओगी।” लीला ने तुरंत अपने हाथ पीछे कर लिए और अनिमिष नेत्रों से उसकी ओर अपलक निहारती रही। एक क्षण के लिए वह तेज़ पुंज पीढ़े पर टीका और वापिस खिड़की की दिशा से होते हुए बाहर जाने लगा। थोडे ही क्षणों में खिड़की से बाहर निकल कर अदृश्य हो गया लेकिन उस पीढ़े पर बाँसुरी बजाने वाले कृष्ण कन्हैया के पदचिन्हों के निशान प्रकट हो गये थे। एक पूरा पद और दूसरे पद का सिर्फ पंजा रखा हुआ प्रतीत हो रहा था। लीला ने सभी को जल्दी जल्दी आवाज देकर बुलाया ‘माँ, बुआजी, मामाजी देखो तो, कृष्ण आकर गया। उसने उसका दिया शब्द सच करके दिखाया।’

# ।। ॐ ।।

श्री मंगेशी के मंदिर में एक दिन एक कीर्तनकार आए। वे बोले, "जीवन में शिक्षा का बहुत महत्त्व है। अगर आपको जीवन में कोई उद्देश्य प्राप्त करना हैं तो शिक्षा के महत्त्व को समझना ही चाहिए।" लीला ने वहाँ यह सुना। उसे कीर्तनकार के शिक्षा के प्रति यह उद्गार बहुत अच्छे लगे। उसने मन ही मन निश्चित किया किसी भी तरह मैं सातवीं की परीक्षा पास करुँगी और आगे की शिक्षा भी जरुर पूरी करुँगी लेकिन यह किसे बताऊँ? लक्ष्मीबाई और बुआजी तो जीवन में आई विपरीत परिस्थितियों से पहले ही बहुत परेशान थी। मैं किससे बात करुँ? आख़िर लीला स्वंय ही विद्यालय के हेडमास्टर से मिलने पहुँची और उनसे बोली, 'मास्टर जी मुझे सातवीं की परीक्षा देनी है।' हेडमास्टर लीला के घर की आर्थिक स्थिति और उसके शरारती स्वभाव से अच्छी तरह वाकिफ थे। वे बोले, 'देखो लीला सातवीं की परीक्षा आसान नहीं है और आज तक तुम्हें परीक्षा में मिलें अंक भी कोई विशेष नहीं हैं। ऐसा करते है मैं तुम्हें एक गणित का एक सवाल देता हूँ, अगर वह तुमने बराबर हल किया तो तुम सातवीं की परीक्षा का फॉर्म भर सकती हो।' लीला को उन्होंने सवाल दिया लीला ने उसे हल करने की कोशिश की लेकिन वह सवाल हल कर न सकी। यह देखकर हेडमास्टरजी ने शांति की साँस ली लेकिन लीला कहाँ हार मानने वालों में से थी? वह अलग-अलग तरीके से हेडमास्टर जी को समझाने लगी कि सातवीं की परीक्षा पास करना उसकी दृष्टी से उसके लिए कितना जरुरी है और निश्चित रूप से पास होने के लिए वह कड़ी मेहनत भी जरुर करेगी लेकिन हेडमास्टर जी उस पर विश्वास करने को तैयार नहीं थे। आख़िर लीला कृष्ण को शरण जाकर बोली, "कृष्ण, बुद्धिदाता तो तुम्ही हो, हेडमास्टर जी को हाँ बोलने की बुद्धि दो न।" ऐसी प्रार्थना करके वह वापस मास्टर जी के पास गयी। हाँ-ना करते करते आख़िर मास्टर जी ने लीला को अनुमति दे दी लेकिन उसे सावधान करते हुए कहा, "लीला पढ़ाई करके पास होने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।"

घर आकर लीला ने माँ और बुआ जी को यह खुश खबरी बताई, "मुझे मास्टर जी ने अनुमति दे दी है। अब मैं परीक्षा दूँगी।" माँ बोली, "अभी नाच रही हो

सचमुच कड़ी मेहनत करके पास होकर दिखाओ। खाली पैसा और समय बर्बाद मत करना।"

लीला अब पूरी तरह परीक्षा की तैयारी में जुट गई। आगे परीक्षा संपन्न हुई। छुट्टीयाँ लग गई। हमेशा की तरह मंगेशी की यात्रा के लिए यात्री आने लगें। हर साल की तरह बेलगाँव के सराफ हेरेकर जी भी अपने पूरे परिवार के साथ दर्शन के लिए आये। वे भोजन के लिए लक्ष्मीबाई के यहाँ आते थे। हेरेकरजी की बहुएँ समुद्र स्नान के लिए जाते समय लीला को साथ ले जाती। स्नान के समय अपने शरीर के ऊपर के सारे स्वर्ण आभूषण निकाल कर लीला को पहनाकर किनारे पर बिठा देती। जैसे ईश्वर लीला का आभूषण पहनने का शौक इस तरह पूरा करवाँ रहा था। हेरेकरजी की छोटी बहू को छोटा बच्चा था। वह बाया (लीला) के साथ बहुत ही घुल-मिल गया था। उसे बाया हमेशा उसके साथ लगती थी। धीरे धीरे छुट्टियाँ खत्म होने को आ गई और परीक्षा के परिणाम का दिन पास आने लगा।

सुबह सुबह लीला को सपना आया। मंगेश के मंदिर की सीढ़ियों पर एक साधु खड़ा था। उसने लीला को पास बुलाकर उसके हाथ पर तीर्थ दिया और पूछा 'कैसा लगा?' लीला बोली, 'तीर्थ के जैसा लगा।' फिर से लो, फिर से पूछा 'कैसा लगा?' 'शक्कर जैसा मीठा मीठा लगा।' लीला ने जवाब दिया। उसपर हँसते हुए वह लीला से बोलें, 'बेटी तुम्हारा परीक्षा का परिणाम भी ऐसा ही मीठा मीठा आएगा' और वह साधू वहाँ से चले गए।

आगे दो तीन दिनों में परीक्षा का परिणाम आया। सब लोग आश्चर्यचकित होकर देखते ही रह गए। लीला सब बच्चों में दूसरे नंबर से पास हुई थी।

लीला की खुशी का ठिकाना न रहा। अब वह माँ और बुआ जी के पीछे लगीं मुझे आगे की पढ़ाई करनी है, मुझे मुंबई भेजो। वे दोनों तो हैरान-परेशान रह गई। मुंबई इतनी दूर है। वहाँ तो जान पहचान का कोई भी नही है। अकेली लड़की को कैसे अचानक भेज दें। एक दिन बेलगाँव के सराफ हेरेकर जी दर्शन के लिए आए। उन्हें बाया का रिजल्ट पता चला और उसे आगे पढ़ने मुंबई जाने की इच्छा है यह भी पता चला। वे लक्ष्मीबाई से बोलें, 'मामी आपको सच बताऊँ, हमारा छोटा पोता बाया को बहुत याद करता है। उसको आगे पढ़ने की इच्छा है तो मुंबई भेजने से अच्छा है उसे आप बेलगाँव भेजो। बेलगाँव में वह हमारे घर पर रहेगी और आगे की पढ़ाई पूरी करेगी। खर्चे की चिंता आप मत करो। हमारे घर के बच्चों के जैसी

लीला की भी व्यवस्था हो जाएगी।' लक्ष्मीबाई को तो ऐसा लगा जैसे हेरेकरजी के मुख से भगवान ही बोल रहे हैं लेकिन लीला का मन तो मुंबई जाने की ओर खींचा जा रहा था। आख़िर मंदिर में कौल लगाकर पूछा तो उत्तर में आया बेलगाँव हेरेकरजी के यहाँ जाओ।

मंगेशी जैसे छोटे गाँव में पली-बढ़ी लीला जो कभी अपने गाँव से बाहर निकलीं नहीं थी, अब उसके जीवन ने एक नया मोड़ ले लिया था।

हेरेकर परिवार के सभी सदस्यों ने लीला के साथ अपने घर के एक सदस्य के समान ही व्यवहार किया। उनका सराफी (सुनार) का धंधा था। दुकान से आते समय हीरे-जवाहरात और नकद रुपए पैसों की एक गठरी बाँधकर घर लाते। वह गठरी आने के बाद लीला के ही हाथों में सौप देते। इतना लीला पर उन सब का विश्वास था। वह उसे अंदर जाकर अलमारी में रख देती। बेलगाँव में लीला का मुख्य काम था रोज विद्यालय जाना और उस छोटे बच्चे के साथ खेलना। इस प्रकार लीला की ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़ाई विद्यालय के गुरुजन और हेरेकर कुटुंबियों की मदत से पूरी हो गई। लीला विद्यालय में पढ़ाई-लिखाई, गायन और वक्तृत्व में हमेशा आगे रहती।

अच्छे अंकों से लीला ने ग्याहरवी की परीक्षा पास कर ली। पढ़ाई के प्रति रूझान होने के कारण अब वह कॉलेज जाने के सपने देखने लगीं। हेरेकरजी के बड़े बेटे ने उससे कहा, 'लीला मैं तुम्हें कॉलेज में ग्रंथपाल की नौकरी मिलवा देता हूँ। उससे तुम्हें तीस रुपए पगार मिलेगा। फीस भी देनी नहीं होगी और इससे तुम अपनी आगे की पढ़ाई भी जारी रख सकोगी।' ऐसी बातें वहाँ चल रही थी। इतने में उसका छोटा भाई वहाँ आया और वह भी चर्चा में शामिल होते हुए बोला, 'लीला, क्या निश्चित किया है तुमने?' आगे थोड़ा सोचकर वह बोला, 'अरे अण्णा कितने शिक्षित लोग बेरोजगार हैं। मुझे लगता है लीला ने ट्रेनिंग कालेज में जाकर वहाँ साल भर का कोर्स पूरा करके शिक्षिका की नौकरी कर लेनी चाहिए। इससे वह उसकी माँ और बुआ जी की जिम्मेदारी भी उठा सकेंगी और उनके कष्ट भी खत्म हो जाएँगे।' लीला को भी यह बात पसंद आ गई। इस प्रकार कृष्ण ने उसे उसके कर्त्तव्यों का एहसास भी करवाँ दिया। उसने ट्रेनिंग कालेज में प्रवेश ले लिया। वहाँ की मुख्याध्यापिका प्रसिद्ध कवयित्री इंदिरा बाई संत थी। उनका लीला पर बहुत स्नेह था। लीला के शिक्षण पूर्ण करने में हेरेकरजी के साथ साथ संतबाई का भी बड़ा योगदान था।

ट्रेनिंग कॉलेज में प्रवेश लेने के बाद बुआ जी लीला के साथ बेलगाँव में अलग घर लेकर रहेगी, ऐसा सब ने मिलकर निश्चित किया। बुआजी बेलगाँव में लीला के पास आ गई। हेरेकरजी के एक रिश्तेदार गिंडे बाबा कॉलेज के पास वडगाँव में रहते थे। हेरेकरजी की सिफारिश पर उन्होंने उनके घर के दो कमरे इन दोनों को उपयोग में लाने के लिए दे दिये। बेलगाँव में जब से लीला आई थीं, उसका मंगेश का, नवदुर्गा का और कृष्ण का हमेशा चिंतन मनन चल रहा था। उसे हम 'ध्यान' भी कह सकतें हैं। उसे मंगेशी का मंदिर, वहाँ का वातावरण, दैवी सुगंध की हमेशा याद आती रहती। माँ और बुआ जी से अपने जन्म के पहले का दृष्टांत और जन्म के बाद घटित घटनाओं की एक एक बात याद करके आश्चर्यचकित रह जाती। उसे हमेशा यह एहसास रहता कि पितृतुल्य मंगेश व मातृतुल्य नवदुर्गा की कृपा दृष्टी से ही उसके जीवन में घटनाएँ घट रही हैं। जैसे उसे मदत करके वे उसके जीवन को आकार प्रदान कर रहें हैं। उसे तैयार कर रहे है। उसे इस बात का अच्छे से एहसास था कि उसे तो सिर्फ उन्होंने बताए और दिखाये मार्ग पर पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ चलना है।

बेलगाँव में साने नाम के एक किताबों के दुकानदार थे। एक दिन अचानक वे लीला के घर आकर बोले, 'अरे, मैं कुछ गीता की किताबें लाया हूँ। कल से मुझे बार बार लग रहा था कि यह गीता की किताबें आपको लाकर दूँ, ताकि आप इसे लोगों में बाँट सकें।' लीला को बहुत आश्चर्य हुआ। यह सज्जन जान पहचान के भी नहीं है फिर इनको ऐसा क्यों लगा होगा? उसने बुआ जी की ओर देखा। बुआ जी बोली, 'ठीक है, साने काका वह किताबें आप यहाँ रख दीजिए। उसका क्या करना वह देखते हैं। यह किधर जाएगी बाहर बाँटने?' 'अरे, वह तो मुझे भी कुछ पता नहीं है।' साने जी पूरी ईमानदारी से बोलें।

लीला को भी अंतर्मन से अब यही लगने लगा था कि आजू-बाजू के गाँव में जाकर मैंने गीता का प्रचार-प्रसार करना चाहिए। यह कृष्ण की इच्छा दिख रही है। नहीं तो मेरे जैसी नादारी पर शिक्षा लेने वाली लड़की के पास गीता की किताबें खरीदने के लिए पैसे कहाँ से आएँगे? मेरी इस समस्या को ध्यान में रखकर उसने (कृष्ण) साने जी को गीता की किताबें मुझे देने की प्रेरणा दी होगी। ऐसा सोचकर लीला ने आजू-बाजू के गाँव में जाकर गीता बाँटने का काम शुरू किया। इस प्रकार से जैसे श्रीकृष्ण कार्य का श्रीगणेश हो गया।

२७ नवंबर १९५१। आज सुबह से लीला का मन बहुत बेचैन था। कुछ अलग सा

लग रहा था। मन बहुत भाव विहृल हो रहा था। कुछ करने को मन ही नही हो रहा था। शांति से एक जगह बैठकर कृष्ण का चिंतन मनन करने का मन कर रहा था। आख़िर वह पूजा घर में गयी। दिया बत्ती लगाई, प्रणाम किया और आँखें मूँद कर शांति से बैठ गई। अंतर्मन से जैसे प्रेरणा हो रहीं थीं कि वह परम् शक्ति (परमात्मा) उससे संवाद करने का प्रयत्न कर रही है। प्रथमत: तो वह उसे मंगेश के रुप में दिखा फिर धीरे धीरे कृष्ण के रुप में दिखा। फिर बोला, "ताई, इधर आओ, मुझे तुम्हें कुछ दिखाना है।" ऐसा बोलकर वह लीला को ध्यानावस्था में जैसे गहरी गुँफा में ले गया और बोला, "यह देखो, मेरा सत्यस्वरुप, हाथ लगाकर देखो।" और उसने वहाँ हाथ लगाकर देखा तो वहाँ 'ॐकार' था और 'ॐकार' देखते ही लीला भावविह्वल हो गई क्योंकि वह तो उसे मंगेश के रुप में देख रहीं थीं। उसने उसे प्रणाम किया। इस पर कृष्ण ने कहा, "ताई, मैंने तुम्हारा प्रणाम स्वीकार किया है। मुझे तुम्हारे द्वारा कार्य करना है। मुझे वचन दो कि तुम्हारा व्यवहार हमेशा बिल्कुल मेरे बताएनुसार ही रहेगा।" इस प्रकार लीला ने उस दिन कृष्ण को वचन दिया। आगे कृष्ण ने कहा, "ताई, आज मैंने तुम्हें ताई कहा है इसलिए मेरे भक्त भी तुम्हें ताई नाम से ही पहचानेंगे। तुम्हें पूरी दुनिया में घुमकर कार्य करना है। इसकी शुरुवात १९९० में मैं तुम्हें अमेरिका ले जाकर करुँगा।"

धीरे धीरे लीला को होश आने लगा। आँखों से अखंड अश्रूधारा बह रही थी। लीला का गौरवर्ण एक अलौकिक तेज से प्रज्वलित होकर सुवर्णकांतिमय हों गया था। ऐसे ही भगवान के सामने बैठकर उसके अस्तित्व का आनंद लेने की भावना मन में उठ रही थी। इतने में बुआजी की पुकार कानों पर पड़ी। 'अरे लीला, आज कितनी देर पूजा करोगी, कॉलेज नहीं जाना क्या? जल्दी जल्दी आँखे पोंछते हुए बोली, 'अरे बाप रे, बुआजी सच में, मुझे देरी हो गई, जल्दी जल्दी अपना काम खत्म करके मैं निकलती हूँ।' उस भावसमाधी से बाहर निकलने का मन नहीं हो रहा था। किसी से बात करने की इच्छा नही थी।

अपने आप में मस्त रहकर ही उस दिव्य आनंद की अनुभूति लेने का मन हो रहा था। इस दिव्य आनंद को कैसे प्रकट करें, यही उसे समझ नहीं आ रहा था। चुपचाप उठकर अपना काम निपटाने लगी। बुआजी तो उसकी ओर देखती ही रह गई। आज उन्हें लीला कुछ अलग ही प्रतीत हो रहीं थीं। चेहरा दिव्य कांति और आनंद से दमक रहा था। यह हमारी ही लीला है न? जो देखो वह आश्चर्य कारक ही लग रहा है। साने जी का आना, गीता की किताबें लाना, इसकी यह

परमावस्था, भाभी जो बोलतीं है कि इस लड़की के सिर पर ईश्वर का वरदहस्त है वह सच ही है।

आज आषाढ़ मास की एकादशी, बुआजी का और लीला का व्रत था। बुआजी रसोईघर में गई तो सारे डिब्बे खाली थे। व्रत की कोई भी खाद्य सामग्री घर में नहीं थी। पैसे देखने लगीं तो वह भी पूरे नहीं थे। बुआजी ने लीला को पूछा, ‘शायद कृष्ण की इच्छा है कि आज हम निर्जला एकादशी का व्रत करें।‘ ‘देखते हैं बुआ जी, जैसी उसकी इच्छा होगी वैसा होगा।‘ ऐसा बोलकर लीला गीता का पाठ करने बैठ गई। पाठ करते करते उसे अचानक किताब पर एक हाथ दिखने लगा और आवाज आया “गीता में दो रुपए रखें है वह ले लो।“ वह इधर उधर देखने लगीं। जो मैंने सुना वह सच है क्या? देंखे तो सही, ऐसा सोचकर उसने गीता के पन्ने पलटने शुरू किये और देखा तो क्या आश्चर्य? सचमुच वहाँ एक दो रुपये की नोट रखी हुई थी। उस समय में दो रुपए के नोट की भी बहुत कीमत थी। उसने बुआ जी को जोर से पुकारा, ’बुआ, यह लो दो रुपए।’ बुआ भीतर आते हुए बोली, ’अरे, किधर रखें थे, मुझे तो नहीं दिखाई दिए।’ ‘अरे वह तो मेरे पास भी नहीं थे लेकिन मुझे ताई (दीदी) बोलने वाले मेरे भाई ने दिए। अब तुम्हें व्रत की जो जो सामग्री लानी हो वह जाकर लेकर आओ और बुआजी, मेरे कृष्ण के भोग के लिए कुछ अच्छा मीठा लेकर जरुर आना।’ बुआ का चेहरा प्रश्नांकित, ‘क्या बाबा इस लड़की का एक एक? क्या बोलती है क्या करती है। इसकी बात इसी की समझ में भी आती है कि नहीं क्या पता?‘ ऐसा बोलते बोलते हाथ में थैला लेकर सामान लाने के लिए बाहर गयी। लीला फिर से गीता पाठ करने में मग्न हो गई।

उन दिनों गोवा मुक्ति संग्राम चल रहा था। गोवा से कोई वस्तु बाहर नहीं भेजी जा सकती थी और न ही गोवा के लोगो को भारत से मदत की जा सकती थी। लक्ष्मीबाई अकेली मंगेशी में और बुआजी व लीला वडगाँव में रह रहे थे। लीला को माँ की बहुत चिंता हो रही थी। माँ की मदत कौन करेगा? अब तो यात्री भी नहीं आते होंगे। माँ को पैसे कैसे मिलेंगे? घर में आय का दूसरा स्रोत भी नहीं है। खाने पीने के लिए भी कुछ है कि नहीं घर में क्या पता? जाकर आऊँ तो जाने की भी बंदी है। कुछ सामान, पैसा भेजने के लिए भी बंदी है। लीला को कुछ सूझ ही नहीं रहा था। बुआ जी भी चिंतित हो रही थी। उन्होंने कहा, ‘लीला, तुम कृष्ण को प्रार्थना करो न।’ बुआजी को धीरे धीरे विश्वास होने लगा था कि जब लीला द्वारा प्रार्थना की जाती है तो त्वरित फलित होती है।

लीला ने भी कृष्ण से बिनती के स्वर में प्रार्थना की, 'कृष्ण, तुम्हारे सिवा हमारा कौन है? माँ, बाप, भाई, सखा, बंधू सभी कुछ तो तुम्ही हो। माँ की मदत करो न।!' कृष्ण का उत्तर आया, "माँ की चिंता मत करो, माँ की पूरी जिम्मेदारी अब मेरी हैं लेकिन मेरी एक शर्त है, तुम्हारे पास आने वाला हर इंसान दो निवाले खाकर, पानी पीकर तृप्त होकर जाना चाहिए; उसके सिवाय नहीं जाना चाहिए। अगर तुम मुझे ऐसा वचन दे सकती हो तो ही माँ की आगे से पूरी जिम्मेदारी मेरी होगी।" लीला के लिए तो न कहना नामुमकिन ही था क्योंकि कृष्ण के शब्द के बाहर कभी नहीं जाना ऐसा उसने निश्चय किया हुआ था।

इधर गोवा में, जिन लोगों के रिश्तेदार भारत में है और उन्हें भारत से अब किसी प्रकार की मदत नहीं मिल सकती, ऐसे लोगों की सूची बनाई गई और उन्हें कवड़े मठ की ओर से प्रतिमास नक़द रकम देकर मदत की जाएगी ऐसा घोषित किया गया। प्रति व्यक्ति दस रुपए मदत करना निश्चित हुआ। इस प्रकार लक्ष्मीबाई को एक तारीख को बीस रुपए मिले। सभी लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। लक्ष्मीबाई तो अकेली है फिर उन्हें बीस रुपए क्यों? कुछ लोगो ने मठ में जाकर शिकायत की, लेकिन स्वामीजी ने कहा एक बार उस आदेश पर हस्ताक्षर हो चुके हैं। अब उसमें कोई बदलाव नहीं किया जाएगा। सालभर ऐसे ही मिलेंगे। कृष्ण की इच्छा के आगे कौन क्या कर सकेगा? उन बीस रुपयों में लक्ष्मीबाई का पूरे महिने का खर्चा अच्छे से पूरा हो जाता।

बुआ जी और लीला बेलगाँव में जिस गिंडेबाबा के घर में रहती थी वह हमेशा लीला का उपहास करते थे। वे हमेशा पंढरपूर वारी (भजन कीर्तन करते हुए तीर्थक्षेत्र की यात्रा पर जाना) के लिए जाते और ज्ञानेश्वरी पढ़ते थे। एक दिन वे गंभीर चेहरा करके बैठे थे। वारी पर जाने का समय पास आ गया था लेकिन पैसों की व्यवस्था नहीं हुई थी। वारी में कैसे जाया जाए, यह चिंता उन्हें सता रही थी। यह देखकर लीला बोली, 'क्या हुआ बाबा? चिंता क्यों कर रहे हो?' 'अरे लीला, मुझे वारी में जाना है और पैसों की व्यवस्था नहीं हो रही है अरे, तुम मेरी ओर से कृष्ण को बताओगी क्या? तुम्हारा कृष्ण मेरा इतना काम करेगा क्या?' 'बाबा, आप ऐसा क्यों बोल रहे हो, आप तो ज्ञानेश्वरी का पाठ करते हो, वारी में जातें हो आपको तो पता है कि यदि हृदय से प्रार्थना की जाए और उस पर पूरा विश्वास रखा जाए तो निश्चित रुप से वह हमारे पीछे खड़ा रहता है।'

'अरे, मेरी ओर से तुम कहो न, व्यवस्था करने के लिए।' लीला बोली, 'कोई बात

नहीं बाबा, हम प्रार्थना करेंगे।'

बाबा ने हमेशा की तरह रात में ज्ञानेश्वरी पढ़ी और पेटी में रखी, बाहर से ताला लगाकर सोने चले गए। इधर कृष्ण ने लीला को सुबह सुबह उठाया और कहने लगा, "जाओ जाकर उसे कह दो उसकी ज्ञानेश्वरी में पैसे रख दिए हैं। वह लो और वारी करने जाओ।"

सुबह उठते ही लीला दौड़ते दौड़ते बाबा के पास गयी और बोली, 'बाबा, आपके जाने की व्यवस्था कृष्ण ने कर दी है। आपकी ज्ञानेश्वरी में पैसे रखे हैं वहाँ से लो और वारी करने जाओ।"

वे आश्चर्यचकित होकर देखते ही रह गए। जल्दी जल्दी चाबी लाकर पेटी से ज्ञानेश्वरी बाहर निकाली और देखा तो क्या, वहाँ सचमुच आवश्यकता पूर्ति के पैसे रखे हुए थे। वे अत्यंत भावुक हो गए। रोते-रोते बोले, 'अरे लीला, सचमुच तुम्हारे कृष्ण ने मुझे पैसे दिए रे। धन्य भाग्य हमारे जो तुम हमारे घर रहने आयी हो।'

आगे वे वारी करके आए। आने के बाद उनका इमली के पेड़ों का सौदा उनके मन जैसा हुआ और उनके पास पैसे आ गए। वह पैसे लेकर वे लीला के पास गए और बोले, 'लीला, यह पैसे लो।' 'बाबा, आप मुझे पैसे क्यो दे रहे हो? आपकों कृष्ण ने दिए थे, उसके पैसे उसे ही वापस करो।' 'अच्छा ऐसा बोलतीं हो। ठीक है।' ऐसा बोलकर उन्होंने पैसे ज्ञानेश्वरी में रख दिए और पेटी को बाहर से ताला लगा दिया और प्रार्थना की। दूसरे दिन सुबह उठकर देखा तो चाबी तो उनकी कनपटी पर लगीं थीं, ताला खोला तो पैसे गायब थे। जैसे आए थे वैसे ही चले गए। कृष्ण कृपा ही केवलम्।

आगे कुछ दिनों बाद लीला का ट्रेंनिंग कालेज की परीक्षा का परिणाम बहुत अच्छा आया। कृष्ण ने उससे कहा, "मैं तुम्हें खानापुर में नौकरी देता हूँ।" कृष्ण के बताएनुसार लीला को सचमुच खानापुर के सरकारी स्कूल में नौकरी लग गई। वह तारीख थी २५ अगस्त १९५६। लीला अब कमाने लगीं थीं। माँ और बुआजी की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने के काबिल हो गयी थी।

खानापुर की शाला में काम करते हुए तीन चार दिन ही बीते थे, शाला में वार्षिक इन्स्पेक्शन शुरू हुआ। उसके मुख्य थे चाटे साहब। वे लीला की कक्षा में आए और विद्यार्थियों से गणित और शास्त्र के एक एक प्रश्न पूछने लगे। बच्चों को प्रश्नो के

उत्तर देने नहीं आ रहे थे। यह देखकर तो उनका पारा चढ़ गया। वे गुस्से में आकर चिल्लाने लगे, “आप करतीं क्या हो? बच्चों को कैसे कुछ भी नहीं आ रहा है?” लीलाताई बार बार बता रही थी, ‘सर मुझे यहाँ आकर तीन चार दिन ही हुए हैं। धीरे धीरे बच्चों से तैयारी करवाँ लूँगी।‘ लेकिन उनका पारा तो नीचे आ ही नहीं रहा था। वे चिल्लाते ही जा रहें थे।

अचानक लीलाताई कृष्ण भाव में जाकर उनसे बोली, “अरे, सिर्फ गीला गमछा पहनकर भगवान की पूजा करने से पूजा हो नहीं जाती? इंसान में भगवान को देखना सीखों। वह बार बार बता रही हैं। उसका कुछ सुने बगैर चिल्ला क्यों रहे हो?“ मुख्याध्यापिका वागले बहिनजी आवाज सुनकर भागती हुई आई और बोली, ‘अरे बहिनजी, क्या हुआ? चाटे साहब को ऐसा क्यों बोल रही हो?’ इतने में चाटे साहब ने स्वयं उन्हें रोका और बोले, ‘उन्हें बोलने दीजिए।‘ ऐसा बोलकर वे शांत खड़े रहे। लीला ताई भी उन्हें जो बोलना था वह बोलकर तुरंत वहाँ से बाहर निकल गई। वास्तव में तब तक किसी को भी लीलाताई के बारे में कोई कल्पना नहीं थी। चाटे साहब तो गहरी सोच में पड़ गए। उन्होंने लीलाताई को संदेशा भेजा, “मैं शाम को आपसे मिलने आ रहा हूँ।” वे भी भगवान को मानने वालों में से थे। लीला ताई द्वारा बोले गए शब्द उनके मन में घर कर गए थे। उन्हे इस बात का एहसास हो गया था कि इनमें कुछ अद्भुत अलौकिक शक्ति है।

शाम के समय वे लीला ताई के यहाँ आए। इधर उधर की बातें होने के बाद कृष्ण ने अचानक उनसे कहा, ”अरे, तुझे लड़का जरुर होगा। यहीं तुमको पूछना था न?” वे आश्चर्यचकित होकर प्रणाम करने नीचे झुके। धीरे धीरे एक एक प्रसंग से लीलाताई द्वारा चल रहे कृष्ण कार्य, उनके कृष्णभाव की महती लोगों को होने लगी। अनजाने में ही शेणवीबाई अब ताई बन गई। हर किसी को यह लगने लगा कि यदि शेणवी बाई के कानों पर कोई बात डाली जाए, और उन्होंने यदि हमारे लिए प्रार्थना की तो जैसे वह बताएँगी वैसी घटनाएँ घटती हैं। कभी कभी वह ऐसा भी कहती हैं कि काम बहुत कठिन है। उसका भी अनुभव काम करने के समय आता था। अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता। लोगों को ‘उस’ उत्तर की अनुभूति आने लगी। इससे लोगों में श्रीकृष्ण के प्रति विश्वास बैठने लगा। जैसे जैसे विश्वास दृढ़ होता गया, वैसे वैसे श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा भाव बढ़ने लगा। लोगों के मन में विश्वास आ गया कि शेणवीबाई के द्वारा आने वाले उत्तर श्रीकृष्ण के ही होते हैं और उसी के अनुसार आगे की घटनाएँ घटती हैं। इस एहसास के कारण

ही लोगों का रुझान इस ओर होने लगा। कितने लोग प्रश्न पूछने, दर्शन करने शेणवीबाई के घर आने लगें।

गीता का प्रचार-प्रसार और कृष्ण के बताएनुसार लोगों को मार्गदर्शन करना ऐसा लीलाताई का कार्य अब चालू हो गया। एक बार कृष्ण ने उनसे कहा, ”मेरा एक भक्त मोटी अक्षरों में अंकित गीता ढूँढ रहा है, उसे पहुँचा दो।“ ‘ठीक है कृष्ण, भक्त का नाम क्या है?‘ “नाम नहीं बताऊँगा, अनगोल में जाओ। वह सज्जन वयस्क उम्र के है।“ अब सिर्फ वयस्क उम्र के सज्जन इस वर्णन से उन्हें कैसे ढूँढना? लेकिन लीलाताई ने कृष्ण का नाम लिया और वह अनगोल पहूँची। वहाँ एक दुकान में पूछताछ की। दुकानदार बोलने लगा, ‘अरे, सिर्फ ईश्वरभक्त और वयस्क उम्र के सज्जन, ऐसे कैसे बताऊँ, कितने वृद्ध लोग ईश्वर का नाम जपते रहते हैं।‘ इतने में कृष्ण ने कहा, “ताई, पोस्ट ऑफिस में जाकर देखो।“ ‘ठीक है।’ ऐसा बोलकर वह पोस्ट आफिस में गयी तो वहाँ पता चला ऐसे तो बहुत आदमी है। ‘लेकिन आप हमारे पोस्ट मास्टर जी के यहाँ जाकर आईए।‘ इस प्रकार ताई करंदीकर दादाजी नाम के सेवानिवृत्त पोस्ट मास्टर के यहाँ गयी और उनसे पूछने लगी, ‘दादाजी, आपको बड़े अक्षरों में अंकित गीता चाहिए है क्या? वे समझें नहीं। वे बोले ‘आप कौन हो? कहाँ से आई हो? आपकों कैसे पता चला?‘ ‘मुझे कृष्ण ने भेजा है। यह गीता देने मै आई हूँ।’ ऐसा बोलकर ताई ने गीता की प्रति उनको निकालकर दी। खोलकर देखते ही उनके मुख से जोर से उद्गार निकले, ’कृष्ण धन्य है तेरी महिमा, पिछले छः महीनों से मैं इस किताब को ढूँढ रहा हूँ। तू कितना भक्त वत्सल है।‘ तब से करंदीकर दादाजी लीला ताई के पास जाने लगें। उनसे सलाह मशवरा लेने लगे। आगे कुछ दिनों बाद कृष्ण ने कहा, ”हमें अनगोल जाना है। वह मेरी राह देख रहा है।“ कृष्ण के आदेशनुसार ताई करंदीकर दादाजी के यहाँ पहुँची। देखा तो वे बहुत बीमार थे और डॉक्टरों का कहना था उन्हें अस्पताल में ले जाना चाहिए। कृष्ण ने कहा, ”अस्पताल जाने की जरूरत नहीं है। दो तीन दिनों में तुम मेरे पास आ रहे हो। उसके पहले तुम्हें कुछ काम करने हो तो कर लो।“ इस प्रकार उन्होंने अपना मृत्युपत्र तैयार करवाँ लिया। दो तीन दिनों में उनका स्वर्गवास हो गया। यह करंदीकर दादाजी (ताईं को) लीला को मीराबाई कहते थे। उन्होंने ‘गोपीज लव फॉर श्रीकृष्ण’ नाम का पुस्तक लीला ताई को जानबूझकर उनकी कृष्ण भक्ति देखकर उपहार स्वरूप दिया था।

लीलाताई का खानापुर से स्थानांतरण चिकोडी नामक गाँव में हुआ था। उनके वहाँ

पहुँचने से पहले उनके द्वारा किए जा रहे कृष्ण कार्य और गीता प्रचार-प्रसार की महिमा वहाँ पहूँच गयी थी इसलिए थोड़े ही समय में शेणवीबाई से ताई में उनका परिवर्तन कैसे हो गया, वह लोगों के साथ साथ ताई को भी पता नहीं चला। ताई शाला में बच्चों के साथ साथ सहकर्मियों की सबसे प्रिय शिक्षिका थीं। गाँववालो की मुश्किलों में कठिन समय में हमेशा उनके पीछे खड़े रहने वाली ताई थीं। कृष्ण से मार्गदर्शन लेने लोग आते थे। संध्या समय में नित्य रुप से आरती की जाती थी। लोगों की मुश्किलों में, समय समय पर कृष्ण द्वारा मार्गदर्शन किया जाता, इन सबके द्वारा कृष्ण ताई को तैयार कर रहा था, उन्हें आकार दे रहा था। उसे जो कार्य ताई के द्वारा करवाँना था उसके लिए कृष्ण ने यदि कुछ करने कहा, 'व्यवहारिक दृष्टी से वह करना कठिन हैं,' ऐसा ताई ने यदि बोला तो कृष्ण तुरंत याद दिलाता, "ताई तुमने मुझे वचन दिया है न, कि मैं तुम्हारे शब्दों का शतश: पालन करुँगी, फिर मन में ऐसी शंकाएँ क्यों?" उस पर ताई तत्परता से उत्तर देती, 'नहीं मेरे लाल, मुझसे गलती हो गई, जो तुम कहोगे वहीं मैं करुँगी।'

# ।। ॐ ।।

सच मायने में तो लीलाताई की विवाह करने की इच्छा बिल्कुल नहीं थी। उन्हे लगता था कि पूरी जिंदगी जी जान से ऐसे ही कृष्ण कार्य करती रहूँ लेकिन माँ और बुआ जी की दिल की ख्वाहिश थी कि जनरीतिनुसार अपनी बाया ने भी घर-संसार बसाना चाहिए। एक बार ताई की ध्यानमग्न अवस्था में कृष्ण ने उनसे कहा, "ताई, आज मुझे दूध-शर्करा का भोग दिखाओ और देखो, यह तुम्हारे होने वाले पति है।" ताई आश्चर्यचकित होकर बोली, 'कृष्ण, क्या यह? यह सब करना ही चाहिए क्या? मुझे तो लगता है बस तुम बताओगे वह काम करना और मेरी शाला का काम, बस इतना ही करना।' "नहीं नहीं ताई, ऐसा नहीं चलेगा। विवाह, घर संसार करके भी ईश्वरीय कार्य कैसे किया जा सकता है इसका आदर्श अनेक संत महात्माओं ने दिया हुआ है। ऐसा ही आदर्श तुमको भी मेरे भक्तों के सामने रखना होगा।" आख़िर कृष्ण के ही शब्द वे! आगे उसकी योजनानुसार एक एक घटना घटती गई। नागपुर के श्री विनायक रामकृष्ण कर्वे मुंबई में रहते थे। श्री कर्वे सदाचारी, ईमानदारी से रहने वाले धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन थे। १५ अप्रैल १९६३ को ताई का विवाह उनके साथ संपन्न हुआ। इस विवाह में विशेष प्रसन्नता की बात यह थी कि, ऋषिकेश के स्वामी शिवानंदजी की ओर से आशीर्वाद पत्र और अक्षता आयी थी। उसमें उन्होंने लिखा था आपका जोड़ा तो लक्ष्मीनारायण जैसा है। आपको जीवन में सुख-शांति मिले और आपके हाथों से ईश्वरीय कार्य हो।

विवाह के पश्चात यह दोनों कुछ सालों तक दादर की रंगारी चाल में रहते थे। कुछ दिनों बाद मकान मालिक ने जगह खाली करने के लिए कहा इसलिए फिर जगह की तलाश शुरू हुई। श्रीमती ताई फड़के को अपने घर का एक कमरा किराए पर देना था। आगे उस जगह यह दोनों रहने लगे। वहाँ से ताई का आगे का मार्गक्रमण शुरू हुआ। एक दिन ताई फड़के ने लीलाताई को बुलाया और बोलने लगी, 'लीला यह जगह आपको ही को क्यों दी पता है? उसका एक कारण है, आप पहले जगह देखकर गये, उस रात मुझे सपने में दिखा, एक लहंगा-चोली पहनी हुई छोटी बच्ची मेरे सपने में आयी और मुझे बोलने लगी, 'अरे मैं आती हूँ, आती हूँ, बोल रही हूँ, तो तुम मुझे भोजन नहीं दोगी, ऐसा कहती हो?' (उन्होंने उस जगह पर

खाना बनाने की अनुमति नहीं है ऐसा कहा था) ऐसा सपना मुझे लगातार तीन शुक्रवार से आ रहा था इसलिए आखिर आपको ही जगह दी और खाना पकाने की अनुमति भी दी।' ताई कहती है, 'कितनी भाग्यवान हो फडकेताई आप, आपको साक्षात् नवदुर्गा ने दर्शन देकर मेरी मदत की है।'

आज तक का लीला ताई का मंगेशी से मुंबई तक का मार्गक्रमण बेलगाँव से होते हुए देखकर लगता है कि, जगह-जगह पर समय-समय पर नवदुर्गा और कृष्ण मिल कर उनकी मदत के लिए किसी न किसी इंसान को खड़ा कर रहे थे। कठिनाइयों का निवारण कर रहे थे। यह सहज रूप से समझ में आ रहा था।

विवाह पश्चात ताई और कर्वेजी एक शाम चौपाटी पर घूमने गए थे। इतने में साक्षात् चतुर्भूज, पितांबरधारी हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म लिए हुए साक्षात् श्रीकृष्ण आँखों के सामने दिखने लगे और मोहक मुस्कान लिए बोले, "मुझे आपके घर में जन्म लेना है; लेकिन याद रखो मेरे जन्म के बाद आने वाले साढ़े तीन साल बहुत ही कष्टमय होंगे शायद नौकरी जाने का समय भी आ सकता है लेकिन आयी हुई कठिनाइयों पर यदि थोड़ा भी गुस्सा किया, चिड़चिड़ाहट की तो वह मुझे बिल्कुल सहन नहीं होगा फिर मैं वहाँ क्षणभर के लिए भी नहीं रुकुँगा। चला जाऊँगा! देखो, दोनों मिलकर आपस में सहमति करो और मुझे बताओ। मैं आठ दिनों पश्चात पुनश्च आऊँगा।" यह सुनकर कर्वे जी भावुक होते हुए बोलें, "अरे लीला, मेरे कौन से जन्म के इतने पुण्य कर्म है जो हम विवाह बंधन में बँधे और मुझे भी तुम्हारे साथ कृष्ण कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। हम दोनों किसी भी तरह के कष्ट सहेंगे लेकिन कृष्ण को अपने घर आने जरुर जरुर कहेंगे।" ताई ने भी मुस्कुराते हुए प्रसन्नचित होकर अपनी सहमति जताई। इस प्रकार उन्होंने कृष्ण को वचन दे दिया।

बाया के विवाह के पश्चात लक्ष्मीबाई और बुआजी फिर से मंगेशी में वास्तव्य करने लगे थे। मई के महीने में मंगेशी के मंदिर में अतिरुद्र पूजा का आयोजन किया गया था। उसके लिए दूर-दूर से काशी से पौरोहित्य करने विद्वान-शास्त्री पंडित आए हुए थे। उसी प्रकार गौड़ सारस्वत ब्राह्मण संघ के मठाधीश भी आए हुए थे। ऐसा माहौल बन गया था कि जैसे पूरा मंगेशी गाँव ही रुद्रपूजा की तैयारी में जुटा हुआ हो। इधर मुंबई में कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, सोना, मोती, पोवला ... ऐसी कुल मिलाकर पाँच वस्तुओं को साथ ले लो और तुम व बाबा दोनों तुरंत मंगेशी जाओ। रुद्र पूजा के पहले आप लोगों का वहाँ पहुँचना बहुत आवश्यक है।" आश्चर्य की

बात तो यह है कि दोनों ने एक शब्द से भी कृष्ण से यह नहीं पूछा कि वहाँ क्यों जाना है। वह दोनों सुबह सुबह मंगेशी पहुँचे। दोनो को अचानक आया देखकर माँ और बुआ जी तो खूशी से झूम उठी। थोड़े समय बाद ही लक्ष्मीबाई को साँस लेने में दिक्कत होने लगी तो वे बोली, 'मैं थोड़ी देर लेटती हूँ। इतने में कृष्ण ने कहा, "ताई, तुम उसके बाजू में बैठो। माँ मेरे पास आने के लिए निकल रही हैं। उसके मुख में हमने लायी हुई वस्तुएँ रखो और प्रार्थना करो।" इतना बोलने तक लक्ष्मीबाई की जीवन ज्योति परम् शांति के साथ अनंत में विलीन हो गई। किसी भी प्रकार की परेशानी न होते हुए कृष्ण ने उनका आखिरी दिन सार्थक कर दिया था। उनका भाग्य तो देखो उनके समाज के मठाधीश भी उस समय वहाँ उपस्थित थे। उनके मार्गदर्शन में, लक्ष्मीबाई की मृत्यु उपरांत के सभी धार्मिक विधि, रीति रिवाजों के साथ संपन्न हुए। लक्ष्मीबाई से मंगेशीवासियों के संबंध बहुत ही स्नेहपूर्ण थे, इसलिए उनके जाने से पूरा गाँव ही शोकाकुल हो गया था। लीला ताई बताती है, माँ ने बताये हुए तीन तत्त्व मेरे जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है। वह तत्व है:-

१. तुम्हारे दरवाजे के सामने रखे चप्पलों के ढ़ेर को अपनी संपत्ति समझो।

२. नमक न हो तो बिना नमक से खाओ, लेकिन किसी के सामने माँगने के लिए हाथ मत फैलाओ।

३. घर में सिर्फ सूखी रोटी खायी हो, लेकिन चेहरे पर तृप्ति पंचपकवान खाने की होनी चाहिए।

ताई के चेहरे की तृप्ति, समाधान और व्यवहार में रहीं अविचल शांति जैसे कृष्ण प्रेरणा की है वैसे ही माँ के द्वारा दी गई नसीहतों की भी है।

माँ के सारे विधी होने के पश्चात ताई और कर्वे जी अब बुआ जी को साथ चलने के लिए अलग अलग तरीके से मनाने लगे लेकिन बुआजी का हमेशा एक ही उत्तर होता, 'अरे, मुझे जल्दी से पोते-पोती की खुशखबरी दो। उनके लिए मैं मुंबई जरुर आऊँगी बाया, अभी ज़िद्द मत करो मैं यही ठीक हूँ। मंगेश की सेवा तो भी होगी मेरे हाथों से यहाँ।' आखिर भारी मन से दोनों बुआ जी के विचारों में ही अपनी सहमति दर्शाकर मुंबई वापस आ गये।

मुंबई में आने के बाद रोज़ नौकरी की तलाश करना, कृष्ण जैसी बतायेगा वैसी आराधना करना और जितनी हो सके उतनी लोगों की मदद करना, ऐसा ताई का दिनक्रम शुरू हो गया। एक दिन कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, हम पंद्रह सालों के

बाद अपने घर में रहने जायेंगे" और ध्यानावस्था में एक जगह दिखाई - "ताई, अब मैं तुम्हारे घर आऊँगा। मैं गोरे रंग का नाजूक सा सुंदर रहुँगा और सचमुच थोड़े ही दिनों में बच्चे के आने की आहट दोनों को हुई। ताई ने यह खुशखबरी बुआजी को बताई और कहा, "अब हम तुम्हारी एक न सुनेंगे, तुम्हें मुंबई आना ही होगा।" "हाँ हाँ बाया जरुर आऊँगी। लक्ष्मी भाभी रहती तो हम दोनों में से कोई एक जरूर आता, लेकिन अब मुझे ही सब बातों का ठीक से ख़्याल रखकर सब निभा लेना होगा। मैं अभी से धीरे धीरे तैयारी में लगती हूँ। बाया अब सँभल कर रहना।" ताई मन ही मन मुस्कुराते हुए बोली, 'अरे बुआ, अपने पीछे कृष्ण है और साक्षात् उसका ही आगमन मेरी कोख से हो रहा है फिर चिंता का कारण ही क्या?' इतने में कृष्ण ने कहा, "ताई मेरे जन्म के उन्नीसवे दिन बुआ मेरे पास आएगी।" 'क्या? कृष्ण क्या यह ऐसा? डेढ़ साल की उम्र थी तब पिता जी चल बसे, पिछले साल माँ नहीं रहीं और उसके पीछे-पीछे अब बुआ भी? कृष्ण मुझे लग रहा है मेरा पूरा जीवन सिर्फ तुम्हारे ही आधार पर है। मेरा सब कुछ तुम हो माँ, बाप, रिश्तेदार, भाई। सभी कुछ तुम हो। तुम्हारी इच्छा मेरे सिर आँखों पर।'

अब ताई को यह तीव्रता से लगने लगा था कि एक बार तो भी मंगेशी और नवदुर्गा के चरणों में माथा टेककर आना चाहिए इसलिए वे दोनों मंगेशी के घर आए। वापसी के समय बुआ उनके साथ आने वाली थी। उन्हें म्हापशा पहुँचने तक रात हो गई थी। सोचा आगे जाने से अच्छा है रात में यही विश्राम करते हैं। कल सुबह आगे के लिए निकलेंगे। रुकने के लिए बहुत जगह ढूँढी लेकिन कहीं जगह मिल नहीं रही थी, और कोई व्यवस्था भी नहीं हुई। पास में एक पोलिस स्टेशन था। कर्वे जी वहाँ पूछताछ करने गये। ताई की कठिन अवस्था, साथ में अधेड़ उम्र की बुआ जी, सारा हाल बताकर वे वहाँ पूछने लगे, 'किसी के यहाँ व्यवस्था हो सकती है क्या?' 'साहब, इतनी रात को कहाँ व्यवस्था होगी? आप ऐसा करो पड़ोस का कमरा खाली हैं आप लोग रात में वहाँ रुक जाओ। मैं आप लोगों को चाय कॉफी कुछ देता हूँ।' इतने में कृष्ण ने कहा, "आखिर पोलिस चौकी में हम आ ही गए।" इस प्रकार कृष्ण जन्म के पहले कारावास का दर्शन भी करवाँ दिया।

उधर से आने के बाद कृष्ण एक बार बाबा (कर्वे जी) से बोला, "बाबा, मैं जन्म एक ओर लूँगा और तुरंत दूसरी ओर जाऊँगा, आप डरिएगा मत।"

कृष्ण जो जो बातें बता रहा था उसकी वस्तुनिष्ठता आने वाले समय में सिद्ध हो रही थी।

२५ अगस्त १९६५ के दिन नंदा का जन्म हुआ। बच्चे के जन्म के थोड़ी देर बाद परिचारिका ताई से पूछने लगी, 'अरे, आपके साथ लाल जरी किनारी की साड़ी पहने हुए कौन सी महिला थी। आपकी प्रसुती होने तक वह यहाँ बैठी हुई थी।' 'अरे, नहीं नहीं ऐसा मेरे साथ कोई नहीं आया था।' इतने में ताई को एहसास हुआ कि, वह नवदुर्गा ही होगी। उस परिचारिका की क़िस्मत तो देखो उसे साक्षात् नवदुर्गा के दर्शनों का लाभ हुआ।

उनकी प्रसूति के थोड़ी देर बाद ताई को गंभीर स्वरुप की शारीरिक परेशानी होने लगी इसलिए उन्हें और नवजात शिशु को दूसरे बड़े अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया। वहाँ डाक्टरों ने ताई की तबीयत की जाँच पड़ताल की और कर्वे जी से कहा, 'आपके रिश्तेदारों को बुलाना हो तो बुला लीजिए क्योंकि मुझे मरीज़ की हालत गंभीर लग रही है।' यह सुनते ही ताई आँखें खोलते हुए बोली, 'किसी को बताने की जरूरत नहीं है। साक्षात् नवदुर्गा और कृष्ण साथ में है। थोड़ी देर में मेरी तबियत को आराम पड़ जाएगा। आप शांत रहिए।' थोड़ी देर में सचमुच ताई की तबीयत को आराम हुआ। ताई को अच्छा लगने लगा। कृष्ण ने जो कहा था, 'मैं जन्म एक ओर लूँगा और तुरंत दूसरी ओर जाना पड़ेगा, "यह वचन भी इस तरह सत्य साबित हो गये।

कृष्ण एक एक घटनाओं के द्वारा ताई को सीखा रहा था, आकार दे रहा था। उसका अनुभव ताई और बाबा को बार बार आ रहा था।

ताई जब अस्पताल में भर्ती थी तब भोजन वहीं अस्पताल से मिलता था लेकिन चाय नाश्ता घर से आता था। एक दिन बाजू की महिला से मिलने कोई दूसरी स्त्री आयी थी, उसने ताई से पूछा, 'यहाँ का खाना कैसा रहता है?' ताई ने कहा, 'खाना अच्छा रहता है लेकिन तीखा होता है।' दूसरे दिन पड़ोस की जो औरत नाश्ता लाती थी उसका गैस खत्म हो गया। बाबा को अचानक से ऑफिस का काम आ गया इसलिए वह भी आ नहीं सके। ताई का भूख के मारे बुरा हाल हो रहा था। कमजोरी के कारण उनकी थोड़ी देर के लिए आँख लग गई। इतने में अस्पताल की महिला रोज की तरह भोजन लेकर आयी। ताई को सोता देखकर वह थाली ढक कर चली गई। थोड़े समय बाद ताई का भोजन का समय हुआ इसलिए उठकर वे थाली लेने गई देखा तो अन्न के ऊपर तिलचिट्टा घूम रहा था, उन्होंने वह थाली वैसे ही बाजू में खिसका दी। वह भोजन करना तो असंभव था। इतने में कृष्ण ने कहा, "ताई मेरे द्वारा की गई व्यवस्था को नाम रखना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।

आज इसलिए ऐसा हुआ है।“ ताईं ने अत्यंत करुण स्वर में कृष्ण से याचना की, ‘नही मेरे राजा, मेरा उद्देश्य नाम रखने का बिल्कुल नहीं था; लेकिन ठीक है आज मैं एक पाठ सीख गई हूँ मेरे सामने आगे से जो भी रुखासुखा आएगा वह तुम्हारा ही प्रसाद होगा इसलिए कृष्ण आगे से मैं कभी भी, किसी भी अन्न को नाम नहीं रखूँगी। उसे पूर्णब्रम्ह समझकर ग्रहण करुँगी। ऐसे अनेक विविध प्रसंगों से कृष्ण, ताई को भविष्य की योजनाओं के लिए तैयार कर रहा था।

नंदा आज उन्नीस दिनों का हो गया था। आज १२ सितंबर, ताई का मन बहुत बैचेन था। सचमुच कृष्ण के बताएनुसार बिना किसी तकलीफ़ के उस दिन बुआ जी का देहावसान हो गया। कृष्ण के बोल सच साबित हो रहे थे। उसका अनुभव आ रहा था।

दो दिन बीत जाने पर कृष्ण ने ताई से कहा, ”अब मैं रुक नहीं सकता, अंधेरी जाना पड़ेगा। फलाने आदमी को जाकर बताओं आज तुम जिस कागजपत्रो में हस्ताक्षर करने वाले हो वह बिल्कुल मत करो। नहीं तो फंस जाओगे।“ ताई सोच में पड़ गई इतने छोटे बच्चे को किस के पास रखूँ? लेकिन उन्होंने सोचा कृष्ण की आज्ञा है तो पालन करना ही चाहिए। आखिर उन्होंने काम वाली बाई से कहा और उसके पास छोटे नंदा को रखकर, वे अंधेरी जाकर संदेशा दे आयी। उन्हे याद आया कृष्ण ने उन्हें पहले ही कहा था कि १९६५ से मैं आदेश देना शुरू करुँगा। शाम के समय ताई और बाबा ने कृष्ण के सामने खड़े होकर प्रार्थना की, ’हे कृष्ण परब्रह्मा, तुम्हारे बताएनुसार आदेश आने की शुरुवात हो चुकी है ऐसा लग रहा है। वह कार्य तुम हमसे करवाँ लो। वैसी शक्ति, संधी, मति तुम हमें प्रदान करो। आदेश देने वाले भी तुम हो और पालन करवाँ लेने वाले भी तुम हो। हमारी दृष्टि से कृष्ण, हमारा सब कुछ तुम, तुम और सिर्फ तुम्ही हो।’

नंदा अब दिन मास बड़ा हो रहा था। खेलने कूदने लगा था। कर्वे जी को उनका एक ऑफिसर बहुत परेशान कर रहा था। नौकरी जाने तक बात बढ़ गई थी। और इस मानसिक सदमे से वे बीमार हो गए। बगैर तनख्वाह की छुट्टियों के कारण कभी कभी घर में पैसा नहीं रहता। पहले की जमा-पूंजी में घर चल रहा था।

आगे जाकर घर का किराया देना भी मुश्किल हो गया। तब ताई ने पूरी स्थिति का अंदाजा मकान मालिक को दे दिया। वे बोले, ’आप चिंता मत करो। कर्वे जी ठीक हो जायेंगे। जब वे काम पर जाने लगेंगे तब जैसे जमेगा वैसा किराया दे देना।

दूधवाले भैया ने कहा, ’छोटा-सा मुन्ना घर में है। साहब जब अच्छे हो जायेंगे, तब उन्ही से पूरा पैसा लूँगा।’

ताई को, बाबा को कृष्ण के वाक्यों की याद आई। कृष्ण द्वारा कहे गये शब्दों का स्मरण हुआ। साढ़े तीन साल बहुत ही कठिन जायेंगे लेकिन मकान मालिक, दूध वाले भैया के रुप में ही कृष्ण, नवदुर्गा उनके पीछे खड़ी है। ऐसा दोनों को पूरा विश्वास था।

इसके पश्चात एक बार ताई की सासूमाँ को सपना आया। उसमें एक लहंगा-चोली पहनी हुई लड़की सपने में आई और बोलने लगी, ‘दादी, मुझे टीचरजी पढ़ाएँगी क्या? मुझे पढ़ने आना है।‘ वह बोली, ’हाँ, पढ़ाएगी न।’ और वह नींद से जाग गई। उसी दिन दोपहर में विद्यालय में नौकरी के लिए साक्षात्कार के बुलावे का पत्र आया। इस तरह छोटी बच्ची के रुप में नवदुर्गा ताई की मदद के लिए दौड़ कर आई।

ऑर्डिनन्स फॅक्टरी के विद्यालय में ताई का चयन हुआ और उनकी नौकरी भी शुरू हो गई। थोड़े ही दिनों में उन्हें अंबरनाथ फैक्ट्री के क्वार्टर में रहने जगह मिल गई। अब वे सब लोग अंबरनाथ में रहने लगे। अब ताई का दिन क्रम घर संसार के काम, छोटे बच्चे के लालन-पालन में, विद्यालय के कार्यों में और कृष्ण के आदेश अनुसार लोगों को मार्ग दर्शन करने में जाने लगा।

एक दिन रात साढ़े ग्यारह बजे कृष्ण ने ताई को उठाया और कहने लगा, ”ताई, अभी हम अंबरनाथ के उस भक्त के यहाँ जाकर आएँगे।“ इतनी रात को कैसे जाएँगे, इसलिए उन्होंने पूछा, ’कृष्ण, सुबह जल्दी जाएँगे तो चलेगा क्या?’ “नहीं ताई, बाबा को उठाओ अभी जल्दी जाना है।“ हम दोनों जाने के लिए घर से बाहर निकलें। रास्ते के कोने तक पहुँचे ही थे कि जिनके घर हम जा रहे थे, उन्हीं की गाड़ी सामने से आते हुँए दिखी। एक बड़ी कंपनी में वह अधिकारी थे। कृष्ण भक्त भी थे। उनकी गाड़ी को कृष्ण ने रोककर वापस उनके ही घर ले जाने को कहा। इतनी रात को इन दोनों को देखकर सच में उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ था। उसमे गाड़ी वापस घर लौटाने के लिए कहा तो वे थोड़े घबरा भी गये थे। घर आकर देखा तो उनकी पत्नी रो रही थी क्योंकि कंपनी में कुछ बहसबाजी होने के कारण ये महाशय चिढ़कर जान देने निकले थे। वह बोली, ’कृष्ण, आज सिर्फ तुम्हारे कारण ये घर वापस आये है। मैं मेरी चमड़ी के जूते बनाकर भी यदि तुम्हारे पैरो

में पहनाऊँ तो भी तुम्हारा एहसान उतार नहीं पाऊँगी। कृष्ण, हमेशा हमारे पीछे ऐसे ही खड़े रहो।'

इस प्रकार ताई और बाबा कृष्ण के वचनों में रहकर वह कहेगा वैसी, और जैसा कहेगा वैसी आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सभी प्रकार की मदद उसके भक्तों को कर रहे थे। ३ अक्टूबर १९६९, के दिन ताई के दूसरे बेटे संतोष का जन्म हुआ। संतोष पंद्रह दिन का हुआ और उस दिन अचानक बाबा के पेट में बहुत दुखने लगा। कितने उपाय किए लेकिन पेट का दुखना तो रुकने का नाम नहीं ले रहा था। आखिर उन्हें के ई एम अस्पताल में भर्ती कराया। वहाँ के डॉक्टरों ने तुरंत पूरी जाँच की और पेट का ऑपरेशन करने की सलाह दी। इस प्रकार दूसरे दिन ऑपरेशन था। ताई अस्पताल जाने के लिए स्टेशन पर आयी और वह तो देखकर आश्चर्यचकित ही रह गई क्योंकि सामने से आती हुई ट्रेन से बाबा उन्हें उतरते हुए दिखे। उन्हे आश्चर्य का धक्का ही लगा। ऐसे कैसे आ गए? क्या हुआ इस चिंता में उनसे अनेकों प्रश्न पूछने लगी। वे बोले, 'अब सब ठीक है। हम पहले घर जायेंगे, फिर तुम्हें सब बताता हूँ।'

इस प्रकार दोनों घर आये। वे बोले, 'अरे आज सुबह नवदुर्गा मेरे कमरे में आयी और मेरे पेट में जहाँ दुख रहा था वहाँ पैर लगाकर जोर से दबाया और बोली, तुम्हें कुछ नहीं हुआ है। कोई परेशानी नहीं होगी। तुम पहले उठो। डाक्टरों से मिलों और उनसे कहो मुझे घर जाने दो मैं मेरी जिम्मेदारी पर घर जा रहा हूँ फिर मैंने वैसा ही किया और वहाँ से निकल आया। सच बताऊँ? अब मुझे बिल्कुल तकलीफ़ नहीं हो रही है। नवदुर्गा ने मेरा दर्द पूरी तरह से ठीक कर दिया है।'

एक दिन कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, मैं तुम्हारी परीक्षा लेने वाला हूँ।" ताई ने इस बात पर हँसते हुए कहा, 'अरे कृष्ण, परीक्षा लेने वाले भी तुम हो, और उस में पास कराने वाले भी तुम हो, तुम्हें जो चाहिए वह तुम करवाँ लो। मैं तो हमेशा ही तैयार हूँ।'

यह बच्चें तब छोटे थे। विद्यालय का समय सुबह का था। वह विद्यालय से घर आयी तो कृष्ण ने कहा, "ताई, आज मुझे बाजरे की भाकरी चाहिए। घर में देखा तो आटा नही था दुकान जाकर बाजरा लायी, साफ़ किया और पीसकर लाया और भाकरी करने बैठी। इतने में कृष्ण ने कहा, "अरे, मुझे मेथी की सब्जी भी चाहिए।" ताई ने नंदा को भेजकर मेथी की सब्जी भी मँगवाई। साफ़ करके सब्जी

बनाई। सब तैयार होने पर बच्चों को परोसने ही वाली थी कि इतने में कृष्ण ने कहा, ”ताई, तुम बच्चों को मत परोसते बैठो। हमें अंबरनाथ स्टेशन जाना है जल्दी से डिब्बा भरो। वहाँ गाड़ी में मेरा एक भक्त बैठा है उसे यह डिब्बा देना है।“ ‘ठीक है कृष्ण’ ऐसा ताई ने कहा और डिब्बा भरकर ताई देने के लिए घर से निकली। कृष्ण ने कहा, ”ताई रिक्षा से नहीं जाना हम पैदल ही जायेंगे। ठीक है कृष्ण ऐसा बोलकर ताई जल्दी जल्दी स्टेशन की दिशा में जाने लगी। पैदल चलते चलते पैरों को ठोकर लगी और पैरों में से खून आने लगा; लेकिन वे बिना रुके वैसी ही आगे स्टेशन तक गई। स्टेशन पर एक गाड़ी रुकी हुई थी। उन्होंने कृष्ण से पूछा, ‘कृष्ण किस डिब्बे में तुम्हारा भक्त होगा?‘ “वह मुझे नहीं मालूम, तुम सारे डिब्बे देखो। वह दिखा कि मैं बताता हूँ।“ पूरी गाड़ी घूम ली लेकिन भक्त का कोई अता-पता नहीं। ‘अरे कृष्ण, तुम्हारा वह भक्त हैं तो भी कौन?‘ “अरे, मैंने तुम से मजाक किया। मेरा भक्त गाड़ी में है ही कहाँ?“ ‘फिर अब क्या करना।‘ ”सामने देखो वह पुंगीवाला है न, उससे पुंगी लो और प्लेटफॉर्म के एक कोने से दूसरे कोने तक तुम पुंगी बजाते बजाते जाओ। बोलों है, करने की तैयारी?“ ‘अरे कृष्ण, तुमने कहा और मैंने सुना नहीं ऐसा कभी हुआ है क्या? यह देखो मैं जाने के लिए निकली।‘ ऐसा बोलकर ताई ने एक हाथ में डिब्बा और दूसरे हाथ में पुंगी पकड़ी और उसे बजाते हुए पूरे प्लेटफार्म पर घूमी।’

इस तरह आखिर ताई घर आई। घर आते से ही कृष्ण ने कहा, ”ताई, आज मेरी परीक्षा में तुम बहुत अच्छे से पास हो गई। मेरे द्वारा दिए गए आदेश को तुमने बिना चिढ़े, बिना प्रतिप्रश्न किए, बिना संकोच के, एक शिक्षिका होते हुए भी समाज में, मैं ऐसे कैसे व्यवहार करुँ, इस बारे में क्षण के लिए भी सोचा नहीं सिर्फ मेरी आज्ञा है यह सोचकर सब कुछ किया। शाबाश ताई, शाबाश! तुमने बचपन में मुझे जो वचन दिया था उसका पालन तुम दिलोजान से शब्दश: कर रही हो इसलिए ताई, तुम मेरे लाडले भक्तों में से एक हो।”

ताई वैभवी के समय जब गर्भवती थी तब की हक़ीक़त है। उस दिन एकादशी थी। कृष्ण के बताएनुसार ताई ध्यान कर रही थी। कृष्ण ने ताई से ध्यान में ही पूछा, “ताई तुम्हें बच्चे को देखना हैं क्या?“ ताई ने ‘हाँ‘ कहते ही कृष्ण ने बच्चे को बाहर निकाल कर ताई के हाथों में दिया। ताई देखती ही रह गई। अनजाने में उनका एक हाथ पेट पर घुमा तो पेट एकदम सपाट था। कृष्ण ने पूछा “देखा?” ‘हाँ कृष्ण‘ फिर “दो मुझे“ कहकर कृष्ण ने वापस पेट में रख दिया। अब पेट के

ऊपर से वापस हाथ घुमाया तो पेट पहले जैसा हो गया था। इस घटना में थोड़ी भी अतिशयोक्ति नहीं है। कृष्ण ने जैसा बच्चा दिखाया था वैसे ही बच्चें ने जन्म लिया। उसका नाम भी कृष्ण ने ही रखा। वहीं है वैभवी।

वैभवी के जन्म (१० मई, १९७१) के दिन कृष्ण ने ताई से सुबह कहा, "ताई आज अपने यहाँ कभी भी नहीं आया हुआ मेहमान आने वाला हैं सुबह बारह बजे के अंदर मुझे स्नान करा दो।" इस प्रकार उन्होंने बारह बजे के अंदर कृष्ण को स्नान करवाँ दिया। इतने में कृष्ण ने कहा, "ताई मैं तुम्हें एक तुलसी पत्र देता हूँ। मैं कहूँगा तब उसे मुँह में डालना। वह खाने से पहले ही शिशु का जन्म हो चुका होगा। उस समय तुम्हारे पास सिर्फ मैं अकेला ही रहूँगा।" इतने में ताई को अस्वस्थ लगने लगा इसलिए बाबा उन्हें लेकर दवाखाने में गए। डाक्टरों ने उनकी जाँच की और बोलें, 'कर्वे जी आप घर गए तो भी चलेगा क्योंकि अभी प्रसूति में समय है। ऐसा बोलकर डॉक्टर सीढ़ियाँ उतरकर नीचे जाने लगे। इतने में कृष्ण ने कहा, "वह तुलसी का पत्ता मुख में डालो ताई और चबा-चबाकर खाओ।" मुख में का पत्ता अभी खाकर खत्म हो ही रहा था उतने में बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। वह सुनते ही डॉक्टर दौड़ते हुए ऊपर आयी और बोलने लगी, 'कर्वेबाई आपने तो हमें फँसा ही दिया। आपकी प्रसूति हुई है यह आपको देखकर बिल्कुल नहीं लग रहा है। ऐसा लगता है आप किसी और से मिलने यहाँ आयी हैं।' डॉक्टर आश्चर्य से बोल रहे थे। ताई बोली, 'अरे, यह सब कृष्ण कृपा है। लगातार वह मेरे साथ था न। उसी ने मुझे बिल्कुल तकलीफ़ होने नहीं दी।'

इस प्रकार ताई बाबा का घर संसार, नौकरी, और कृष्ण कार्य चल रहा था। कृष्ण के आदेश जैसे जैसे जिन भक्तों के लिए आते वैसे वैसे उन भक्तों के यहाँ जाकर संदेशा पहुँचाने का कार्य ताई द्वारा किया जा रहा था। ध्यानावस्था में कृष्ण ताई को भक्त, उसका नाम, रहने का ठिकाना और उसको दिया गया आदेश सब कुछ बता रहा था। इस प्रकार ताई कभी अकेले जाकर, तो कभी बाबा की मदत से संदेशा उस कृष्णभक्त तक पहुँचाने का काम तुरंत कर रही थी। मुंबई जैसे महानगर में किसी अपरिचित स्त्री को घर के अंदर लेना यह असंभव बात है इस बात की हम सभी को अच्छी कल्पना है लेकिन आज तक ताई जहाँ जहाँ भी गई, वहाँ हर किसी ने उनका कहना शांति से सुन लिया। ताई उन्हें अपने घर का पता, विद्यालय का पता, पूरा नाम वगैरे सब बताकर आती थी। अगर किसी के मन में कोई सवाल है, या मिलना है, तो इस पते पर मिलने आ सकते हैं। ऐसा भी वह बताती थी। पूर्व

अनुमति लिए बिना कितने ही अपरिचित घरों में या ऑफिस में जाकर कृष्ण का जो भी आदेश होगा वह बताकर आती थी। कभी भी किसी ने न तो उनको प्रतिबंध लगाया और न ही उनको जाने से रोका। सारी कृष्ण कृपा थी।

ताई बताती थी, उनके लिए कृष्ण का नियम ऐसा था कि घर आया हुआ कोई भी भक्त नाराज नहीं होना चाहिए। समझो घर में ताला लगाकर बाहर जाने निकले और सामने के रास्ते से कोई भक्त आते हुए दिखाई दिया तो वापस घर आना दरवाजा खोलकर उसे दर्शन देना और प्रसाद देना या कम से कम पानी तो जरूर देना। कृष्ण हमेशा कहता है, ”मेरा भक्त मुझे मेरे प्राणों से भी प्रिय है।“

# ।। ॐ ।।

वैभवी के जन्म के समय ही कृष्ण ने कहा था कि, सात आठ साल में ही हम अपने घर में रहने के लिए जाएँगे। इस प्रकार १९७७ में एक भक्त ने कृष्ण से बदलापूर में मंदिर बनाने के लिए छोटा प्लॉट स्वीकारने की प्रार्थना की। कृष्ण हमेशा कहता था कि, मैं मेरे भक्त की ओर से सेवा स्वीकार करते समय बहुत सोच विचार करके यदि वह योग्य है तो ही सेवा का स्वीकार करता हूँ। इस प्रकार उस भक्त के आग्रह खातिर कृष्ण ने प्लॉट स्वीकारने की स्वीकृति दी।

यह सब कार्यवाही करने के लिए कुछ कागज पत्रों की आवश्यकता थी। उन कागज पत्रों की पूर्ति के लिए ताई और बाबा अंबरनाथ के ग्राम पंचायत के कार्यालय में गए। सरकारी कामकाज के नियमानुसार, पहले तो उनको पेपर्स चाहिए होते हैं, इतना तो समय लगता है, तो अभी हस्ताक्षर नहीं हो सकते, ऐसे उन्हें बताया गया और एकदम आखिरी में कहा, 'आपको पाँच देने होंगे।' और इतना पैसा देना तो इनको संभव नहीं था। ताई बोली, 'अरे, पाँच रुपए ही तो माँग रहे हैं। दे दीजिए न।' बाबा ने कहा, 'अरे लीला, तुम ठीक तो हो न? पाँच रुपएँ नहीं, वे पाँच सौ माँग रहे हैं।' ऐसी बातें अभी चल ही रही थी कि एक आदमी ऑफिस में से भागते हुए बाहर आया, 'अरे, आप ही कर्वे हो क्या? आपको तुरंत अंदर बुलाया है।' इस प्रकार दोनों अंदर गये। वहाँ के आदमी ने कहा, 'जरा आपके कागजात तो दिखाईए। हाँ, ठीक है। आप बैठिए, आपका काम, दस पंद्रह मिनट में हो जाएगा।' ताई और बाबा आश्चर्यचकित होकर देखते ही रह गए। बाद में मालूमात करने पर पता चला कि ऊपर के ऑफिस से बड़े साहब का फोन आया था कि कर्वे जी का काम जल्द से जल्द पूरा कर दो; और पूरे आधे घंटे में पाँच रुपएँ भी देने नहीं पड़े और पूरे कागजात ठीक से नियमानुसार तैयार करके ताई और बाबा बाहर भी आ गए। आख़िर बुद्धिदाता तो कृष्ण ही है उसी ने सब चाबियाँ घुमाई होगी।

अब प्लॉट ताई के नाम पर हो गया, लेकिन कृष्ण ने नियम बना दिया कि घर बनाने का काम किसी भक्त को या पहचान के आदमी को नहीं दिया जाएगा इसलिए आखिर मालूमात करके यह काम जगताप नाम के कांट्रेक्टर को देने का निश्चित किया गया। कृष्ण ने इससे संबंधित भी कुछ शर्ते बताई थी। मंदिर का हॉल बारा

बाय पन्द्रह माप का ही बनेगा। घर बनाते समय जितनी आवश्यकता है उतना ही काम करवाना। ताई और बाबा जितने पैसों की व्यवस्था कर सकेंगे उतने ही पैसों में घर बनेगा। घर बनाने के लिए दूसरे किसी से भी पैसों की मदद नहीं लेना इसलिए ताई और बाबा ने मिलकर हिसाब किया तो सोसायटी, प्रॉव्हिडंड फंड और बचत ऐसा कुल मिलाकर रुपए २०, ०००/- तक की रकम तैयार हुई। इस प्रकार से जगताप जी को घर का नक्शा बनाने के लिए कहा। जगताप जी को जब ताई, कृष्ण और उनके कार्य की जानकारी हुई तो वह घर का एक सुंदर सा नक्शा बनाकर ले आए। बाबा ने पूछा, 'अरे, इसका एस्टीमेट कितना है?' जगताप जी बोले ८०, ०००/- रुपए। ताई और बाबा एक दूसरे की ओर आश्चर्यचकित होकर देखने लगे और बोले, 'अरे बाप रे, जगताप जी हमारा इतना बजट नहीं है। हम सिर्फ २०, ०००/- रुपए तक खर्च कर सकते हैं। आप उस हिसाब से मंदिर पंद्रह बाएं बारा का और उससे जुड़ा हुआ रसोईघर, एक कमरा और टॉयलेट इतने ही ब्लॉक का नक्शा बनाकर लाइये।' जगताप जी तो यह सुनकर चकित ही रह गए। उनकी जानकारी के अनुसार कर्वे जी के यहाँ इतने बड़े-बड़े भक्त आते हैं कि यह मंदिर बना रहे हैं ऐसा पता चलते ही कितने भक्त खर्च करने खुद ब खुद खड़े हो जाएँगे। ऐसा सभी को लग रहा था लेकिन ताई बाबा का आग्रह देखकर वे बोले, 'ठीक है, मैं कल फिर से दूसरा नक्शा बनाकर लाता हूँ।'

तीन चार दिनों बाद ही ताई के बताएनुसार उन्होंने सीधा साधा नक्शा बनाकर लाया। इतने में एक गाड़ी से तीन आदमी पॉश कपड़े पहनकर आए। प्रणाम करके वहाँ बैठे और पूछने लगे आप कृष्ण मंदिर बना रहे हो तो हमें कुछ सेवा करनी है। आप इन चेक्स का स्वीकार कीजिए। ताई ने चेक हाथ में लिए तो तीनों चेक कोरे थे। रकम नहीं लिखी हुई थी। वे बोलने लगे रकम जानबूझकर हमने नहीं लिखी है। आपको जो योग्य लगे वह लिख लीजिए। हमारा कोई बजट नहीं है। जो आपको योग्य लगे।' 'ठीक है, जैसा कृष्ण कहेगा वैसा करेंगे।' तीनों चेक्स कृष्ण के पास रखें। ताई ने क्षण भर के लिए आँखें बंद करके कृष्ण का ध्यान किया और हँसते हुए चेक हाथ में लिए, प्रत्येक चेक के ऊपर अच्छा सा ॐ निकालकर चेक उनके हाथ में वापिस करते हुए कहा, 'आपकी भावना कृष्ण के पास पहुँच गयी है।' वे तीनों और जगताप जी आश्चर्यचकित होकर देखते ही रह गए। थोड़ी देर बाद वे लोग प्रसाद लेकर चले गए। ताई बतातीं है, 'उस दिन के बाद उन लोगों को मैंने कभी नहीं देखा।' जगताप जी भी जाने के लिए निकले। उन्होंने कृष्ण को नमस्कार किया और बोले, 'कृष्ण तुम्हारे द्वारा दिए गए बजट में घर बनाने का मैं

पूरा प्रयास करुँगा, किंबहुना, तुम्ही मेरे हाथों से यह काम पूरा करवाँ लो।'

कृष्ण का सीख देने का तरीका ऐसा ही था, प्रत्यक्ष उदाहरण देकर ही वह समझाता था।

जगह से संबंधित कागजात ९ अप्रैल १९७७ को तैयार हो गए थे। उसके बाद बाबा ने कई बार कृष्ण से पूछा, 'हम बदलापूर हो कर आए?' कृष्ण ने कहा, "नहीं बाबा, ताई नहीं आएगी।" ऐसा करते करते आखिर २१ मई को कृष्ण ने कहा, "बाबा, आज ताई सहित सब मिलकर बदलापूर की जगह पर होकर आएँगे। वहाँ मुझे घुमकर ध्यान करना है।" इस प्रकार उस दिन सब वहाँ होकर आए। बीच में ऐसे ही कुछ दिन बीते, बाद में बाबा एक दिन अकेले ही वहाँ गए थे। आने के बाद तुरंत वे बताने लगे, 'अरे लीला, आश्चर्य तो देखो कृष्ण घूमाँ है न प्लॉट पर इसलिए प्लॉट में जगह जगह तुलसी और रुई के पौधे उगे हुए हैं।' ऐसा लगा जैसे कृष्ण ने अपना अस्तित्व वहाँ प्रकट किया।'

घर का प्लान तो पास हो गया। थोड़ा बहुत काम शुरू कर सकें इतना पैसा भी जमा हो गया था। कृष्ण ने कहा, "मंदिर के भूमि पूजन की तारीख होगी १७ दिसंबर १९७७। भूमि पूजन के लिए क्या करना वह भी मैं बताता हूँ। चाँदी के तुलसी पत्र लाना और वह राघवेन्द्र स्वामी की समाधी को लगाकर लाना। प्लॉट में खड्डा खोदकर वे तुलसी पत्र उसमें डाले कि हो गया भूमि पूजन।" अब हो गई मुश्किल, ताई - बाबा ने आज तक राघवेन्द्र स्वामीजी का नाम भी नहीं सुना था, तो उनकी समाधी कहाँ है यह कैसे पता हो सकता है? आज तक आए हुए अनुभवों को देखते हुए बाबा ने कहा, 'लीला हम तुलसी पत्र लेकर तो रखते हैं फिर आगे का कृष्ण बताएगा।' इस प्रकार उन्होंने तुलसी पत्र लाकर कृष्ण के पास रखे। उसी दिन अंबरनाथ में रहने वाला एक लड़का आया और बताने लगा, 'ताई मैं कल मंत्रालय जा रहा हूँ। राघवेन्द्र स्वामी जी के दर्शन के लिए, वह कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे इसलिए सोचा पहले कृष्ण को नमस्कार करके आऊँ। ऐसा सोचकर मैं नमस्कार करने आया हूँ।' "बहुत अच्छा हुआ। अरे, कृष्ण का भी तुम्हारे पास काम है।" वह सोच में पड़ गया कृष्ण का मेरे पास क्या काम हो सकता है? ताई ने कृष्ण के पास के तुलसी पत्र उठाकर उसे देते हुए कहा, 'अरे, यह तुलसी पत्र उस समाधी पर लगाकर लाओ। मंदिर के भूमि पूजन के लिए कृष्ण को चाहिए।' कृष्ण का कुछ काम तो मुझे करने मिला ऐसा सोचकर वह बहुत खुश हुआ और तुलसी पत्र साथ लेकर गया। दो दिन बाद वह वापस आया और बोला "ताई, देखो

तो क्या आश्चर्य हुआ जाते समय मेरी गाड़ी लेट हो गई इसलिए मैं मंदिर में देरी से पहुँचा। मंदिर तब तक बंद हो चुका था। उस मंदिर में छूआछूत, समय की पाबंदी अनुशासन ऐसे अनेक कड़े नियम है। मुझे बहुत बुरा लग रहा था कि मैं कृष्ण का इतना सा काम कर नहीं पा रहा हूँ। क्या कहूँ मैं मेरी किस्मत को! मैं वहीं रूका हुआ था। उतने में एक वयोवृद्ध व्यक्ति जिन्होंने श्वेत वस्त्र पहने थे मेरे पास आकर मुझे पूछने लगे, 'अरे, इधर क्यों बैठे हो?' 'मुझे आने में देरी हो गई। मैंने तो बाहर से प्रणाम किया लेकिन मेरे पास यह तुलसी पत्र है। हमारी ताई ने इन्हें समाधी पर लगाकर लाने के लिए कहा है।' 'हाँ क्या? लाओ मुझे दो।' मैंने उन्हें तुलसी पत्र दिए। वे दरवाजा खोलकर अंदर गए। थोड़ी देर में वे बाहर आए। उन्होंने मुझे तुलसी पत्र देते हुए कहा, 'समाधी पर लगाकर लाया है और साथ यह प्रसाद भी है।' मैं बहुत खुश हो गया। हाथों में लिए हुए तुलसी पत्र और प्रसाद को आँखों से लगाकर मैंने नमस्कार किया। उन्हे ठीक से रखकर जब मैं उन्हें प्रणाम करने दक्षिणा देने के लिए इधर उधर देखने लगा तो आसपास मुझे कोई दिखाई नहीं दिया लेकिन प्रसाद की पुड़िया तो मेरे हाथ में थी। वह मेरा दृष्टिभ्रम निश्चितरूप से नहीं था।

इस तरह तुलसी पत्र प्लॉट के अंदर रखकर भूमि पूजन संपन्न हुआ। घर बनाने के काम की शुरुवात हो गई। तीन चार महीनों में घर थोड़ा बहुत बना हुआ दिखने लगा तो सब कहने लगे, 'ऐसा कैसा घर बना रहे है। कहीं कोई कोना नहीं, अलमारी नहीं। ऐसा क्यों बना रहे है?' इस पर ताई ने कहा, 'कृष्ण ने कहा हैं इसे घर मत कहो। यह 'कृष्ण कुटीर' है। मेरे गरीब से गरीब भक्त के लिए बनाया हुआ। थोडे दिनों में कृष्ण ने कहा, "कृष्ण कुटीर के उद्घाटन की तारीख २५ से २७ अगस्त १९७८। तीन दिनों तक मेरे सभी भक्तों को आमंत्रित करो।" वैसे घर का काम अभी पूरा नहीं हुआ था लेकिन बाबा का कटाक्ष था कि कृष्ण ने बताई हुई तारीख को ही उद्घाटन होगा।

घर में ईंटों का काम धीरे धीरे पूरा होने आ गया था। उस समय कि बात है। एक दिन जगताप जी बताने लगे, 'ताई, चमत्कार हो गया, अंदर काम के लिए लगने वाली ईंटें तीन चार जगहों पर जमा करके रखीं थीं। आज मजदूर काम करने के लिए वहाँ की ईंटें उठाने गए तो बाहर के हॉल के एक बाजू में रखी हुई ईंटों पर स्पष्ट रूप से बड़ा सा ॐ दिखा। मैंने मजदूरों को बताकर रखा है कि वहाँ की ईंटों को कोई हाथ न लगाए। ताई ने क्षण भर के लिए अपनी आँखें बंद की और वह

ध्यानस्थ हो गई। थोड़ी देर में वह कहने लगी, “अरे जगताप जी, कृष्ण कह रहा है, ‘उस मंदिर में मेरी जगह वहाँ है। जब आगे मूर्ति तैयार होगी तब मेरी स्थापना वहीं पर करना।’“

जगताप जी को तो यह सब चमत्कार ही लग रहा था। ताई ने कहा, ’अरे, इसको चमत्कार मत समझो। कृष्ण ने उसके अस्तित्व की पहचान हमें समझ में आये उस रुप में दी हुई हैं। ॐकार ही उसका मूल रूप है।’ आगे उसी जगह पर कृष्ण मूर्ति की स्थापना हुई।

ताई ने कृष्ण से पूछा, ‘कृष्ण तुम्हारे बताएनुसार सभी को निमंत्रण कर दिया है। तैयारी क्या क्या करना है?‘ “दो किलो भिंडी लाना और बाकी दाल और चावल लाना।“‘अरे, मीठे में क्या बनाना है?’ “बताता हूँ तुम्हे।“ दो दिन पहले ताई जब विद्यालय गयी थी उस समय एक आदमी आया और सात सौ लड्डूओं का बॉक्स देकर गया। पड़ोस की महिला पूछने लगी, ’अरे, आप कहाँ से आए हो? कितना पैसा देना होगा?‘ लेकिन वह कुछ बोलने को तैयार नहीं था। “मैं ताई से पैसे ले लूँगा।“ लेकिन बाद में न कभी वह आदमी आया और न ही किसी ने लड्डूओं के पैसे माँगे। ताई ने इस बारे में बहुत लोगों से पूछा, हर कोई एक ही बात कहता, ’अरे, अगर हम भेजेंगे तो आपको बताएँगे नहीं क्या?‘ इसी तरह पच्चीस तारीख को दो किलो भिंडी की सब्जी आए हुए सभी मेहमानों को बराबरी से परोस के पूरी हो गई। इसी प्रकार लड्डू भी बराबर हुए। एक कम नहीं कि एक ज्यादा नहीं।

घर का काम पूरा नहीं हुआ था लेकिन ताई और बाबा को कृष्ण ने तीन दिनों तक वहाँ रहने के लिए कहा। बाबा बताते, ’दरवाजे, खिड़कियाँ न रहते हुए भी हम घर में निश्चिंत होकर रहे। कृष्ण हमारे साथ में जो था।’

थोड़े दिनों बाद जगताप जी यह बताने आए कि घर का बचा हुआ काम भी पूरा हो गया है। बाबा ने उनसे हिसाब पूछा। वे अत्यंत संकोच के साथ बोलें, ’कर्वे जी, आपका बजट २०,०००/- रुपए का था; इसकी मुझे पूरी कल्पना है लेकिन आप किसी को भी तैयार घर दिखाकर हिसाब पूछ लीजिए। सब मिलाकर खर्चा २५,०००/- रुपए हुआ है। आप कृष्ण से पूछो और वैसे मुझे दो।‘ कृष्ण ने कहा, “देखो, ठीक है, पहले यह २०,०००/- रुपए लो और ताई एवं बाबा तुम्हें हर महीने एक निश्चित रकम देंगे और डेढ़ साल में तुम्हारे पूरे पैसों का भुगतान कर देंगे। बोलों, है मंजूर?” ‘हाँ कृष्ण, तुम्हारे शब्द के बाहर मै नहीं हूँ।’

मंदिर बनकर तैयार हो गया। अनेक भक्तों की मूर्ति देने की इच्छा बहुत थी। भक्तों ने वैसी कृष्ण से प्रार्थना भी की लेकिन कृष्ण ने स्पष्ट रूप से कहा, “यहाँ मैं मेरे गरीब से गरीब भक्त के लिए खड़ा हूँ। मैं किसी की ओर से भी मूर्ति स्वीकार नहीं कर सकता हूँ। मेरा एक गरीब मूर्तिकार भक्त हैं। उसने यदि कृष्ण-कुटीर के लिए मूर्ति दी तो ही यहाँ मूर्ति रहेगी नहीं तो नहीं रहेगी।”

इस तरह कृष्ण ने ताई को ध्यानावस्था में वह मूर्तिकार, उसका घर, वहाँ जाने का रास्ता आदि सब-कुछ दिखाया। ताई अकेले ही उस मूर्तिकार के यहाँ परेल में गयी। एक झोपड़ी के बाहर वह आदमी कठपुतलियों के चेहरे बना रहा था। ताई उसके पास जाकर खड़ी हुई तो बोला, ’आइए ताई, आपको क्या चाहिए?’ “अरे, मैं तुम्हारे पास कुछ खास काम से आया हूँ, मुझे पूरे सम्मान के साथ अंदर लो।“ उसने क्या पहचाना यह तो उसका उसे ही पता। तुरंत उठकर प्रणाम करते हुए बोला, ‘आओ अंदर आओ कृष्ण।‘ कृष्ण अंदर गया और कहने लगा, “अरे, आज मैं तुम्हें फिर से मौका देता हूँ। पिछली बार तुम्हें कलश रंगने का काम दिया था तो वह तुम अधूरा छोड़कर आ गए इसलिए देखो तुम कहाँ थे और कहाँ आ गए। अब एक ही बार बताता हूँ मुझे कृष्ण कुटीर के लिए मूर्ति चाहिए। अगर तुमने मूर्ति दी तो ही कृष्ण कुटीर में मूर्ति आएगी।“ वह अत्यंत भावविह्वल हो गया। हाथ जोड़ते हुए बोला, ’कृष्ण जरुर बनाता हूँ। मेरे महान भाग्य जो कृष्ण कुटीर के लिए मूर्ति बनाने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो रहा है। ‘

आगे थोड़े दिनों बाद वह मूर्तिकार बदलापूर आकर ताई से पूछने लगा, ‘ताई, मूर्ति कैसी बनानी?’ तुरंत कृष्ण ने कहा “अरे, मूर्ति बनाने का काम मैंने तुमसे कहा। ताई से बिल्कुल मत पूछो। उसका कोई संबंध नहीं है। तुमको मैं जैसा सुंदर, सुगठित दिखता हूँ न वैसी ही सुन्दर सुडौल मूर्ति बनाओं।“

उस मूर्तिकार ने मूर्ति बनाने का सब सामान एक जगह पर इकट्ठा किया और मूर्ति सांचे में डाली। अचानक मूर्तिकार बीमार हो गया। केईएम हॉस्पिटल में वह इक्कीस दिनों के लिए भर्ती था। उसके बाद जब वह घर आया तो उसे लगा सांचे में से मूर्ति समय पर निकाली नही गई इसलिए निश्चित रुप से मिट्टी सूख कर खराब हो गई होगी। उसने धीरे से सांचा खोलकर देखा तो आश्चर्यचकित रह गया मूर्ति की मिट्टी में अभी भी आर्द्रता थी। उससे अभी भी उत्तम प्रति की मूर्ति बनाई जा सकती थी। उसने हल्के हाथों से मूर्ति सांचे में से अलग की और अत्यंत सुंदर मोहक मूर्ति की निर्मिती की।

अब मूर्ति परेल से बदलापूर लानी थी। अनेक भक्तों ने कहा, 'हमारी गाड़ी से ले जायेंगे।' तब कृष्ण ने कहा, "मैं अब सामाजिक कार्य के लिए खड़ा रहने वाला हूँ इसलिए मै निजी वाहन से नहीं आ सकता। मैं पब्लिक ट्रांसपोर्ट से अर्थात् रेल्वे से आऊँगा।" उस समय बदलापूर में आने के लिए सिर्फ एक ही गाड़ी होती थी लेकिन किसी भी प्रकार की परेशानी हुए बगैर वह मूर्ति कृष्ण कुटीर में लायी गयी।

कृष्ण कुटीर में दिनांक ६ जून १९७९ के दिन दोपहर दो से तीन के बीच मूर्ति की स्थापना हुई। उसके बाद एक दिन यह मूर्तिकार बदलापूर आए। वे कृष्ण से पूछने लगे, "अरे कृष्ण, तुम्हारे आदेश पर मैं मूर्ति बनाने का मंगल कार्य कर रहा था। फिर मैं बीमार कैसे हो गया?" कृष्ण ने कहा, "अरे इस मूर्ति में साक्षात् मेरा अंश है। उसकी प्रखरता सहन करने का सामर्थ्य तुम्हारे शरीर में होना चाहिये। वह सामर्थ्य मैंने तुम्हें इस बीमारी में दिया इसके बाद ही मूर्ति का निर्माण हो सका।" आज भी उस मूर्ति को देखने पर इस बात का अनुभव हमें स्पष्ट रूप से होता है।

कृष्ण कुटीर की वास्तुशांती के दिन कृष्ण ने ताई को उनकी चूड़ियाँ और मंगलसूत्र निकालकर एक कलश में रखने के लिए कहा। ताई की माँ ने उन्हें यह कलश दिया था। एक दिन कृष्ण ने यह कलश एक भक्त को दिया और उसकी सात साल पूजा, आराधना करने के लिए कहा। शर्त एक ही थी सात साल के बाद वापिस कृष्ण कुटीर में लाकर देना। सात साल बाद उस भक्त ने कलश ताई के पास वापस लाकर दिया। कृष्ण ने उसके अंदर के गहने उसी भक्त को प्रसाद स्वरुप दे दिए। बाद में फिर से वह कलश किसी दूसरे भक्त को आराधना के लिए दिया और कहा यह तुम्हें सुरक्षा प्रदान करेगा। बाद में फिर से तीसरी बार कृष्ण ने वह कलश किसी कृष्ण भक्त को आराधना के लिए दिया और कहा एक बार मडकई ले कर जाना। ताई बताती है, 'उस कलश में क्या है पता नहीं लेकिन उसकी आराधना करने वाले भक्त को उससे सुरक्षा प्रदान होती है। उसके संकट दूर होते हैं इतना तो निश्चित है।'

धीरे धीरे कृष्ण कुटीर में अनेक भक्त आने लगे। उन्हें कृष्ण का सानिध्य और मार्गदर्शन मिलने लगा। ताई और बाबा दोनों का स्वभाव सभी के साथ अत्यंत स्नेहपूर्ण था। एक ही नजर में सबको अपना बना लेने वाला था इसलिए कृष्ण कुटीर के आजू-बाजू के अनेक परिवार अब कृष्ण कुटीर में आने लगे थे। किसी किसी को तो कृष्ण कुटीर में सुबह शाम आए बगैर चैन नहीं मिलता था। ताई और बाबा ने अपने बच्चों में और आस-पड़ोस के बच्चों में कभी कोई फर्क नहीं किया।

कृष्ण कुटीर अब सभी का हक से मन: शांति का सुकून का स्थान बन गया था।

श्रीकृष्ण की प्रत्येक कृति में, प्रत्येक शब्द में गूढ़ अर्थ भरा रहता है लेकिन वह अर्थ हमारी समझ के परे होता है। कुछ समय पश्चात योग्य समय आने पर हमें अपने आप उसका आकलन होता है। ताई बता रही थी, 'एकबार वह मुंबई में एक कृष्ण भक्त के यहाँ गयी थी। श्रीकृष्ण ने उस भक्त से कहा, "अरे, मेरे लिए एक समई लेकर आओ, क्योंकि ताई को आगे दीपस्तंभ के समान कार्य करना पड़ेगा।" इस वाक्य का अर्थ किसी की समझ में नहीं आया लेकिन उस भक्त ने उस समय समई लाकर कृष्ण को अर्पण की।'

कृष्ण आजकल बाबा से बार बार अँगूठियाँ माँगता था। जब पहिली बार माँगी तो अच्छी सुंदर सी सोने की लायी। तब दोनो मिलकर नौकरी कर रहे थे, कमाते थे और खर्चा भी करते थे। जब कृष्ण ने फिर से अँगूठी माँगी तो ताई ने मजे में कृष्ण से कहा, 'कृष्ण, बार बार अँगुठियाँ कैसे लाएँगे? मेरे विद्यालय के पास अच्छी वाली नकली अँगूठियाँ मिलती है वह लाऊँ क्या?' इसपर कृष्ण तुरंत गंभीर होते हुए बोला, "वह नक़ली नहीं चाहिए, मुझे सोने की ही अच्छी वाली चाहिये।"आगे कृष्ण ने कहा, "बाबा, ताई को आपको शून्य में देखना पड़ेगा इसलिए बार बार अँगूठियाँ मांगता हूँ। अरे, अपना नंदा २४ वे साल में रुबाबदार दिखेगा।" इस घटना के बाद अंदाजे से कृष्ण ने चार पाँच अँगूठियाँ मँगवा ली। वह अँगूठियाँ अलग अलग भक्तों को दे रहा था।

एक कृष्ण भक्त को बड़ा प्रमोशन मिला था इसलिए उन्होंने नवदुर्गा के लिए सुंदर सी साड़ी, चूड़ियाँ, गजरा ऐसा सब सुहाग का श्रृंगार का सामान लाया हुआ था। उस दिन ताई को अंबरनाथ में एक भक्त के यहाँ ध्यान करने के लिए जाना था। कृष्ण ने ताई को बुलाया और कहा, "ताई, आज सुहाग के सारे सामान का तुम इस्तेमाल करो और फिर हम ध्यान के लिए जायेंगे।" इस प्रकार ताई ने उस दिन वह साड़ी पहनी, चूड़ियाँ पहनी, फूलों का गजरा बालों में लगाया और उस भक्त के यहाँ ध्यान के लिए गई। वहाँ से निकलते समय कृष्ण ने कहा, "ताई अब हम विजू ताई के यहाँ जाएँगे, वह अंबरनाथ में रहती हैं।" वहाँ पहुँचते ही कृष्ण ने कहा, "विजू ताई, ताई को बढ़िया कॉफी बनाकर दो। ताई इस रूप में तुम्हारे यहाँ वापस नहीं आएगी।" कृष्ण क्या बोल रहा है यह विजूताई की समझ में बिल्कुल नहीं आया। वह बोली, 'ठीक है कृष्ण, मैं जल्दी से बढ़िया कॉफी बनाती हूँ।' कॉफी पीकर ताई वापस बदलापूर आ गयी। उस दिन शुक्रवार था। घर आकर

कृष्ण ने कहा, ”ताई यह साड़ी इसको दे दो।“ इसी तरह से चूड़ियाँ, गजरा भी दूसरे किसी किसी को प्रसाद स्वरुप देने के लिए कहा। विजूताई को प्रसाद देते हुए कृष्ण ने कहा, “कल मेरे बाबा जाएँगे।“ विजूताई पूछने लगी, ’ताई आप कल कहीं जा रहें हों क्या? यह बोल रहा हैं कल मेरे बाबा जाने वाले हैं।‘ ‘नहीं विजूताई मुझे तो कुछ पता नहीं है।‘ ऐसा ताई ने कहा। रात में ताई को ध्यान करने के लिए बैठने से पहले कृष्ण ने कहा, ”ताई, मंगलसूत्र निकालकर मेरे चरणों के पास रखो।“ ताई ने कहा, ’कृष्ण, अब यह क्या नया करने बोल रहे हो।‘ इस पर बाबा ने कहा, ’जाने दो लीला, वह बोल रहा है वैसा रख दो निकालकर।’ ‘रखती हूँ बाबा, कभी-कभी तो तुम्हारी बातें समझ में नहीं आती है।’ ऐसा बोलते बोलते ताई ने मंगलसूत्र निकालकर कृष्ण के चरणों के पास रख दिया।

शनिवार शाम तक सब कुछ ठीक था लेकिन रात में भोजन के पश्चात बाबा को अचानक तकलीफ होने लगी। घर में कुछ कृष्ण भक्त थे ही। उन्होंने जल्दी जल्दी गाड़ी में बिठाया और हॉस्पिटल लेकर गये लेकिन हॉस्पिटल में पहुँचने तक बाबा कृष्ण चरणों में विलीन हो गए थे। उन्हें हमेशा लगता था कि किसी भी परिस्थिति में उनकी मृत्यु हॉस्पिटल में नहीं होनी चाहिए। कृष्ण ने उनकी यह इच्छा भी पूरी की। कृष्ण कुटीर को अनाथ करके बाबा अपनी आगे की यात्रा के लिए निकल चुके थे। वह दिन था २८ मई १९८३ का।

ताई और बच्चों पर तो जैसे दुखों का पहाड ही टूट पड़ा था। कृष्ण और महान शक्ति के आधार से ही ताई इस कठिन क्षणों में पूरी हिम्मत के साथ खड़ी रह सकी।

व्यवहारिक दृष्टि से उनके रिश्ते नातेदार सब कृष्ण भक्त ही थे। उनमें से कुछ लोगों को कर्वे परिवार से स्नेहबंध होने के कारण लग रहा था कि ताई ने अब नौकरी नहीं करनी चाहिए सिर्फ पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाते हुए कृष्ण कार्य करना चाहिए लेकिन कृष्ण ने स्पष्ट रूप से कहा, ”ताई मैं तुम्हारे पीछे खड़ा हूँ, तुम, तुम्हारी नौकरी, मेरा कृष्ण कार्य, और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ पूरी तरह से निभा सकोगी। मेरा हाथ पकड़कर आगे चलो। ताई तुम्हें ऐसा लग रहा होगा कि मैंने बाबा का जीवन आगे क्यों नहीं बढ़ाया? क्योंकि मुझे आपके जीवन के तीनों पन्ने दिखते हैं। पूर्वजन्म या प्रारब्ध, वर्तमान काल और भविष्य काल इसलिए आपकी दृष्टि से आपके लिए जो योग्य है वहीं मैं आप सभी को देता हूँ। मैं प्रकृति के नियमों में कभी भी किसी प्रकार की कोई दखलंदाजी नहीं करता हूँ। मेरे द्वारा बनाए गये

नियमों को मैं ही स्वयं तोडूं तो यह कैसे क्या चलेगा?“

जन्माष्टमी का उत्सव पास आ रहा था। दो तीन दिन पहले कृष्ण ने ताई से कहा, ”ताई, दर्शन के लिए आने वाले सभी भक्तों का स्वागत तुम खुद दरवाजे पर खड़ी होकर मुस्कुराहट के साथ करो। पूरे दिन में यदि एक बार भी आँखों से अश्रु आए तो तुम परीक्षा में फैल हो जाओगी।“

इस तरह पूरे दिन चलता रहा। भक्त आते समय गंभीर चेहरे से आते। बाबा की पवित्र स्मृतियाँ आँखों के सामने आ रही थी। सभी की भावविह्वल अवस्था थी लेकिन दरवाजे पर ताई को खड़ा देखकर मन ही मन सोचते, ’संपूर्ण शरणागति क्या होती है? इसका एहसास आज हमें हुआ।‘ उसी समय ताई का कृष्ण से मन ही मन संवाद चल रहा था, ’कृष्ण मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण तुम्हारी इच्छा से ही आ रहा है और तुम्हारी इच्छा समझकर आने वाली हर परिस्थिति का मैं शुद्ध मन से स्वीकार करती हूँ।’

# ॥ ॐ ॥

नंदा १८ साल का हो गया था। आगे उसने विद्यार्जन चालू रखना या अर्थार्जन करना यह प्रश्न उपस्थित हुआ। कृष्ण से पूछने पर उसने कहा नंदा ने पहले नौकरी स्वीकार करके अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। इस प्रकार फिर नौकरी के लिए आवेदन किये गये। नंदा का नौकरी के लिए आवेदन जिस साहब के पास गया था, उन्हें किसी ने कहा था कि नंदा को नौकरी की जरूरत बिल्कुल नहीं है। क्योंकि उनके कृष्ण मंदिर में बहुत धनवान कृष्ण भक्त आते हैं। मंदिर में भगवान के चढ़ावे में बहुत कुछ आता है। उसको नौकरी की आवश्यकता बिल्कुल नहीं है। इस प्रकार उन्होंने नंदा के आवेदन पत्र पर वैसी टिप्पणी लिखी और उसे फाइल भी कर दिया था।

उत्सुकतावश एक दिन वे सुबह सुबह बदलापूर के एक आदमी के साथ कृष्ण कुटीर में आए। साथ में प्रसाद, फूल फल भी लेकर आए। वहाँ वह कौन है यह किसी को पता नहीं था। वहाँ आकर उन्होंने प्रणाम किया और बहुत देर तक वहाँ रुके। वहाँ आयी हुई वस्तुएँ, प्रसाद कैसे कृष्ण दूसरे भक्तों में बाँट देता है यह वे देख रहे थे। यह सब देखकर उन्हें लगा कि उनके पास आयी हुई जानकारी गलत है। वे नमस्कार करके प्रसाद लेकर वहाँ से निकल गए। वापस आकर उन्होंने नंदा के आवेदन पत्र के ऊपर की हुई टिप्पणी को बदला और उसे नियमानुसार साक्षात्कार के लिए बुलाया।

नंदा के साथ साक्षात्कार के लिए जाने वाला कोई नहीं था। ताई को विद्यालय में जाना था और वैभवी, मुन्ना तो छोटे थे। नंदा भी उम्र और अनुभव में छोटा ही था। इतने में उल्हासनगर से एक आदमी आया। सब उसे भैया बोल रहे थे। वह कहने लगा, "ताई, नंदा के साथ जाना है न आप बेफिक्र रहिए, मैं उसके साथ जाता हूँ। मैं सुबह सात बजे आता हूँ।" सचमुच वह साक्षात्कार के दिन सुबह सात बजे आ गया। नंदा को साथ लेकर ऑफिस गया और उसका सारा काम होने के बाद उसे वापस कृष्ण कुटीर में लेकर भी आया और मजे की बात तो यह है कि उस दिन के बाद वह कभी भी कृष्ण कुटीर में दिखाई नहीं दिया। ताई कहती हैं, 'दिखेगा कैसे? कृष्ण स्वयं आकर सारी व्यवस्था करके गया। आगे नंदा को उसी ऑफिस

में नियमानुसार नौकरी मिली।‘

एक दिन ध्यानावस्था में कृष्ण ने ताई से कहा, ”ताई मुझे कल के दिन ही सुन्दर सुन्दर छुमछुम चाहिए। उसमें बढ़िया आवाज आनी चाहिए सिर्फ जंजीर नहीं चाहिए।“ दूसरे ही दिन ताई ने कृष्ण ने बताई हुई कीमत की बजने वालीं पायल लायी और उसके पैरों में पहनाई। पहनने के बाद कृष्ण ने कहा, ”ताई, तुम्हें पता है मैंने यह क्यों पहनी है?“ ‘मुझे क्या करना है मालूम करके? तुमने कहा तो मैंने लाकर दिए बस।‘ “ताई, ऐसे नहीं, देखो अब आगे की तुम्हारी राह में तुम्हे काँटे, कंकड़ पत्थरों से भरी ऊँची पहाड़ी पथरीली राहों से जाना होगा, कठिनाई होगी। उन पथरीली राहों पर चलते समय यह छुमछुम की आवाज सुनकर तुम्हें अच्छा लगेगा। परब्रह्मा अपने साथ है इसका स्पष्ट रूप से पुनः पुनः एहसास होगा और क्षण भर के लिए तुम अपनी परेशानी, दुख, दर्द भूल जाओगी इसलिए आज मैंने यह पायल पहनी है।“ इस पर ताई ने तुरंत कहा, ’कृष्ण, मेरे इस मार्गक्रमण में तुम मेरे साथ हो इसका मुझे पूरा विश्वास है। आज तक के अनुभवों से मैंने यही सीखा है इसलिए मुझे मन बहलाने के लिए किसी दूसरे साधन की आवश्यकता नहीं है लेकिन अगर तुम मुझे यह बता रहें हों तो हो सकता है कि, मेरा मानवीय मन यदि क्षण के लिए भी यह बात भूल गया, तो उसकी चिंता तुमने पहले ही ले ली है। कृष्ण, तुम मेरे लिए हमेशा ही कितना करते रहते हो। तुमने मुझे अपनी ताई कहकर मेरा जीवन सार्थक कर दिया।‘

अब ताई का ‘एकला चलो रे‘ ऐसा कालखंड शुरू हुआ। वे हमेशा कहती, ‘मैं कभी अकेली नहीं थी और न ही हूँ। हमेशा नवदुर्गा मेरे मार्ग की परेशानियाँ दूर करतीं हैं और कृष्ण परमात्मा मेरा हाथ पकड़कर मुझे आगे ले जाता है।‘ ताई का पूरा समय घर संसार की जिम्मेदारियों में, कृष्ण के बताएनुसार उसके भक्तों को मार्ग दर्शन करने में, (उस समय यह काम पूरा दिन चलता था। कोई भी कभी भी मार्ग दर्शन के लिए आता था, फोन करता था।) कृष्ण बताए वैसा और जब बताए तब ध्यान करना; ऐसा जा रहा था।

एक बार ताई ध्यानावस्था में लेटी हुई थी। सुबह दो ढ़ाई के समय किसी ने उन्हें ‘माँ‘ कहकर पुकारा। वे पलंग पर लेटी हुई थी। अभी इतनी सुबह किसने पुकारा, ऐसा सोचकर उन्होंने आँखें खोली और देखने लगीं, तो उनके सामने बीस बाईस साल के युवक के रूप में साक्षात् श्रीकृष्ण खड़े थे, पीतांबर पहने हुएँ, शरीर के चारों ओर तेजोवलय और जमीन से चार हाथ ऊपर, हवा में। कृष्ण ताई से कहने

लगा, ”ताई अब तुम में समायी हुई महान शक्ति जागृत हो गयी है इसलिए मैंने तुम्हें ‘माँ’ कहकर पुकारा।“ थोड़े समय पश्चात कृष्ण उन्हें उनके अंतर्मन में दिखाई देने लगा और वे गहरी ध्यानावस्था में गई।

कृष्ण ने दिसंबर १९८७ में सभी को बताना शुरू किया कि आगे का आने वाला साल १९८८ यह मेरे पूरे मौन धारण का वर्ष रहेगा। मौन अर्थात्, अभी जो मैं सभी भक्तों को व्यवहारिक, पारमार्थिक मार्गदर्शन करता हूँ वह मैं साल भर नहीं करूँगा।

इस मौन से संबंधित ताई ने कृष्ण से कुछ प्रश्न पूछे और कृष्ण द्वारा दिये गये उत्तर:

प्रश्न: कृष्ण, अगले साल तुम बोलोगे नहीं ऐसा क्यों कह रहे हो?

उत्तर: किसी बड़े कार्य की निर्मिति के लिए मुझे योजनाएँ बनाकर पूरी तैयारी करनी पडती है। उन योजनाओं को मूर्त रूप में अवतरित करने के लिए उसकी रचना बनानी पड़ती है और उस रचना की निर्मिती के समय सबका हित भी साध्य करना होता है। जिनके द्वारा यह हित साध्य करना होता है और जिनके दामन में वह हित डालना होता है, ऐसे व्यक्तियों को चुनना होता है। उन्हें सभी प्रकार की योग्यताएँ प्रदान करनी पडती है और इसके लिए ध्यान धारणा बहुत महत्त्वपूर्ण होती है इसलिए मैंने यह निर्णय लिया है।

आज तक जो कार्य किये, वे व्यक्तिगत स्तर पर थे। अब सामुदायिक कार्य की आवश्यकता है। आज तक जिनकी जिनकी ओर से मैंने कार्य करवाएँ, उन सभी को ध्यान धारणा में समय व्यतीत करना पड़ा है।

कार्य का प्रवाह निरंतर चलते रहने के लिए ताकत की आवश्यकता होती है। वह ताकत आने के लिए धीरज, नम्रता, त्याग, भावुकता और कसौटी इन गुणों की अत्यंत आवश्यकता है और वे सभी गुण आने के लिए ध्यान धारणा की आवश्यकता हैं।

प्रश्न: कृष्ण, तुम्हें भी इन सब बातों की आवश्यकता होती है?

उत्तर : हाँ ताई, जिसे आप सभी आदर्श मानते हो उसे ऊर्जा की अत्यंत आवश्यकता होती है। यदि उसमें त्रुटि रही तो आपके कामों में मुश्किलें आती है। मैं जिनके द्वारा कार्य करता हूँ उन्हें ध्यान धारणा करने के कारण शक्ति आती है, उत्साह आता

है, धैर्यशीलता बँधी रहती है। यदि मुश्किलें आयी तो भी धीरज बँधा रहता है। मैं साथ हूँ ऐसा मन में दृढ़ विश्वास होने के कारण मन की चलबिचल अवस्था नहीं होती है। मन की शक्ति बनी रहने के कारण कार्य का प्रवाह वैसे ही आगे की ओर अग्रेसर रहता है।

प्रश्न: कृष्ण, इन सब कामों में "तुम हमारे साथीदार हो" यह एहसास और विश्वास रखने के लिए क्या करना चाहिये?

उत्तर: मेरा अस्तित्व दृश्य स्वरूप में नहीं रहता है। वैसा न रहते हुए भी मैं सदैव आपके निकट रहता हूँ। आप सभी के बीच रहता हूँ, यह एहसास हमेशा बनाए रखना आप सभी के लिए बहुत कठिन है। पग-पग पर मेरे अस्तित्व का एहसास बनाए रखना, उसे महसूस करना यह दुनिया की नजरों में पागलपन कहलाता है। इस कारण मेरे भक्त को अनेक संकटों का, मुसीबतों का सामना करना पड़ता है और इन सबका सामना करनें के लिए मुझे मेरे भक्त को तैयार करना पड़ता है। अनगिनत मुश्किलों, अनगिनत प्रकार के व्यवहारिक अनुभव देकर उनका सामना कैसे करना और वह करते समय मेरे नियमों का पालन भी कैसे करना। ऊपर दी गई सभी बातों का परिचय मुझे मेरे भक्त को करवाँ देना होता है।

सुनने में और बताने में यह सभी बातें बहुत आसान लगती है लेकिन प्रत्यक्ष रुप में बहुत कठिन होती हैं और उस में काफ़ी वक्त व्यतीत करना होता है। तभी उस व्यक्ति की थोड़ी बहुत तैयारी हो पाती है। उस व्यक्ति को मुझे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर और माया इन सबसे दूर रखना होता है। यह सब प्रकृति के सर्वसाधारण नियमों से बाहर होता हैं। यह सब करते समय मैं हमेशा उनके साथ हूँ अर्थात् मुझे अदृश्य से दृश्य स्वरूप में जानकर मुझे साथ लेकर चलने का मतलब है कि पैर होते हुए भी तेज़ तूफान में, हवा में चलने के जैसा है। गहरे समंदर में शांत मानसिक स्थिति में, समाधान से निश्चिंत होकर चलना जितना कठिन है उससे भी कई गुना ज्यादा कठिन इस मार्ग से होकर चलना है। वह मेरी कृपा से ही संभव है और ऐसी मेरी कृपा, आशीर्वाद की बरसात अगर होनी होगी तो उस व्यक्ति को पूर्णतः मुझे समर्पित होना ही होगा। मेरे अस्तित्व को हमेशा जागरूक रखने की बहुत आवश्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति आप श्रद्धा, भक्ति और त्याग तीनों के समन्वय से कर सकते है।

सच तो यह है कि करने वाला और करवाँने वाला भी मैं ही हूँ इसलिए यह सब

करते समय यदि कभी मन की इच्छाओं के विपरीत होता है तो, वह भी मेरी ही इच्छा से हो रहा है ऐसा समझना चाहिए। इस कारण क्रोधित होने, उद्विग्न होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उद्विग्नता से स्वयं की मन:स्थिति तो बिगड़ती है साथ ही साथ आजू-बाजू वालों पर भी उसका दुष्परिणाम होता हैं इसलिए जब जब मनस्ताप होने जैसी कोई घटना घटती है तब मनस्ताप न करते हुए नामस्मरण करना चाहिए। इससे मन की चलबिचल रूकने में बहुत मदद होती है साथ ही साथ अपनी कर्ता करविता जो परम् शक्ति है उसकी स्मृति जागृत रहती है और यह सब श्रद्धा और भक्ति होने पर ही संभव हो सकता है। इस प्रकार एक तरह से आप नामस्मरण करके उस मनस्ताप की पूर्ण जिम्मेदारी, भार सब मुझ पर सौंप देते हो। अतः उस जिम्मेदारी का स्वीकार करके मैं आपकी मदद के लिए दौड़ कर आता हूँ इसलिए नामस्मरण यह मनस्ताप के ऊपर का रामबाण उपाय है।

प्रश्न: कृष्ण, फिर ऐसा नामस्मरण किसका, कहाँ और कितना करना चाहिए?

उत्तर: सर्वप्रथम तो नामस्मरण करना यह मन में मानसिक तौर पर अंकित करना होगा। किसी भी कार्य को कृति में लाने से पहले मन के दृढ़ निश्चय की अत्यंत आवश्यकता होती है और एक बार निश्चय हो गया तो कार्य निश्चित रूप से पूर्ण होता हैं। नामस्मरण करतें समय कोई मुख से शब्दोच्चार करके करेगा तो कोई मन ही मन करेगा। दोनों का उद्देश्य एक ही रहेगा। मन में आने वाले अनगिनत विचारों को रोकना और उन विचारों को मुख के द्वारा बाहर न आने देना। इसके लिए नामस्मरण करना बहुत जरूरी है। प्रत्येक व्यक्ति का श्रद्धा स्थान एक ही होना चाहिए। नामस्मरण उसी का करना चाहिए, जिसे देखकर आपके मन में शांति-समाधान उत्पन्न हो। हमने अपने हृदय में जो प्रतिमा जतन करके रखीं हैं उसी का नामस्मरण करना योग्य और हमारे हित का होगा, नहीं तो वह हमारी ओर से योग्य प्रकार से नहीं किया जा सकेगा। कोई भी कार्य यदि पूरी लगन के साथ नहीं किया तो उसमें सफलता नहीं मिलती है|

अब वह कहाँ और कितना करना इसके लिए कोई बंधन नहीं हैं। न ही खानेपीने का है, न ही स्नानादि नित्य कर्म का है। वह तो उठते बैठते, चलते फिरते कैसे भी, आप तो बस उसे नियमित रूप से करो। गिनने में समय व्यर्थ मत डालो। उसे गिनने की जिम्मेदारी पूर्ण रुप से मेरी।

प्रश्न: कृष्ण, सुख सहन करते आना चाहिए। इसका मतलब क्या होता है?

उत्तर: ताई, सुख में जीवनयापन करते समय भी मेरा आधार, मेरा सहयोग होना बहुत आवश्यक है तभी आप उस सुख का उपभोग शांति और समाधान से ले सकते हो और अगर ऐसा नहीं है तो उसमें भी त्रुटियाँ रह सकतीं हैं। इसके संबंध में ऐसे कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति की सुख की कल्पनाएँ अलग-अलग होती हैं, किसी घटना की तरफ देखने का नज़रिया अलग अलग हो सकता है। मेरा भक्त कहे तो उसका उस घटना की ओर देखने का नज़रिया मुझ में से होकर जाएगा; अर्थात् श्रीकृष्ण की इच्छा से ही सब कुछ घटित हो रहा है, घटित हुआ है और आगे भी घटेगा। इन घटनाक्रम के द्वारा वह मुझे सीखा रहा है। उसने मेरी जिम्मेदारी पूर्ण रुप से स्वीकार की हुई है।

ध्यानावस्था में एक दिन कृष्ण ने ताई से कहा, ”ताई मेरे फलाने फलाने भक्त को मेरा संदेश दो कि कृष्ण कुटीर के लिए एक सुंदर सी शिवपिंडी लाकर दो।” ‘क्या? अरे कृष्ण, उस भक्त को बताऊँ?‘ “हाँ, उसी को बताओं वहीं लाकर देगा। यह इतिहास की पुनरावृत्ति है।“ वह भक्त परधर्मीय था इसलिए ताई को सामाजिक दृष्टि से यह सब कठिन लग रहा था। कृष्ण के इस वाक्य का अर्थ तो उसी को पता। उसने कहा है तो हमें संदेशवाहक का कार्य तो करना होगा। ऐसा सोचकर ताई ने उस भक्त को फोन करके संदेशा दिया। इस पर वह प्रसन्नतापूर्वक बोला, ’कृष्ण ने, मुझे सेवा का मौका दिया, मैं किन शब्दों में शुक्रिया अदा करुँ लेकिन ताई, कृष्ण किसी दुकान का नाम बता रहा है क्या? नहीं तो मुझे माधव बाग की कुछ दुकानों की जानकारी है। आप वहाँ जाकर देखकर आएँगी क्या? कृष्ण को जो शिवपिंडी अच्छी लगे वह आप पसंद करके रखिए सिर्फ आप लेकर मत जाइए, आगे मैं कृष्ण कुटीर में भेजने की पूरी व्यवस्था करता हूँ। कृष्ण ने ताई को ध्यानावस्था में दुकान दिखायी और माधवबाग में जाने के लिए कहा। इस प्रकार ताई एक स्त्री भक्त के साथ वहाँ गयी। वहाँ दुकाने देखने लगी इतने में कृष्ण ने दुकान दिखायी और कहा, ”इसके पास से ही शिव पिंडी लेनी हैं।” इस प्रकार वे दोनों उस दुकान में गयी। कृष्ण ने शिवपिंडी पसंद की। उस दुकानदार को बताया हमारा आदमी आकर पैसे देगा और पिंडी लेकर जाएगा और उसने भी यह मान लिया। ताई ने उस भक्त को दुकान का नाम, पता और कीमत सब कुछ बताया। ३१ दिसंबर १९८९ तक शिवपिंडी पहुँचाता हूँ ऐसा उसने कहा।

३१ दिसंबर को सुबह सुबह कृष्ण ने ताई से कहा, ”ताई, आज सुखामेवा के ८९ लड्डू बनाओं। शिव पिंडी से पहले मेरे दिये आएँगे, फिर शिव पिंडी आएगी,

ताई।“ ‘इसका मतलब क्या है कृष्ण‘ ऐसा बोलते हुए ताई सूखे मेवे के लड्डू बनाने लगी।

उसी दिन दोपहर के समय एक महिला कृष्ण भक्त कृष्ण के लिए दिये लेकर आयी और कहने लगी, ‘ताई कितने दिन हो गये थे दिये लाकर लेकिन आने के लिए जमा ही नहीं, लेकिन आज सोचा साल का आखिरी दिन है इसलिए आज दिये पहुँचा ही देना है ऐसा सोचकर मैं आज़ दिये लेकर आयी हूँ।‘ बाद में ४:००-४:३० बजे शिवपिंडी भी मंदिर में आ गयी। कृष्ण के कहें अनुसार ही सभी घटनाएँ घटती हैं।

एक कृष्ण भक्त पति-पत्नी कृष्ण कुटीर में आते थे। वे दोनों ही रहते थे। इन सज्जन को बारीश के दिनों में आँधी, तूफान, बादलों के गरजने की आवाज से बहुत डर लगता था। वे इतना डरते थे कि डर के मारे आँखों/कानों पर कसकर रुमाल बाँधकर चार चार दिन सिर से ओढ़कर सोये रहते थे। एक बार उनका डर उनकी पत्नी ने कृष्ण के पास बताते हुए प्रश्न पूछा कृष्ण इसके ऊपर क्या उपाय है?“ कृष्ण ने कहा, ‘तुम कृष्ण कुटीर में घंटा लाने के लिए पैसे दो जैसे जैसे इस घंटे के नाद, स्पंदन हवा में सर्वत्र फैलेंगे वैसे वैसे इनका आँधी तूफान का डर कम होता जाएगा और वे शांत और निर्भय होते जाएँगे।’ यह घंटा जब कृष्ण के सामने बाँधी गई तब लगातार चार दिनों तक आँधी तूफान के साथ गरजती हुई बारीश हुई और बाद में उनका डर भी धीरे-धीरे कम होता गया।

कृष्ण हमेशा बताते थे कि मैं हृदय की आर्त पुकार पर दौड़ कर जाता हूँ। मैं आपकी हर छोटी-बड़ी बात में, प्रत्येक कृति के पीछे छुपी हुई आपकी भावनाओं को जानता हूँ। मैं तो सिर्फ भाव का भूखा हूँ। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

एक कृष्ण भक्त सेवानिवृत्त होने वाले थे। उनकी दिली ख्वाहिश थी कि सेवानिवृत्ति का दिन कृष्ण कुटीर में सत्यनारायण पूजा करके व्यतीत करने का। इस प्रकार उन्होंने ताई को फोन किया कि मैं उस दिन वहाँ आऊँ क्या? लेकिन संकोचवश उन्हें वहाँ पूजा करने की इच्छा है ऐसा कुछ बोल नहीं सकें। उस समय ताई विद्यालय में नौकरी करती थी। ताई ने उन्हें ‘जरूर आईए‘ ऐसा कहा।

उस दिन सुबह सुबह किसीने खूब सुंदर ताज़ी ताज़ी तुलसी पत्र लाकर दिए। वह देखकर ताई ने कहा, ’अरे वाह!! क्या सुंदर तुलसी है।‘ कृष्ण ने कहा, “रहने दो ताई, वह रख दो मुझे बाद में लगेगी।“ ताई ने दाल चावल का कुकर लगाया। इतने में एक कृष्ण भक्त आमरस में बना हलवा लेकर आए। उसका स्वीकार भी कृष्ण

ने किया और चरणों के पास रखने के लिए कहा। थोड़ी देर बाद मुंबई के एक भक्त बड़ा बॉक्स लेकर आए और कहने लगे, 'ताई फलाने फलाने कृष्ण भक्त ने यह फलों का बाक्स कृष्ण के लिए भेजा है।' उसे खोलकर देखा तो उसमें एकदम ताजे ताजे पाँच छः प्रकार के फल थे। कृष्ण ने उसका भी स्वीकार करते हुए कहा, "ताई यह भी यहीं रखो। मुझे बाद में लगने वाले हैं।"

थोड़ी देर बाद खाना खा लेना ऐसा ताई ने बच्चों से कहा और स्वयं विद्यालय जाने के लिए निकली। दोपहर के समय वे विद्यालय से वापस आयी। तब तक यह सेवानिवृत्त हुए सज्जन भी अपने पूरे परिवारजनों के साथ आकर मंदिर में रुके हुए थे। ताई अंदर रसोई घर में गई देखा तो कुकर वैसा का वैसा था। भूख नहीं है ऐसा कहकर बच्चे बिना खाना खाए विद्यालय चले गए थे। वहाँ से वे कृष्ण के पास आयी तो कृष्ण कहने लगा, "ताई, तुम हाथ, मुँह धो लो। आज मैं आप सभी के लिए भाजी-भाकरी भेजने वाला हूँ। देखो, मेरे पास पूजा की सारी तैयारी की हुई है। तुम मेरे इस आए हुए भक्त से पूजा करवाँ लो। इसकी बहुत इच्छा थी पूजा करने की।" ताई मन में सोचने लगी इतनी दोपहर के समय कौन भाजी-भाकरी लाएगा? जाने दो, कृष्ण देखेगा ऐसा सोचकर सभी ने अच्छे से पूजा की। तब तक कुछ लोग ग्यारह बड़ी बड़ी भाकरियाँ और भाजी ऐसे डिब्बे लेकर आए और कहने लगे, 'आज हमारे खेत में बड़ी पार्टी है। सब सुचारू रूप से हो जाने दो ऐसा बताने और भोग के लिए यह लेकर आए हैं।' कृष्ण ने उसे जल्दी जल्दी कहा, "यह सब तुम्हारा मैंने स्वीकारा। ताई इस हलवे का भोग दिखाओ और तुम सब लोग खाना खा लो।" इस प्रकार दाल चावल, भाजी भाकरी, हलवा पाँच प्रकार के फल ऐसा पंच पकवान का भोग दिखाकर सबने खाना खाया लेकिन उस सेवानिवृत्त हुए व्यक्ति की आँखों में बार बार खुशी के आँसू आ रहें थे। कृष्ण तुम कितने दयालु कृपालु हो, मन की बातें सब कैसे जान लेते हो। भक्त का आदर-सत्कार और लाड़ प्यार तो सिर्फ कृष्ण ही कर सकता है।

गणेशपुरी के नित्यानंद स्वामी ने कर्नाटक में काननगड के पास सौ सवा सौ गुफाएँ खुदवाकर रखी थी और उनकी देखभाल के लिए उन्होंने उनके शिष्य जनानंद स्वामी को वहाँ रुकने के लिए कहा था। जनानंद स्वामी की इच्छा थी कि काननगड में नित्यानंद स्वामी की मूर्ति की स्थापना होनी चाहिए। इस प्रकार वहाँ उनके शिष्यों की मदत से मूर्ति स्थापित करने का निश्चित हुआ लेकिन पता नहीं क्यों उस कार्य को चालना मिल नहीं रही थी। कोई न कोई मुश्किल आती और

काम आधा अधूरा रह जाता। गुरुतत्व देखो कैसे काम करता है। जनानंद स्वामी के शिष्य के पोते को मन ही मन लग रहा था कि अपने दादाजी के गुरु जनानंद स्वामी की इच्छा की पूर्तता जल्द से जल्द होनी चाहिए इसलिए उसने क्या किया? वह बदलापूर में इस बारे में कृष्ण का मार्गदर्शन लेने के लिए आया। उस समय कृष्ण ने उससे कहा, "अब सब मुश्किलें दूर हो जाएँगी और जल्द ही वहाँ मूर्ति की स्थापना होगी।" इस प्रकार चार पाँच महिनों में ही मूर्ति स्थापना का समय आ भी गया। उस भक्त ने याद से कृष्ण और ताई को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित किया था। उनके लिए हवाई जहाज के टिकट, वहाँ उतरने की व्यवस्था, रहने की व्यवस्था सब की हुई थी।

इस प्रकार ताई और एक कृष्ण भक्त वहाँ कार्यक्रम के लिए जायेंगे ऐसा निश्चित हुआ। मुंबई से मंगलोर हवाई जहाज से और आगे की यात्रा गाड़ी से करना ऐसा निश्चित हुआ लेकिन हवाई जहाज की टिकट कन्फर्म नहीं थी लेकिन ताई बता रही थी, कृष्ण ने उसका शेला (रेशमी शॉल) बैंग में साथ रखने कहा है तो हम निश्चित रूप से जाने वाले हैं। इस प्रकार वे लोग हवाई अड्डे पर गये। एअर इंडिया की फ्लाइट थी। कृष्ण के पास एक मेघा आसोंदेकर नाम की एक लड़की आती थी। वह एयर इंडिया के बुकिंग ऑफिस में काम करती थी। संयोग से उस दिन उसकी काम पर ड्युटी थी। उसे जब पता चला कि ताई के पास वेटिंग लिस्ट की टिकट है और वे हवाई अड्डे पर आयी हुई है तब उसने तुरंत वह टिकट लेकर बोर्डिंग पास लाकर दिया।

निश्चित किएनुसार ताई काननगढ़ पहुँची। वहाँ समारोह संपन्न हुआ। समुद्र तट पर जहाँ नित्यानंद स्वामी की बड़ी मूर्ति है वहाँ एक छोटा सा चबूतरा है। उस पर जाकर ताई नित्यानंद स्वामी के जैसे पैरों को मोड़कर बैठी और कहने लगी, "देखो, अब वह मेरे जीवात्मा को बाजू में करके वहाँ स्वयं बैठेंगे। हमारी दृष्टि में दत्त पंथ, कृष्ण पंथ ऐसे दो अलग-अलग पंथ है लेकिन गुरु तत्त्व तो एक ही होता हैं यही वे हमें दिखा देना चाहती थी।"

# ॥ ॐ ॥

कृष्ण ने १९९० साल से नया नियम बनाया कि, प्रश्न उत्तर का समय अब सिर्फ सुबह ही रहेगा। संध्या के समय कृष्ण नही बोलेगा। कृष्ण ने ताई से कहा, “ताई, आज दो तप तक मैंने तुम्हारी ओर से बहिर्मुख होकर कार्य किया, अब अंतर्मुख होकर कार्य करने के लिए मुझे ध्यान की अत्यंत आवश्यकता है इसलिए अब तुम्हारे द्वारा संध्या के समय निर्विकार होकर ध्यान धारणा करने की अत्यंत आवश्यकता है। ध्यान का समय ६:३० से ८:३० का ऐसा रहेगा। उस ध्यान का परिणाम मेरे अनेक भक्तों पर होगा।“ इस प्रकार ताई का २ जनवरी १९९० से संध्या के समय ध्यान शुरू हुआ।

अब कृष्ण ने बताना शुरू किया, “ताई मैंने १९५१ में तुम्हें बताया था कि १९९० साल में मैं तुम्हें अमेरिका ले कर जाऊँगा। वह समय अब पास आ गया है। ताई, हम १९९० साल में अमेरिका जाएँगे।“ ‘कृष्ण, यह कैसे हो सकता है? मेरे विद्यालय की जिम्मेदारियाँ हैं, इतना खर्चा होगा, बच्चों की पढ़ाई चल रहीं हैं।’ “ताई तुम चिंता मत करो। हम निश्चित कियेनुसार जाएँगे। तुम पासपोर्ट निकालने के लिए दे दो।“

थोड़े दिनों बाद मुंबई से एक कृष्ण भक्त आए और कहने लगे ताई मैं थोडे दिनों बाद अमेरिका में भाई के यहाँ जानें वाला हूँ। उनकी ओर से आपको आग्रह पूर्वक निमंत्रण भी है और संदेशा है कि आप भी मेरे साथ अमेरिका आनी ही चाहिए। कृष्ण का ऐसा ही रहता है। कृष्ण, जब कुछ भी करने के लिए कहता है तब उसकी योजनाएँ पहले से तैयार रहती हैं।

ताई बताती थी, ‘अरे, मैं प्रायमरी विद्यालय की शिक्षिका; ऐसे अमेरिका जाने के सपने देखना भी मेरे लिए संभव था क्या? लेकिन कृष्ण ने मुझे अपनी ताई कहा और उसका कार्य करने के लिए मेरा चयन भी किया और उसने उस प्रकार से मेरी तैयारी भी करवाँ ली और अभी भी करवाँ रहा है। यह तो सिर्फ और सिर्फ उसकी कृपा का ही परिणाम है।’ कृष्ण ने तब (१९५१ साल) मुझे ऐसा भी कहा था कि पूरी दुनिया में घूम कर तुम्हें कार्य करना है शायद यह उसी कार्य की शुरुवात होगी।

उस कार्य का श्रीगणेश होगा।

१९९० साल का प्रारंभ हुआ। कृष्ण ने जानें की तारीख बताई १२ मई १९९० इसलिए जाने की तैयारियों की शुरूवात हुई। विद्यालय से जाने की अनुमति लेना, छुट्टी लेना यह सभी कार्य किए गए। सभी कृष्ण भक्तों को बहुत प्रसन्नता हो रही थी कि, अपनी ताई यूएसए जा रहीं हैं इसलिए कृष्ण भक्तों ने अपनी ओर से प्रेमपूर्वक कृष्ण के लिए लगने वाला सामान जैसे फोटो, चांदी के तुलसी पत्र, वस्त्र आदि लाकर दिए। कृष्ण से अनुमति मिल जाने पर उस कृष्ण भक्त ने लुफ्थांसा एअरवेज के १२ मई १९९० के टिकट आरक्षित किए। ७ -८ तारीख आ गई लेकिन व्हीसा का काम नहीं हुआ था लेकिन कृष्ण कह रहा था कि मैं १२ तारीख को तुम्हें अमेरिका लेकर जाऊँगा।

१० तारीख को ताई कृष्ण को अभिषेक कर रहीं थीं। उस दिन वैभवी का जन्मदिन था। कृष्ण ने वैभवी को बुलाया और कहा, ”वैभवी, इधर आओ, आज मैं, मेरे अमेरिका के कार्य के लिए यहाँ से निकल रहा हूँ। वहाँ का कार्य पूर्ण हुए बगैर मैं वहाँ से वापस यहाँ नहीं आऊँगा (उस समय ताई के हाथों में सच में व्हीसा भी नहीं था) और ध्यान से सुनो, मेरे वापस आने तक कृष्ण कुटीर की संपूर्ण जिम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर डालकर जा रहा हूँ।“ अंबरनाथ की विजूताई वही थी। वे बोली, ‘लीला ताई, कृष्ण के यह उद्गार बहुतही दृढ़ निश्चय के है वह कभी झूठ नहीं हो सकते। अब आप के पास व्हीसा हो या न हो आप १२ तारीख को निश्चित रूप से अमेरिका जाओगी। आप जल्दी से अपना काम खत्म करो। मैं इनको फोन करके गाडी मँगवाती हूँ और हम आपको मुंबई छोड़कर आते हैं।‘

ऐसा बोलकर विजूताई ने सचमुच गाड़ी मँगवा ली। जल्दी जल्दी गाड़ी में सामान रखा और उन्होंने ताई को नारकर काका के यहाँ दादर पहुँचा दिया।

ताई ११ तारीख को अमेरिकन एम्बेसी में गयी तो नियमानुसार वहाँ के कायदे कानून की पूर्तता पूरी न होने के कारण ताई का व्हीसा खारीज किया गया इसलिए ताई निराशा के स्वर में थोड़ा चिढ़कर कृष्ण से बोली, ‘अरे, तुम्हें यह बिना काम का उपद्रव करने किसने कहा है? मैं थोड़ी तुम्हारे पीछे लगीं थी? अब जिसने भी जो जो लाकर दिया है वह एक एक वस्तु वापस करनी होगी।’ उस समय कृष्ण भोजन कर रहा था। उन्होंने नारकर काका को आवाज दिया। “रमेश, इधर आओ। आज अभी मैं ताई के मुख से खाना नहीं खाऊँगा। वह मेरे ऊपर नाराज हैं। मैं सालभर

अब तुम्हारे मुख से भोजन करूँगा। मेरे एक भक्त को अभी फोन करके बुला लेता हूँ और उसे कहता हूँ कि मेरा व्हीसा लेकर आओ।" ऐसा बोलकर कृष्ण ने सचमुच एक भक्त को बुला लिया और कहा, "जाओ जाकर मेरा व्हीसा लेकर आओ।" कृष्ण के आदेशानुसार वह भक्त गया और २:३० बजे के आसपास व्हीसा लेकर ही बाहर आया शायद अमेरिका कॉन्सुलेट की वह एकमेव केस थी जिसमें जिस दिन व्हीसा अस्वीकृत हुआ, उसी दिन पुनश्च जाँच पड़ताल करके व्हीसा स्वीकृत भी किया गया।

व्हीसा हाथ में आने पर कृष्ण ने कहा, "आज मेरे काम के लिए मैंने जिसके हस्ताक्षर लिए, उसका मैं सदा के लिए ऋणी हो गया।" ताई आगे बताती है, अभी वह आदमी अमेरिका में है लेकिन कृष्ण मुझे बीच बीच में बताता है कि मेरा वह हस्ताक्षर वाला भक्त मुश्किल में है। उसके लिए ध्यान करो क्योंकि कृष्ण अपना वचन कभी नहीं भूलता हैं फिर वह भक्त ताई को पहचानें या न पहचानें।

अब व्हीसा तो हाथ में आ गया लेकिन ११ तारीख को लुफ्थांसा की यूएसए फ्लाईट नहीं थी फिर कोशिश करके टिकट बदला और एअर इंडिया का लिया और उसी रात ताई अमेरिका के लिए रवाना हुई और कृष्ण के बताएनुसार १२ मई १९९० की रात को नॉर्थ कॅरोलिना पहुँची।

इस तरह १२ मई १९९० से १७ जुलाई १९९० तक ताई की ध्यान यात्रा हुई। जातें समय सिर्फ दो भक्तों को मिलना निश्चित हुआ था। भारत में रहते समय कृष्ण ने कई बार अनेकों भक्तों के लिए ताई की ओर से ध्यान करवाया था। उसमें के कई ज्ञात अज्ञात भक्तों से ताई मिलकर आयी। उन्हें कृष्ण का प्रसाद, आशीर्वाद देकर आयी। अंदाजे से वे ७०-८० घरों में जाकर आयी। वहाँ का प्रत्येक दिन नया अनुभव लेकर आ रहा था। कृष्ण ने जो १९५१ साल में बताया था कि तुम्हें मेरे कार्य के लिए खड़ा होना है, उसके लिए मैं तुम्हारी यथायोग्य तैयारी करवाँ रहा हूँ, वहाँ जाकर उसी का जैसे मुझे प्रत्यय आ रहा था।

आज तक के जीवन में आए अनेक विविध प्रसंग, अनेक व्यक्ति, उनके माध्यम से समय समय पर कृष्ण ने प्रपंच से संबंधित अनेक आध्यात्मिक रहस्य खोले, वे सब कुछ ताई की आँखों के सामने से जा रहे थे। आज तक के जीवन में कृष्णभक्तों के अनेकों प्रकार उन्होंने देखें थे; कोई प्रश्न पूछने वाले, कोई सिर्फ मार्गदर्शन लेने वाले, कभी किसी विशिष्ट भूमिका को रखकर कृष्ण के द्वारा भेजे हुए, तो कोई

परिस्थितिनुसार व्यवहारिक और आध्यात्मिक दृष्टि से कुछ समय के लिए ही कार्य करने वाले। उस समय भी कृष्ण बताता था, “ताई, मेरे अलावा कुछ भी नित्य नहीं है। जब-तक जिसके पुण्य कर्म रहते हैं, सत्कर्मों का लेखा जोखा रहता है, तब तक ही मैं उस व्यक्ति की सेवा स्वीकारता हूँ लेकिन उसके बाद वह व्यक्ति मेरे पास, मेरे संपर्क में, मेरी सेवा में रह नहीं सकता। यह मैंने तुम्हें अनेक घटनाओं, प्रसंगों के द्वारा दिखा दिया है। भविष्य की कोख में क्या छिपा हुआ है, यह बिल्कुल बताया नहीं जा सकता।”

“ताई, समय आगे आगे भाग रहा है। यादें पीछे रह जाती है। पिछली यादों को स्मरण करके समय गँवाना व्यर्थ है। अब आगे की यात्रा में मेरे साथ कैसे चलना वह देखो।”

अमेरिका में रहते समय कृष्ण ने ताई को ध्यानावस्था में ऊपर दिया हुआ संदेश दिया। इस पर ताई ने कृष्ण से कहा, ‘तुम्हारे कार्य का प्रवाह मतलब अविरत भागने वाला चक्र है इसलिए तुम्हे सदैव आगे की ओर ही लक्ष्य केन्द्रित करना पड़ता है। तुम पीछे मुड़कर देखते नहीं और आगे भी पीछे मुड़कर नहीं देखोगे लेकिन हम तो अतीत में ही ज़्यादा मशगूल होने वाले है इसलिए हमें सदैव ही यादों की गठरी साथ रखनी होती है। बाकी कुछ साथ नहीं लिया तो भी चलेगा कृष्ण, लेकिन तुम्हारे सानिध्य में बिताये अनमोल क्षण, वह यादें जरुर साथ चाहिए। तुम्हारे शब्दों पर, तुम्हारे द्वारा दिए गये वचनों पर ही हमारा पूरा भरोसा रहता है और इस भरोसे के कारण ही तुम बार बार हमारी ओर देखोगे और हमें याद भी रखोगे। हम तुम्हे हमेशा अपना कहते है। तुम सिर्फ एक बार ही हमें ‘अपना’ कह दो, हमारा जीवन सार्थक हो जाएगा। कृष्ण सहवास का अर्थ ही है बहुत बड़ा सत्संग। उसका अनुभव मैं आज ले रही हूँ। उसी के ऊपर सब कुछ निर्भर है। कृष्ण, सदैव तुम्हारा साथ इसी तरह मिलता रहे ऐसी प्रार्थना करते है। हे ईश्वर, इस सुख की तुलना किसी भी दूसरे सुख से नहीं की जा सकती। तुम हमारे हो और हमें तुम अपना बना लो यही तुम्हारे चरणों में विनम्रतापूर्वक, संपूर्ण शरणागति के साथ प्रार्थना करतें है।’

*भार उठाता हूँ मैं भक्तों का*
*इसलिए सर्वस्व स्वीकार करता हूँ उनका।*
*भक्त मेरा मैं भक्त का*
*कल्पना ही यह कितनी आनन्ददायक।*
*काया, वाचा, मन से मेरा स्मरण करो*
*तुम्हारे ही आस-पास हूँ मैं।*
*याद है क्या तुम्हे?*
*लोग कहते हैं गरीब सुदामा।*
*चुटकी भर पोहा लेकर लेकिन*
*बँध गया चिरंतन के लिए स्नेहबंध में।*
*ऐसा हूँ मैं योगेश्वर*
*मुझे कहते हैं प्रेम का सागर।*
*रममाण हूँ मैं सदैव*
*आपके श्रद्धा और विश्वास में।*

एक दिन कृष्ण ने एक भक्त से कहा, "अरे, ताई की ओर से मुझे जो कार्य करवाँ लेना है, उसका स्वरूप, उसकी व्यापकता आज तुम्हें बताता हूँ। तुम्हारी नोटबुक में लिख लो -

"पूरी दुनिया में अशांति फैली हुईं है। हर इंसान अपने पंथ में, विचारों में अटका हुआ है। इंसान इंसान में द्वेष, बैर की भावना, मत्सरता बढ़ रही हैं। सभी लोगों में प्रेम की भावना निर्माण करना, जाति पाति, छूआछूत सभी को पार करके पूरी दुनिया में मानवता के धर्म का झंडा फहराने का कार्य ही, ताई के कार्य का मुख्य

लक्ष्य है। कृष्ण मतलब सभी की आत्मा को आकर्षित करने वाला। सभी के दृष्टिकोण को व्यापक बनाने का कार्य ताई को करना है। जनजागृति, अपनापन, स्नेह की, एकजुटता की भावना यही अध्यात्मशक्ति की नींव है। इसे सभी के मन पर अंकित करने का कार्य ही कृष्ण भक्ति का कार्य है और ताई द्वारा वहीं कार्य किया जा रहा है।”

आज सुबह से कृष्ण ने ताई को ध्यान करने कहा था। १२:०० बजे तक ध्यान करने के बाद कृष्ण ने ताई से कहा, “ताई, आज तुम भाकरी बनाओ। आज जनाबाई की भाकरी बनाओ।“ ‘कृष्ण मैं बनाती हूँ लेकिन कृष्ण यह जनाबाई की भाकरी का अर्थ क्या है।‘ “अरे, जनाबाई की भाकरी का अर्थ है प्रेम का प्रकटीकरण। वह मैं तुम्हें जानबूझकर बनाने के लिए बोल रहा हूँ। उसका कारण है प्रेम की उत्पत्ति होना। तुम क्या करती हो, मैं क्या करता हूँ? इसका एहसास मेरे भक्तों को होना ही चाहिए बस यही उद्देश्य है क्योंकि उन्हें एहसास तो होता है लेकिन क्षणिक। दो दिनों बाद वे भूल जाते हैं उन्हें लगने लगता है जो हुआ उसमें सारा श्रेय उनका है। इस ‘अहम् भाव’ में कृष्ण ने उनके लिए क्या किया यह वे पूरी तरह से भूल जाते हैं और उसी क्षण उनका पैर फिसलता है और वे स्वयं ही स्वयं के लिए अनाथ हो जाते हैं और इस बात का एहसास जब तक उन्हें होता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। क्या करें मजबूरी है, क्योंकि यह तो व्यवहार होता है और व्यवहारी इंसान का दर्जा मेरे जैसा होना तो संभव नहीं हो सकता इसलिए मैं बार बार कहता हूँ व्यवहार और परमार्थ को कभी भी अलग-अलग मत करो। इसका उत्कृष्ठ उदाहरण मैं स्वयं हूँ।”

“ताई, जनाबाई के द्वारा तैयार किये गए कंडो (उपलें) की बात मालूम है न, उसकी पेशी पेशी में मेरा नाम इस कदर घुल-मिल गया था कि उसके द्वारा तैयार किए गए प्रत्येक कंडे में से विट्ठल विट्ठल नाम की धुन सुनाई पड़ती। वैसे ही तुम्हारे द्वारा तैयार की गयी भाकरी के कण-कण में तुम्हारा मेरे ऊपर का स्नेह भाव और साथ ही साथ सभी दृश्य अदृश्य चराचर में स्थित मेरे प्रेम का प्रकटीकरण भी होगा। ताई, तुम मेरे प्रेमयोग का मूर्तिमंत प्रतिक होनी चाहिए ऐसा मुझे लगता है।”

ताई उस भाव समाधी से बाहर आते हुए बोली, ”श्रीकृष्ण, मेरे लाल, प्रारंभ, मध्य, अंत तुम्ही हो। मुझे सिर्फ तुम दिखाई पड़ते हो क्योंकि तुम्हारे कारण ही मुझे बल मिलता है, शक्ति मिलती है, प्रोत्साहन मिलता है और इससे ॐकार की जागृति होती है।

इस तरह से ताई अब हमेशा ध्यान, चिंतन, मनन में कृष्ण भाव में स्थित रहती। जैसे जैसे ताई की सेवानिवृत्ति का समय पास आ रहा था; वैसे वैसे ध्यान धारणा का कालावधि भी बढ़ता जा रहा था। कृष्ण बताते ताई, मेरे ज्ञात और अज्ञात सभी भक्तों के लिए और विश्व शांति के लिए ऐसे ध्यान की आवश्यकता है इसलिए फिर ताई रात के दो दो बजे तक ध्यान में ही रहतीं थीं।

एक दिन, कृष्ण बोलने लगा, ”ताई, मैंने कृष्ण कुटीर बनने के बाद तुम्हें बताया था कि इसे तुम्हें पंद्रह साल के बाद छोड़ना पड़ेगा। अब धीरे धीरे वह समय पास आता जा रहा है। तुम्हारी मानसिक तैयारी तो हो गई है न? इतने साल तुमने जो मार्गक्रमण किया वह बहुत धीमी गति से था। अब आगे तुमको पहाड़ चढ़ना है। अब सोचों पहाड़ चढ़ना या यही पर रुकना है? वह बताओं। चढ़ना नहीं हो तो वैसा बताओं यही पर रुकते हैं।“ ऊपर देखने पर नजर पहुँच भी नहीं रही थी। क्षणभर का विचार भी न करते हुए ताई ने कृष्ण से कहा, ’कृष्ण, अगर तुम मुझे बता रहे हो तो फिर मुझे कुछ सोचने की आवश्यकता नहीं है। मैं निश्चित रूप से चढूँगी। ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।‘ ”ताई, यह मेरे पैर की घुंघरूओं वाली पायल देखीं है न। इस दुर्गम राह पर चलते समय मेरे इन घुंघरुओं की मधुर झंकार सुनकर तुम्हें अच्छा लगेगा। तुम सारे दुःख, यातनाएँ, मनस्ताप भूल जाओगी क्योंकि अब तुम्हारा जगत् जननी बनने का समय प्रारंभ हो रहा है। अब तुम्हें सिर्फ तुम्हारे तीन ही नहीं तो मेरे असंख्य ज्ञात अज्ञात बच्चों के लिए खड़ा होना है उनकी माँ बनकर, माता बनकर इसलिए यह घुंघरू अब मैं तुम्हारे देहातीत रहने तक कभी नहीं उतारुँगा।”

# ॥ ॐ ॥

वर्ष १९९२ में आखिर ताई विद्यालय की सेवा से मुक्त हो गयी। ताई सेवानिवृत्त हो गयी। नौकरी करते समय कर्मभूमि का कर्मभूमि में और कार्यभूमि का कार्यभूमि में। ऐसा कृष्ण का कड़क अलिखित नियम होने के कारण उनके द्वारा अखंड रुप से कृष्ण कार्य करते समय, उनकी कर्मभूमि विद्यालय के कर्त्तव्य पालन करने में कभी भी किसी प्रकार का थोड़ा सा भी कसूर नहीं हुआ। कृष्ण को हमेशा अपने कर्त्तव्य कर्म किए हुए ही अच्छे लगते है। कर्त्तव्य करना यह हमेशा ही ताई की आद्य भूमिका रही हैं। ताई सभी बच्चों में लोकप्रिय शिक्षिका रही। खानापुर में नौकरी करते समय भी कभी उन्होंने आर्थिक उपार्जन के लिए निजी वर्ग घर में नहीं लिए लेकिन छुट्टी के दिन भी बच्चे उनके घर पढ़ने आकर बैठ जाते थे। जब ताई का तबादला खानापुर से हुआ तब छोटी सी मुमताज नाम की बच्ची यह मानने के लिए तैयार ही नहीं हो रही थी कि अब शेणवी टीचर नहीं आएगी। अब वे दूसरे विद्यालय में जाने वाली है। ताई जब चिकोडी जाने निकलीं तब वह रोते-रोते उन्हें स्टैंड तक पहूँचाने भी आयी थी।

आगे नंदा के जन्म के बाद चिकोडी के बच्चों ने आपस में चंदा इकट्ठा किया और अपनी प्रिय शिक्षिका के नवजात शिशु के लिए उपहार स्वरूप दो रुपए मनिऑर्डर करके भेजे। पीहर से आए हुए इस अनमोल उपहार को देखकर ताई को भी बहुत खुशी हुई थी।

ताई के साथ गाड़ी में रोज़ जाने आने वाली कितनी सखियों को उनके द्वारा किए जा रहे कृष्ण कार्य की, उनके आध्यात्मिक मार्गक्रमण की कोई मालूमात नहीं थी। इसका मुख्य कारण था ताई के रहन-सहन और स्वभाव की अद्भुत सरलता एवं मृदुता किंतु इस बारे में उनके विद्यालय के मुख्याध्यापकजी को जानकारी थी। कभी कभी किसी भक्त के लिए अचानक ध्यान की आवश्यकता आ जाती या फिर वहाँ जाने की जरूरत रहती तो कृष्ण तुरन्त आदेश देता, हाथ का चॉक नीचे रखो और तुरन्त फलाने फलाने जगह जाकर मेरे इस भक्त के लिए ध्यान करो। उस समय ताई मुख्याध्यापक जी से अनुमति लेकर ध्यान करने के लिए जाती और बचे हुए अध्यापन का कार्य शनिवार के दिन ज़्यादा पढ़ाकर पूरा करती।

ताई की सेवानिवृत्ति होने के पश्चात कृष्ण ने कहा, ताई, तुम्हारी निवृत होने की पार्टी के फलस्वरूप सभी परिवारजनों और कुछ कृष्ण भक्तों को लेकर गोवा जाकर आओ। इस प्रकार ताई तीनों बच्चों, बहुओं, पोता पोती, समधी और कृष्ण द्वारा बताए गए चुनिंदा कृष्णभक्तों को, ऐसे कुल मिलाकर २५ - ३० लोगों के साथ गोवा, मंगेशी और मडकई में नवदुर्गा का दर्शन करके आयी। नवदुर्गा तो साक्षात् ताई की माँ। ताई को उन्होंने आदेश दिया था कि इन सभी को लेकर आओ और इन्हें मेरे चरणों में डालो।

जून जुलाई महीने में कृष्ण कहने लगा, ताई मेरा दोहा का भक्त मुझे बार बार बुला रहा है। हम अगस्त महीने में दोहा जाएँगे। वहाँ तो अनेक नियम, कायदे कानून, लोगों के एकत्रित होकर पूजा पाठ करने पर अनेक निर्बंध है। जिसको जिसको पता चलता वे जरा आश्चर्य ही व्यक्त करते। कृष्ण कृपा से व्हीसा भी मिल गया और ताई दुबई, शारजा, मस्कत और दोहा में ध्यान यात्रा के लिए निकली।

कृष्ण कुटीर में आने वाले कुछ भक्त दुबई में रहते थे। ताई दुबई आ रहीं है, यह सुनकर वे सभी लोग बहुत प्रसन्न हो गए। सभी भक्त बेसब्री से कृष्ण का, ताई का इंतजार करने लगे। ताई किस किस के यहाँ जाएँगी, कहाँ रहेंगी, कृष्ण को क्या क्या दिखाया जा सकता है। कुछ ऐसा ही उत्साही वातावरण सभी भक्तों में उत्पन्न हो गया था। फोन की घंटियाँ रुकने का नाम ही नही ले रही थी। सभी लोग एक दूसरे से मिलजुल रहे थे। अलग-अलग कार्यक्रम निश्चित किए जा रहे थे। साधू संत के घर आने पर दीवाली दशहरा पर्व ही जैसे साकार हो जाता है। कुछ ऐसे ही वातावरण की निर्मिती हो गई थी। वहाँ ताई अनेक भक्तों से मिली, उनके घर जाकर ताई ने ध्यान भी किया, शारजा जाकर आयी। आगे मस्कत भी होकर आयी। उसके पहले से ही कृष्ण ताई से कह रहा था, “ताई मुझे मस्कत में एक केंद्र की स्थापना भी करनी है।” ताई अनभिज्ञ स्थिती में, ‘कैसा केंद्र कृष्ण?‘ “अरे, अब सामुदायिक उपासना होनी चाहिए। वर्तमान समय में इसकी बहुत आवश्यकता है। सामुदायिक मंत्र आराधना से जो ध्वनिलहरें उत्पन्न होती हैं उससे सकारात्मक उर्जा में कई गुना ज्यादा वृद्धि होती है। सामुदायिक आराधना करने के लिए मुझे कृष्ण केंद्र की स्थापना करनी है।“ ताई ने ‘हाँ क्या कृष्ण।‘ सिर्फ इतना कहा और वह मस्कत में चोथाभाई नाम के सज्जन के यहाँ आयी। चोथाभाई की दिली ख्वाहिश थी कि ताई मस्कत आयी ही है तो क्यों न उन्हें पूरा मस्कत शहर घुमाया जाए। इस बारे में जब उन्होंने ताई से पूछा, तब कृष्ण ने कहा, “अरे मुझे

शहर घुमने में कोई रुचि नहीं है। मैं यहाँ अपने कार्यवश आया हूँ। मुझे यहाँ एक केंद्र की स्थापना करनी है उस कार्य में मुझे खिमजी परिवार का मेरा भक्त मदत करेगा।” अब यह खिमजी कौन? उनकी जानकारी में जितने खिमजी परिवार थे वे एक एक करके सबका नाम लेकर कृष्ण से पूछने लगे। उसमें रमेश खिमजी का नाम आने पर कृष्ण ने तुरन्त कहा, “अरे हाँ, रमेश ही मेरा काम करेगा। उसे फोन लगाओ।” चोथाभाई ने तुरन्त उन्हें फोन लगाया तो वे दो तीन दिनों के लिए बाहर गाँव जा रहें थे। उनके ऐसा बोलने पर कृष्ण ने कहा, “अरे मैं तुम्हारे घर आने की बात कर रहा हूँ तो तुम कहाँ बाहर जा रहे हो।” वे तुरन्त बोलें, ‘नहीं नहीं मैं बाद में जाऊँगा। आप मेरे घर जरुर आईए।‘ इस प्रकार चोथाभाई ताई को लेकर उनके घर गये। कृष्ण ने रमेश खिमजी को केंद्र की पूरी संकल्पना दी और उनसे पूछा, “मुझे यहाँ ऐसा कृष्ण केंद्र करना है। क्या आपको जमेगा?“ उन्होंने भी तुरंत अपनी सहमति दर्शायी। संयोग से रमेश खिमजी मस्कत में कृष्ण मंदिर बना रहे थे लेकिन उस कार्य में अनगिनत मुश्किलें आ रही थी और अब तो धीरे धीरे मंदिर की नींव भी जमीन में धँस रही थी। इस आशंका से वे बहुत चिंतित हो रहे थे। उन्होंने अपनी मुश्किल कृष्ण को बतायी और प्रार्थना की, कृष्ण अपनी एक नजर उस जमीन के काम पर डाल दो। कृष्ण ने भी तुरंत हाँ कहा और वे सब उस मंदिर के काम की जगह पर होकर आए। कृष्ण ने अपनी दिव्य नजर मंदिर के कामकाज पर चारों ओर घुमायी और रमेश खिमजी जी को आश्वासन दिया कि, ”अरे, तुम बिल्कुल चिंता मत करो। मैं मंदिर का कामकाज अच्छे से पूरा करवाँ लूँगा। नींव वगैर धँसने का कोई धोखा नहीं है।” ऐसा लगा जैसे खिमजी जी के मंदिर के जीर्णोद्धार करने के लिए ही कृष्ण भेंट हुई थी।

१२ सितंबर १९९२ को मस्कत के पहले श्रीकृष्ण केंद्र की स्थापना हुई। अंदाजन चार पाँच सौ लोग वहाँ इकट्ठे हुए थे। बहुत ही भव्य दिव्य समारोह का आयोजन किया गया था। अनेक ज्ञात अज्ञात कृष्ण भक्त आकर प्रसाद, फोटो, आशीर्वाद लेकर गए। उस समय ताई के ध्यान में आया कि बदलापूर से निकलते समय कृष्ण ने इतने स्टीकर्स, फोटो, चांदी के तुलसी पत्र क्यों साथ लेने कहें थे। यह बात पूछी अर्थात् अन्य कृष्ण भक्तों ने (क्योंकि ताई कभी भी कृष्ण से यह क्यों और वह क्यों ऐसे सवाल नहीं पूछतीं थी। उनकी दृष्टि में ‘कृष्ण ने कहा‘ यही बहुत था।) तो जवाब में सिर्फ इतना ही कह रहा था कि मुझे लगने वाले है।

मस्कत आने से पहले ताई दोहा गयी थी। दोहा अर्थात् बहुत कड़क कायदे कानून

वाला देश हैं। वहाँ भी ताई अनेक भक्तों के यहाँ ध्यान करने के लिए जाती थी। सत्संग हो रहे थे लेकिन कृष्ण ने सभी भक्तों को स्पष्टरूप से बताकर रखा था कि यहाँ के कायदे कानून, नियमों का उल्लंघन किसी के द्वारा भी नहीं किया जाना चाहिए फिर वह बात कितनी भी छोटी क्यों ना हो। सात आठ लोगों के इकट्ठे होने पर हो या पार्किंग से संबंधित हो। जहाँ हम रहते है वहाँ के नियमों का पालन करके रहना ही कृष्ण को पसंद है। ऐसा ताई सभी को बता रही थी।

दोहा में रहते समय ही कृष्ण ने कहा, ”अब आगे मैं यहाँ से मस्कत जाने वाला हूँ। वहाँ मैं पहले श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना करुँगा। इस पर दोहा के भक्तों ने पूछा ‘कृष्ण, फिर दोहा में कब करोगे?’ “आगे जब मैं सात आठ सालों बाद फिर से आऊँगा तब यहाँ केंद्र करूँगा।“ कृष्ण ने ऐसा आश्वासन सभी भक्तों को दिया। इस प्रकार ताई जब १९९९ साल में फिर से दोहा आयी तब उन्होंने सचमुच तीन केंद्रों की स्थापना की। वर्तमान स्थिति में वे तीनों भक्त भारत वापस आ गए है इसलिए अब वहाँ केंद्र नहीं है लेकिन श्रीकृष्ण ने नौंवी विश्वजननी की स्थापना दोहा में होगी ऐसा सभी को बताया है आख़िर वह कृष्ण वचन है। निश्चित रूप से सत्य साबित होगा लेकिन कब होगा यह तो कृष्ण ही जानें।

दोहा में रहते समय ताई ने एक महिला भक्त को बताया, ”मुझे चप्पल चाहिए है, वह हम लेने जाएँगे।“ भरी दोपहर का समय था। उस भक्त की गाड़ी में एसी नहीं था। उस भक्त को लग रहा था कि इतनी प्रखर धूप में ताई को इस प्रकार बिना एसी की गाड़ी से कैसे लेकर जाना? उनको परेशानी होगी। जैसे ही उन्होंने यह बात ताई से कहीं वे बोली, ‘नहीं नहीं, कुछ नहीं होगा। कृष्ण का काम पहले होना चाहिए। चलो हम चलते हैं। उसे अपनी चिंता है ही।’

कृष्ण ने ताई को वह चप्पल पहनकर एक भक्त के लिए तीन दिनों तक ध्यान करने के लिए कहा था। इस प्रकार ताई का ध्यान शुरू हुआ। नींद में भी अगर चप्पल निकल जाती तो कृष्ण उन्हें जगाकर फिर से चप्पल पहनने के लिए कहता। ताई की ऐसी ध्यानमग्न अवस्था में उनसे मिलने कुछ महिलाएँ आयी थीं। ताई ध्यानावस्था में पूजा घर में बैठी हुई थी, पैरो में चप्पल भी थी। वह देखकर उन महिलाओं में आपस में धीमें स्वर में कानाफूसी होने लगी, ‘देखो तो क्या आश्चर्य है, भगवान के पास चप्पल पहनकर बैठे हैं। जो दिखता है वह अजीब ही होता है।’ इतने में ताई ने उन्हें आवाज देकर कहा, ‘बैठिए आप लोग, आती हूँ मैं। ध्यान कर रही थी। कृष्ण ने लगातार तीन दिनों तक इन चप्पलों को पहनकर ध्यान करने

के लिए कहा है। किस भाग्यवान भक्त के लिए इतनी भाग-दौड़ कर रहा है। यह तो कृष्ण ही जाने।' वे औरते सहमकर एक दूसरे की ओर देखने लगी। उनके सभी प्रश्नों के उत्तर बिन माँगे ही उन्हें मिल गये थे।

१९९२ में ताई जब दोहा गई थी, तब एक कृष्ण भक्त ताई से बोले, 'ताई, आपको मुझे एक जगह दिखानी है। कृष्ण आएगा क्या?' कृष्ण ने कहा, "चलो, चलते हैं हम।" इस प्रकार वे दोनों घूमने गए। तब रास्ते में एक जगह की ओर इशारा करते हुए कृष्ण ने कहा, कुछ सालों बाद मैं मूर्ति स्थापना करने के लिए यहाँ आऊँगा।"

आगे दो चार सालों बाद उसी एरिया में बिल्डिंग बनाने के लिए खुदाई के दौरान एक मजदूर को गाय के साथ कृष्ण की सुंदर मूर्ति मिली लेकिन वह मजदूर परधर्मीय होने के कारण यह मूर्ति है यह भी वह पहचान सका कि नहीं क्या पता? उसने उसे पत्थर समझकर फेंक दी होती लेकिन ऐसा हुआ नहीं। उसने वहाँ उपस्थित किसी बंगाली या गुजराती व्यक्ति के पास वह मूर्ति देते हुए कहा यह क्या है आप देख लो? उन्होंने वह मूर्ति रख ली और तब से उस घर में जन्माष्टमी का उत्सव मनाया जाने लगा।

दोहा में रहते समय कृष्ण ने नीचे दिया हुआ संदेश अपने भक्तों के लिए लिखकर रखा-

"मानवीय जीवन में, मैं काफी उच्च स्थान पर हूँ। अगर उसने सिर्फ एक बार भी मेरी ओर स्नेह से परिपूर्ण दृष्टि से देखा तो भी मेरे सहस्त्र हाथ उसके लिए काम करते हैं इसलिए सदैव मेरा स्मरण करो। मेरा स्मरण होने का अर्थ ही है कि मैं आपके लिए खड़ा हूँ। मैं मेरे भक्त को उसके भंडार से पहचानता हूँ और जो भंडार मैं मानता हूँ वह है पूर्ण श्रद्धा। छोटा, बड़ा, गरीब, अमीर यह सब मैं नहीं जानता। मैं ही कुबैर हूँ इसलिए हर किसी को जो कुछ भी प्राप्त हुआ है, वह मेरे द्वारा ही दिया हुआ है इसलिए यदि कोई यह कहता है कि कृष्ण सिर्फ अमीरों के यहाँ जाता है तो उसके जैसा अज्ञानी वहीं होगा। मैं ही सबसे बड़ा कुबेर हूँ। यह वे भूल जाते है। मैं जिसके घर जाता हूँ वे ही सबसे बड़े कुबेर क्योंकि मेरी दृष्टि में कुबेर की परिभाषा सबसे अलग है। वह है 'मेरे ऊपर रखी हुई पूर्ण श्रद्धा वही मेरी संपत्ति है।' मेरा स्थान अर्थात् आपका हृदय। मैं वही वास करता हूँ। आपके बीच रहता हूँ, आपके द्वारा ही काम करता हूँ और आपके द्वारा ही सब कुछ करवाँ भी लेता हूँ। मैं एक समय में ही अनेक जगहों पर वास करता हूँ। इसका यही अर्थ होता है।"

# ।। ॐ ।।

३१ दिसम्बर १९९२। कृष्ण ने कहा, “वर्ष १९९३ मेरे कार्य की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस वर्ष के लिए मेरा सन्देश है कि, अपने श्रद्धास्थान के ऊपर से विश्वास ढ़लने मत दीजिए। उसके फलस्वरूप मैं आपके लिए खड़ा रह सकूँगा। सब का श्रद्धास्थान अलग-अलग हो सकता है। कोई मुझे गणेशजी के रुप में, तो कोई मुझे साईबाबा के रूप में देखता है। अंत में सब सेवाएँ आकर मुझे ही पहुँचती है। सिर्फ रूप अलग-अलग होते हैं जैसे कि स्वर्ण के अलग-अलग प्रकार के अलंकार हो। उसी प्रकार मैं हूँ। मैं सभी कुछ मेरी ओर लेता हूँ क्योंकि मैं पूर्णब्रम्ह हूँ। ॐकार यह मेरा ही रुप है इसलिए आप सभी को स्पष्ट रूप से बताता हूँ कि, यह वर्ष ऐसा ही है। अगर मेरी मदद की अपेक्षा है तो श्रद्धास्थान पर पूरा विश्वास रखिए। जिसके फलस्वरूप मैं आपके लिए आसानी से खड़ा रह सकूँगा।”

अब कृष्ण ताई को बता रहा था, “ताई, अब तुम्हें मेरे बहुत भक्तों के लिए ध्यान करना है। अब आगे से शिव, शक्ति की आराधना भी होनी चाहिए इसलिए हम रामेश्वरम और कन्याकुमारी जाएँगे।“ २५ फरवरी १९९३ से ११ मार्च १९९३ तक, इस यात्रा में ताई के साथ डोंबिवली के भक्त थे। इसी यात्रा में वे त्रिवेंद्रम, मद्रास, पांडिचेरी और पद्मनाभ मंदिर भी गए थे।

कन्याकुमारी से आने के बाद कृष्ण ने कहा, “मुझे २४ तारीख से २६ तारीख तीन दिनों तक अज्ञात स्थल पर ध्यान के लिए जाना है।” कृष्ण ने यह जिम्मेदारी अपने एक भक्त के हाथो सौंपी। कृष्ण ताई को बता रहा था, “ताई मेरे कार्यों की योजनाओं के लिए, और उस कार्य को प्रत्यक्ष रुप में साकार करने के लिए लगने वाली ताकत, तुम्हें और उस कार्य को पूरा करने में मदद करने वाले मेरे भक्तों को देने के लिए इस ध्यान की बहुत मदद होने वाली है इसलिए मुझे किसी का भी संपर्क नहीं चाहिए।“

दूसरे दिन अज्ञात स्थल पर ध्यान के समय कृष्ण ने किसी को भी वहाँ रुकने नहीं दिया। यहाँ तक कि उस घर के मकान मालिक को भी घर में रुकने नहीं दिया। प्रात:कालीन समय में एकांत में किया गया यह ध्यान बहुत गहरा और अच्छा हुआ

लेकिन ताई जब ध्यान पूरा करके उठी तब वे पसीने से पूरी तरह लथपथ हो चुकी थी। ऐसा लग रहा था कि जैसे वे बहुत लंबी यात्रा करके थककर आयी है। बाद में वे बता रही थी, 'आज़ की ध्यानवस्था में कृष्ण मुझे बहुत दूर पहाड़ों में, खाइयों के पास, जंगलों में लेकर गया। वहाँ गुँफ़ा में एक साधु ध्यानावस्था में बैठे हुए थे। उनकी आँखें शांत एवं सात्विकता से परिपूर्ण प्रतीत हो रहीं थी। कृष्ण ने मुझे उनके सामने खड़ा किया और कहा, "यह सत्पुरुष तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर तुम्हें बहुत ज्ञान देंगे। उसकी बहुत आवश्यकता है।" इस पर मैंने कृष्ण से कहा, 'कृष्ण तुम मुझे फँसा रहे हो क्या? इतनी शांत नजर तुम्हारे सिवा किसी ओर की हो सकती है क्या बताओं तो और तुम्हारे अलावा किसी और का हाथ मुझे मेरे सिर पर नहीं चाहिए। तुम्हारे होते हुए किसी और को मुझे ज्ञान देने की जरुरत नहीं है।' मेरे द्वारा ऐसा बोलने पर कृष्ण ने कहा, "ऐसा बोल रही हो, तो फिर मैं ही तुम्हें ज्ञान प्रदान करुँ क्या? सुनो तो फिर।" ऐसा बोलकर कृष्ण लगातार तीन घंटों तक मुझे कुछ बताता रहा। मैंने उससे कहा, 'कृष्ण, अरे इसमें का मुझे एक अक्षर भी समझ में नहीं आया और ध्यान में भी नहीं रहेगा।' इस पर उसने तुरंत कहा, "ताई, तुम्हें कुछ नहीं समझ में आया तो भी चलेगा लेकिन यह ज्ञान तुम्हारे शरीर में ऐसा ही समाया हुआ रहने दो।" इस गूढ़ ज्ञान का संपादन करके ताई जब वापस आयी, तब वे बहुत थकी हुई अवस्था में थी लेकिन चेहरा खुशी से दमक रहा था, प्रसन्न था।

वर्ष १९९० में अमेरिका से वापस आते समय कृष्ण ने वहाँ के भक्तों को बता रखा था कि, "अब मैं तीन साल बाद वापस आऊँगा और आते समय आप सभी के लिए नई योजना लेकर आऊँगा।" इस पर ताई ने हँसते हुए कहा था, 'कृष्ण आने के बारे में बोल रहा है तो वैसा होगा भी लेकिन यदि आप मुझे ताई कहकर पूछेंगे तो तीन साल बाद फिर से यहाँ आना मेरे लिए संभव नही है।'

कृष्ण के बताएनुसार अब वह समय आ गया था। कृष्ण कहने लगा, "मैं अब अमेरिका जाऊँगा। अब मुझे मेरे जाने की तैयारी करनी चाहिए। वैसे तो कृष्ण यह सितंबर अक्टूबर से बोल रहा था। थोड़े दिनों बाद अमेरिका से दो तीन भक्तों के फोन आये। 'हम आपके लिए टिकट भेजते है।' मैंने वैसा कृष्ण को बताया तो कृष्ण ने कहा, "ठीक है, लेकिन मैं यह अभी नहीं बता सकता क्योंकि मुझे मेरे कार्य में किसकी सेवा का स्वीकार करना है यह अभी निश्चित करना बाक़ी है। मैं एक भक्त के लिए वचनबद्ध हूँ। १ दिसंबर तक मैं उसकी ओर से टिकट आने का

इंतजार करुँगा इसलिए आप लोग मुझे ३ दिसंबर को फोन करो। तब तक मैं दूसरी ओर से सेवा का स्वीकार नहीं कर सकता।“ उसके अनुसार एक भक्त का फोन आया। ‘टिकट भेजूं क्या?‘ “जाना जरुरी है क्या? यहाँ से भी ध्यान हो सकता है।” ऐसे विचारों के कारण ताई संभ्रमित अवस्था में जाने के लिए नहीं बोल रहीं थी लेकिन कृष्ण ने उस भक्त से कहा, “तुम ताई का कुछ मत सुनो। मुझे आगे आने वाली यंग जनरेशन के लिए वहाँ आना ही पड़ेगा इसलिए इस सामुदायिक कार्य के लिए तुम्हारी इस सेवा का मैं स्वीकार करुँगा। मुझे १२ मई से १५ मई के बीच का एअर इंडिया का टिकट भेजो।“ थोड़े दिनों बाद उनका फोन आया, ‘कृष्ण, अभी तो एअर इंडिया की हड़ताल चल रही है, तो ताई कैसे आ सकेंगी?‘ कृष्ण ने कहा, ”एक ही बार बताता हूँ मैं एअर इंडिया से ही आऊँगा। तब तक हड़ताल समाप्त हो जाएगी। तुम १२ मई से १५ मई के बीच का टिकट भेजो।“

ताई अमेरिका जाएगी ऐसा जब पक्का हो गया तब कृष्ण ने कहा, ”ताई, इस बार मुझे ३०० फोटो लगने वाले है।“ ऐसे समय में ताई स्वयं किसी को बोलने नहीं जाती है लेकिन कोई भक्त आता है और वह आवश्यक वस्तुएँ अर्पण करके जाता है।

इस बार की यात्रा में कृष्ण जो योजना तैयार करके आया था उसके दृश्य स्वरुप कृष्ण ने अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में पहला श्रीकृष्णलीलाकेंद्र श्रीमती शशि बाल के यहाँ दिनांक १८ अगस्त १९९३ को शुरू किया।

उस समय भक्तों को मार्गदर्शन करते समय ताई ने कहा, ‘सामुदायिक आराधना का अर्थ ही है एकता की शक्ति। सच्चा धर्म मानवता धर्म। वह समझने के लिए आवश्यक है ॐकार की जागृति। वह जागृति कैसे उत्पन्न की जा सकती है? तो वह जागृति इस काल के अनुरुप, चैतन्यदायी और प्रेरणादायी मंत्र, ’ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ के जाप से, उसके बार बार पुन:उच्चारण से उत्पन्न की जा सकती है। किसी ने कितनी भी बातें बताई, फिर भी कृष्ण के आधार के बगैर मानवीय जीवन को कोई अर्थ नहीं है। कृष्ण पर विश्वास रखकर, उसका हाथ पकड़ कर यदि जीवन का मार्गक्रमण किया तो कृष्ण आपका पूरा भार उठाता है।” आप सभी ने मुझे अपनी श्रद्धा, भक्ति, विश्वास से अपनी ओर खींच लिया है। मैं भी आपके लिए यहाँ आया हूँ, खड़ा हूँ। इसी प्रकार सदैव मुझे आपके लिए खड़ा रखिए और मेरी ओर से ही आपके लिए सब कुछ करवाँ लीजिए और वह मैं आपके लिए जरूर करूँगा भी।’ ऐसा वचन कृष्ण ने दिया।

इसी प्रकार कृष्ण जो कहता है कि, मैं समय के अनुसार बदलता हूँ; उसका भी अर्थ बताया।" आप सब 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की सामुदायिक आराधना करने के लिए एकत्रित आइए और उसका पूरा पूरा आनंद लूटिये। विश्व शांति के इस यज्ञ में अपनी अस्वस्थता की आहुति दीजिए। वह अर्पण करने से उसमें से प्रकट होने वाली ज्योति हमें ज्ञान, प्रकाश और उत्साह देकर हमारे जीवन को सुसह्र बनने में मदत करेगी। इसके अतिरिक्त आपके सहवास में आने वालों पर भी इसका प्रभाव निश्चित रूप से होगा। उनके जीवन में आपकी ज्योति प्रभावशाली सिद्ध होगी और उन्हें तेजोमय बनने में आपकी बहुत मदत होगी। इस प्रकार यह कार्य आगे की दिशा में अग्रेसर होकर प्रसारित होता रहेगा। वर्तमान समय में यज्ञ करने के लिए समिधा जमा करने की आवश्यकता नहीं है। आपके हृदय में उत्पन्न हुए भक्ति रस से स्नेह की, अपनेपन की और मानवतावादी धर्म की तेज: पुंज ज्योति निर्माण होगी और वह अनेकों के जीवन में मार्गदर्शक सिद्ध होगी। यही वर्तमान समय का यज्ञ है। अभी इसकी अत्यंत आवश्यकता है और उस आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए ही मैं यहाँ आया हूँ।"

कृष्ण ने आगे दस केंद्रों की और स्थापना की। अब कृष्ण केंद्रों की संख्या बारह हो गई थी। यूएसए की इस ट्रिप में कृष्ण का लगातार ध्यान चल रहा था। अनेक लोगों के यहाँ जाकर ध्यान करना, उन्हें मार्गदर्शन करना, कृष्ण भक्ति का मर्म खोलकर मानव हृदय में उसका बीजारोपण करना, अविश्रांत, अविरत कार्य चालू था। भक्तों की ओर से भी भर-भर कर प्रतिसाद मिल रहा था।

कृष्ण बार बार बता रहा था कि, आपके लिए और आपकी आगे आने वाली यंग जनरेशन के लिए, आपके अंतरंग में स्थित ॐकार की जागृति होना बहुत आवश्यक है। उसके लिए 'ॐनमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की आराधना करो। विश्व शांति की स्थापना के लिए इस मंत्र की आराधना की अत्यंत आवश्यकता है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति इसका एक घटक है। आज हम देखते हैं घर घर में भौतिक सुख सुविधाएँ हाथ जोड़कर खड़ी हैं, ऊपर ऊपर से सब कुछ अच्छा दिखाई पड़ता है लेकिन मानसिक शांति, समाधान का कहीं कोई अता-पता नहीं है। वह शांति आपकों सिर्फ मेरे सानिध्य में ही प्राप्त हो सकती है। यदि आपको मेरे और आपके बीच सानिध्य का, सामीप्य का निर्माण करना है तो आपके अंतरंग में जागृत रहने वाला, उपस्थित रहने वाला "मैं" साथ ही साथ आपकी ताकत, आपकी शक्ति में सर्वांभूती जो ॐकार है, उसकी जागृति करनी चाहिए। इसके

लिए मेरे सभी भक्तों को 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस महान मंत्र का जाप करने के लिए कहो। ऐसा कृष्ण ने स्पष्ट रूप से बार बार बताया। आगे ऐसा भी कहा अभी जो मैं अमेरिका जा रहा हूँ वह सिर्फ मेरे भक्तों को यह सीधा-सीधा, सहज सरल मार्ग बताने के लिए ही जा रहा हूँ।

उस समय जिन केंद्रों की स्थापना हुई उनकी विशेषता यह थीं कि हर जगह कृष्ण भक्त अपने परिवार के छोटे बच्चों को साथ लेकर आए थे। इस मंत्र को वहाँ उपस्थित बच्चों ने भी बोला। कुछ बच्चों ने कहा 'हमें यह मंत्र बोलने नहीं आ रहा है आप सिखाईये', कुछ बच्चों ने इसे इंग्लिश में लिख लिया इसलिए निश्चित रूप से इस मंत्र का बीजारोपण वहाँ हुआ होगा।

वहाँ उपस्थित कुछ भक्तों ने कहा, 'ताई, आपके द्वारा जो यह कार्य शुरू किया गया है वह निश्चित रूप से स्तुत्य है। इसके द्वारा हम सभी को मार्गदर्शन मिलता है।' इस पर ताई ने कहा, 'सच कहूँ तो, आपने जो कहा यह कार्य 'मैं' करती हूँ वह व्यवहारिक दृष्टिकोण में हम बोलते है लेकिन सच कहें तो यह कृष्ण की इच्छा होती है इसलिए सब होता है। श्रीकृष्ण भक्तों की निर्मल, निश्चल प्रेम की बरसात के कारण यह कार्य ज्यादा फल-फूल रहा है, विस्तारित हो रहा है और आगे भी विस्तारित होता रहेगा। ऐसा मुझे निश्चित रूप से प्रतीत हो रहा है।

ताई ५ सितंबर १९९३ को अमेरिका से वापस आयी। उसी दिन कृष्ण ने उन्हें कहा, "ताई, कल से २२ सितंबर तक तुम घर की दहलीज भी न लाँघते हुए पूरे समय ध्यान करना। अमेरिका में मैंने मेरे अनेक भक्तों को वचन दिया है उसकी पूर्तता करने के लिए इस ध्यान की बहुत आवश्यकता है।" ऐसा सिलसिला बहुत समय से चला आ रहा था कि कृष्ण ने आदेश देना और ताई ने उस आज्ञा का शत प्रतिशत पालन करना। इस प्रकार ताई ने पंद्रह सोलह दिन तक घर की दहलीज भी लांघी नहीं और घर में रहकर अविरत गहरी ध्यान धारणा की।

अक्टूबर महीने में कृष्ण ने ताई को फिर से कुछ भक्तों के साथ मंगेशी, मड़कई जाकर भविष्य में होने वाले कार्य के लिए मंगेशी और नवदुर्गा के शुभ आशीष लेकर आने के लिए कहा।

कृष्ण के यहाँ सुबह ८:३० से १०:०० के बीच मार्गदर्शन के लिए आने वाले लोगों का ताँता लगने लगा। दूर दूर से गाँव गाँव से लोग अपनी मुश्किलों का, कठिनाइयों का हल पूछने कृष्ण कुटीर में आने लगे। ताई के द्वारा उन्हें उनकी मुश्किलों के हल

भी मिलते। आश्चर्य की बात तो यह है कि कठिनाइयों का हल पूछने के लिए आयी हुई व्यक्ति जाने अनजाने में आगे भी कृष्ण कुटीर में बार बार आती ही रहती। पूर्ण कृष्णमय हुई गुरु माँ से प्रत्यक्ष रूप से मिलने, उनके मुख से उनके लाडले कृष्ण कन्हैया की लीलाएँ सुनने भक्तों के कदम कृष्ण कुटीर की ओर बढ़ ही जाते।

ताई के ध्यान का समय भी अब धीरे धीरे बढ़ता जा रहा था। सेवानिवृत्ति के बाद कृष्ण ने दोपहर २:०० से ३:०० का समय ध्यान के लिए निश्चित किया हुआ था। इस प्रकार अमेरिका से आने के बाद रोज़ रात ११:०० से १२:०० बजे तक विश्व शांति के लिए, १२:०० से १:०० बजे तक और सुबह २:०० से ५:०० बजे तक मेरे सभी ज्ञात और अज्ञात भक्तों के लिए ध्यान करो ऐसा कृष्ण ने कहा। ताई बताती थी कि रात के ध्यान के समय का पालन करने में मुश्किलें नहीं आती थी लेकिन दोपहर २:०० से ३:०० के समय के ध्यान का पालन कभी कभी नहीं हो पाता था क्योंकि सुबह सुबह आए हुए भक्त प्रसाद वगैरह लेकर जाते बाद में हमारा सबका खाना पीना खत्म होने तक दोपहर के २:३०-२:४५ बज जाते लेकिन कृष्ण इतना दयालु कृपालु है कि मुझे कहता, "ताई, कोई बात नहीं, अब ३:३० बजे तक ध्यान कर लो।" शाम को ७:०० से ८:०० का समय भी ध्यान का महत्वपूर्ण समय है। किसी के लिए जब कृष्ण ध्यान करने कहता तब ज्यादातर ध्यान का समय रात ७:०० से ८:०० का होता था।

ताई कभी कभी उनकी ध्यानावस्था के बारे में बताती थी, 'जब मैं फूलों की पंखुड़ियों का अभिषेक करती हूँ तो उस समय मैंने जो मेरे हजारों भक्तों की जिम्मेदारी ली है न उनके लिए करती हूँ। जब मैं खड़ी होकर ध्यान करती हूँ, तब मेरे एक पैर का पंजा दूसरे पैर पर अनजाने में ही आ जाता है; और फूलों का हार तोड़कर जब अभिषेक करती हूँ, तब वह आगे आया हुआ पैर मुझे दिखाई नहीं देता लेकिन महसूस होता रहता है। मैं तुम्हारे माध्यम से ही सबके बीच रहता हूँ, ऐसा जो कृष्ण बताता है उसी का यह परिणाम है। बहुत बार जब मैं ध्यान करती हूँ, तब मेरा शरीर इतना हल्का हो जाता है कि पूछो मत। कई बार लोग कहते हैं कि उस समय मेरे पैर जमीन से फुट भर ऊँचाई पर होते हैं ऐसा उन्हें दिखाई पड़ता है लेकिन मुझे ऐसा महसूस नही होता है।'

आजकल कृष्ण 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का महत्त्व बार बार बताता है। उसी संदर्भ में कृष्ण ने एक बार आगे दिया हुआ संदेशा दिया था।

“अपने प्रत्येक दिन की शुरुवात ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र से करो। जिसके परिणामस्वरूप हमारे दिनभर के कार्यकलापों पर, व्यवहारों पर भगवान श्रीकृष्ण की नजर रहती हैं। दिन की शुरुवात मतलब हमारे कार्यकलापों की शुरुवात। उस दिन किए जाने वाले कर्त्तव्यों कर्मों की शुरुवात। फिर उससे संबंधित विचार और विचारों के अनुसार कृति करवाँ लेने वाला जो ‘वह‘ ॐकार है हमारे अंतर्मन में सदैव जागृत रहने वाला, पल पल किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहने वाला जो परब्रह्म है उसे ही यह प्रणाम है। इस मंत्र से अपने दिन की शुरुवात करने का अर्थ ही है कि पूरे दिन में आने वाले प्रत्येक क्षण की जिम्मेदारी उस परब्रह्म की।

पूरे दिन में घटने वाली सभी घटनाएँ हमारे मन के अनुकूल ही होंगी यह जरूरी तो नहीं है क्योंकि जीवन तो सुख दुख के धागों से बुना हुआ है इसलिए यदि थोड़ा भी मन के विपरीत होता है, तो मन के अंदर छिपा हुआ सुप्त क्रोध तुरंत उफन कर बाहर आ जाता है और मन में लगातार क्रोध के विचारों का आवागमन चालू हो जाता है और उससे उत्पन्न हुई मन की वेदनाओं को रोका भी नहीं जा सकता। यह वेदनाएँ ही होती हैं जो निराशा को निमंत्रण देती हैं। यह निराशा, यह क्रोध ही इस राह की फिसलती हुई सीढ़ियाँ हैं। हम फिसलें नहीं इसलिए हमें लगातार प्रयत्नशील रहना होगा और वह प्रयत्न है ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ इस मंत्र से अपने दिन की शुरुवात करना। वास्तविकता में यह बताना बहुत आसान है लेकिन आचरण में लाना अत्यंत कठिन है और यह कृष्ण कृपा एवं आशीर्वाद के बिना संभव ही नहीं है। उसकी कृपा का अर्थ ही है हमारे मन की स्थिरता, मन का तौल न जाना। उसके आशीर्वाद का अर्थ है मन को सावधानी में रखकर चलने की, व्यवहार करने की आदत लगाना। यह सब होने के लिए, सदैव अपने पीछे उस परम् शक्ति को खड़ा करने के लिए ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र का जाप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से करने की नितांत आवश्यकता है अर्थात् यह भी उसकी कृपा से ही संभव होने वाला है।”

श्रीकृष्ण ने उद्धव को उपदेश देते समय यही कहा है, ’मुझे दान धर्म से प्राप्त नहीं किया जा सकता, मैं ध्यान से प्राप्त नहीं होता हूँ, मैं उपासना से प्राप्त नहीं होता हूँ, मैं तो सिर्फ मेरी कृपा से ही प्राप्त हो सकता हूँ। उद्धव, मैंने तुम्हें सब-कुछ प्रदान कर दिया। अब तुम्हारे गुरु तुम स्वयं हो! तुम्हारे अंतर्मन में तुम्हारी जगह ही तुम मुझे ढूँढो।’

# ।। ॐ ।।

वर्ष १९९३ में दिसंबर का आखिरी सप्ताह था। कृष्ण ताई से कहने लगा, ”१ जनवरी से ७ जनवरी १९९४ तक पूरी तरह से मौन धारण करके चित्र की भाँति बैठकर ध्यान करना है। बोलों है तैयारी ऐसा करने की?“ पूरे सात दिन संपूर्ण मौन और चित्र के समान बैठकर ध्यान करना! ताई भी सुनकर थोड़े दबाव में आ गयी। क्या मैं कर सकूँगी? लेकिन दूसरे ही क्षण उनकी आँखों के सामने से आज तक के बीते हुए कसौटी के क्षण और कृष्ण की मदद से उन क्षणों की आवश्यकता की पूर्तता सभी कुछ आकर गए। उन्होंने कृष्ण से कहा, ‘कृष्ण, पूछने वाले भी तुम हो और करवाँ लेने वाले भी तुम हो। मुझे तो सिर्फ इतना पता है की मैं तो सिर्फ निमित्त मात्र हूँ, एक माध्यम हूँ। मेरी ओर से तुम्हारी आज्ञा का पालन करने का मैं पूरी निष्ठा के साथ शत प्रतिशत प्रयत्न करूँगी।’

रात के बराबर बारह बजे ताई उनकी ध्यान की कुर्सी में स्थापन्न हुई। एकटक कृष्ण की ओर स्थिर नजर। उस समय मंदिर में सत्तर अस्सी लोग, नए साल का शोरगुल चल रहा था। ताई पूर्णत: अंतर्मुख होकर ध्यानावस्था में थी लेकिन शरीर से वही उपस्थित थीं।

१ जनवरी, ध्यान का पहला दिन ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र से ध्यान की शुरुवात हुई।

दूसरे दिन ‘ॐ महान शक्ति देवताय नमः‘

तीसरे दिन ‘सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वित:। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय:‘ यह मंत्र करने के लिए कहा।

चौथे दिन ‘सर्वमंगलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयंबके गौरी नारायणी नमोऽस्तुते।‘ यह मंत्र करने के लिए कहा।

ध्यान के पाँचवे दिन ‘अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्‘ यह मंत्र करने के लिए कहा। बाद में ६:०० बजे से ८:०० बजे तक ध्यान करने के लिए कहा।

ध्यान के छठवें दिन श्रीकृष्ण ने 'शरणागत दीनार्त' यह मंत्र करने के लिए कहा और साथ ही साथ नूतन वस्त्र धारण करके मेरी स्तुति करो ऐसा कहा।

ध्यान और मौन का सातवाँ दिन अर्थात् आखिरी दिन। ताई को अत्यंत समाधान मिला क्योंकि ध्यान उत्कृष्ट रीति से संपन्न हुआ था।

"बहुत दिनों से ध्यान करना था आज संयोग आया। सभी भक्तों के लिए आराधना करने की आवश्यकता होती हैं, वह आज पूरी हो गयी। मेरे तीन हजार भक्तों पर इस आराधना का बहुत परिणाम होगा और कुल सात हजार भक्तों को इसका लाभ मिलेगा अर्थात् यह भी प्रत्येक भक्त के श्रद्धा भाव पर निर्भर करता है। इस प्रकार जिनके द्वारा यह सब कर रहा हूँ, उस शरीर को ताकत देने के लिए मुझे जो करना था, वह सब कुछ मैंने किया, मतलब दिया। पंद्रह सालों बाद कृष्ण कुटीर छोडना इसका गर्भित अर्थ भी सही मायने में ताई को बता दिया। आज तक तुम सुख दुख की सीढ़ियाँ चल कर आयी अब उसकी परमावस्था आ गई है। अब वह जीवन समाप्त हुआ और पूर्ण मानसिक ताकत के साथ तुम मेरे कार्य के लिए अब कार्यरत होगी और उसका तुम्हें पूरा पूरा आनंद भी मिलेगा। यह सब बहुत अर्थपूर्ण है। ताई इसका अर्थ तुम्हें समझे या न समझे, इसका परिणाम निश्चित रूप से होगा। मैं जिस कार्य के लिए खड़ा रहने वाला हूँ, समझ लो उस कार्य की शुरुवात हो चुकी है, ऐसा तुम समझो। सभी कुछ मेरे हाथों में हैं।"

ऊपर दिया हुआ सन्देश कृष्ण ने ताई को ध्यान के आख़िरी दिन दिया।

कृष्ण कुटीर में आने वाले भक्तों की और फोन की संख्या जैसे जैसे बढ़ रही थी वैसे वैसे ताई के ध्यान धारणा और मौन का समय भी बढ़ता जा रहा था। इन सभी के साथ साथ ताई अपनी सांसारिक जिम्मेदारियाँ भी पूरी कर रहीं थीं।

वैभवी के विवाह का देखना था। कृष्ण ने ताई से कहा उसका विवाह चौबीसवें साल में होगा लेकिन माँ होने के रिश्ते से तुम्हें अपनी ओर से जो जो कोशिशें करनी है वह जरूर करो। इस प्रकार ताई की ओर से अलग अलग रिश्तों की छानबीन, जानकारी लेने का काम कृष्ण करवाँ रहा था। १० मई १९९५, वैभवी का चौबीसवाँ जन्मदिन, वह दिन भी बीत गया। विवाह की बात कहीं भी आगे नहीं जा रहीं थी। आगे ललिता पंचमी का दिन आया उस दिन प्रातः कालीन ध्यान में कृष्ण ने कहा, "आज मैं वैभवी को सरप्राइज गिफ्ट देने वाला हूँ।" उस दिन दोपहर के समय कारखानीस काका आए। उन्होंने ताई को श्री संतोष श्रॉफ जी के

रिश्ते के बारे में जानकारी दी। ताई ने कहा, 'काका, कृष्ण से ही पूछते हैं।' कृष्ण से पूछने पर उसने तुरंत इस रिश्ते के लिए हामी भरी। वास्तविकता में उस दिन वैभवी का तिथीनुसार चौबीसवाँ जन्मदिन था। आगे उस रिश्ते से संबंधित आपस में बातें तय हुई और विवाह निश्चित हुआ। विवाह दिसंबर के महीने में था। अब विवाह की तैयारी में लगना चाहिए ऐसा सोचकर ताई बच्चों के साथ मिलकर एक एक बात तय कर रहीं थीं।

एक दिन बीच में सुबह कृष्ण ने कहा, "ताई, आज महान शक्ति की दूध का अभिषेक करके पूजा करनी है।" बताने वाला भी वहीं है, करवाँ लेने वाला भी वहीं है और योजना बनाने वाला भी वहीं है। इसका अनुभव एक बार फिर से आया।

वह दिन कृष्ण के बोलने का था। अनेक भक्त आ रहें थे। आते समय प्रत्येक भक्त दूध लेकर आ रहा था। कृष्ण बता रहा था, "ताई, आज इस सारे दूध से महान शक्ति को अभिषेक करना है।' इस तरह अभिषेक चल रहा था बीच में ही कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, मेरे बाबा ने नाक में पहनने की हीरे की लौंग बनाई थी। वह जरा लेकर आओ।" ताई की आँखें कृष्ण के प्रति स्नेह से भर आयी।

स्वर्गीय बाबा को ऑफिस में एक बार किसी बारे में पैसे मिले। कुल मिलाकर चार पाँच सौ रूपयें होंगे। उन पैसों से उन्होंने नाक में डालने की हीरे की लौंग बनाकर लायी और कहने लगे, 'लीला, ऐसी लौंग मेरी गृहलक्ष्मी के लिए बनाने की बहुत इच्छा थी। अब आज पैसे आ ही गए है तो मैं बनवा कर लें आया देखो।' हमेशा की तरह प्रथम कृष्ण के पास, नवदुर्गा के चरणों में रखकर कुछ दिनों तक ताई ने उपयोग में भी लायी। आगे बाबा का देहावसान होने पर वह वैसी ही रखी हुई थी। ताई को लग रहा था कि अभी वैभवी का विवाह निश्चित हुआ है इसलिए, कृष्ण कहेगा उसके अनुसार एक तो वैभवी को या फिर विवाह के उपलक्ष्य में बहू रेशमा को देने कहेगा। ताई की आँखों के सामने से लौंग का इतिहास क्षणों में निकल गया और बाबा की यादों से हृदय भर आया।

ताई वह लौंग लेकर मंदिर में आयी। इधर मंदिर में अभिषेक, जाप चालू था। इतने में कृष्ण ने एक महिला को आगे बुलाते हुए कहा, "आज आपकी पूजा हो गयी। यह लौंग आपको प्रसाद स्वरूप देता हूँ।" ऐसा बोलकर वह लौंग उनके हाथों में दी। अभिषेक का दूध प्रसाद के रूप में सभी को देने के लिए कहा। वह महिला आश्चर्यचकित होकर देखती ही रह गयी। पलभर में क्या हुआ यह उनकी समझ में

आया ही नहीं लेकिन थोड़ा होश में आने पर उन्होंने तुरंत कृष्ण को और नवदुर्गा रुपी ताई को नमस्कार किया और तुरंत बाहर की ओर भागी। उस समय मंदिर में इतनी भीड़ थी कि थोड़े समय के लिए किसी को भी क्या हुआ है यह समझ ही नहीं आया। कृष्ण के पास खड़े भक्तों ने पूरी घटना बताने पर सभी भक्तों में वह महिला कौन थी? कहाँ गयी? ऐसी कानाफूसी होने लगीं। अंदाजे आधे घंटे के बाद दरवाजे के पास एक रिक्षा आकर रुकी उसमें से वही महिला उतरी। मंदिर में कृष्ण के सामने खड़ी होकर ताई को बताने लगी, 'ताई आज कृष्ण ने, नवदुर्गा ने मेरा इतना बड़ा सम्मान किया लेकिन मेरा नाक छिदाया हुआ नहीं था इसलिए सुनार के पास जाकर मैं नाक में लौंग पहनकर ही आ गयी। मेरा प्रणाम स्वीकार करो।' सभी ने उसकी और उसकी समय सूचकता की भूरी भूरी प्रशंसा की।

उस दिन मध्यान्ह समय के ध्यान में कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, अब विवाह की तैयारियाँ शुरू करो।" द्वारकाधीश के घर का विवाह उस थाट में होना चाहिए, और सच में उसी थाट से वैभवी का विवाह हुआ। ताई बताती थी, 'वह विवाह हमारी कल्पना से बाहर था।'

कृष्ण ने, जब कन्याकुमारी गए थे तब कहा, "ताई, मैं तुम्हारा सम्मान करने वाला हूँ।" कृष्ण क्या बोल रहा है यह उस समय वहाँ किसी की समझ में नहीं आया। आगे योजना ट्रस्ट, कल्याण से कुछ लोग कृष्ण कुटीर में आए और कहने लगे, 'ताई, पंडित भीमसेन जोशी जी का सम्मान हमारे ट्रस्ट की ओर से हम करने वाले हैं।' हमारे मंडल ने यह निश्चित किया है कि उनके साथ साथ आपका और समर्थभक्त प.पू. नाना साहब का भी सम्मान करना। उसका हम निमंत्रण कृष्ण को और आपको करने आए हैं।' ऐसा बोलकर उन्होंने कृष्ण के चरणों में निमंत्रण पत्रिका रखी। 'अरे, पंडित जी का ठीक है लेकिन आप लोग मेरा सम्मान क्यों कर रहें हो?' 'नहीं, नहीं ताई आपका और प. पू. नाना साहब का सम्मान अत्यंत प्रसिद्धपराङ्मुख आध्यात्मिक गुरु के रूप में कर रहे हैं। आपकों इस समारोह में आना ही होगा।' 'ठीक है, कृष्ण जैसा कहेगा वैसा करुँगी।'

कृष्ण कहने लगा, "ताई, मैंने कहा था न तुम्हारा सत्कार करूँगा इसलिए तुम्हारे समारोह में जाने में कोई आपत्ति नहीं है।"

इस प्रकार ताई कुछ कृष्ण भक्तों के साथ मुंबई में समारोह में गई। कृष्ण कब किस की झोली में कैसे क्या फल डाल देगा यह बताया नहीं जा सकता। समारोह

शुरू होकर मध्यानंतर हुआ था। संयोजकों में एक व्यक्ति जज थी। उस समय कृष्ण ने क्या किया? वह उठा और तरतर करके उसके पास गया और उनसे बोला, ”क्यो रे, तुम सिर्फ मेडिटेशन करते हो; प्रत्यक्ष कृति में कुछ नहीं करते, जड बुद्धी के व्यक्ति हो। सर्वत्र मुझे ढूँढ रहे हो। अपने पैरों के नीचे का कैसे दिखाई नहीं पड़ रहा?” ऐसा बोलकर कृष्ण अपनी जगह पर आकर बैठ गया। वह कृष्ण के अज्ञात भक्तों में से एक रहें होंगे। भरे-पूरे समारोह में कृष्ण ने उन्हें क्रिया के बिना की गयी वाक्पटुता व्यर्थ है यही सीख दी। वह भी शांति के साथ अपनी जगह पर बैठे। ताई को उस समय खानापुर के विद्यालय के परीक्षण के दिन की घटना की याद आ गई।

कृष्ण अपने भक्तों की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से ध्यान रखता है। कृष्ण कुटीर में रोज सेवा के लिए आने वाले अनेक कृष्ण भक्त हैं। हमेशा से ऐसा कहा जाता है कि जो लोग सत्पुरुषों के, संतो के सानिध्य में रहते हैं उन्हें कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है पल पल और पद पद पर उन्हें सँभल कर रहना पड़ता है।

एक दिन ताई को किसी का फोन आया। फोन पर वह अत्यंत महत्वपूर्ण बातें कर रही थी। रोज आने वाले भक्तों के कानों पर वह बातें पड़ी और उन्हें उन बातों का संदर्भ भी पता चला। आगे दो तीन दिनों के बाद उसी विषय से संबंधित कोई व्यक्ति ताई से कुछ संवाद कर रही थी। अनजाने में यह महिला भी उस संवाद में शामिल हो कर कुछ बोलने लगी। ताई ने सिर्फ उस महिला की ओर देखा लेकिन बोला कुछ नहीं। जब सारे भक्त चले गए। रोज के भक्तगण बचे तब कृष्ण ने उस महिला को आगे बुलाया और कहा, “एक बात ध्यान से सुनो, आप रोज यहाँ आने वाले भक्तों को इस बात का हमेशा विशेष रूप से ध्यान रखना होगा कि किसी के बारे में कोई बात आपको यहाँ पता चलती है, आपके कानों पर पड़ती है, फिर भी उसके बारे में कोई बातचीत, कोई उल्लेख, विचारों का प्रकटीकरण, अनावश्यक सलाह मशवरा देने की किसी को कोई आवश्यकता नही है।” आगे ताई ने कहा, ‘कृष्ण को यह बिल्कुल पसंद नहीं है। प्रत्येक भक्त यहाँ आकर मेरे पास अपने मन की बात करता है वह अपनी माँ के पास बताने के जैसा ही होता है। उस बारे में आपस में की गई बातचीत या चर्चा कृष्ण को और मुझे भी बिल्कुल पसंद नहीं है और यह सहन भी नहीं किया जाएगा।‘

ऐसे ही एक बार, बहुत दिनों बाद कृष्ण बोलने वाला था। मंदिर में भक्तों का ताँता लगा हुआ था बहुत भीड़ थी। रसोई घर में कुछ भक्त सेवा के रुप में चाय बनाना,

नाश्ता बनाना, भोजन की तैयारी करने के कार्य में व्यस्त थे। हाथों से तो काम चल रहा था लेकिन सभी के मन किसी एक भक्त की नक़ल करने में, उसका मजाक उड़ाकर आपस में हँसी-मजाक करने में व्यस्त थे। अनजाने में सभी के आवाज बढ़कर मंदिर में आ रहें थे। अचानक कृष्ण ने बोलना रोक दिया। जल्दी जल्दी रसोईघर में जाकर तीन घूंट पानी पीने के लिए माँगा और कड़क स्वर में कहा, “यहाँ से आने वाले आवाज पहले बंद करो। यहाँ जो नहीं बोला जाना चाहिए वह बोला जा रहा है वह मुझे बिल्कुल सहन नहीं होगा और पसंद तो बिल्कुल नहीं है।“ थोड़ी देर के लिए तो आवाज आने रुक गये लेकिन थोड़ी देर पश्चात उन महिलाओं का आवाज फिर से उसी विषय पर और उसी तरह से आने लगा लेकिन इस बार कृष्ण गुस्से गुस्से में अंदर आया, अत्यंत तीक्ष्ण दृष्टि सभी पर डालते हुए अंदर के कमरे में चला गया। बाहर दस पंद्रह मिनटों के बाद आपस में कानाफूसी होने लगी। ताई ऐसी अचानक अंदर क्यों चलीं गई। यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था। कृष्ण ने किसी के लिए तुरंत ध्यान करने के लिए कहा क्या? वहाँ का पूरा वातावरण तनावपूर्ण हो गया। थोड़े समय पश्चात लोग धीरे धीरे थोड़ी देर इंतजार करके, रुक कर, प्रणाम करके वापस जाने लगे। उस दिन बाद में कृष्ण बोला ही नहीं।

शाम के समय धीरे धीरे एक एक भक्त (हमेशा आने वाले) आने लगे। उस समय ताई ध्यान की कुर्सी पर बैठी हुई थी। सभी ने प्रणाम करने के पश्चात ताई ने कहा, ‘मुझे बताओं आज सुबह कौन, किसके बारे में क्या बात कर रहा था? मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया। जिस तरह से कृष्ण ने बोलना रोक दिया उस तरह से तो वहाँ निश्चित रूप से कुछ ऐसा बोला जा रहा था जो नहीं बोला जाना चाहिए था ऐसी चर्चा वहाँ हुई है। किसी का मजाक निश्चित उड़ाया गया होगा। सच बताओं मुझे तब वहाँ क्या चल रहा था? सामने खड़ी भक्त ने कहा, ‘हाँ ताई, फलाने फलाने व्यक्ति के बारे में सब बातें कर रहे थे कृपया माफ़ कर दीजिए।’ इस पर ताई ने कहा, इसलिए आज कृष्ण ने कहा, इसकी सजा के रुप में मैं आगे आठ दिनों तक बात नहीं करूँगा। सुबह के समय वहाँ उपस्थित एक भक्त से कहा तुम आगे का एक महीना मंदिर में किसी प्रकार की कोई सेवा नहीं करना और एक दूसरी भक्त से कहा तुम आगे आने वाले एक महीने में रसोई घर में कदम भी नहीं रखना। बाद में उन सभी भक्तों ने कृष्ण के सामने खड़े होकर अपने द्वारा किए गए कार्य पर माफी माँगी। उस पर कृष्ण ने कहा, ”मेरे भक्तों ने हमेशा सावधान रहना चाहिए। क्योंकि मेरे अतिरिक्त उन्हें यह कौन बताएगा? कौन सिखाएगा? आप लोग जो

नहीं देखना चाहिए वह देखकर, जो नहीं सुनना चाहिए वह कानों से सुनकर, जो नहीं सोचना चाहिए वह सोचकर और स्पर्श के द्वारा भी कर्मबीज तैयार करते हो, इसलिए मैं मेरे भक्तों को हमेशा सावधान करते रहता हूँ।“ आजकल कृष्ण इस प्रकार की घटनाओं के द्वारा अपनी सीख भक्तों तक पहुँचा रहा था। कभी समझा कर, कभी रोश में तो कभी सौम्य शब्दों में ही थोड़ी सज़ा देकर।

# ।। ॐ ।।

कृष्ण अब बताने लगे कि १९९६ वर्ष में मुझे विश्व शांति के लिए बहुत ध्यान करना है। ताई से कहा, ”मैं सब तैयारी करवाँ लूँगा;” इस पर ताई ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘अरे, मैं तो इस बारे में कोई चिंता करती ही नहीं हूँ। मेरा तो एक ही काम है तुम्हारी आज्ञा का पालन शत प्रतिशत करना और कुछ नहीं।‘ इस पर कृष्ण ने एक मधुर मुस्कान देते हुए ताई से कहा, “हम प्रथमतया कोल्हापुर जाएँगे। ‘वह‘ (आदिशक्ति) भी मेरे साथ आएगी।“ कोल्हापुर में साथ ले जाने के लिए पूजा सामग्री एवं गोद भरने के लिए सुहाग का सामान बताया। इस प्रकार ताई वहाँ शुक्रवार को रात के समय पहुँची। वहाँ देवी की पालकी निकलने का समय हुआ ही था। ताई वहाँ पहुँची उस समय देवी की उत्सव मूर्ति पालकी में रखने के लिए बाहर लायी जा रही थी। उस समय श्रीकृष्ण ने कहा, “वह देखो मेरे साथ आने के लिए तैयार हो कर आयी है।” उस पालकी उत्सव का आनंद लेकर दूसरे दिन ताई ने वहाँ देवी की सुहाग के सामान से गोद भरी और पूजा अर्चन करके बदलापूर वापस आयी।

कोल्हापुर से आने के थोड़े दिनों बाद अमेरिका से एक कृष्ण भक्त का फोन आया। ‘कृष्ण, तुम्हारा अमेरिका आने का समय नजदीक आ गया है। इस बार टिकट भेजने की सेवा मैं करता हूँ। कृष्ण, मेरी सेवा स्वीकार करो न। हमें बहुत खुशी मिलेगी।‘ कृष्ण ने तुरंत कहा, “अरे इस बार मैं कार्य के लिए आ रहा हूँ अतः मैं किसी एक की ओर से सेवा का स्वीकार नहीं कर सकता। सभी ने मिलकर मेरा टिकट निकालना चाहिए। जहाँ जहाँ केंद्र है वहाँ के सभी भक्त मिलकर टिकट निकालो और मुझे भेजो।”

इस प्रकार १५ अप्रैल से १५ मई १९९६ के आसपास ताई तीसरी बार अमेरिका जाएँगी, ऐसा कृष्ण ने कहा।

ताई अक्टूबर महीने में जब गोवा आयी थी उस समय का अनुभव है। ताई को मंगेशी जाना था। वहाँ जाने से पहले ताई ने कहा, ’हम पहले मडगाँव जाएँगे लेकिन कृष्ण कह रहा है उसे नयी चप्पल लेनी है।‘ ‘ठीक है ताई‘ ऐसा बोलकर गायतोंडे काका ने गाडी मडगाँव की दिशा में ली। ताई को पहली दुकान में ही

चप्पल पसंद आ गई और पाँच मिनिट में दुकान से बाहर भी आ गए। ताई को नयी चप्पल पहनने का आग्रह काका दुकान में ही कर रहे थे। इस पर ताई ने कहा, 'अरे नहीं नहीं, वह तो बाद में लगने वाली है।' ताई पुरानी चप्पल पहनकर ही मंगेशी के मंदिर में आयी। इस मंदिर का महत्त्व तो ताई के लिए पितृस्थान के जैसा था। वहाँ की प्रथा के अनुसार सभी ने अपनी चप्पलें बाहर निकाली और दर्शन लेने के लिए मंदिर के भीतर गए। जब सभी लोग मंदिर में से दर्शन प्रसाद लेकर बाहर आए तो देखा सिर्फ ताई की चप्पलें गायब थी। 'अरे, कौन ताई की चप्पलें लेकर गया। कौन यह चप्पल चोर है?' 'उसे ऐसा मत कहो, जो कोई भी चप्पल लेकर गया है उसके पैरों में तो वह होंगी भी नहीं, लेकिन एक बात ध्यान रखो, उसके हाथों से कुछ बडा काम होने वाला है इसलिए उसे नाम मत रखो। सिर्फ गाड़ी में से नई चप्पलें लेकर आओ।' मतलब कृष्ण को इस बात की पूरी कल्पना थी और उस चप्पल चोर ने सचमुच में चोरी की या गलती से अदला बदली हो गई। शायद उसके पैरों में आ गई इसलिए नहीं वह लेकर गया बल्कि कृष्ण को उसके हाथों से कुछ बड़ा काम करवाँना होगा इसलिए उसकी निशानी के रूप में उसे ऐसी बुद्धि हुई होगी। एक चप्पल गायब होने के पीछे कितने अलग अलग पहलू हो सकते हैं। ताई की सीख देने की यही प्रथा थी उन्होंने कभी सामने बैठकर उपदेश नहीं दिया लेकिन सहजता के साथ आते जाते कितना कुछ सीखाकर गयी।

कृष्ण ने इस ३१ दिसंबर को भी नव वर्ष के लिए संदेश दिया है-

"प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने रीति रिवाज के अनुसार मेरे ऊपर श्रद्धा रखकर मेरा पूजा अर्चन करता है। यदि मैंने उसे मेरा भक्त कहा है तो वह मुझे मेरे प्राणों से प्रिय है लेकिन इस वर्ष के लिए आप सभी को स्पष्ट रूप से बताता हूँ कि दूसरे की खुशी में जो अपनी खुशी मानकर रहेंगे, आचरण में उतारेंगे, उन्हें ही मैं मेरा सच्चा भक्त कहूँगा। मैं ताई के माध्यम से काम करता हूँ इसका मतलब यह नहीं है कि जहाँ जहाँ ताई है मैं वहाँ वहाँ हूँ। मैं तो चरचर में व्याप्त हूँ। आप सभी को मेरे अस्तित्व का एहसास हो सकता है इसी में मेरे कार्य की सार्थकता है। मेरे भक्त ने कभी भी ऐसा विचार मन में नहीं लाना चाहिए कि 'ताई नहीं मतलब कृष्ण भी नहीं।' मैं तो कण कण में चराचर में व्याप्त हूँ यह बात हमेशा ध्यान में रखो।

आपकों आश्चर्य होगा, लेकिन कई बार मुझे भी मेरे कार्य में अनेक मुश्किलें आती है। इसका कारण है कि मेरे अनेक भक्त खुद को मेरा भक्त समझते हैं लेकिन मैं क्या बताता हूँ इस बात का वे यथार्थ रूप से शत प्रतिशत पालन नहीं करते हैं। ऐसे

समय में वे मुझसे दूर जाते हैं और इस बात का मुझे बहुत दुःख भी होता है लेकिन यह भी इस समय की विशेषता है इसलिए मुझे यह बार बार बताना पड़ता है कि मैं तो सदैव उनके साथ हूँ। यह बात हमेशा मेरे भक्तों ने निश्चित रूप से ध्यान में रखना चाहिए। उन्होंने पूर्ण श्रद्धा भाव के साथ अपना प्रत्येक कर्म मुझे ही अर्पण करना चाहिए। जिससे मैं सदैव उनके लिए खड़ा रह सकूँगा।

इसलिए मेरा इस वर्ष का आदेश ध्यान में रखिए, दूसरों की खुशी में अपनी खुशी मानना सीखों। इससे मैं सदैव आपके पास रह सकूँगा और इसका आपको एहसास भी होगा। सीधी साधी सरल भाषा में कहें तो आप मेरे और मैं आपका यही सत्य है। पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप कीजिए मुझे अपने स्वयं की ओर खींच लीजिए।"

श्रीकृष्णलीलाकेंद्र में कृष्ण का जो फोटो रखा जाता हैं, उसका नाम कृष्ण ने 'प्रेरणा' रखा है। यह फोटो कृष्ण ने कैसे तैयार किया यह घटना बहुत ही रोचक एवं श्रवणीय है।

कृष्ण भक्त दिनेश एक दिन कृष्ण से पूछकर उसके फोटो निकालने के लिए फोटोग्राफर लेकर आए। उसी दिन विजू ताई का जितू भी मंदिर में आया हुआ था। उसे कृष्ण ने आगे बुला कर कहा, "जितू, मेरे लिए एक सुंदर मोगरे की बड़ी माला लेकर आओ।" जितू तुरंत एक सुंदर माला लेकर आया।

हमेशा की तरह मंदिर में बहुत ही भीड़ थी। कृष्ण के एकदम गले तक मालाएँ पहनाई हुई थी। बीच में ही कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई मुझे यह सब मालाएँ, वस्त्र निकालकर मुक्त करो न। मुझे तो सिर्फ एक जितू की और एक दिनेश की ऐसी दो मालाएँ ही पहनाओं।" ताई ने जैसे ही कृष्ण के बताएनुसार किया वैसे ही कृष्ण ने दिनेश से कहा, "आओ दिनेश, मेरा फोटो चाहिए न निकालो अब फोटो।" दिनेश ने आगे आकर प्रणाम किया और फोटो निकालने की शुरुवात की। पहला फोटो सामने से लिया और बाक़ी के सात आठ फोटो और लिए। सभी फोटो बहुत ही सुन्दर आए। उसमें से पहले फोटो की कुछ प्रतियाँ निकाली और कृष्ण को देने के लिए बदलापूर गया। वहाँ जाने पर कृष्ण ने कहा, "मैं समय के साथ बदलता हूँ..." यह संदेश बताकर पूरा किया। दिनेश ने एक बार फिर से पढ़कर दिखाया। उसके पश्चात कृष्ण ने कहा, "दिनेश, मेरा यह फोटो एक बाजू में और दूसरी बाजू में यह पूरा संदेश छपा हुआ ऐसे फोटो तैयार करों और लेकर आओ।"

दिनेश ने कृष्ण के बताएनुसार फोटो तैयार किए और कृष्ण के पास लेकर गया। कृष्ण ने फोटो देखकर कहा, "बहुत सुंदर! इस फोटो का नाम 'प्रेरणा!' आपके हृदय की पुकार पर तुरंत मैं भागकर आऊँगा, इसलिए मैं आपके लिए आपकी ओर मुख करके ही खडा हूँ।" आगे कृष्ण ने केंद्र के लिए यहीं फोटो देना शुरू किया। आज के समय में केंद्र केंद्र में कृष्ण प्रेरणा से प्रेरित होकर अनेक भक्त कृष्ण भक्ति में रंग गए है, कृष्ण कृपा का अनुभव ले रहें है।

एक बार एक भक्त ने पूछा, 'कृष्ण, अरे तुम्हारी यह एक ऊँगली ही अलग क्यों की है? 'कृष्ण ने कहा, "मैं हमेशा आपको सावधान करता रहता हूँ इसलिए यह एक ऊँगली मैंने खड़ी रखी है। ध्यान में रखो! कुविचार कभी मत करो। दुर्विचार मन में भी मत लाओ। तुम नियमबाहृय व्यवहार मत करो।" 'अरे बाप रे! कृष्ण क्या है यह!' इस बात पर ताई ने हँसते हुए कहा, 'वह लाड़ला कन्हैया है ही ऐसा। वह हमेशा हमें योग्य राह दिखाता है।'

प्रसिद्ध लेखक श्री जयंत दलवी कृष्ण भक्त थे। एक बार उन्होंने कृष्ण से पूछा, 'कृष्ण, मुझे ताई के बारे मे कुछ लिखना है। उनके द्वारा किया जा रहा कृष्ण कार्य, उनके अनुभव की मुझे जानकारी दो न।' कृष्ण ने कहा, "नहीं, वह जाने दो। मैं तेज़: पुंज गोल हूँ। सभी लोग कृष्ण कुटीर में आइए और अपनी अपनी क्षमतानुसार वह तेज़ खुशी खुशी अपने घर ले जाइए। लिखने वगैरह की आवश्यकता नहीं है।"

आगे सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती वसुंधरा पटवर्धन जी एक बार मंदिर में आयी और कहने लगी, 'ताई मुझे कृष्ण की दूसरी कोई सेवा तो करने नहीं आती लेकिन मैं कुछ लिखित कार्य करके कृष्णसेवा कर सकती हूँ। कृपया आप कृष्ण को मेरी सेवा स्वीकार करने के लिए प्रार्थना कीजिए और मुझे वैसी सेवा करने का मौका दीजिए।' इस पर कृष्ण ने कहा, "मैं तुम्हारी ओर से लिखित सेवा करवाँ लूँगा।"

आगे उनके द्वारा 'संघर्ष' नामक पुस्तक लिखी गयी जिसमें कृष्ण कुटीर, वहाँ के कार्यकलापों का वर्णन किया गया है। आखिरी में उन्होंने लिखा है कि वे अनेक जगहों पर गयीं हैं लेकिन कृष्ण कुटीर में जाकर उन्हें जो मानसिक शांति प्राप्त हुई वह अन्यत्र कहीं प्राप्त नहीं हुई।

'श्रीकृष्णलीलावली' पुस्तक में कृष्ण के अनुभवों का संकलन किया गया है। इस पुस्तक के संपादन की संपूर्ण जिम्मेदारी कृष्ण ने वसुंधरा जी पर सौंपी हुई थी।

एक बार कृष्ण के आदेश पर ताई दोपहर तीन से चार में ध्यान कर रही थीं। उस समय कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, मेरा यह जो भंडार (प्रासादिक वस्तुओं का संग्रह) है, उसमें से सिर्फ पैसे अलग करो। आज मुझे वह पैसे पाँच लोगों में बाँटने है।" बराबर पाँच लोग उस समय बाहर से आए। वह दोपहर का समय था लेकिन उसी समय उनका बेटा नंदा भी किसी काम से घर आया और मुंबई से भी चार आदमी आए। इस प्रकार उन पाँच व्यक्तियों को अंजलि अंजलि भरकर पैसे दिए लेकिन आखिरी में बचा हुआ चार आना फिर से भंडार में रखने के लिए कहा। देखो तो कितने किस्मत वाले हैं यह भक्त! ताई बता रही थी, 'मुझे भी इस प्रकार से देना बहुत अच्छा लगता है।'

एक बार ताई बाहर कहीं से आयी थी। इतने में कृष्ण ने कहा, "ताई बाथरूम भी मत जाओ, तुरंत ध्यान के लिए बैठो। मेरे एक भक्त के लिए अभी ध्यान की अत्यंत आवश्यकता है।" तब ताई तुरंत ध्यान के लिए बैठी और पूरे दो घंटे के बाद ही उठी।

ऐसा समय समय पर कृष्ण जैसे बताये वैसे कुछ बातें प्रत्यक्ष रुप में करना, तो कभी ध्यान के द्वारा भक्तों को सहारा देने के लिए उनके पीछे खड़ा रहना चल रहा था। जितने कृष्ण भक्त ताई के संपर्क में आ रहें थे, कृष्ण की नजरों में आ रहे थे। उनके उनके लिए कृष्ण कहेगा तब, और जैसा कहेगा वैसा ध्यान करना, उपासना करना ताई के द्वारा चल रहा था।

अब धीरे धीरे अमेरिका जाने के दिन पास आने लगे। एक दिन कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई, पिछली बार की दोनों यात्राओं में हम कॅनडा जा नहीं सके लेकिन इस बार हम कॅनडा जरूर जाएँगे! वहाँ मुझे केंद्र की स्थापना करनी है।" ताई ने कृष्ण से कहा 'ठीक है।' और अपने आप से कहा, 'मुझको मेरे बल पर मुंबई जाना भी कठिन है तो मैं कॅनडा जाने की क्या बात करूँगी?'

यह अनुभव हमेशा का है। कृष्ण जब ऐसे कुछ बोलता है तब उसकी योजना पहले से तैयार रहती है। इस प्रकार उस दिन दोपहर में श्रीमती सीमा पठारे की कॅनडा से चिठ्ठी आयी जिसमें उन्होंने लिखा था, 'ताई, इस बार आप कॅनडा आए बगैर भारत वापस मत जाना। हमारे यहाँ कब आओगे यह कृष्ण से पूछिए और कॅनडा के व्हीसा के लिए लगने वाला पैसा मैं भेज देती हूँ।' लेकिन यह पठारे कौन है? यह ताई के ध्यान में नहीं आ रहा था लेकिन ताई ने वह चिठ्ठी कृष्ण के चरणों में

रखकर उसे अर्पण कर दी।

दो तीन दिनों के बाद श्रीमती सीमा पठारे की चिठ्ठी में जिसका उल्लेख आया था वह कृष्ण भक्त जॉयस आयी। ताई ने उसे वह चिठ्ठी दिखाई और उसमें उसके नाम का जिक्र हुआ है यह बताया। वह तुरंत बोली, 'ताई, यह तो मेरी बहन की चिठ्ठी है। आप उसके यहाँ जरुर जाइए और कॅनडा का व्हीसा करने के लिए दिल्ली जाना पड़ता है वह काम मैं करुँगी। आप कृष्ण को यह सेवा मुझे देने के लिए प्रार्थना कीजिए और आप अपना पासपोर्ट मुझे दे दीजिए।' ताई ने कृष्ण से पूछा, 'कृष्ण, क्या करना?' कृष्ण ने कहा, "नहीं, अभी नहीं।" उसने कहा, 'कृष्ण इसका मतलब क्या? कॅनडा तो जाओगे न फिर व्हीसा निकालें बगैर कैसे चलेगा?' ऐसा बोलते बोलते उसने ताई का पासपोर्ट हाथ में लिया। देखा तो क्या, उसमें एक भी पेज़ नहीं बचा हुआ था और पेज़ लगाए बगैर आगे के कोई भी काम नहीं हो सकते थे। उसने कहा, 'ताई, आप कल मुंबई आइए। कम से कम यह पेज लगाने की सेवा का मौका कृष्ण मुझे दो।' 'कृष्ण, क्या करना?' ताई ने पूछा। "ठीक है यह सेवा उसे करने दो।" कृष्ण ने अपनी सहमति दर्शायी। इस प्रकार ताई उसके साथ मुंबई के पासपोर्ट ऑफिस में गई। वहाँ के लोगों ने कहा पासपोर्ट रखकर जाओ और चार दिनों के बाद आकर पासपोर्ट लेकर जाओं। कृष्ण ने कहा, "जॉयस, ऐसे नहीं चलेगा, तुम फलाने फलाने ऑफिसर के पास जाओ और उससे कहो आज के आज काम होना चाहिए।" कृष्ण आज्ञा थी! उसने उस ऑफिसर से जाकर बात की। उस ऑफिसर ने आज के आज पासपोर्ट तैयार होना चाहिए ऐसी टिप्पणी उस पर लिखी। दोपहर तीन बजे वह पासपोर्ट लेकर घर आयी। कृष्ण ने जॉयस से कहा, "मैंने तुम्हारी सेवा का स्वीकार किया है अब कॅनडा के व्हीसा का क्या करना वह देखता हूँ।"

दो दिनों के बाद लंदन के कृष्ण भक्त का फोन आया, 'ताई, कृष्ण के साथ आप अमेरिका जा रहें हों तो हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप हमारे यहाँ रुककर ही आगे जाइए।' कृष्ण ने उससे कहा, "इस बात का जवाब मैं तेरह अप्रैल को दूँगा।" और ताई से कहा, "ताई, १५ मई के अंदर मैं तुम्हें अमेरिका ले जाऊँगा।"

१३ अप्रैल को ध्यान के बाद कहा ११ मई से १३ मई तक मुझे ध्यान के लिए लंदन जाना है। इस प्रकार ताई ११ मई को लंदन पहुँची और वहाँ ध्यान किया। बाद में कृष्ण ने बताया, "ताई, कल कॅनडा का व्हीसा निकालने के लिए जाओ। मैं आपसे पहले ९:०० बजे ही व्हीसा ऑफिस जाने वाला हूँ। आप सभी बाद में आओ।"

दूसरे दिन १४ तारीख को ताई व्हीसा निकालने के लिए गयी और आधे घंटे में तीन साल का व्हीसा निकालकर बाहर भी आ गयी।

निश्चित किएनुसार १५ मई को ताई अमेरिका में पहुँची।

इधर आने से पहले कृष्ण ने ताई से कहा, "ताई इस बार मैं कार्य (सामूहिक काम) के सिलसिले में आया हूँ इसलिए मुझे मेरे १००८ भक्तों से मिलना है। उनके और मेरे अतूट प्रेम के प्रतीक के रूप में हर किसी को चांदी का तुलसी पत्र देना है।" आश्चर्य की बात तो देखिए आने वाले चार पाँच दिनों में पूना, नाशिक, मुंबई और हैदराबाद के कुछ भक्तों ने बदलापूर आते समय चांदी के तुलसी पत्र ही कृष्ण को अर्पण किए। वह भी सभी एक समान आकार के और सब मिलकर बराबर १००८ थे। ताई बताती है, 'मैं कहा सबको बताने गई थी? लेकिन देखो तो इतनी अलग अलग जगहों के सभी तुलसी पत्र समान आकार के है! आखिर बुद्धिदाता वह है उसे जैसा चाहिए वैसा वह करवाँ ही लेता है।'

इस बार कृष्ण ने अमेरिका में सभी भक्तों को स्पष्ट रूप से कहा था कि, "जब मुझसे मिलने आओगे तब अपने बच्चों को जरूर साथ लेकर आना। उन्हें घर में या डे केयर में छोड़कर बिल्कुल मत आना क्योंकि इस समय जो मैं आ रहा हूँ वह सिर्फ इन बच्चों के लिए आ रहा हूँ। उन्हें उनकी उन्नति की राह दिखाने, बताने के लिए आ रहा हूँ। उसका बीज 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र के रूप में बोने के लिए आ रहा हूँ।"

सॅन फ्रान्सिस्को के श्री लक्ष्मण शेणॉय जी ने एक मासिक पत्रिका में ताई के बारे में जानकारी पढ़ी थी। उनके मन में इस विषय की अपार उत्सुकता जागी। जब वे भारत आए तब ताई से मिलने की बहुत कोशिश की, लेकिन उन्हें सही पता मिल नहीं रहा था। निकलने के एक दिन पहले, उनके एक परिचित सज्जन ने उन्हें ताई का फोन नंबर दिया। उन्होंने ताई से फोन पर बातचीत की और उनसे बिनती कि अगर कृष्ण केंद्र हमारे घर किया तो हमें बहुत प्रसन्नता होगी। कृष्ण ने तुरंत उन्हें हाँ कहा और उनकी बिनती स्वीकार करते हुए कहा, "मैं अभी जब अमेरिका आऊँगा तब तुम्हारे यहाँ केंद्र करूँगा।" इस प्रकार उनके यहाँ केंद्र की स्थापना हुई। कृष्ण कहता था, "उत्सुकता में मैं हूँ।" जैसे इसी बात का अनुभव कृष्ण ने उन्हें दिया। केंद्र के दिन उन्होंने अनेक रंग बिरंगी फूल लाए थे। उसमें नीले रंग के फूलों का भी एक गुच्छा था। कृष्ण ने उन नीले रंग के फूलों का उपयोग अभिषेक में नहीं

किया। तब उन्होंने इस बारे में पूछा, ”अरे, मैं संकट निवारण के लिए नीले फूल अर्पण करने के लिए कहता हूँ, इसलिए अभी ख़ुशी के समय उनकी आवश्यकता नहीं है।” उन्हें मन ही मन बहुत खराब लगा। उन्हें ऐसा लगने लगा मैं यदि सफेद फूल लेकर आता तो कितना अच्छा होता। शाम को जब ताई उनके यहाँ से चली गयी उसके बाद उन्होंने कृष्ण को प्रणाम करते हुए कहा, ’कृष्ण सॉरी! अगली बार याद से सफेद फूल लाऊँगा।‘

दूसरे दिन सुबह सुबह उठकर देखा तो क्या! नीले रंग के सारे फूल सफेद हो गए थे। उन्होंने अत्यानंद के साथ ताई को फोन किया, ’ताई, क्या बताऊँ आपको? चमत्कार हो गया। बाजू में रखें हुए सारे नीले फूल सफेद हो गए है।‘ “अरे, यह चमत्कार नहीं है। ध्यान दो, तुम्हें मन ही मन मुझे सफेद फूल देने थे। नीले फूलों का मैंने स्वीकार नहीं किया इसलिए उसका बुरा भी लग रहा था इसलिए उन्हें मैंने सफेद फूलों के रूप में स्वीकार कर लिया। मैं मेरे भक्तों के मन की भावना जानता हूँ उसी का यह मेरी ओर से दिया हुआ प्रतिसाद है। यह चमत्कार नहीं है! मैं कितना भक्त वत्सल हूँ उसका एक उदाहरण तुम्हें बताता हूँ सुनो, “अपने एक सुयोग वर्दे नाम के कृष्ण भक्त हैं। ताई न्यूयॉर्क जाने वाली थी। तब उनकी प्रबल आंतरिक इच्छा थी कि वे ताई को लेने हवाई अड्डे पर जाए। उन्हें ताई ने कई बार कहा, ‘अरे रहने दो, मेरे साथ अन्य लोग भी हैं। वे मुझे व्यवस्थित रूप से ले आएँगे। तुम इतनी दूर से इतनी भीड़ में मत आओ’ लेकिन वे सुन नहीं रहें थे। ‘ठीक है आओ फिर‘ ऐसा बोलकर ताई ने फोन रख दिया।

ताई न्यूयॉर्क पहुँची। हवाई अड्डे पर बैग लेने के लिए सब रुके हुए थे। बाक़ी सभी की बैगे तो आ गई लेकिन कृष्ण ने अपने भक्तों को देने के लिए लाया हुआ सामान जिस बैग में रखा था वह बैग कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। सभी लोग ढूँढ रहे थे लेकिन वह तो मिल ही नहीं रही थी। अंदाजे पंद्रह बीस मिनट इसी में चले गए। इतने में कृष्ण ने अचानक कहा, “अजित, वह देखो, मेरी बैग नीचे निकाल कर रखीं हैं।“ सचमुच वहाँ बैग रखी हुई थी। इतनी देर से हमें कैसे नहीं दिखी? आखिर वह बैग लेकर हम बाहर आए। बाहर आकर देखा तो क्या? सुयोग दौड़ते दौड़ते सामने से आ रहा था। ‘ताई मुझे आने में देरी हो गयी। मुझे लगा अब आप मिलोगे कि नहीं?‘ इस पर ताई ने कहा, ‘अरे सुयोग, तुम्हारे आने तक कृष्ण ने अपनी बैग छिपा कर रखीं थीं नहीं तो फिर मुश्किल हो जाती।‘ बात छोटी सी है; लेकिन कृष्ण अपने भक्तों के प्रेम की, भावनाओं की कद्र करता है। उसे भी अपने भक्तों का इंतजार रहता है।‘

ताई जब लॉस एंजिलिस आयी थी उस समय की बात है। एक भक्त का सराफा का कारोबार था। उसे लगा क्यों न मैं कृष्ण को चांदी के तुलसी पत्र अर्पण करूँ। उन्होंने बहुत कोशिश की पूरा मार्केट घूमे, लेकिन चांदी के तुलसी पत्र कोई भी बनाकर नहीं दे रहा था। इस बात से वे बहुत नाराज़ हो गए। इसके विपरीत ताई जब ९३ साल में अमेरिका आयी थी, उस समय उन्होंने कृष्ण से पूछा था, 'कृष्ण, तुम्हारी सेवा के रुप में क्या लाऊँ?' "ऐसा बोल रहे हो! तो १०८ सुंदर से ॐ बनाकर लाओ।" इस प्रकार उन्होंने वह बनाकर लाए और कृष्ण ने वे बहुत लोगों को वहाँ दिए लेकिन इस बार उन्हें कृष्ण की सेवा का अवसर मिला नहीं इसलिए वे नाराज़ थे। उन्होंने कृष्ण से पूछा, 'कृष्ण, इस बार मुझे सेवा का मौका नहीं दोगे?' "अरे, नाराज़ क्यों होते हो। मैं उचित अवसर आने पर तुम्हारी ओर से सेवा का स्वीकार करूँगा। मैं हर किसी को उसकी इच्छा अनुसार मौका देता हूँ लेकिन आवश्यकता होती है श्रद्धा और सबुरी की। तुम्हारे लिए उचित अवसर कौन सा है यह सिर्फ मैं जानता हूँ।"

जैसे कृष्ण को अपने भक्तों के प्रति आकर्षण, स्नेहभाव, अपनापन लगता है वैसे ही अनेक भक्त भी कृष्ण को अपना सर्वस्व मानते हुए उसके शब्द में रहना पसंद करते हैं। एलए के कृष्ण भक्त श्री प्रमोद गाड़ जी की पत्नी अस्वस्थ थी। डॉक्टर ने कहा तुरंत ॲडमिट करना होगा। उन्होंने कृष्ण से पूछा। कृष्ण ने कहा, "प्रमोद, ॲडमिट बिल्कुल नहीं करना। पूरा हफ्ता उसे नारियल पानी पीने के लिए कहो। बीमारी में आराम मिलेगा।" अब वह अमेरिका जैसी जगह! लेकिन इन पति पत्नी का कृष्ण पर असीम, गहरा विश्वास। दोनों ने कहा, हम कृष्ण के द्वारा बतायी हुई दवा ही लेंगे। साथ ही साथ प्रार्थना, जाप भी करेंगे और सचमुच हफ्ते भर में उन्हें बहुत आराम महसूस होने लगा। डॉक्टर ने भी कहा, 'अब एडमिट होने की आवश्यकता नहीं है।' सच है श्रद्धा का कोई मोल नहीं है।

ताई जब रॉचेस्टर में थी, उस समय कृष्ण फोन पर कई लोगों को यह बताने लगा, "मैं ध्यान करने के लिए हवाई जा रहा हूँ विश्व शांति के लिए गहरे ध्यान की आवश्यकता है।" ताई से पूछने पर उन्होंने कहा, 'अरे नहीं तो, मुझे तो हवाई कहाँ है यह भी पता नहीं है। मुझे इस बारे में कोई कल्पना नहीं है।' दो दिन बीतने के बाद एक कृष्ण भक्त आए। आते समय हवाई जाने के दो टिकट और वहाँ चार दिन रहने की पूरी व्यवस्था करके वे आये थे। हवाई जाने पर कृष्ण ने कहा, "ताई मुझे विश्व शांति के लिए गहरे ध्यान की आवश्यकता है। तुम तीन दिनों तक पूरा

मौन रखो, हाथों में शिवलिंग रखकर ध्यान करो। बिना खाये पिए घूमकर ध्यान करो। सन् २००५ में जो पूरी दुनिया में क्रांति होने वाली है उस समय मुझे इस ध्यान की बहुत आवश्यकता है। इसमें थोड़ी भी गलती होने मत देना। मुझे मेरे भक्तों के रक्षार्थ खड़ा होना है।" इस प्रकार तीन दिनों का ध्यान होने के पश्चात हाथों में रखी हुई सोने की शिवलिंग काली पड़ चुकी थी। अन्न जल ग्रहण न करने के पश्चात भी ताई अत्यंत तरोताजा लग रही थी।

टोरांटो में केंद्र स्थापना हुई, उस समय वहाँ आए हुए भक्तों ने कुछ पैसे, वस्तुएँ कृष्णार्पण किए थे। वहाँ से जब रॉचेस्टर आए तो रात के समय कृष्ण ने देशपांडे काका को बुलाया और कहा, "नारायण, कल टोरंटो के केंद्र में भक्तों ने मुझे जो पैसे दिए उसमें से ३०० डॉलर जरा बाजू में निकालो।" नारायण काका के मन में यह आशंका थी कि इतने पैसे होंगे क्या? लेकिन कृष्ण ने कहा है तो जरुर होंगे ऐसा सोचकर वे देखने लगे, देखा तो उसमें सचमुच १०० डॉलर की तीन नोटे थी। कृष्ण ने वह नोट देखते से ही कहा, "अरे, यह मेरे एक भक्त ने मुझे दिए है। आज तक मैंने उसकी ओर से बहुत सेवा स्वीकार की। सच तो मैंने उससे कहा था कि अब साढ़े तीन साल मैं तुम्हारी ओर से कोई भी सेवा स्वीकार नहीं करुँगा फिर भी उसने यह पैसे अर्पण किए। वह मैं स्वीकार नहीं कर सकता। वह एक अलग लिफाफे में डाल कर रखो। जब वह मिलेगा तब उसे उसके पैसे वापस करो।" कृष्ण से छिपकर कुछ रह सकता है भला। उसके हर शब्द के पीछे, हर आदेश के पीछे कुछ विशिष्ट धारणा रहती हैं। अपना हित उसकी आज्ञा में रहने में ही है। हमारी नजर मर्यादित हैं, तो उसकी नजर असीम है।

आपको जब कभी, किसी भी समय ऐसा लगें कि फलानी फलानी सुविधा न होने के कारण हम वांच्छित काम नहीं कर पा रहे हैं, उस समय सर्वसमावेशक कृष्ण को पूर्ण शरणागति के साथ प्रार्थना करो, 'कृष्ण, मेरी इस सेवा का स्वीकार कीजिए।' यदि ऐसा किया तो संपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आती है। दूसरा कुछ करने की आवश्यकता नहीं है और ऐसी छोटी-छोटी बातें बताने के लिए ही मैं इस बार बाहर निकला हूँ। किसी भी बात का आडंबर मत करो। आज तक सभी जगह पर यही होता आ रहा है। हर किसी ने अपना वर्चस्व दिखाने के लिए कुछ नियम बनाएँ। कुछ बंधन डाले लेकिन यदि मुझे पूछा जाए तो मैं निराकार, निर्विकल्प, निर्विकार हूँ इसलिए मुझे किसी प्रकार का कोई भी बंधन नहीं चाहिए। श्रद्धा और विश्वास सिर्फ यह दो बातें ही हर कोई, हर समय मुझे दे सकता है।

इसके अलावा मुझे देने लायक आपके पास कुछ भी नहीं है। इसके अलावा मुझे भी आपकी ओर लेने लायक कुछ नहीं है। श्रद्धा और विश्वास के कारण आपके और मेरे बीच का बंधन और रिश्ता दोनों दृढ़ होंगे।

मेरे प्रति जो उत्साहित रहते है, मेरे प्रति स्नेह भाव से जिनके हृदय भरें हुए हैं उनके लिए मैं सदैव भागता रहता हूँ। जो भक्त पूर्ण श्रद्धा भाव से, अनन्यभक्ति से, पूरे विश्वास से 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र से मेरी सेवा करता है उसका संपूर्ण योगक्षेम मैं चलाता हूँ। आपको लाखों रुपए खर्च करके या दूसरी किसी राह से भी न मिलने वाली मानसिक शांति केवल इस मंत्र की आराधना से मिलेगी। भावी पीढ़ी की उन्नति का मार्ग दिखाने के लिए ही मैं यहाँ आया हूँ। आप सभी के सहयोग से मेरा यहाँ आने का उद्देश्य बहुतांश तरह से सफल हो सका हैं।

कृष्ण के मन की बातें बताने के बाद ताई ने आगे कहा, 'कृष्ण कह रहा है आभार व्यक्त मत करो, क्योंकि यह सब मेरे भक्त हैं और भक्त यह मेरा ही रुप है। आभार व्यक्त करने से दूरियाँ निर्माण होती है।' इसलिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त नहीं करुँगी। कृष्ण की पुकार पर आपने जो प्रतिसाद दिया उसके लिए आप सभी की जितनी प्रशंसा की जाएँ उतनी कम है।

कृष्ण ताई से कहता है,

*"ताई, तुम सूत हो और मैं सुगंधित पुष्प हूँ।*
*सुगंधित पुष्प पिरोये जाते हैं सूत से,*
*इसलिए सूत को भी उतना ही महत्व है;*
*उसी प्रकार तुम्हारा भी है।*
*तुम सूत बनीं इसलिए हर किसी ने तुम्हें*
*अपने जीवन में कृष्ण भक्ति का दुवा बनाया।*
*इसलिए वे तुममें और तुम उनमें पिरोये गए।*
*अगर लाडले कन्हैया से मिलना हो तो*
*ऐसा कहते हैं कि ताई के चरणों पर माथा*
*टेको और इसलिए ही मैं कहता हूँ कि*
*मैं ताई के माध्यम से आपकी सेवा*
*का स्वीकार करता हूँ।"*

# ।। ॐ ।।

इस प्रकार अमेरिका में हजार बारह सौ नए भक्तों को आशीर्वाद एवं प्रसाद देकर ताई अपनी तीसरी ध्यान यात्रा पूरी करके भारत वापस आयी। आने के बाद कृष्ण ने उन्हें हमेशा की तरह दो सप्ताह लगातार ध्यान करने के लिए कहा क्योंकि अमेरिका में रहते समय अनेक भक्तों को आशीर्वाद दिए, बहुत लोगों के लिए कृष्ण वचनबद्ध हुआ, साथ ही साथ ९ नए केंद्रों की स्थापना हुई। इन सभी कार्यो के लिए भी ध्यान की आवश्यकता होती है। भविष्य में होने वाले विश्व कल्याण के कार्य के लिए और अमेरिका में स्थापित होने वाली विश्वजननी मंदिर के लिए इस ध्यान की आवश्यकता थी।

आपटा के कारखानीस काका के द्वारकाधीश मंदिर के उद्घाटन की तारीख कृष्ण ने १२ दिसंबर १९९६ बतायी थी। उसकी तैयारी भी जोर-शोर से चल रही थी। उस मंदिर के लिए भी ध्यान करना चल रहा था। निश्चित कियेनुसार १२ तारीख को पूज्य ताई के करकमलों से एवं थोर स्वामी भक्त स्व. पूज्य नाना महाराज परांजपे की उपस्थिति में द्वारकाधीश भगवान की स्थापना हुई। उस समय कृष्ण ने वहाँ उपस्थित सभी को वचन दिया कि, “मैं सदैव उनका योगक्षेम चलाने के लिए यहाँ उपस्थित हूँ। अठारह साल पहले मैं कृष्ण कुटीर में अपने भक्तों के लिए खड़ा रहा। आज मेरे कार्य की परीघ सीमा बढ़ गई है, यहाँ मैं मेरे सभी सर्वसामान्य भक्तों के लिए खड़ा हूँ उनकी सिर्फ़ एक पुकार पर उनके लिए मैं भागकर आऊँगा मेरे इस वचन को समझिए। मेरा प्रिय प्रसाद सुदामा का पोहा है। वह मुझे यहाँ मेरे भक्तों को बाँटना है।“

८ से १० जनवरी तक पूर्ण मौन के साथ अखंड ध्यान करो, ऐसा कृष्ण ने ताई को आदेश दिया। ताई के दृष्टिकोण में तो कृष्ण का आदेश है इतना ही वाक्य बहुत होता है। बाक़ी की बातें फिर वही रुक जाती हैं। ताई आगे फिर निश्चित रूप से वैसा ही करती है। कृष्ण ने यह ध्यान सभी भक्तों के लिए करने कहा था। उस बारे में ताई बताती है, ‘८ जनवरी को ऐसे ऐसे गंभीर रूप की मुश्किलों में फंसे हुए लोगों के संदेश आए कि एक इंसान होने के नाते मेरे हाथों से भी भगवान का आदेश बताने में जाने अनजाने में गलतियाँ हो सकती थी। वह इस मौन धारण के

आदेश के कारण अपने आप टल गयी। कृष्ण हमेशा जो बताता है कि ‘मैं जो भी करता हूँ वह सभी का भला ध्यान में रखकर करता हूँ।’ उसी का यह प्रतीक हैं।

आज सुबह सुबह घर के सदस्य के समान एक सज्जन मंदिर में आए। मेरा मौन था इसलिए उनसे बात नहीं की। उसी समय एक फोन आया वह कृष्ण ने लेने के लिए कहा। सर्व सामान्य व्यक्ति को लगेगा मेरे से बात नहीं की और फोन आया तो बात कर रही हैं लेकिन सच बताऊँ तो उसका अर्थ यह है कि, “जहाँ आवश्यकता है वहाँ मैं जाता हूँ उन्ही से बात करता हूँ।” मेरे भक्तों ने यह बात कभी भी भूलनी नहीं चाहिए कि यहाँ घटने वाली हर घटना कृष्ण के बताएनुसार और आदेशानुसार ही घटती है। इंसान अपना बड़प्पन दिखाने में इतना मशगूल हो जाता है कि परब्रह्मा ने उसके लिए क्या क्या किया इसकी उसे पूरी तरह से विस्मृति हो जाती है लेकिन जब बाद में वापस जीवन में मुश्किलें आती हैं तो फिर से कृष्ण के पास भाग कर आते हैं। इसे ही मानवीय वृत्ती या मानवीय स्वभाव कहा जाता है। यह वृत्ति जहाँ वास करती हैं वहाँ परब्रह्मा का अस्तित्व जागृत होना अत्यंत कठिन है। अपनी महानता के बारे में बड़ी बड़ी बाते करके, दिखावा करके, अपनी प्रतिष्ठा कम मत करो। जो भी घटना घटती है वह मेरी इच्छा से घटती है, घट रही है और आगे भी घटेगी, यह अच्छे से ध्यान में रखो।”

९७ साल तो जैसे अलग-अलग जगहों पर जाकर ध्यान करने का वर्ष था।

फरवरी माह की ८, ९ और १० तारीख को फिर से अज्ञात स्थल पर जाकर पूरे समय मौन के साथ ध्यान करो, ऐसा कृष्ण का आदेश आया। कृष्ण बता रहा था कि, ”मैं प्रत्येक भक्त को वचन देता हूँ फिर उसकी पूर्तता मुझे ही करनी होती है। वह मैं इस ध्यान के द्वारा करता हूँ इसलिए जानबूझकर मैंने अज्ञात स्थल चुना है। जब अज्ञात स्थल कहा है तो, ताई के प्रति सब का आकर्षण, स्नेहभाव होने के कारण ताई कहाँ है; इस बात की चिंता सभी को होना स्वाभाविक है लेकिन सर्वार्थ रीति से सभी का भार वहन करने वाला यदि मैं, साथ हूँ तो किसी को भी ताई की चिंता करने की आवश्यकता नही है। जिसकी ओर से ध्यान करवाँ लेता हूँ उनके जीवन के वह आनंद के क्षण होते हैं। उस आनंद की अनुभूति जो लेते हैं सिर्फ वही उस आनंद को जान सकते हैं।”

इसके बाद भी १८ तारीख तक ताई को अलग अलग भक्तों के घर जाकर ध्यान करना था। वह ताई ने किया और १९ फरवरी १९९७ को मंगलोर जाने के लिए प्रस्थान किया।

कृष्ण ने हमेशा बताया है, “जैसे मेरे भक्तों को मेरी जरूरत है वैसी मुझे भी मेरे भक्तों की ज़रूरत है क्योंकि मैं मेरे भक्तों के बीच रहता हूँ। उन्हीं के द्वारा सभी काम करवाँ लेता हूँ इसलिए उनके मन में श्रद्धा और भक्ति की बहुत आवश्यकता होती है। मेरे शब्द सुनना, मेरे सानिध्य में रहना, अर्थात् इससे मेरे भक्तों में ताकत, स्फूर्ति आकर उन्हें काम करने की शक्ति आती है उनमें नैराश्य जाकर चेतना का संचार होता है। दिव्य चैतन्य की प्राप्ति होती है और उस चैतन्य का उचित जगह पर, उचित प्रकार से और उचित समय पर उपयोग होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वह मैं मेरे भक्तों के हाथों से करवाँ सकता हूँ। इसके लिए मुझे घूमकर कार्य करने की अत्यंत आवश्यकता महसूस होती है। मेरा मंगलोर, उडुपी जाने का एकमात्र हेतू यही है।

दैवी आधार एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण, स्फूर्तिदायक चैतन्य का संचार करने वाली, भावनाओं से परिपूर्ण सब कुछ संभव करवाँ लेने वाली दिव्य शक्ति है। वह हमेशा अपने पीछे खड़ी है इस बात के एहसास को ध्यान में रखकर ही भक्त ने हमेशा अपना आचरण करना चाहिए।“

सुबह मंगलोर में भक्तों के संपन्न हुए मेले में करीब करीब हजार बारह सौ भक्तों का ताँता लगा। इन सभी भक्तों के घरों में ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र की गूंज पहूँचीं। प्रात: दस से बारह की शुभ बेला में कृष्ण ने सभी भक्तों को आशीर्वाद एवं प्रसाद दिया। सभी को बहुत प्रसन्नता हुई। उत्साहपूर्ण वातावरण में, वाद्य वादन, गीत गायन का कार्यक्रम हुआ। कृष्ण कहता है, यह सब लिखकर रखने का कारण एक ही है ‘उसके‘ बार बार स्मरण से उन क्षणों का आनंद मेरे भक्तों को प्राप्त होता रहता है और मोद का निर्माण होता है। (आज इस पुस्तक के रूप में हम वहीं आनंद प्राप्त कर रहे हैं।)

मार्च महीने में ८ से १० तारीख तक ध्यान और ११, १२ मार्च को पूरे दिन मौन धारण करने का आदेश श्रीकृष्ण ने दिया। ध्यान शब्द का अर्थ ही है कि सभी भक्तों के लिए दृढ़ श्रद्धा भाव के साथ कृष्ण कि, की गई आराधना। इस आराधना के समय जो जो भक्त पूरे श्रद्धाभाव के साथ कृष्ण से प्रार्थना करेंगे उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार लाभ जरूर होगा।

उन दिनों ताई का कार्यक्रम कुछ इस तरह रहता कि लगातार अलग अलग जगहों पर, शहरों में जाकर कृष्ण के बताएनुसार ध्यान करना। अनेक भक्तों से मिलकर

उनके पास कृष्ण का आदेश पहुँचाना यह लगातार चल रहा था। महीने के पंद्रह पंद्रह दिनों तक ताई बदलापूर में नहीं रहती थी। सन् १९७८ में कृष्ण ने जो कहा था कि ताई तुम्हें १५ साल के बाद कृष्ण कुटीर छोडना पड़ेगा जैसे उसी का यह अनुभव आ रहा था।

शिवरात्रि के दिन प्रातः काल की शुभ बेला पर कृष्ण ने ताई से कहा, ″ताई, मैं तुम्हें जब भी कहूँगा तब तुम कृष्ण कार्य के लिए बाहर निकलोगी ऐसा मुझे पहले वचन दो।“ ‘अरे, फिर से वचन?‘ “हाँ ताई, उसकी आवश्यकता है।“ ‘ठीक है! दिया वचन, उसका पालन भी तुम्ही मेरी ओर से करवाँ लो। तुम्हारी कृपा से ही उसका पालन होना संभव है।’

शिवरात्रि के दिन मंदिर में शिवलिंग पर दूध का अभिषेक होता था। आठ बजे के आसपास भक्तों के मंदिर में आने की शुरुवात हो गयी। शिवलिंग पर अभिषेक करने से पहले कृष्ण ने ताई से कहा, “ताई, आज तुम अभिषेक नहीं करना, सिर्फ अभिषेक किए हुए दूध को बाहर निकालने का काम करना।“ शाम के समय ताई बता रही थी, ’आज सभी भक्त अभिषेक कर रहे थे, मैं अभिषेक का दूध बाहर निकालने का काम कर रही थीं, उस समय भगवान शंकर पर अभिषेक किया हुआ दूध जैसे मेरे ही शरीर के ऊपर से जा रहा है ऐसा मुझे महसूस हो रहा था‘ इस पर कृष्ण ने तुरंत कहा, ″ताई, आज जैसे तुमने अभिषेक का दूध बाहर निकाला वैसे ही तुम्हें मेरे भक्तों के ऊपर के संकट भी निकालना है इसलिए आज तुम्हें अभिषेक करने के लिए मना किया था।“ यह सुनते ही ताई को प्रात: के समय कृष्ण के द्वारा माँगे गये वचन का स्मरण हुआ।

कृष्ण एक एक घटना के द्वारा ताई के कार्य का विस्तार, उसकी व्यापकता दिखा रहा था। अनेक ज्ञात अज्ञात भक्तों के लिए ताई की ओर से समय-समय पर ध्यान करवाँ रहा था।

कृष्ण प्रेरणा से स्थापित आपटा का द्वारकाधीश मंदिर! प्रत्येक माह के चौथे शनिवार और रविवार को वहाँ जाकर ध्यान करनें, सत्संग करने, लोगों से मिलने का कृष्ण आदेश आया। इस प्रकार ताई अब महीने में दो दिन आपटा जाकर रहने लगी। ताई के कुलदेवता का स्थान हरिहरेश्वर है। वहाँ भी जब जब कृष्ण कहता तब तीन तीन दिन ध्यान के लिए जाने लगी। वह यात्राएँ तो जैसे हरि के कार्य में हर का भी सहयोग होगा यह बताने के लिए ही हो रही थी।

इसी के साथ साथ कुछ निश्चित दिनों में, जब कृष्ण कहेगा उस दिन कृष्ण कुटीर में भक्तों को मार्गदर्शन करने का काम भी निरंतर चल रहा था।

एक बार सुबह मंदिर में बहुत ही भीड़ थी। मंदिर में बाहर आंगन तक लोगों की भीड़ थी। उस दिन मंदिर में एक व्यक्ति पूरे सफेद कपड़े पहने हुए, गले में मोटी मोटी सोने की चेन पहने, आंगन में आकर खड़ा हुआ था। उसी समय अचानक बोलते बोलते कृष्ण रुका और उसके पास जाकर बोला, “अरे, फलाने फलाने दिन मैंने तुम्हारे लिए ध्यान किया था।“ वह सकपकाया, ‘अरे, आज यहाँ मैं पहली बार ही आया हूँ। इतने लोगों में आप मुझे ही यह सब क्यों बता रही हो?‘ ताई ने उनसे कहा, ’ध्यानावस्था में आपके दायें कंधे पर हाथ रखकर ध्यान करने कहा था। अभी आपके आते ही कृष्ण ने मुझे बताया, “देखो, मेरा वह भक्त बाहर आया है उसे पूछो उसका दायां कंधा अब कैसा है?” वह तो आश्चर्यचकित। ताई को प्रणाम करके बताने लगा, ’ताई, मैंने सफेद कपड़े जरुर पहने हुए है लेकिन मैं आपके यहाँ आने लायक आदमी नही हूँ।‘ ताई ने उससे कहा, ‘यहाँ जो भी होता है वह कृष्ण के आदेशानुसार होता है, आप कोई भी हो, कैसे भी हो, लेकिन कृष्ण ने कहा इसलिए मैंने आपके लिए ध्यान किया ही है।‘ ‘मैं अंदर आऊँ क्या? मुझे आपसे कुछ बात करना है।‘ ‘अरे, जरुर आओ।‘ वे अंदर गए। कृष्ण को, ताई को प्रणाम किया। कृष्ण ने उन्हें अंदर के कमरे में जाने के लिए कहा। वे बताने लगे, ‘ताई, मैं मंदिर में आने लायक आदमी नहीं हूँ। सच में मुझे ऐसे पवित्र स्थल पर आना नहीं चाहिए। मैं चरित्रहीन इंसान हूँ।‘ ‘अरे, मेरा किसी बात से कोई संबंध नहीं है। मेरी दृष्टि में तो इतना ही बहुत है कि कृष्ण ने मुझे आपको दिखाया और आपके लिए ध्यान करने कहा। कृष्ण ने फलाने फलाने दिन फिर से आपके लिए ध्यान करने कहा क्योंकि उसका कहना था कि उस समय आप बहुत मुश्किल में थे।‘ यह सुनकर तो उनकी आँखों में पानी आ गया तुरंत झुक कर उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया। प्रसाद ग्रहण किया और चले गये। घर जाकर उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, ‘आज मुझे मेरी मम मिल गयी। अरे, मैं दस दस बार उन्हें बता रहा हूँ कि मै कितना बुरे किस्म का आदमी हूँ लेकिन वे तो बार बार एक ही बात दोहराती कि वह सब मुझे पता नही, कृष्ण के बताएनुसार मैंने आपके लिए ध्यान किया तो अब मेरी इस ‘मम को’ एक बार तों भी अपने यहाँ भोजन के लिए तुम बुलाओ।‘

दूसरी बार वह आदमी एक दिन सुबह सुबह आया, ताई ध्यान कर रही थी। बाहर से कोई ‘मम‘ कहकर पुकार रहा था। ताई ने बाहर आकर देखा तो यह आदमी

कहने लगा, 'मम, मैंने नई होंडा गाड़ी खरीदी है, वह लेकर आया हूँ। आप जब तक उसमें नहीं बैठेंगी तब तक मैं उसको उपयोग में नहीं लाऊँगा।' 'वह देखते हैं। पहले आप अंदर आइए, चाय लीजिए। मैं कृष्ण को पूछती हूँ, वह जैसा कहेगा वैसा करेंगे,' ताई ने उनसे कहा। इस पर वह कहने लगा, 'नही नही, चाय नही चाहिए, पहले कृष्ण से पूछिए।' कृष्ण ने कहा ताई आएँगी। यह सुनकर तो यह आदमी एकदम खुश। ताई को गाड़ी में बिठाया और प्रणाम करके भन्नाट स्पीड से गाड़ी चलाकर अंबरनाथ तक ले जाकर वापस ले आया। आकर चाय पीकर गया।

बाद में एक बार उसने घर पर खाना खाने बुलाया। उसकी पत्नी बताने लगी, 'ताई, हमारी शादी को तेरह साल हो गए। इनके व्यवसाय के कारण यह कभी भी घर पर खाने के लिए नही रहते है। आज सिर्फ आपके कारण यह संयोग आया है। हम तीनो एक साथ खाने पर बैठेंगे।' ताई बता रही थी, 'कृष्ण के लिए तों सारे भक्त समान है जो श्रृद्धा और विश्वास के साथ मुझे हृदय से पुकारता है वही मेरा सच्चा भक्त हैं। ऐसा न होता तो वाल्या का वाल्मिकी कभी होता ही नहीं।'

कृष्ण हमेशा अपने भक्तों का उल्लेख करते समय मेरे ज्ञात अज्ञात भक्त ऐसा करता था। अज्ञात भक्त से तात्पर्य है जो ताई को पहचानते नहीं, बदलापूर में कभी नही आए हुए। उनके लिए भी कृष्ण कैसा खड़ा रहता है उसी का यह उदाहरण है।

हमेशा की तरह आज भी कृष्ण कुटीर में पैर रखने के लिए भी जगह नहीं थी। बहुत दिनों बाद ताई आज बदलापूर में आयी हुई थी। सुबह साढ़े आठ बजे का समय था। ताई अंदर से बाहर आयी। शिवलिंग पर अभिषेक हुआ और हमेशा की तरह वे घंटा के नीचे जाकर खड़ी हुई। सभी के मन में उत्सुकता थी कि अब वे किसे आगे बुलाएँगी। जिसे बुलाया उसी ने अपना प्रश्न आगे जाकर पूछना, अपनी मुश्किल बताना लेकिन ताई किसी को भी आगे बुला नही रही थी। बार बार खिड़की से बाहर दूर तक नज़र डाल रही थी। सभी लोग शांति से बैठे हुए थे। दो तीन बार दरवाजे तक भी जाकर आयी शायद वे बेसब्री के साथ किसी का इंतजार कर रही थी। इतने में बाहर का गेट बजा। कृष्ण ने तुरंत जल्दी जल्दी कहा, "अरे, उन्हें अंदर बुलाओ। मुझे उनसे जरूरी बात करना है।" कृष्ण के बताएनुसार ताई ने तुरंत बाहर आ कर उन्हे कहा, 'अरे, आप अंदर आईए! कष्ण आपके लिए कब से रुका हुआ है। आपकी राह देख रहा है।' वे दोनों सकपका गये, उन्हें कुछ भी समझ में नही आ रहा था कि यह क्या चल रहा है। पास खड़े भक्तों ने कहा, 'अरे भाई, आप लोगों को ताई अंदर बुला रही है, आप अंदर जाइये।'

इस प्रकार वह दोनो और ताई भीतर गए। कृष्ण ने उन्हें बैठने कहा। उनका प्रश्न सुना उनकी कठिनाइयों को समझा और वह सब लोग बाहर मंदिर में आए। कृष्ण ने उन्हें प्रसाद दिया और कहा, 'आज आप लोग यहाँ आए, अब किसी बात की चिंता करने की आवश्यकता नही है। पूरी जिम्मेदारी मेरी है। विश्वास रखो मैं हमेशा आपके साथ हूँ। ध्यान में रखो, आपके बाल को भी कोई धक्का लगा नही सकेगा।' यह सुनकर तो वे दोनों हर्षभरित हो गये। बार बार कृष्ण को - ताई को प्रणाम करके वहाँ से बाहर निकले।

इन दोनों की नई नई शादी हुई थी। किराए के मकान में घर गृहस्थी सजायी थी। अचानक मकान मालिक को ज्यादा किराया देने वाला दूसरा किरायेदार मिल गया इसलिए वह इनको घर खाली करके दो ऐसा बार बार कहने लगा। उन्होंने घर खाली करना चाहिए इसलिए, वह अलग-अलग धमकियाँ देता, घर की लाइटें बंद कर देता। इन सब के बावजूद, यह घर ख़ाली कर नहीं रहे हैं यह देखकर उसने कहा मैं आपका सामान बाहर फेंक दूँगा। आगे आगे तो कहने लगा आपकी जान को खतरा है, आपकी पत्नी घर में अकेली रहती है। यहाँ तक उसकी हिम्मत चली गयी थी। यह सब देखकर तो यह दोनों बहुत डर गए। दूसरी जगह पर भी यह लोग घर देख रहे थे लेकिन घर मिल नहीं रहा था। नई जगह मिले बगैर घर कैसे छोड़ना। इस पेंच में वे फंसे हुए थे। जब तक पति दिखाई नहीं देता तब तक पत्नी को और पत्नी दिखाई नहीं देती तब तक पति की जान में जान नही रहती। उनके किसी परिचित व्यक्ति के बताने पर वे दोनों आज़ कृष्ण कुटीर में पहली बार आए थे। कृष्ण भी उन दोनों की राह देख रहा था। कृष्ण हमेशा सभी को कहता है कि, ईश्वर को आप सभी ने मानना ही चाहिए यह जरूरी नहीं है सिर्फ अपने आप पर पूरा भरोसा रखकर सभी के साथ आचरण करना, स्नेह भाव रखना, कर्त्तव्य पूर्ति में आना कानी नहीं करना, वह प्रेमपूर्वक करना। वही मेरी सेवा है। उसी का मैं सेवा के रूप में स्वीकार करता हूँ और मेरी मदद के हाथ लगातार आपके लिए आगे रहते हैं ऊपर दी गयी घटना के द्वारा कृष्ण ने यही हमें दर्शाया भी है।

कृष्ण के आदेशानुसार, कभी किसी भक्त के लिए, कभी किसी जगह के लिए, कभी प्रकृति के लिए और नियमित रूप से विश्व शांति के लिए ताई का लगातार ध्यान चलता ही रहता। बहुत बार ताई ध्यान के हेतु बाहर गाँव भी जाने लगी। कृष्ण के बताने पर, हमें यहाँ यहाँ ध्यान करने के लिए जाना है और तुरंत मदद के लिए आदमी भागकर आते। ताई ने उस जगह पर जाकर ध्यान धारणा करना,

भक्तों को आशीर्वाद देना, प्रसाद देकर आना। इस तरह से ताई के कार्यो का विस्तार होने लगा। इसके साथ ही साथ कृष्ण ने सभी को व्यक्तिगत उपासना पर ज्यादा ध्यान देने के लिए कहा। वर्तमान समय की आवश्यकतानुसार 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' तारक मंत्र का सदैव स्मरण करने कहा, कर्त्तव्य पूर्ति में आनाकानी मत करो, वह प्रेम पूर्वक करो। आपके जीवन में आने वाले प्रश्न अपने आप इस साधना के द्वारा हल होंगे, राह मिलेगी, जीवन में आने वाली परिस्थितियों का सामना आप पूरे धैर्य के साथ कर सकेंगे। ऐसा बताकर कृष्ण अपने भक्तों को स्वावलंबी बनो, सक्षम बनो ऐसा आदेश दे रहा था।

# ।। ॐ ।।

इन दिनों में अर्थात्, अगस्त १९९७ के बाद ताई कालिकत, बद्रीनाथ, हरिद्वार, ऋषिकेश, पूना, जलगाँव, नासिक, कोल्हापुर, हरिहरेश्वर, बड़ौदा में केंद्र स्थापना करने, अनेक भक्तों से मिलने, उन्हें मार्गदर्शन करने के कार्यो के लिए जाकर आयी।

इन ध्यान यात्राओं में कृष्ण ने अनेक अनुभव दिए। उसका परब्रह्म स्वरूप, प्रकृति पर उसकी अधिसत्ता, चराचर में व्याप्त उसका अस्तित्व ऐसे अनेकानेक अनुभव, यह दिव्य अनुभूति ताई के साथ रहने वाले भक्तों को भी मिली।

ताई और कुछ कृष्ण भक्त मुंबई से कालिकत हवाई जहाज से जा रहे थे। कालिकत पहुँचने से पहले हवाई जहाज में घोषणा हुई कि 'हम क्षमा चाहते हैं लेकिन बारिश ज्यादा होने के कारण हमें मजबूरी में हवाई जहाज मद्रास की ओर ले जाना होगा।' कृष्ण ने तुरंत कहा, "नही नही, हम थोड़ी देर में कालिकत पहुँचेंगे।" और सचमुच थोड़ी देर के लिए बारिश रुक गयी और हवाई जहाज कालिकत पहुँच गया।

सभी लोग गुरुवायुर के मंदिर में पालकी निकलने के समय पर पहुँचे। मंदिर का धूल स्पर्श करके शोभायात्रा देखकर सब लोग होटल में पहुँचे। कृष्ण ताई को लगातार ध्यान करने के लिए कह रहा था। इस प्रकार ताई का लगातार 'नजरें घूमाकर ध्यान' चल रहा था। दूसरे दिन ताई की वहाँ तुला की गयी। सभी ने वहाँ का वैभवशाली हाथी घर देखा। आगे वहाँ के सुप्रसिद्ध शंकर भगवान और देवी के मंदिर के दर्शन किए। वहाँ से सब श्री कुमारन् जी के घर गए। कृष्ण ने जाते समय ही सभी से कहा "आज आप सभी को मातृ मंदिर लेकर जाता हूँ।" किसी की समझ में यह बात आ नहीं रही थी कि आखिर जाना कहाँ है। कृष्ण ने कहा, "पहले हम श्री कुमारन् जी के यहाँ जाएँगे, फिर बताता हूँ।" श्री कुमारन् जी की माताजी, उम्र ९४, उस जगह पर निवास करती थी। उन्हें मुंबई से ज़्यादा यहाँ रहना अच्छा लगता था इसलिए श्री कुमारन् जी ने इस घर में शहर के घरों की तरह सभी आधुनिक सुख-सुविधाएँ की हुई थी। घर में पाँच छः आदमी घर के सदस्यों की तरह घरेलू कामकाज जोर-शोर से और अपनेपन से कर रहें थे। बेटे बहू से

मुलाकात होने के कारण माँ के चेहरे के ऊपर की खुशी छुपाएँ नही छिप रही थी। दोनों पति-पत्नी का अपनी माँ के प्रति स्नेह भाव वहाँ के वातावरण में सात्त्विकता का निर्माण कर रहा था। यह सब देखकर कृष्ण ने कहा, "बोलों है कि नहीं सच्चा 'मातृमंदिर'? मैंने इन सभी की सेवाओं का स्वीकार किया हुआ है। ताई इनके लिए शाम को सात से आठ में ध्यान करो।" श्री कुमारन् जी की माताजी यह सब सुनकर भावविभोर होते हुए बोली, 'बेटा, आज़ तुम भगवान श्रीकृष्ण को साक्षात् अपने घर लेकर आए। मेरा तो जीवन सफल हो गया।' ऐसा बोलकर वे ताई के चरणों में नतमस्तक होने के लिए झुकने लगीं। कृष्ण ने उन्हें उठाते हुए अपने बाहों में लेते हुए कहा, "अरे, मैं तुम्हारे लिए ही यहाँ आया हूँ।" कृष्ण जो कहता है, 'कर्त्तव्यों में मुझे देखो, प्रेम से मुझे जीत लो।' उसी का जैसे यह मूर्तिमंत उदाहरण।

ताई के जन्मदिन के शुभ अवसर पर कृष्ण ने कहा, "सारे विश्व का चक्र मैं चलाता हूँ और उस कार्य के लिए मुझे व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। उस व्यक्ति की योग्यता देखकर ही मैं उसे अपने कार्य के लिए चुनता हूँ। ताई की योग्यता देखकर ही मैंने उसे अपने कार्य के लिए चुना। उसकी ओर से मैं पिछले ५१ सालों से कार्य करवाँ रहा हूँ। उसके पहले भी मैं उसके अपरोक्ष उससे कार्य करवाँ ही रहा था।"

"अब मुझे मेरे कार्य की योजनाओं के लिए बद्रिनाथ जाना है। द्वारकाधीश का जन्म हो चुका है। उसके हाथों मुझे बहुत काम करवाँना है। उस कार्य की पूर्व तैयारी के लिए मुझे ध्यान यात्रा की अत्यंत आवश्यकता है। इस प्रकार यह ध्यान यात्रा मेरे सभी भक्तों के लिए भी है। जगह जगह पर मेरे भक्त मुझसे मिलने के लिए आते हैं और उस समय उनका चेहरा आनंद, उत्साह से दमकता रहता है। मेरे हृदय के मन मंदिर में मैंने मेरे भक्तों के प्रेम, श्रद्धा, स्नेहभाव की तो जैसे पोटली बनाकर रखी हैं और देखों यह मैं निकला बद्रीनाथ की यात्रा पर।" इसपर अत्यंत प्रसन्न भाव के साथ ताई ने कहा, 'कृष्ण, द्वारकाधीश के भावी कार्य के लिए तुम्हारी कितनी तैयारियाँ है।' "ताई मुझे प्रत्येक कार्य से पहले पूर्व तैयारियाँ करनी ही होती हैं। तभी मेरे कार्य का विस्तार व्यापक और अभंग होता है; वह अखंड रूप से टिका हुआ रहता है और अव्याहत रूप से आगे की ओर अग्रेसर रहता है। ताई, मुझे तुम्हारी भी ऐसे ही तैयारी करवानी पड़ी। कैसे हुई वह तुम्हें पता नहीं। कार्य मेरा है, करने वाला भी मैं हूँ, और करवाँने वाला भी मैं ही हूँ लेकिन उसकी योजना मुझे इसी प्रकार तैयार करनी होती हैं।"

ऐसा बताकर कृष्ण ने डोंबिवली के भक्तों के साथ १४ से २३ अक्टूबर १९९७ में

बद्रीनाथ धाम की यात्रा की।

वहाँ भयंकर ठंड थी। बद्रीनाथ में आते ही कृष्ण ने ताई से कहा, ”ताई, यह ऊनी कपड़े पहनकर किया गया ध्यान मुझे नहीं पसंद।“ कृष्ण के ऐसा कहते ही ताई ने स्वेटर, हात-मोजे, पैर-मोजे, मफलर, कान टोपी निकालकर वे ध्यान करने के लिए बैठी। सभी भक्तों ने ध्यान के समय पर ही मंदिर में लगाने के लिए जो दीपक साथ लिए थे वे लगा दिए और ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र का जाप करते हुए वहीं रुके रहे। बाद में कृष्ण ने कहा, ”शाम के समय पर कपालतीर्थ में जाकर ध्यान करो। वहाँ जाकर मेरे सभी भक्तों के लिए और भक्तों की ओर से एक ताज़ा फल लेकर नदी में अर्पण करो।“आश्चर्य की बात तो देखिए इतनी कड़ाके की ठंड में ध्यान पूरा होते समय ताई को पसीना आया हुआ था।

हरिद्वार में सुबह के समय ताई ने शिवपिंडी पर गंगाजल और इत्र से अभिषेक किया। सभी को एक एक चांदी के तुलसी पत्र देकर वह शिवपिंडी पर अर्पण करने कहा। ताई ने भी तुलसी दल से अभिषेक किया। चावल से अभिषेक किया। बाँसुरी को इत्र लगाने कहा, बडे दिये की बाती और कपूर लगाने कहा, यह सब जब चल रहा था तब सब लोग ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र का जाप कर रहे थे। ताई पूर्ण ध्यानावस्था में थी। पूजा समाप्त होने पर ताई खडी हुई और कृष्ण बोलने लगा। उसने तीन मंत्र बताए और सभी की ओर से बुलवाँ भी लिए। उसका अर्थ भी सभी को विस्तार में बताया।

‘हे नारायणी, गौरी हम तुम्हारी शरणं में आए हुए हैं। सभी का कल्याण करो। सभी के कष्ट, दु:ख दूर करो। हे महालक्ष्मी माँ, तुम हम सभी पर अनुग्रह करो, हमें उत्तम आरोग्य प्रदान करो, निरोगी दीर्घ जीवन प्रदान करो। धन दो, यश दो क्योंकि आरोग्य के सिवा हम धन और जीवन का उपयोग कैसे कर सकेंगे? ऐसा बताकर अभिषेक किया हुआ बर्तन भर के तीर्थ का जल ताई ने तीन घूँट में प्राशन किया। तीर्थ पीने के पश्चात ताई ने अपने साड़ी के पल्लू से वह बर्तन भी पोंछ कर सुखा लिया और कहा, “पूरा का पूरा तीर्थ मैंने ही पीया। यहाँ आए हुए सभी के क्लेश भी मैंने तीर्थ के साथ पी लिए। अब आप सभी की जिम्मेदारी मेरे ऊपर है। यह वचन मैं आज आप सभी को देता हूँ। अब किसी बात की चिंता मत करो। सब कुछ मेरे ऊपर सौंप दो। इसमें से एक एक तुलसी पत्र प्रसाद के रूप में अपने हाथ से ले लो।“

हरिद्वार के एक घाट पर एक शिव मंदिर था। वहाँ सभी लोग दर्शन के लिए गए। ताई वहाँ बहुत देरी तक ध्यान के लिए बैठी हुई थी। ध्यान होने के पश्चात उन्होंने शिवलिंग की ओर ऊँगली से निर्देशित करते हुए दिखाया, साथ के दो तीन लोगों ने भी देखा तो, शिवलिंग पर सफेद रंग का स्वस्तिक का निशान और उसमें स्पष्ट रूप से अंकित किया हुआ ॐ दिख रहा था। वहाँ इन सब भक्तों के अलावा और कोई भी भक्त बाहर से नहीं आए हुए थे। वह देखकर हरिहर को प्रणाम करके सभी लोग बाहर आ गए।

बद्रीनाथ यात्रा की समाप्ति के समय ताई जब ध्यानावस्था में थी तब कृष्ण ने उनसे कहा, "ताई, अब तुम्हें अत्यंत महत्वपूर्ण बात बताता हूँ वह सुनो और अच्छी तरह से ध्यान में रखो 'विश्व ही तुम्हारा घर है' यही इस ध्यान का अर्थ है।" इस पर ताई ने कृष्ण से कहा, 'कृष्ण, मुझे अर्थ पता करने की आवश्यकता नही है क्योंकि इस अज्ञान अवस्था में ही तुमने मेरी ओर से सब कुछ करवाँ लिया। मेरा हाथ अपने हाथों में लेकर मुझे चलाया। कृष्ण, तुम्हारी लीला के बारे में क्या क्या बताऊँ और कितना बताऊँ, जितना बताऊँ उतना कम ही है। ऐसे समय तुम कहते हो ताई, तुम्हे कुछ समझ में नही आता लेकिन कृष्ण, वही अच्छा है न।' "इसलिए मैं तुम्हारी ओर से मुझे जितना मुझे चाहिए उतना और जैसा चाहिए वैसा काम करवाँ सकता हूँ।"'कृष्ण, उस समय मुझे भी ऐसा ही लगता है कि कर्ता करविता आखिर तुम ही हो तो मेरा अस्तित्व वहाँ न रहे यही अच्छा होगा। मेरी अज्ञानता ही उचित रहेगी।' संपूर्ण शरणागति का भाव इससे अलग क्या हो सकता है?

बद्रीनाथ यात्रा से आने के बाद नवंबर महीने में कृष्ण कहने लगा, "ताई, सभी को बता दो मैं १४ से १७ नवंबर तक नही हूँ।"सिर्फ इतना ही बोल रहा था। कहाँ जाना और किसके साथ जाना यह बिल्कुल नहीं बता रहा था। आखिर चौदह तारीख को इस बात की जानकारी मिली। उन तीन दिनों में तीन भक्तों के यहाँ जाकर ध्यान किया। इन तीनों भक्तों को ताई उनके यहाँ ध्यान के लिए आने वाली है इस बात की बिल्कुल जानकारी नही थी। इस बारे में कृष्ण ने कहा, "जहाँ जाने की आवश्यकता होती है वहाँ मैं उचित समय पर जाता हूँ। मुझे जो उचित लगता है वही मैं करता हूँ। ऐसे समय पर कौन क्या सोचेगा इसकी अपेक्षा किसकी मुश्किल कैसे दूर होगी और होनी आवश्यक है यही मैं देखता हूँ। उसी प्रकार से रचना तैयार करता हूँ।"

१९९६ में ताई जब अमेरिका गयी थी उसी समय कृष्ण ने वहाँ के भक्तों को बताया

था, "अब मैं दो साल के बाद वापस आऊँगा। मेरा एक भक्त मुझे बुलाने वाला है। मैं उस के यहाँ आऊँगा। उसी के यहाँ रहूँगा। उसके यहाँ आकर यदि कोई मुझे मिला तों मिलूँगा लेकिन १९९८ के बाद मुझे भारत के लिए कार्य करना है। यहाँ जैसी केंद्र स्थापना की है वैसी मुझे भारत में जगह-जगह पर केंद्र स्थापना करनी है। उस समय मैं कश्मीर जाऊँगा, पंजाब जाऊँगा।"वर्तमान समय में कश्मीर की स्थिती ऐसी है कि वहाँ जाने की हिम्मत कोई नही करता है लेकिन कृष्ण का कहना है कि, "मुझे वहाँ काम करना है इसलिए मैं वहाँ जाऊँगा।"

कृष्ण के बताएनुसार ताई १९९८ साल में अमेरिका गयी। उसके पहले जब १९९६ साल में ताई अमेरिका गयी थी। उस समय ध्यानावस्था में कृष्ण ने उन्हें एक जगह दिखाई थी। वहाँ एक बड़ा तालाब था। उसके किनारे की इमारत में स्वामी विवेकानंद जी का फोटो था। वह जगह दिखा कर कृष्ण ने ताई से कहा, "यहाँ विश्वजननी मंदिर की स्थापना होगी।"

आगे जब ताई लॉस एंजेलिस गयी थी उस समय एक कृष्ण भक्त ने ताई से कहा, 'ताई आपको एक जगह दिखानी है हम चले क्या वहाँ? वहाँ जाने के बारे में कृष्ण का क्या ख्याल है?' ताई को उस समय ध्यान में दिखाई गयी जगह की याद आ गयी और वे पूछने लगी, 'अरे, वह ऐसी ऐसी जगह है क्या?' इस बात पर कृष्ण ने कहा, "अरे, तुम ताई की बात मत सुनो हम वहाँ जाएँगे।"इस प्रकार वे भक्त ताई को वहाँ ले गए। वहाँ जाते ही ताई के ध्यान में आ गया कि ध्यानावस्था में यही जगह देखी थी। उन्होंने कहा, 'यही वह जगह है जो कृष्ण ने मुझे ध्यान में दिखाई थी यही विश्वजननी मंदिर होगा। इस दृष्टि से आप उनसे बात कर लीजिए।' वह जगह स्वामी योगानंद जी की प्रेरणा से स्थापित योगदा सत्संग सोसाइटी (वायएसएस) का आश्रम था।

उस समय वायएसएस की अध्यक्षा 'दया माँ' थी। विश्वजननी मंदिर की स्थापना उस आश्रम में होनी चाहिए ऐसी स्वामी योगानंद जी की इच्छा थी लेकिन उनके रहते यह कार्य हो नहीं सका। आगे भी १९९८ साल तक भी यह कार्य हुआ नही। जब ताई का यूएस जाना निश्चित हो गया तब खास इस काम के लिए दया माँ से उनकी मुलाकात के लिए समय लिया गया। इस प्रकार ताई और कुछ कृष्ण भक्त एलए में योगदा के आश्रम में दया माँ से मिलने के लिए गए। प्रारंभ में कुछ औपचारिक बातचीत होने के बाद उन्होंने ताई से कहा, 'हम आश्रम देखने चलते हैं।' ऐसा बोलकर सभी लोग आश्रम देखने गए। आश्रम में घूमते समय ताई

अचानक एक जगह पर रुक गयी और उनका कृष्ण के साथ संवाद शुरू हो गया। श्रीकृष्ण बता रहा था, "यही रुको, विश्वजननी की स्थापना यही होनी चाहिए। मेरे भक्त की वही इच्छा अधूरी रह गई है। ताई, तुम इसके आगे मत जाओ।" 'ठीक है कृष्ण' ऐसा बोलकर उन्होंने यह संदेशा दया माँ को दिया। दया माँ ने कहा, 'ठीक है, इस बारे में आपका जो भी निर्णय होगा वह हमें बताइए। मैं भी मेरे अन्य लोगों के साथ बातचीत करती हूँ।' ऐसा संवाद उनके बीच होने के पश्चात सब लोग वहाँ से निकले लेकिन इस ध्यान यात्रा में ताई का ध्यान बहुत ज्यादा हुआ। साथ ही साथ पच्चीस जगहों पर नए श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना भी हुई।

३१ दिसंबर के दिन नए साल के उपलक्ष्य में श्रीकृष्ण ने संदेश दिया।

"संपूर्ण ब्रह्मांड जिसमें भरा हुआ है जीवन का संपूर्ण अर्थ जिसमें समाया हुआ है ऐसा अनन्य महत्वपूर्ण मंत्र 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' है। इसी मंत्र से आप मुझे अपने निकट कीजिए। मुझे आपके करीब लाने की यहीं सीधी, साधी, सरल राह है लेकिन यह सब श्रद्धा पूर्वक कीजिए। आप जो कुछ भी हृदय से करते हो, वह सब कुछ मुझ तक पहुँचता है और तभी मैं आप सब के लिए खड़ा रह सकता हूँ। उसे ही आप श्रीकृष्ण का 'अनुभव' ऐसा कहते हो।

१९९२ साल में ताई जब दोहा, मस्कत, दुबई आयी थी। उसी समय कृष्ण ने कहा था, "मैंने (१९९२ साल) मस्कत में मेरा पहला केंद्र शुरू किया है। सात आठ साल के बाद जब मैं वापस दोहा आऊँगा उस समय सामुदायिक आराधना के लिए केंद्रों की स्थापना करूँगा।"उस समय वहाँ की सामाजिक स्थिति को देखते हुए वहाँ केंद्र शुरू होंगे ऐसा बिल्कुल नही लग रहा था क्योंकि वहाँ के नियम कानून बहुत ही कड़क हैं। वहाँ की सरकार मूर्ति पूजा के विरोध में है। वहाँ की भूमि पर भविष्य में ऐसा कुछ घटित होगा ऐसी वहाँ की स्थिति बिल्कुल नहीं लग रही थी। १९९९ में ताई फिर से पूरे सात साल के बाद दोहा, दुबई, शारजा में आगे के कार्य के लिए गयी। कृष्ण वचनानुसार दोहा में तीन और दुबई आदि जगहों के मिलाकर कुल छः श्रीकृष्णलीलाकेंद्रों की स्थापना हुई।

दोहा में ताई से मिलने केरल की एक क्रिश्चियन लड़की नूरा आयी थी। बहुत साल पहले वह इस शहर में आयी थी। यहाँ वह नर्स का काम करती थी। यहाँ आकर उसने एक कतरी मुसलमान आदमी से शादी की। यहाँ वह किसी के बताने पर आशीर्वाद लेने के लिए आयी थी शायद कुछ मुश्किल थी या उन पति पत्नि की

आपस में कुछ अनबन थी।

भारतीय रीति रिवाज से उसने वहाँ आकर प्रणाम किया और बैठ गयी। ताई ने अत्यंत स्नेहपूर्वक उसकी पूछताछ की उसकी बातें सुनी। कृष्ण ने उसे बहुत सारा प्रसाद, आशीर्वाद दिया उसका लाड प्यार किया। वह बहुत खुश हो गयी। थोड़ी देर बाद उसने हिम्मत करके पूछा, 'ताई, क्या आप मेरे घर आएँगी?' उसे यह पूछने में अत्यंत संकोच महसूस हो रहा था क्योंकि वह एक हिन्दू धार्मिक गुरु को अपने घर बुला रही थीं लेकिन कृष्ण तुरंत उसके घर आने के लिए तैयार हो गया। ताई ने कहा, अरे, मैं आऊँगी तुम्हारे घर! कब आना है यह बताओ।' उसे यह सुनकर बहुत खुशी हुई। वह उन्हें अपने घर लेकर गयी। वह घर नही, राजमहल ही था। वहाँ की एक एक वस्तु अपनी अमीरी की निशानी दे रही थी। वह वास्तु इतनी प्रचंड थी कि वहाँ एक कमरा तो सिर्फ इसके पादत्राण के लिए था। ऐसा वहाँ का सब शाही ठाठ-बाट था। उसने कतरी रिती रिवाज से ताई का स्वागत किया। सबसे पहले तो कतरी स्पेशल पेय 'गावा' वह दिया। बाद में एक बड़े परफ्यूम बार के पास ले जाकर जो चाहिए वह महंगे परफ्यूम लगाये फिर कृष्ण को खास तैयार किए हुए आसन पर विराजमान करके उसकी पूरे विधी विधान से पूजा की। कृष्ण को प्रसाद, फल, फूल, दक्षिणा अर्पण की। कृष्ण ने भी उन सब चीजो का खुशी खुशी स्वीकार किया। उसके द्वारा दी गयी दक्षिणा का उपयोग गुरुपूर्णिमा के प्रसाद में करुँगा ऐसा उसे वचन भी दिया। उसने प्रसाद के लिए जो खीर बनाई थी उसमे एकदम सटीक 'ॐ' अंकित हुआ था। वह तो यह सब देखकर अत्यंत भावुक हो गयी।

ताई जब दोहा से वापस आ रही थी तब भी वह उनसे मिलने आयी थी। जब वह प्रणाम करने के लिए नीचे झुकी तब ताई ने उसका लाड करते हुए नजदीक लिया। उसे कृष्ण का एक फोटो भी दिया और कहा, 'यह फोटो लो और इसे अपने गद्दे के नीचे रखो। यह बात पति को बताने की जरूरत नही है लेकिन रोज रात को सोते समय मेरा स्मरण करके ही सोना। मैं हमेशा तुम्हारे पीछे खड़ा हूँ। इस बात पर विश्वास रखो।' ऐसा बोलते बोलते ताई ने उसे एक वस्त्र दिया। उसने वह कपड़ा हाथों में लिया और एकदम से वह रोने लगी। किसी की समझ में कुछ नही आ रहा था कि अचानक से उसे क्या हो गया? थोड़ा शांत होने के बाद वह बताने लगी, 'ताई, पहले मैं यहाँ केरल से नर्सिंग का काम करने के लिए आयी। आज कितने साल बीत गए लेकिन मैं कभी भी केरल जा नहीं सकी, न ही कोई वहाँ से मेरे

घर आया। आज कृष्ण ने मुझे बिल्कुल वैसा ही वस्त्र दिया जैसे वस्त्र का उपयोग हमारी माँ हम तीनों बहनों के फ्रॉक बनाने के लिए करती थी। यह कपड़ा देखकर तो मुझे लगा जैसे मैं मेरी माँ के यहाँ जाकर आयी। आपके रूप में मुझे जैसे मेरी माँ ही मिल गयी इसलिए मुझे आज इतना ज्यादा रोना आ गया। ताई, मुझे माफ़ कर दीजिए।

इस पर कृष्ण ने प्रसन्नतापूर्वक हँसते हुए कहा, "अरे, मुझे तुम्हारा अभिमान है! मेरे से ज़्यादा करीब, आपके जीवन में कोई नहीं होता है। ऐसे ही हमेशा मेरे कृपाछत्र में रहो। किसी बात की चिंता मत करो।"

नूरा के इस उदाहरण से, कृष्ण बार बार जिस मानवता धर्म का उल्लेख करता है उसकी प्रचिती आती हैं। कहाँ की कोई भारतीय क्रिश्चन लड़की, कतरी मुसलमान से विवाह करके मुस्लिम बन जाती है। ताई स्वरुपी कृष्ण से मिलती है और उन्होंने भी उसे उसके स्मरण के अलावा दूसरी और कोई आराधना, साधना नही बतायी। उसका माँ की ममता से लाड प्यार किया। यही तो इंसानियत का धर्म है और क्या है? उसे जाप करने, नामस्मरण वगैरह करने नहीं कहा। वह तो इतना भक्त वत्सल है कि उपासना देते समय भी भक्त उसे आसानी से कर सके ऐसी उपासना ही देता है।

# ।। ॐ ।।

ताई दोहा से जब बदलापूर आयी उस समय कारगिल युद्ध की परछाई पूरे भारत पर फैली हुई थी। उस समय कृष्ण ने ताई को आदेश दिया, "ताई, तुम १२, १३, १४ जुलाई १९९९ को भारत के लिए, कारगिल के लिए मृत शरीर की तरह ध्यान करो। उसकी अत्यंत आवश्यकता है।"

११ जुलाई १९९९ को रात के बराबर बारह बजे ताई का कारगिल के लिए ध्यान शुरू हुआ। १२, १३, १४ तारीख ऐसे तीनों दिनों में कृष्ण के बताएनुसार ताई का कारगिल के लिए ध्यान हुआ। १२ सितंबर १९९९ के दिन कारगिल का युद्ध जीतने की खबरें आयी। कृष्ण ने बाद में इस ध्यान का वर्णन लिखकर रखने के लिए कहा। ताई कहती है, 'यह ध्यान श्रीकृष्ण ही करवाँ लें रहा था। मुझे ध्यानावस्था में जो दृश्य देखने के लिए मिलें वे अवर्णनीय थे। बहुत समय मै बर्फाच्छादित शिखरों के किनारे किनारे से जाती थी। कहीं का वातावरण पूर्ण शुष्क रहता, तो कहीं पर छोटी-छोटी घास होती, कहीं पर छोटे छोटे पौधे होते। ऐसे पहाड़ों में मैं घूम रही थी। मैं घूम रही थी यह बोलने से ज्यादा अच्छा होगा कि कृष्ण अपनी नज़र चहुँ ओर घुमा रहा था। मुझे लग रहा था जैसे मैं लगातार गोल गोल घूम रही हूँ। शाम के साढ़े छः बजे मेरा उस दृश्य का ध्यान पूरा हुआ और मुझे बहुत ज्यादा ठंड लगने लगी। हमारे घर के सभी लोग बहुत आश्चर्यचकित हुए क्योंकि मैं तो पंखा बंद रखकर ध्यान कर रही थी फिर भी मेरा शरीर ठंड से काँप रहा था। मुझे रेशमा ने इशारे से आधा कप चाय दूँ क्या ऐसे पूछा। मैंने इशारे में हाँ कहा। चाय लेने के बाद कृष्ण ने कहा, "साढ़े आठ बजे गरम पानी से स्नान करो कंपकंपी रुक जाएगी और वैसा ही हुआ भी।" उसके पश्चात फिर से ध्यान की शुरुवात हुई। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर मैं कभी उस जगह पर प्रत्यक्ष रुप से गयी तो वह जगह मुझे निश्चित रूप से देखने मिलेगी और वह मै पहचान भी सकूँगी। कुल मिलाकर इस ध्यान का आनंद अवर्णनीय था। आज भी मैं उस ध्यान का आनंद लेती हूँ और हर समय मानसिक रूप से वहाँ जाकर उस ध्यान का आनंद प्राप्त करती हूँ।

उसके बाद भी कृष्ण ने आगे के दो दिन अलग अलग प्रकार के ध्यान करवाँ लिए। मुख्य रूप से मुझे बात का एहसास हुआ कि मुझ में का 'मै' यह भाव खत्म हो

गया था। 'मैं' याने कुछ नहीं हूँ यह मुझे स्पष्टरूप से यहाँ बताना है क्योंकि कर्ता करविता आखिर वह है। मुख्य आशय यह है कि वह किसी न किसी की ओर से अपना कार्य करवाँ लेता है। हे श्रीकृष्ण, विश्व का सारा भार तुम्हारे ही ऊपर है। मैं तो उसमें की एक धूल का एक कण हूँ! तुम यह सब कुछ मेरी ओर से करवाँ लेते हो यही मेरा परम् भाग्य है। तुम्हारी कृपा है कि तुमने मुझे इस कार्य के लिए चुना। तुम्हारा जितना एहसान मानूं उतना कम है। तुमने आगे के दो दिन भी मेरी ओर से ध्यान करवाँ लिया लेकिन उसका वर्णन करना मेरे लिए नामुमकिन है। 'मैं तो सिर्फ इतना ही कहूँगी' कृष्ण तुम्हारी लीला अगाध है।

ताई द्वारा लिखित यह मनोगत पढ़कर आँखें नम हो जाती हैं। कितनी यह लीनता, नम्रता! अपनी गुरु माँ ने हमारे सामने कितना बड़ा आदर्श रखा है। इस मनोगत के द्वारा कृष्ण हमें बता रहा है कि उसके भक्तों ने कैसा सेवा भाव रखना चाहिए, दास भक्ति कैसी करनी चाहिए इसका उद्देश्य तो जैसे इस मनोगत के द्वारा हमारे सामने रख दिया।

कृष्ण ने मुंबई के कुछ भक्तों के साथ तिरुपति और बेंगलूर जाने का कबूल किया था। इस प्रकार ताई और चार पाँच कृष्ण भक्त प्रथमत: तिरुपति बालाजी के दर्शन के लिए गए। सभी लोग रेलवे से सफर करने वाले थे। सफर छत्तीस घंटे का था। कृष्ण ने सभी को सूचना दी थी कि सफर में खाने पीने का सामान नहीं लेना। मैं पूरी व्यवस्था करूँगा। उसका शब्द सत्य साबित हुआ। गाड़ी जब पूना स्टेशन पहुँची, तब पूना के भक्त प्लेटफार्म पर खाना और नाश्ते के लिए उकडी के मोदक, वाटली दाल (महाराष्ट्र का पारंपरिक खाद्य पदार्थ), पुरन पोली, थर्मस में गर्म गर्म चाय लेकर खड़े थे साथ में बहुत सारी फूल-मालाएँ, पूजा सामग्री ऐसा सब सामान भी था।

सभी को तिरुपति पहुँचने पर पता चला कि ऊपर मंदिर में पूजा सामग्री नहीं ले जा सकते। ताई ने स्नान के पश्चात सुंदर सी मोतिया रंग की साड़ी पहनी, बाल धोये थे इसलिए खुले थे। उस कमरे में वे ध्यानस्थ बैठी। थोड़ी देर पश्चात कृष्ण बोलने लगा, "ऐसे क्या सोच रहे हो? व्यंकटेश्वर से मिलकर आया हूँ। यह फूल मालाएँ योगेश्वर को पहनाओं। सभी पूजा सामग्री का उपयोग करके पाद्यपूजा करो। सभी भक्तों ने अत्यंत प्रसन्नता पूर्वक कृष्ण की विधि विधान से पाद्य पूजा की। ताई का ध्यान पूरा होने पर सभी लोग सुबह के तीन साढ़े तीन बजे ऊपर मंदिर में गए। सभी को सीधे गर्भगृह में जाकर दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। वहाँ

के पुजारी ने व्यंकटेश्वर के वस्त्र गृह में ले जाकर वहाँ का टोप सभी के सिर पर रखकर आशीर्वाद दिया। योगेश्वर के बताएनुसार ताई ने सभी भक्तों की ओर से वेंकटेश्वर की हुंडी में पैसे रखे।

कृष्ण ने कारगिल ध्यान के समय ही ताई से कहा था, "ताई, मुझे ऐसा ही ध्यान १३ से १७ सितंबर को करना है।" इसलिए अगस्त महीने से ताई बता रही थी कि मेरा सितंबर में बहुत ही महत्वपूर्ण ध्यान है इसलिए जहाँ तक हो सके कोई भी कृष्ण कुटीर में मत आओ। फोन भी मत करो। ताई बताती है कि सचमुच वैसा ही सहयोग सभी कृष्ण भक्तों ने दिया क्योंकि ऐसे सहयोग के बिना कार्य हो ही नहीं सकता क्योंकि कार्य कभी भी एक व्यक्ति का नहीं होता है बल्कि वह तो अनेकों के सहयोग से होता है। "मैं मेरे भक्तों के बीच में ही रहता हूँ, उन्हीं से सब कुछ करवाँ लेता हूँ और उसका फायदा भी मेरे भक्तों को मिलता है।"

१३ सितंबर को ध्यान की शुरुवात हुई। कृष्ण ने कहा, "आज का ध्यान मेरे सभी भक्तों के लिए। मेरे सभी भक्तों में आप भी शामिल होने का प्रयत्न कीजिए। सत्य ही मेरा मूलस्वरूप है। मैं हमेशा सत्य की बाजू से खड़ा रहता हूँ, उसमें निवास करता हूँ। श्रद्धा, भक्ति के साथ साथ सत्य की भी अत्यंत आवश्यकता होती है। जहाँ यह सब होता है उनके साथ खड़े रहना, उनके बीच रहना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे ऐसा लगता है जैसा मैं रहता हूँ वैसे ही मेरे भक्तों ने रहना चाहिए। जो भी ऐसे कोई भक्त होंगे उन्हें इस ध्यान का बहुत उपयोग होगा। उन्हें इस ध्यान से लाभ भी मिलेगा।"

१४ और १५ तारीख का ध्यान अपने देश के लिए करो। ऐसा भगवान का आदेश आया। इस प्रकार इन दो दिनों का ध्यान भारत के लिए किया। १४ तारीख को ध्यान का मंत्र था -

*यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।*

*अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।*

*(गीता ४ था अध्याय, श्लोक ७)*

सजीवता के प्रति प्रेम की, अपनेपन की, कर्त्तव्यपालनता की, और सद्भावना की आवश्यकता होती है। जिसके फलस्वरूप सभी को सुख, शांति, समाधान मिलेगा।

१५ तारीख का मंत्र था -

*अनन्याश्चिंतयन्तो मां ये जना: पर्युपासते।*
*तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।*
*(गीता ९ वां अध्याय, श्लोक २२)*

जिनके हृदय में सही मायने में कार्य करने की आकांक्षा है, उनकी ओर से कार्य करवाँ लेने के लिए मेरे इस ध्यान का अत्यंत उपयोग निश्चित रूप से होगा क्योंकि शक्तिदाता और बुद्धिदाता मैं हूँ और उनकी ओर से कार्य पुरा करवाँ लेने की जिम्मेदारी भी मेरी ही है।"

१६ तारीख विश्व शांति के लिए ध्यान करने की तारीख है अर्थात् उस विश्व में अपना भारत देश भी आता ही है। व्यापक रूप से यदि कहा जाए तो प्रत्येक व्यक्ति विश्व का एक घटक है इसलिए जाने अनजाने में हमारे ऊपर एक बड़ी जिम्मेदारी आती है इसलिए सामुदायिक आराधना करके इस विश्व कार्य में मदद कीजिए। सामुदायिक आराधना में अत्यधिक बल होता है और उसका परिणाम सिर्फ स्वयं पर न होकर पूरे समाज पर हो सकता है। जिसके फलस्वरूप मानसिक शक्ति बढ़ती है। हमारे हाथों से होने वाले कार्य की और कर्म की ताकत हमेशा बनी रहती हैं। मन में सद्भावना जागृत होती है और भक्ति मार्ग का अनुसरण करने से मानवीय जीवन के मूल्य चिरंतन स्थायी बने रहते हैं। इससे विचारों में स्थिरता आती हैं। अपने हाथों से होने वाले कार्य योग्य दिशा में होने के कारण मानसिक शांति प्राप्त करने में काफी मदद मिलती है। विचारों में स्थिरता आने के कारण अपने हाथों से होने वाले कार्य व्यवस्थित व सुचारू रूप से होने लगते है।

१७ तारीख, मेरे ध्यान का आखिरी दिन! फिर से मेरे सभी भक्तों के लिए ध्यान करवाँ लिया और कुल मिलाकर, मैंने इस वृत्त को पूरा करके मैं फिर से केंद्र बिंदु बन गया। मेरा कार्य ऐसा ही होता है और उसका परिणाम भी स्थायी रुप से बना हुआ रहता है। यह एक बड़ा चक्र है। जिसे मैं कार्य कहता हूँ। इस कार्य को पूर्ण करने के हेतु से मैं एक व्यक्ति को चुनता हूँ, उसके हाथों में सारे सूत्र देकर, सभी की ओर से मैं कार्य पूर्ण करवाँ लेता हूँ इसलिए मैं सभी को बताता हूँ मुझे जान लो, मेरे ऊपर विश्वास रखो। मुझे भूलो मत। मेरे कार्यो का स्मरण करों। इससे आपके अंतर्मन में स्थित मैं जागृत रहकर आपकी ओर से सभी कार्य करवाँ लूँगा। मेरी

इच्छा के बगैर पत्ता भी हिल नहीं सकेगा इसलिए हमेशा मेरे कार्य की ओर ध्यान दो। मेरे ऊपर पूर्ण श्रद्धा भाव रखकर जीवनयापन करो। इससे कालचक्र के घूमने पर आप सुख समाधान से रह सकेंगे। यहाँ सुख से तात्पर्य है मानसिक शांति। यह सब जान लेने के लिए एक गाँठ हृदय में पक्की बांध लो।

*यत्र योगेश्वर: कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर:।*

*तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।*

*(गीता १८ वा अध्याय, ७८श्लोक)*

उस दिन दोपहर के समय कृष्ण मंदिर में ताई संग कुछ भक्त बैठे हुए थे। ताई ध्यान की कुर्सी में बैठी हुई थी और बाकी के लोग सामने बैठे थे। ताई ध्यानावस्था में थी और उनकी नजरें स्थिर थी। उनका मुख अत्यंत आनंद एवं चेहरा विलक्षण तेज से दमक रहा था। एक भक्त ने उनसे धीरज करके पूछा, 'ताई, आपका चेहरा अत्यंत आनंदित प्रतीत हो रहा है, आप क्या देख रही हो?' ताई ने कहा, 'अरे, क्या बताऊँ? देखो तो, कृष्ण के पास प्रसन्नवदना जगत् जननी के रूप में महान शक्ति खड़ी है।' 'ताई, विश्वजननी कैसी दिखती है?' 'सुन्दर, अति सुन्दर! धवल वस्त्र परिधान किए हुए हैं। काले काले सुंदर बालों को पीठ पर खुला छोड़ा हुआ है। चेहरा अत्यंत आनंदित और मुद्रा प्रसन्न है। मुख पर विलक्षण तेज है उसका मैं वर्णन नहीं कर सकती।' ऐसा बोलते बोलते ताई फिर से ध्यानस्थ हो गयी।

अब कृष्ण के साथ साथ विश्वजननी भी जैसे प्रकट हो रही थी। १९९६ से कृष्ण जो बता रहा था कि विश्वजननी की स्थापना होनी चाहिए, उसी का जैसे यह प्रत्यंतर था।

कृष्ण ने ताई को दिसंबर की २२ से ३१ तारीख तक कम से कम बात करना और ज्यादा से ज्यादा ध्यान करने का आदेश दिया। कृष्ण को ऐसा लगता है कि जब वह सब भक्तों का भार वहन करता है, तो उस समय ऐसे ध्यान की बहुत आवश्यकता होती है। प्रत्येक भक्त उसके ऊपर निर्भर रहता है। प्रत्येक व्यक्ति को कृष्ण ने वचन दिया होता है। उस वचन की पूर्तता के लिए कृष्ण ध्यान का स्वीकार करता है। वह भी उसके भक्त की ओर से ही स्वीकारता है क्योंकि कृष्ण के कार्य का केंद्र बिंदु उसका भक्त ही होता है और वह उसे उसके प्राणों से भी प्रिय होता है।

कृष्ण ने ताई को १ से ७ जनवरी तक मौन धारण करके ध्यान करने के लिए कहा। ३१ दिसंबर १९९९ को रात के बारह बजे से ताई के मौन और ध्यान की शुरुवात हुई।

उस समय कृष्ण ने कुछ बातों का अर्थ बताया। कुछ बातों की विस्तृत जानकारी दी।

● कृष्ण ध्यान किस की ओर से करवाँ लेता है? जो कृष्ण को सर्वस्व रूप से अपना मानते है। उसके शब्द का उल्लंघन बिल्कुल नहीं करते है, कृष्ण मतलब कृष्ण यह जो जानते है। उसे ही कृष्ण ध्यान मूर्ति के रूप में चुनता है।

● कृष्ण अपना भक्त किसे मानता है? जो भक्त कृष्ण को अपना एकमात्र सहारा मानता है, फिर उसका धर्म, उसकी जाति, कोई भी हो; इस प्रकार का भक्त कृष्ण को सदैव प्रिय होता है। वह उसका संपूर्ण भार उठाता है और उसके लिए समय-समय पर खड़ा रहूँगा ऐसा वचन भी देता है।

● गीता में दिए गए प्रत्येक श्लोक मतलब ही कृष्ण द्वारा उसके भक्त को दिया गया वचन और किया गया मार्गदर्शन है। सामुदायिक प्रार्थना यह वर्तमान समय की आवश्यकता है और वह आवश्यकता 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र-जाप के द्वारा पूरी की जाएगी।

● इसलिए बार बार बताता हूँ कि केंद्र में आओ और वह आधा घंटा पूरी तरह कृष्ण को देकर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की आराधना करों।

● हम जिस तरह पैसों का संग्रह करते हैं। उसी तरह से हमें आध्यात्मिक शक्ति का भी संग्रह करना होता है। आज हम जिस आध्यात्मिक शक्ति का संचय कर रहें हैं, उसका उपयोग सिर्फ हमारे लिए न होकर हमारी आने वाली भावी पीढ़ी के लिए बहुत ज्यादा होने वाला है। आप स्वयं के लिए तथा अपनी भावी पीढ़ी के लिए यह भक्ति रूपी पौधा लगाकर रखिए। धीरे धीरे वह वृक्ष में रुपांतरित होगा और यदि नहीं भी हुआ फिर भी पौधा तो लगा ही रहेगा इस बात में कोई शंका नहीं है।

● वर्तमान समय में जो भक्त कृष्ण के ऊपर पूर्ण रुप से आश्रित है, उनका तो वह रक्षणकर्ता रहेगा ही रहेगा। भविष्य में भी हम जितने कृष्ण के नजदीक जाएँगे उतना वह भी हमारे लिए भागकर आएगा। कृष्ण कहता है जिनकी आध्यात्मिक शक्ति का संग्रह समाप्त हो जाएगा, उन्हें कठिनाइयों का सामना करना ही पड़ेगा।

● हमेशा याद रखो, कृष्ण कृपा का अर्थ है प्रसन्नता, सुख, शांति, समृद्धि का खज़ाना। वह कृपा प्राप्त करने के लिए 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करो। इससे आपके अंतर्मन में स्थित मैं जागृत होगा और उस जागृति से आनंद, प्रेम, आस्था, अपनेपन का निर्माण होकर कर्त्तव्य तत्परता की भावना जागृत रहेगी। इससे घर घर में प्रसन्नता पूर्ण वातावरण रहेगा और शांति, समाधान की समृद्धि होगी।

कृष्ण अपने भक्तों को अंतर्मुख होकर, अपने स्वयं के प्रश्न कृष्ण का आधार लेकर कैसे हल करना इसकी शिक्षा दे रहा था। कितनी बार आने वाले भक्त ताई से कहते कि 'ताई, कृष्ण ने हमारा जीवन कितना सरल कर दिया है।' इस पर ताई प्रसन्नतापूर्वक कहती, 'अरे, वह कठिन था ही कब? हम स्वयं सारी उलझनों का निर्माण करते हैं। चिंताओं की गठरी तैयार करते हैं और उसके भार तले स्वयं ही दब जाते हैं। जीवन में आने वाला प्रत्येक क्षण यह कृष्ण इच्छा से आता है, इस बात पर जब दृढ़ विश्वास बैठ जाता है। तब जीवन जीने में एक प्रकार से सहजता आती हैं। वह हमें अयोग्य ऐसा कभी कुछ भी देगा क्या? तो निश्चित रूप से नहीं देगा।'

# ।। ॐ ।।

अनेक जगहों पर श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना होने के कारण भक्तों में एक प्रकार से संघ की, एकता की भावना निर्माण होने लगी। सभी भक्त कृष्ण भक्ति की डोर से एक दूसरे से बंधने लगे। पूना में तो जैसे नवचैतन्य की एक लहर ही प्रवाहित होने लगी। कृष्ण केंद्र की स्थापना अलग-अलग जगहों पर होने से सामुदायिक नामस्मरण करने की शुरुवात हुई। उससे निर्माण होने वाली नाद लहरों में सभी भक्त रममाण होने लगे। एक दूसरे के यहाँ जानें आने लगे। कुछ कुछ जगहों पर तो कुछ घंटों की सामुदायिक नाम जप सेवा की भी शुरुवात हुई।

उसी दौरान गुरुपूर्णिमा का उत्सव भी पास आ गया। सभी भक्तों में तो जैसे चैतन्य की एक लहर दौड़ गयी। वे बदलापूर आकर ताई से बिनती के स्वर में पूछने लगे, 'ताई, आप कृष्ण से एक बात पूछेंगी क्या? सभी भक्तों की इच्छा है कि क्यों न हम सब कृष्ण कुटीर के सानिध्य में चौबीस घंटों का अखंड जपयज्ञ करें। वह करे क्या हम? अगर वह करना है तो गुरुपूर्णिमा से अच्छा शुभ मुहूर्त कौन सा हो सकता है?' जैसे ही कृष्ण की ओर से अनुमति मिली। सब प्रकार की तैयारियों की शुरुवात हो गयी। मंदिर के बाजू में कुछ कृष्ण भक्तों के ब्लॉक्स है। वहीं पर यह जाप करेंगे ऐसा सुनिश्चित हुआ।

१५ जुलाई २००० के दिन सुबह ग्यारह बजे मंदिर में कृष्ण का आशीर्वाद लेकर सभी कृष्ण भक्तों की ओर से, सभी कृष्ण भक्तों के लिए और कृष्ण कार्य के लिए किए जाने वाले इस जप का संकल्प किया गया। कृष्ण का, ताई का आशीर्वाद लेकर जप का श्रीगणेश हुआ। सात से दस भक्त लगातार श्रंखला बनाकर जाप कर रहें थे उस दिन के कार्यक्रम की मुख्य विशेषता थी कि बदलापूर, पूना, थाना, कल्याण, डोंबिवली, मुंबई, आदि शहरो के भक्तों का इस कार्य में पूरे तन मन से सहयोग था। पूरा कार्यक्रम अत्यंत शांति के साथ, बिना आवाज और गड़बड़ी से हो रहा था। पूरा कार्यक्रम देखकर ऐसा लग रहा था कि कोई बड़ा कार्य हो रहा हो; इस तरह से काम चल रहा था। धीरे धीरे रात हो गयी। रात के शांत वातावरण में अचानक जुलाई की धुआँधार बारिश शुरू हो गयी। ऐसा लग रहा था नामजप की अखंड धारा में पर्जन्य धारा ने भी अपनी उपस्थिति दर्शायी। चालीस पैंतालीस

आदमी एक साथ ना रिश्ते के न नाते के, न ही एक दूसरे से ज्यादा परिचित लेकिन अभी 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' तारक मंत्र के नाद ब्रम्ह में रममाण हो गए थे। एक ओर चाय, नाश्ता की तैयारी भी अत्यंत शांति के साथ सुचारू रूप से चल रही थी। सभी को प्रसाद लेने के लिए कृष्ण मंदिर में ही जाना था। सभी भक्तों की प्रार्थना का मान रखते हुए कृष्ण ने कहा, "मैं पाद्य पूजा के लिए बराबर ग्यारह बजे यहाँ आऊँगा।"

कृष्ण कुटीर में गुरुपूर्णिमा के उत्सव के कारण बहुत भीड़ थी। जिन्हें इस जपयज्ञ की जानकारी नहीं थी वे सब आश्चर्य व्यक्त कर रहे थे। ताई सभी को पड़ोस में जाकर थोड़ी देर जाप करके आने का आग्रह कर रहीं थी। धीरे धीरे रात के ग्यारह बजने को पाँच मिनट बाकी थे। मंदिर का हॉल भक्तों से पूरा खचाखच भरा हुआ था। गेट के बाहर तक लोग दर्शन के लिए और ताई से आशीर्वाद लेने के लिए लंबी लाइन लगाकर इंतजार कर रहे थे। इतने में कृष्ण ने जल्दीबाजी करना शुरू किया, "ताई, जल्दी चलो बाबा। अरे, वह प्रसाद के लड्डूओं का डब्बा कहाँ रखा हुआ है। मैंने उन सब को ग्यारह बजे वहाँ आने का वचन दिया हुआ है। मैं तो जा रहा हूँ बाबा।" ऐसा बोलते बोलते ताई भीड़ में से राह निकालते हुए जपयज्ञ स्थल पर जाने के लिए निकलीं। उनके साथ कुछ भक्तगण भी थे। वहाँ का पूरा वातावरण 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र के जयघोष से गूँज रहा था। दरवाजे पर साक्षात् परब्रह्म को खड़ा देखकर वहाँ बैठे लोगों की आँखों से अविरत आनंद अश्रू धारा बहने लगी। वे सब भावनाविह्लल हो गए। आशीर्वाद की मुद्रा में कृष्ण ने अंदर हॉल में प्रवेश किया और उसके लिए तैयार किए गए आसन पर विराजमान हुआ। भक्तों की खुशी तो जैसे आसमान छू रही थी। सभी भक्तों की ओर से कृष्ण की विधि विधान से पाद्य पूजा की गयी। भगवान श्रीकृष्ण के आशीर्वाद से इस अखंड जपयज्ञ का समापन हुआ। उस समय कृष्ण ने कहा, "मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मैंने इस पूरी सेवा का स्वीकार किया है। आप सभी भक्तों ने संगठित होकर एकता की भावना से यह जो सेवा की है उसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। इसी तरह मुझे मध्य में रखकर आप सब हमेशा एक साथ आइए। सेवा करके मेरा आशीर्वाद प्राप्त कीजिए। आज मैं आप सभी को वचन देता हूँ मैं हमेशा आपके पीछे खड़ा रहूँगा सिर्फ मेरे ऊपर की श्रद्धा और विश्वास को हिलने मत दीजिए।" ऐसा बताकर कृष्ण ने सभी को आशीर्वाद, प्रसाद दिया और तीन घूंट पानी पीकर ताई वहाँ से कृष्ण कुटीर में आ गई।

गुरुपूर्णिमा आने से पहले ३१ मई से ११ जून २००० को ताई सह मुंबई के कुछ भक्त नेपाल, पशुपतिनाथ यात्रा के लिए गए थे। दो तीन साल पहले ताई जब हरिद्वार, बद्रीनाथ की यात्रा के लिए गयी थी, उस समय ध्यान के दौरान कृष्ण ने एक ऊंचे, गोरे, उम्दा व्यक्तित्व के व्यक्ति के शरीर पर हाथ रखकर ध्यान किया था। उस समय ताई को वह व्यक्ति कौन है यह पता नहीं चला था; उस समय हरिद्वार में संस्कृत सम्मेलन था उसमें सहभाग लेने के लिए यह नेपाल नरेश वहाँ आए हुए थे। वहाँ के समारोह का समापन होने पर बाहर निकलते समय ताई और नेपाल नरेश की नजरें मिली। उसी समय ताई के ध्यान में आ गया कि कृष्ण ने सुबह ध्यानावस्था में जो व्यक्ति दिखायी थी वह यही है। तभी से कृष्ण बार बार नेपाल जाने के बारे में बोल रहा था।

नेपाल नरेश को भेंट देने के लिए कृष्ण ने अपने साथ में एक शिवलिंग और सुंदर सी चांदी की बाँसुरी ली हुई थी। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य था नेपाल नरेश से मिलकर उन्हें आशीर्वाद और प्रसाद देना।

इस प्रकार ५ तारीख को ताई सह कुछ कृष्ण भक्त राजा से मिलने के लिए या मिलने का समय निश्चित करने के लिए उनके ऑफिस में गए। वहाँ उन्हें अंदाज से दो तीन घंटे रुकना पड़ा। वहाँ का ऑफिसर आने तक ताई ध्यानावस्था में थी। ताई ने ध्यानावस्था में देखा कि पशुपतिनाथ की बड़ी पिंडी है उसके ऊपर रुद्राक्ष की माला पहनायी हुई है। एक एक मंत्र पूरा होने पर एक एक रुद्राक्ष मणि आगे जाता, जब आखिरी मंत्र पूरा हुआ उस समय मेरुमणी का रुद्राक्ष सामने आया और तुरंत ताई के भ्रूमध्य में आकर लगा। उस समय वहाँ कुछ अद्भुत संवेदनाओं का एहसास होने लगा।

थोड़ी देर में उनसे मिलने वहाँ का ऑफिसर आया। उन्हें कृष्ण भक्तों ने बताया कि, उन्हें आशीर्वाद देने और प्रसाद देने के लिए कृष्ण आया है। उस समय संसद का अधिवेशन चल रहा था, इसलिए उस ऑफिसर ने कहा, 'प्रत्यक्ष महाराज से मिलना तो कठिन है, लेकिन महाराज की ओर से उनके सचिव इन प्रसादिक वस्तुओं का स्वीकार करेंगे और उन्हें दे देंगे। मैं ज्यादा से ज्यादा महाराज से आपकी मुलाकात की कोशिश करूँगा। आप साढ़े तीन बजे फोन कीजिए।

वहाँ इंतजार करते समय ताई कृष्ण से बोली, 'कृष्ण, तुम्हें भी इंतजार करना पड़ता है। इसकी अपेक्षा राजा को मिलने की बुद्धि दो न।' कृष्ण ने तुरंत इस पर एक

महत्त्वपूर्ण बात बतायी, "मुझसे मिलने की बुद्धि होना आसान नहीं है। इसके लिए जीव की तैयारी और पात्रता होनी चाहिए। अर्जुन बचपन से मेरे साथ था। हम एक थाली में खाना खाते थे। एक शय्या पर शयन करते थे। एक साथ घूमते थे, लड़ते थे फिर भी उसे युद्ध करने के लिए तैयार करने में मुझे कितने प्रयत्न करने पड़े। मेरे पास पहुँचना बिल्कुल आसान नहीं है।" दोपहर के समय फोन पर महाराज के निजी सचिव मिले। उन्होंने कहा, 'कल मिलना तो संभव नहीं है लेकिन मैं परसों के लिए कोशिश करता हूँ। आप दोनों कल ग्यारह बज आइए। मैं कोशिश करता हूँ लेकिन यदि नहीं हो सका, तो मैं महाराज की ओर से इन वस्तुओं का स्वीकार करूँगा। मुझे कई बार ऐसा करना पड़ता है। दूसरे दिन की तारीख ६ जून थी, कृष्ण कुटीर में कृष्ण मूर्ति की स्थापना का वर्धापन दिन इसलिए कृष्ण ने सभी को पाद्य पूजा करने की अनुमति दी। इस प्रकार 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र के गजर में नेपाल में पाद्य पूजा की गयी। उस समय ताई के माथे पर लगाये गए अष्टगंध के तिलक में ॐ प्रकट हुआ। कुछ लोगों को ताई के पीछे हाथ में बड़ा सा त्रिशूल लिया हुआ, बहुत ऊँचा कृष्ण दिखायी दिया। उस समय सभी लोग गीता का नौवा अध्याय और पसायदान बोल रहे थे। पूजा का स्वीकार करते हुए कृष्ण ने आशीर्वाद देते हुए कहा, "आप सभी ने पसायदान बोला, यह लो पसाय।" ऐसा बोलकर कृष्ण ने अपनी अंजलि सभी भक्तों के अंजलि में डालीं। कृष्ण ने बाद में सभी को 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र तीन बार स्वयं बोलकर सभी को बोलने के लिए कहा।

१) ॐ महान शक्ति देवताय नमः। (३ बार)

२) लक्ष्मी देवी महामाये, देहि मे अनुग्रहम्।
तथा च संपत्तिधनम् आयुरारोग्यमसंपदाम्।। (२ बार)

३) शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणें सर्वस्यार्तिहरे देवी,
नारायणी नमोऽस्तुते, नारायणी नमोऽस्तुते, नारायणी नमोऽस्तुते।। (२ बार)

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र पुनः बोलने के लिए कहा। सभी के नमस्कार कृति के लिए उठाये हुए हाथों को स्वयं के अंतरंग की ओर घुमाकर श्रीकृष्णार्पणमस्तु भी तीन बार बोलने के लिए कहा।

“सब कुछ बहुत अच्छा से हुआ,“ ऐसा बोलते हुए कृष्ण बताने लगा, “आपके द्वारा की गयी पूजा का, सेवा का स्वीकार मैं विश्व कार्य के लिए करता हूँ उसे उपयोग में भी लाता हूँ। आपको ही सिर्फ मेरी जरूरत है ऐसा नहीं है, मुझे भी मेरे भक्तों की आवश्यकता होती है। आपकी सेवा, आपके जाप का जब मैं उपयोग करता हूँ, उस समय आपकी संपूर्ण जिम्मेदारी मेरे ऊपर आती हैं। मैं आपका सर्वस्व पूर्ण रूप से स्वीकारता हूँ, उपयोग में लाता हूँ और मेरी जिम्मेदारी भी पूरी करता हूँ। मैं सभी का आधार हूँ। सभी भक्त मुझ तक नहीं पहुँच सकते। ऐसे भक्तों की तो सिर्फ मानस पूजा का स्वीकार करके उनकी एक पुकार पर भागकर जाता हूँ। मेरे भक्त हमेशा कहते हैं, “कृष्ण मेरा सखा, कृष्ण मेरा भ्राता, कृष्ण बिन कोई नहीं मेरा त्राता यह बिल्कुल सच है।“

उस दिन रात में सात से आठ का ध्यान होने के पश्चात कृष्ण ने बताया, ”अरी, मेरे पैरों पर स्वस्तिक बनाओं क्योंकि आज से सही अर्थो में मेरे विश्व कार्य की शुरुवात हुई। उस कार्य के शुभारंभ का बीजारोपण आज मैंने कर दिया है। अब मैं ‘योगेश्वर’ के रूप में विचरण करूँगा।

‘७ तारीख को सुबह महानशक्ति ने ताई से कहा, “परब्रह्म को साथ लेकर आगे कार्य के लिए निकली हो! देखो मैं भी आगे हूँ।“

निश्चित किएनुसार ताई सह कुछ कृष्ण भक्त राजमहल में गए साथ में शिवलिंग, बाँसुरी और रानी साहब के लिए जरी से भरा हुआ शेला था। वहाँ महाराज के निजी सचिव मिलें उन्होंने ही महाराज की ओर से सभी प्रासादिक वस्तुओं का स्वीकार किया। उनके साथ कृष्ण ने महाराज के लिए एक संदेश दिया, “जो दो तीन देश आज तुम्हें मित्र लग रहे हैं, उनके ऊपर विश्वास मत रखो। तुम्हें ढ़ाई साल के बाद उनकी ओर से खतरा है।“ आगे नेपाल नरेश के साथ क्या हुआ, यह तो हम सभी को पता है। उस बारे में बोलते हुए कृष्ण ने कहा, ”मैं मौका सभी को देता हूँ, लेकिन किसी की किस्मत तो नहीं बदल सकता हूँ।”

पूना के वानवडी में अपंग बच्चों की एक कल्याणकारी संस्था है। जिन अपंग बच्चों के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है। उन परिवारों के अपंग बच्चों के लिए यह संस्था काम करती हैं। वहाँ २५०/३०० के आसपास बच्चे है। जिनके रहने, खाने पीने और शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था इस संस्था के द्वारा की जाती है। उन सभी बच्चों को शुभाशीष देने तथा वहाँ के सभी कर्मचारियों के कार्य की

सराहना करने के लिए शाम सात बजे ताई वहाँ जाने वाली थी।

लेकिन दूसरी तरफ एक केंद्र स्थापना होने के कारण वहाँ पहुँचने में ताई को देर हो गयी इसलिए सर्वप्रथम ताई ने उन बच्चों से माफ़ी माँगी। यह देखकर सभी के चेहरे पर आश्चर्यमिश्रित भाव प्रकट हो गए क्योंकि इन बच्चों को तो इस बात की आदत थी कि आने वाले मेहमान इन बच्चों पर दया भाव दिखाते, उनकी प्रशंसा करते और उन्हें ऐसा व्यवहार करो, वैसा व्यवहार करो ऐसा उपदेश देकर निकल जाते लेकिन यह दादी माँ तो देरी होने के कारण माफ़ी माँग रही है और बता रही हैं कि कृष्ण तुम्हारा कैसा मित्र हैं, सखा है। उसकी भक्ति कैसे, और कितनी सरलतापूर्वक की जा सकती हैं यह बता रही हैं। यह सब देखकर उनको बहुत आश्चर्य होने लगा। ताई ने बच्चों को, संस्था को, वहाँ के कार्यक्षम कर्मचारियों को, आशीर्वाद देते हुए, प्रसाद दिया और प्रतिदिन रात के भोजन से पूर्व इक्कीस बार 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करने के लिए कहा। बच्चों के द्वारा तैयार किया गया कृत्रिम फूलों का गुलदस्ता स्वीकार करते हुए कृष्ण ने उसे मैं साल भर जतन करके रखूँगा ऐसा वचन भी दिया। उस समय उन बच्चों के चेहरे पर आया आनंद, मधुर मुस्कान देखकर कृष्ण के वचनों की याद आती है, 'जहाँ मैं रहूँगा वहाँ प्रसन्नता रहेगी ही रहेगी।'

पूना में सभी केंद्रों का स्नेह सम्मेलन कलाप्रसाद मंगल कार्यालय में आयोजित किया गया था। ३००/३२५ भक्त उस कार्यक्रम में शामिल थे। श्री वैद्य काका एवं काकी ने पूना के सभी भक्तों की ओर से अपने हाथों से तैयार किया गया हार कृष्ण को पहनाकर स्वागत किया। कृष्ण ने उस हार का स्वीकार सभी भक्तों के स्नेह के प्रतीक के रूप में किया और वह हार एक भक्त को साल भर जतन करके रखने के लिए दिया।

उस समय कृष्ण ने कहा, "इस साल से केंद्र के संदर्भ में मैंने दो नये नियम बनाए लेकिन आप सभी ने उसका पालन मेरे ऊपर नाराज न होते हुए किया, मुझे बहुत खुशी हुई। मैं कृष्ण भक्तों के स्नेह पर जीता हूँ। आप सभी के अंतरंग में ॐकार की जागृति होना अत्यंत आवश्यक है। यह वर्ष ध्यान करने का वर्ष है। वर्ष २००० से २००५ का समय अत्यंत कठिन है। इसके ऊपर एक ही उपाय है मेरे ऊपर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखकर इस दिव्य मंत्र की आराधना करना। वह दिव्य मंत्र है 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'।"

पूना में तीन दिनों का कार्यक्रम संपन्न करके ताई सह कुछ कृष्ण भक्त सोलापूर, पंढरपूर, तुलजापूर, अक्कलकोट और गाणगापूर की यात्रा पर गए। ध्यानावस्था में कृष्ण ने ताई से कहा, "यह ध्यान यात्रा सभी कृष्ण भक्तों के लिए और सभी कृष्ण भक्तों की ओर से की गयी ध्यान यात्रा है इसलिए मैंने घर से निकलते समय तुम्हें पर्स में रखने के लिए लौंग या इलायची भी लेने के लिए मना किया था। इसी प्रकार यात्रा से आते समय भी प्रसाद स्वरूप कुछ वस्तु या सामग्री भी साथ लेना नहीं ऐसा स्पष्टरूप से बताया। सभी भक्तों के लिए जो ध्यान करोंगी वह ध्यान, वह आशीर्वाद यही इस यात्रा का असली प्रसाद होगा।"

पंढरपूर के मंदिर में विश्व शांति के लिए एक यज्ञ चल रहा था। पुजारी जी ने जब यह जानकारी दी उस समय कृष्ण उस स्थल पर जाने के लिए तुरन्त तैयार हो गया। कृष्ण ने यज्ञ वेदी के पास बैठकर ध्यान किया। वहाँ के पंडित जी को आशीर्वाद देते हुए कहा, "आप अच्छा काम कर रहे हैं। आपको अभिषेक करने के लिए एक मूर्ति भेजूँगा।" आगे वैसी मूर्ति भेजी भी।

अक्कलकोट के गुरु मंदिर में ताई गई थी। वहाँ स्वामी समर्थजी की चरण पादुकाएँ हैं। वहाँ मठ के लोगों ने वह पेटी में से बाहर निकालकर ताई के हाथों में दी। ताई ने धीरे धीरे स्नेहपूर्वक उनके ऊपर हाथ घुमाते हुए कहा, 'हम संतों को कितने कष्ट सहन करने पड़ते है? इसके लिए ही हमारा जन्म होता है न।' साथ आए सभी भक्त यह उद्गगार आश्चर्यचकित होकर सुन रहे थे। पूर्णतः प्रसिद्धी से पराङ्मुख ताई के मुख से यह उद्गार 'हम संत जनों को' यह उल्लेख सुनकर ऐसा कहा जा सकता है कि प्रत्यक्ष परब्रह्म ने जैसे अपने दोनों भक्तों की सराहना की हो।

तुलजापूर जाते समय कृष्ण ने कहा, "अरे, मेरे पैरों पर स्वस्तिक निकालो और मुझे नाम लगाओ।" उस पर ताई रुपी महान शक्ति ने कहा, "कृष्ण, आज मेरे पास आ रहें हों। फिर नाम रुपी गोल टीका लगाओ न।" उस पर कृष्ण ने कहा, "नहीं बाबा, मैं तो योगेश्वर हूँ। मैं मेरे जैसा ही नाम लगाऊँगा। मुझे सुंदर सा खड़ा नाम लगाओ।"

तुलजापूर के रीति रिवाज के अनुसार यहाँ दूध और दही का एकत्रित अभिषेक किया जाता है लेकिन कृष्ण ने कहा सिर्फ तीन लीटर दूध का अभिषेक करना है। वहाँ देवी की मूर्ति चल स्वरुप की है। अभिषेक के समय गर्भ गृह में ताई सह, पाँच छः कृष्ण भक्त और पुजारी इनके सिवा और कोई नहीं था। दूध की शुभ्र धवल

धारा के कारण पाषाण मूर्ति के सौन्दर्य की एक एक रेखा स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित हो रही थी। कृष्ण ने अत्यंत प्रसन्नता से कहा, "भवानी माता, क्या यह तुम्हारा दिव्य रुप!" वहाँ के पुजारी देवी के अलंकार और शस्त्रों का वर्णन विस्तार से बता रहे थे।

गर्भगृह के बाहर एक छोटा सा शिव मंदिर है। मंदिर का गर्भगृह छोटा था, अंदर पुजारी जी बैठे हुए थे। वे ताई की ओर देखते हुए बोले, 'माँ साहब, आप अंदर आईए।' ताई ने भी तुरंत जल्दी जल्दी अंदर जाकर शिवलिंग को गले लगाया और शिवजी से मिली। ताई जब बाहर निकल रही थी उस समय पुजारी जी ने पिंडी के ऊपर का सुन्दर बड़ा गुलाब का फूल दिया। इस पर ताई ने कहा, 'यह देखो, महान शक्ति का प्रसाद है!'

यात्रा से आने के पश्चात 'मावंदे' कहकर भक्तों को ताई ने सत्यनारायण की पूजा करने के लिए कहा। प्रसाद स्वयं ताई ने बनाया था। इस पूजा की विशेषता यह थी कि दूसरे दिन उत्तर पूजा के बाद कृष्ण ने कहा, "पूजा का निर्माल्य मेरे कृष्ण कुटीर की बगिया में ही फैला दो।" थोड़ा सा भी कचरे में नही जाना चाहिए। इन सब बातों का अर्थ तो वह परमात्मा ही जाने।

# ।। ॐ ।।

भगवान श्रीकृष्ण एवं ताई की प्रेरणा से कुछ स्थानों पर मंदिर की स्थापना हुई है। उसी में से एक नाशिक का गोवर्धन मंदिर है। इसका निर्माण ठाणे के श्री एवं श्रीमती विजय रानडे जी की ओर से कृष्ण ने २३ दिसंबर २००० में करवाया है। रानडे काका जब सर्वप्रथम बदलापूर गए थे तब कृष्ण ने उन्हें प्रसाद स्वरुप बाँसुरी देते हुए कहा था, मैं हमेशा तुम्हारे यहाँ आता हूँ, लेकिन यह तुम्हें पता नहीं है।' इस पर काका ने पूछा, 'कृष्ण मुझे सपने में कई बार विष्णु भगवान आए हुए दिखते हैं, इसका क्या अर्थ है?' ताई ने उन्हें कहा, 'आपको सुंदर से मंदिर का निर्माण करना है और वह मैं आपकी ओर से करवाँ लूँगा। ऐसा कृष्ण बता रहा है।'

आगे मंदिर के निर्माण का कार्य शुरू करते समय, कृष्ण ने अपने खजाने में से पैसे देते हुए कहा, "मंदिर छोटा रहा तो भी चलेगा, लेकिन किसी से भी पैसे नहीं लेना या ट्रस्ट का निर्माण नहीं करना। आप जितना भार उठा सकोगे उतना ही बनाना। मेरा एक भक्त इस मंदिर के लिए मूर्ति देगा यह ध्यान में रखो। मूर्ति ३ से ३।।। फुट ऊँचाई की, संगमरमर की लाना। मुंबई से ही ख़रीदो। कृष्ण का बजट रुपए ४०, ०००/- का है।"

अब मूर्ति खरीदने के लिए देखने की शुरुवात हुई। ३।। फुट ऊंची मूर्ति की कींमत ८२ से ८४ हजार तक थी। कृष्ण का बजट तो रुपए ४०,००० का था। अब क्या करना ऐसा सोचकर उन्होंने सोचा क्यों न ऊपर की रकम वह स्वयं भरे ऐसा कृष्ण से पूछा जाए। उन्होंने ताई को फोन किया। ताई ने कहा कृष्ण कह रहा है, मूर्ति की कींमत रुपए ४०,००० के ऊपर एक रुपया भी नही है। आप स्वयं की ओर से भी पैसे मत दीजिए। 'ठीक है ताई!' ऐसा काका ने कहा। अब काका मूर्ति बनाने के कारखाने में मालूमात करने के लिए गए। मूर्ति का वर्णन करते हुए फोटो दिखाकर ऐसी मूर्ति बनाकर मिलेगी क्या? कीमत कितनी होगी? ऐसी वहाँ जानकारी ली। उन्हें वहाँ जवाब मिला, 'मूर्ति बनाने में १५ दिन लगेंगे और कीमत रुपए ८२,००० होगी।' अब उन्हें प्रश्न पड़ रहा था कि क्या करना चाहिए? कृष्ण के शब्द के बाहर तो जा नहीं सकते फिर क्या करना? उन्होंने कृष्ण से प्रार्थना करते हुए उस कारखाने के मालिक से कहा 'आप जो बता रहे हो वह सब सही है। इतनी ऊँची

मूर्ति की कीमत इतनी ही है लेकिन हमारे गुरु ने मूर्ति की कींमत रुपए ४०,००० बतायी है ज्यादा नहीं कि कम नहीं। उसके ऊपर हमें एक रुपया खर्च करने की भी अनुमति नहीं है। उसके साथ मूर्ति की ऊँचाई में या आकार में भी कोई परिवर्तन नहीं करना है। अब आप बताइए क्या किया जा सकता है?'

इस वार्तालाप के पश्चात वातावरण में गंभीरता छा गयी। वह कारखाने का मालिक तो सुनकर स्तब्ध हो गया। उस आदमी ने आँखे बंद की। पाँच मिनट बीत गए। काका को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करना चाहिए? थोड़े समय पश्चात कारखाने के मालिक ने आँखें खोली और प्रसन्नतापूर्वक हँसते हुए कहा, 'आपका आपके गुरु के ऊपर का श्रद्धाभाव देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। उनके बताएनुसार आप सिर्फ रुपए ४०,००० दीजिए। आपकों जैसी चाहिए वैसी सुंदर मूर्ति बनाकर देता हूँ।'

काका को उनके कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। आज के जमाने में व्यवसायिक व्यापारी रुपए ८२,००० की वस्तु भला रुपए ४०,००० में देने तैयार हो गया। यह तो कृष्ण की कृपा है, बुद्धीदाता मैं ही हूँ। इस कृष्ण वचन का यह प्रत्यय! साथ ही साथ दुकानदार को भी आश्चर्य लग रहा था कि रुपए ४२,००० कम लेकर मैंने करोड़ो का मोल रखने वाले कृष्ण के आशीर्वाद अपनी झोली में डाल लिए। इसके लिए तो पूर्व जन्म के पुण्य कर्म लगते हैं।

मूर्ति स्थापना के दिन भगवान श्रीकृष्ण ने संदेश देते हुए कहा, "सामुदायिक आराधना करना यही इस मंदिर का मुख्य उद्देश्य है क्योंकि सामुदायिक आराधना करने से जिस बल और ऊर्जा की प्राप्ति होती है। वह आपके, आपके परिवार के लिए साथ ही साथ आपकी भावी पीढ़ी के लिए, भारत के लिए और विश्व के लिए मिलती है इसलिए सामुदायिक रूप से की गयी प्रार्थना की शक्ति व्यक्तिगत प्रार्थना से सौ गुना ज्यादा होती है। वैसी प्रार्थना की जा सके इसलिए जगह जगह-जगह पर मैं जैसी मंदिरों की स्थापना करता हूँ वैसे ही श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना भी करता हूँ। उसका लाभ मेरे सभी भक्तों ने जरुर जरुर लेना चाहिए, यह भी मैं बार बार बताना चाहूँगा।"

लगातार छोटी बड़ी यात्राएँ, नयी नयी जगहों पर श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना, और इन सबके साथ साथ कृष्ण भक्तों के लिए, यंग जनरेशन, विश्व कल्याण, एवं विश्व शांति के लिए लगातार ध्यान धारणा चल रही थी। ताई स्वयं के स्वास्थ्य

की परवाह न करते हुए, पूर्वसमय में कृष्ण को दिए गए वचन के अनुसार प्रत्येक कार्य ध्यानपूर्वक तथा शत-प्रतिशत समर्पण भाव के साथ कर रही थी। उनके मानस पटल में कभी भी ऐसा क्यों, कैसा, किसलिए ऐसे प्रश्न कभी आते नहीं थे। वे हमेशा कहती, "कोई बात कृष्ण ने बतायी है इतना ही बहुत होता है। उसके बताएनुसार वैसी ही करना यह अलिखित नियम ही है। मेरे ऊपर सम्पूर्ण भार सौंपकर निश्चिन्त रहिए।" कृष्ण के इस वचन का जीता-जागता उदाहरण अपनी गुरु माँ ताई है।

हर साल की तरह इस बार भी कृष्ण ने ३१ दिसंबर २००० को नूतन वर्ष के लिए संदेश दिया। "२००१ वर्ष यह मेरा भारत भ्रमण करके कार्य करने का वर्ष है। युवाशक्ति और भारत के हित की दृष्टि में काम करने वाले व्यक्तियों के पीछे मैं खडा रहूँगा। उन्हें मानसिक ताकत प्रदान करूँगा एवं संपूर्ण भारत में भ्रमण करके कार्य करूँगा।

अतः सहज है कि ताई का वास्तव्य बदलापूर में कम से कम रहेगा। मेरे भक्तों के सामने प्रश्न आएगा कि अब मुश्किल समय में प्रश्न किससे पूछें, क्या करें? कहाँ जाकर मार्गदर्शन प्राप्त करें? इसलिए घर-घर में मेरा जो स्थान है उसे जागृत करने की आवश्यकता है इसलिए मेरी आराधना कीजिए। 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र के द्वारा मेरी आराधना कीजिए। मुझे अपने हृदय से पूर्ण श्रद्धा के साथ पुकारिए। मैं आपके लिए भागकर जरूर आऊँगा इस बात पर विश्वास रखिए।

मैं आपको अबोध बालक के रूप में देखता हूँ। छोटे बच्चे जैसे अपना संपूर्ण भार अपनी माँ पर डालकर निश्चिंत रहते हैं, निर्भर रहते हैं। उसी वृत्ति के साथ आप अपना भार मुझ पर डालकर निश्चिंत रहिए, निर्भर बनिए।

जिस समय आपके मन में आपकी साधना के संबंध में, आराधना के संबंध में शंका उत्पन्न होगी उस समय पाँच मिनट के लिए आँखें बंद करके चिंतन कीजिए। आपके मन की शंकाओं के काले बादल छँट जाएँगे। जो होता है वह आपकी भलाई के लिए होता है। इस पर हमेशा विश्वास रखिए।

क्षण भर के लिए भी यदि आपके मन में विचार आता है कि, 'अरे, ऐसा क्यों हुआ? कृष्ण ने मेरे लिए ऐसा क्यों नही किया? या मुझे यह क्यों नही दिया?' तो फिर आपके और मेरे बीच दूरीयाँ आ जाएगी। मैं पंद्रह साल तक आपके पास आ नहीं सकूँगा इसलिए छोटे बच्चे की तरह मासूमियत के साथ 'ॐ नमो भगवते

वासुदेवाय' मंत्र के द्वारा मेरी आराधना कीजिए और मुझे अपना बना लीजिए।"

ताई के ध्यान का समय अब बढ़ गया था। कृष्ण ने उसकी भावी पीढ़ी के लिए, यंग जनरेशन के लिए कुछ योजनाएँ तैयार की थी। उन योजनाओं के तहत पहला युवा केंद्र ३ जनवरी २००१ को ठाणे में स्थापित करने का निश्चित किया। कृष्ण ने ताई को उसकी यंग जनरेशन के लिए १ जनवरी को पूरे दिन मौन धारण करके ध्यान करने के लिए कहा।

३ जनवरी की शाम को केंद्र की स्थापना होने वाली थी। उसके पहले ताई को दूसरी जगह पर ध्यान करने के लिए जाना था। वहाँ से वापस आकर केंद्र में पहुँचने में ताई को साढ़े छः बज गए। केंद्र में कृष्ण का, ताई का इंतजार करते हुए बच्चे और वयोवृद्ध व्यक्ति रुके हुए थे। पलभर की विश्रांति भी न लेते हुए ताई तुरंत संदेश देने के लिए खड़ी हुई।

'भगवान श्रीकृष्ण अपनी प्रत्येक बात, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कृति के द्वारा भक्तों को मार्गदर्शन करते हैं। जीवन में सभी को इंतजार करना ही पड़ता है, राह देखनी पड़ती है अगर आप धीरज रखते हैं तो आप अपना जीवन जरूर सफल बना सकते हैं और इसके लिए आवश्यकता होती है श्रद्धा की। मानसिक अस्थिरता को रोकने का सबसे बड़ा साधन यदि कोई है तो वह है, श्रद्धा। इस प्रकार की श्रद्धा आप भगवान योगेश्वर कृष्ण पर रखिए।

अगर हम कृष्ण के जीवनपट की ओर देखते हैं। उसके बारे में सोचते हैं तो यह दृष्टिगोचर होता है कि कृष्ण सभी में समाहित है उसका जन्म एक ओर हुआ, पालन-पोषण दूसरी ओर हुआ, सभी सर्वसामान्य बच्चों की तरह गुरु गृह में भी जाकर वह रहा। द्वारका का राजा होने तक उसकी जीवन यात्रा, सुदामा से मिलने का प्रसंग, उस मैत्री का किया गया सम्मान आदि आदि बातें उसके चरित्र में समाहित है इसीलिए भगवान योगेश्वर को आदर्श मानकर उनके ऊपर पूर्ण श्रद्धा रखिए।

बच्चों, मैं आपको भगवत भक्त बनो, घंटो घंटो बैठकर भगवान की पूजा करो; यज्ञ याग करो ऐसा कुछ भी करने के लिए नहीं कह रहा हूँ क्योंकि, "समय के अनुसार मैं भी बदलता हूँ। आज के युग में आवश्यकता है तो कर्त्तव्य कर्मों की इसलिए सभी ने अपने कर्त्तव्य योग्य रीति से योग्य जगह पर, और जितने आवश्यक है उतने यदि किए तो उनके लिए मैं योगेश्वर हमेशा उनके साथ खड़ा रहता हूँ।

विद्यार्थी अवस्था में आपने अपनी पढ़ाई लिखाई नियमित, व्यवस्थित रूप से करना अत्यंत आवश्यक है यह आपका काम ही नहीं तो आपका कर्त्तव्य भी है इसलिए वह काम आप अत्यंत निष्ठा के साथ ईमानदारी से कीजिए। रोज रात को सोते समय सिर्फ एक बार मुझे पुकारे, 'कृष्ण आओ!' ऐसी बाल सुलभ पुकार आप रात में सोते समय मुझे एक बार दीजिए और 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का उच्चार दो से तीन बार कीजिए। इतना ही आपके लिए बहुत है। ऐसा करने से क्या होगा। आपके अंदर जो आत्मा है, वह जागृत होगा और जाने अनजाने में ही आपको उसका मार्गदर्शन मिलेगा।

आप दिन भर पढ़ाई लिखाई करके, दिन भर काम करके थके होंगे, उस समय मुझे अत्यंत स्नेह भाव से एक बार पुकारे। वह पुकार मेरे पास पहुँचेगी और मैं आपके लिए खड़ा रहूँगा। यह मेरा यंग जनरेशन को दिया गया वचन है।

श्रीमद्भागवत गीता यह मेरी वाड्ःमयीन मूर्ति है। यह ग्रंथ हमारे भारत की नींव है, आधारशिला है। गीता बताने वाला योगेश्वर श्रीकृष्ण और आप के अंतरंग में जागृत रहने वाला ॐकार, अर्थात् यह मेरे ही रूप है इसलिए आप जब इस दिव्य तारक मंत्र का जाप करते हैं, उच्चार करते हैं। तब आप में समाहित मैं और चर चर में व्याप्त मैं इन सभी को एक ही बार में आपका नमस्कार पहुँचता है।

इसलिए मैं आपको बार-बार बताता हूँ कि श्रद्धा स्थान होना ही चाहिए। वह एक ही रखिये। जीवन में हमें कभी, कहीं, किसी की राह तो देखनी पड़ती है और वह राह देखते समय मेरे ऊपर पूर्ण श्रद्धा रखकर यदि वह राह देखी तो मैं आपको यथायोग्य मार्गदर्शन करूँगा। यह आपको आज दिया हुआ वचन है।

इस तरह २००१ की शुरुवात अत्यंत उत्साह के साथ यंग जनरेशन के सानिध्य में हुई। ४ तारीख को ताई एक कृष्ण भक्त के यहाँ ध्यान करने के लिए जाने वाली थी। वह पौष का महीना था और उनके यहाँ पौष के महीने में देवी का जोगवा माँगने का रिवाज था। आज संयोग से योगेश्वर कृष्ण साक्षात् विश्वजननी के साथ अपने घर आने वाला है तो क्यों न उसकी पंचामृत से सुंदर पूजा की जाए। उन्होंने वैसी पूजा की पूरी तैयारी कर ली। प्रातः समय जब ताई का आगमन हुआ। तब चाय पानी होने के पश्चात उन्होंने ताई से इस बारे में पूछा 'कृष्ण, आज तुम्हारी पाद्य पूजा पंचामृत से करने की इच्छा है तो क्या हम करें?' "हाँ हाँ जरूर कीजिए।"

ताई आसन पर विराजमान हुई। माथे पर नाम लगाकर चरणों पर स्वस्तिक

निकालकर पाद्य पूजा की शुरुवात हुई। पूजा के प्रथमोपचार होने के पश्चात योगेश्वरी कवच का स्तवन करते हुए पाँच सुहागिनों के हाथों से कृष्ण के हाथ पर पंचामृत का अभिषेक किया गया, प्रसाद अर्पण किया गया और सभी ने प्रणाम किया। उस समय कृष्ण ने आशीर्वाद देते हुए कहा, “अरी, स्वीकार किया मैंने! आज बोडण हो गया। आपकी एक बोडण पूजा बाकी थी। वह करने की अब आवश्यकता नहीं है।” सब कुछ अच्छे से करवाँ लिया और उसका स्वीकार भी किया।

जिनके घर पूजा थी। वह अत्यंत भावुक हो गये। सचमुच में उनकी एक पूजा करनी बाकी रह गई थी। जिस भक्त की मन से सेवा करने की इच्छा होती है, उसकी ओर से भगवंत और महान शक्ति किस प्रकार से प्रेरणा देकर काम करवाँ लेते हैं और उसका स्वीकार भी करते हैं और साथ ही साथ उसे अनेकानेक शुभाशीष भी देते हैं। उसी का उत्कट अनुभव जैसे उस दिन आया।

केंद्र स्थापना के लिए कृष्ण ने ताई के साथ आना चाहिए। भक्तों की इस प्रार्थना पर कृष्ण ने भी तुरंत हामी भरी। कृष्ण ने बताया ताई ५ जनवरी से १३ जनवरी २००१ ऐसे नौ दिन पूना में रहेगी।

निश्चित किएनुसार पाँच तारीख को ध्यान की शुरुवात हुई। वैसे भी पूना के लोग नियमों के बहुत पाबंद होते हैं। (कृष्ण ने इस तरह उनकी प्रशंसा की है) किसी ने भी वहाँ न जाकर, न ही फोन करके, मन के ऊपर संयम रखा और एक प्रकार से इस ध्यान के कार्य में अपना सहयोग दर्शाया।

श्री प्रधान काका के द्वारा लिखित, कृष्ण पर आधारित कृष्ण प्रेम की भावनाओं से परिपूर्ण अनुभव देने वाली कविताओं के संग्रह का प्रकाशन ताई के करकमलों से संपन्न हुआ। कृष्ण के द्वारा अपने भक्त की प्रशंसा का ही वह समारोह था। कृष्ण ने काका को अनेकानेक शुभ आशीष देते हुए, उनकी भावनाओं की और कृष्ण प्रेम की भूरी भूरी प्रशंसा की।

कोथरुड विभाग के श्रीराम सोसायटी में रहने वाले सभी लोगों के लिए स्थापित एक विशेष केंद्र की स्थापना ताई के हस्तें हुई। उस समय कृष्ण ने उस अनोखी कल्पना की बहुत प्रशंसा की और कहा आप सभी का रिश्ता एक बड़े परिवार के सदस्यों की तरह होगा, ऐसा उन्हें आश्वासन दिया।

जो मुझे हृदय से पुकारता है मैं हमेशा उसके पास रहता हूँ। इसी से संबंधित एक घटना देखने को मिली। एक दिन पहले ताई एक कृष्ण भक्त के यहाँ रुकी थी। वहाँ उनकी की गई व्यवस्था और उनके साथ किए गए संवादो का स्मरण करके वह व्यक्ति बहुत ही भावुक हो रही थी क्योंकि दूसरे दिन ताई किसी दूसरे भक्त के यहाँ रुकी हुई थी। अब पहले दिन ताई जिसके यहाँ रुकी थी, उन्हें दूसरे दिन सुबह ही मिलने वाली थी।

रात में सोने के लिए जाते समय इसे ताई की, कृष्ण की इतनी याद आयी कि आखिर उसने कृष्ण के लिए भी गद्दा बिछाया। उस पर ताई ने पहले दिन इस्तेमाल की हुई पादुकाएँ रखी जैसे उसे लग रहा था कि ताई वहीं पर है। उनकी सेवा की, उनके पैर दबाये, हल्का पंखा लगाया, चादर ओढ़ाई और गुड नाइट कहकर सामने के बेड पर जाकर स्वयं सो गयी। दूसरे दिन उसने उस दिन के कार्यक्रम के संबंध में जब ताई को फोन किया। तब ताई ने उससे पहला प्रश्न किया, 'अरे, मेरी कितनी याद कर रही थी? मैं कहाँ कहीं गया था? तुम्हारे ही पास था अपने अंतर्मन में स्थित मुझे जागृत करना सीखो।' यह सुनकर उसका मन भर आया। भरे हुए अंतःकरण से सिर्फ एक हुंकार निकली। वह सिर्फ इतना बोल सकी, 'कृष्ण यहीं से तुम्हें हार्दिक प्रणाम करती हूँ और जल्द वहाँ आती हूँ।' आखिर जहाँ भाव है वहाँ देव है यही सत्य है।

सभी लोग आलंदी में समाधी स्थान पर पहुँचे। ताई के हाथों सद्गुरु माऊली की पूजा हुई और वे वही थोड़ी देर ध्यानावस्था में बैठी। उनका ध्यान होने के पश्चात वह बाहर के हॉल में आयी। वहाँ कुछ साधक ज्ञानेश्वरी का पारायण कर रहे थे। वहाँ बैठी एक वृद्ध महिला की ओर इशारा करते हुए कृष्ण ने उन्हें प्रसाद देने के लिए कहा। उनके पास जाकर उन्हें प्रसाद दिया, उन्होंने अत्यंत श्रद्धा पूर्वक ताई को प्रणाम करते हुए अपना पारायण आगे चालू रखा। सभी भक्त यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि उस वृद्ध महिला ने आँखें बंद की हुई थी और उनकी उँगलियाँ ज्ञानेश्वरी के पन्नों के अक्षरों के ऊपर से घूम रही थी। यह कैसा पारायण हो रहा है, किसी की समझ में कुछ आ नही रहा था। उस समय मंदिर की कार्यकारी समिति के एक सदस्य ने बताया, 'अरे, उस वृद्ध महिला को लिखना पढ़ना नहीं आता है लेकिन वह पिछले कई सालों से ऐसे ही पारायण कर रही है। उनका कहना है मैं निरीक्षर हूँ, अज्ञानी हूँ, इसका मतलब यह तो नहीं कि मैं पारायण नहीं कर सकती। मैं गुरु माऊली को प्रार्थना करती हूँ, जिस अक्षर और

शब्द के ऊपर से मेरी उँगली घूमेगी वह शब्द मैंने पढ़ें हुए हैं, ऐसा समझ कर मेरी सेवा का आप स्वीकार कीजिए।' धन्य वह भाव और धन्य वह आत्मा। यह भाव ही उसे गुरु माऊली तक पहुँचा रहा था। इतने सारे लोगों में 'उस' विशिष्ट वृद्ध महिला को प्रसाद देकर कृष्ण ने जैसे इस बात की साक्ष दे दी थी कि, " मैं "निष्काम और नि:सीम भक्तिभाव का भूखा हूँ। ताई ने बाद में कार्यकारी समिति को पैसे दिए और सभी पारायण करने वाले भक्तों को कृष्ण की ओर से चाय देने के लिए कहा।

आलंदी से वापस आते समय साई बाबा के दर्शन लेते हुए सभी लोग शिधये गायत्री मंदिर में आये। वहाँ प. पू. काका जी शिधये और उनके छोटे बंधु श्री रामदास स्वामी कृपांकित, संजय काका दोनों उनकी राह देख रहे थे। मंदिर का काम अभी चल रहा था। गर्भ गृह का काम पूरा होने आ गया था। ताई देवी के सामने आसनस्थ हुई, सामने काका जी बैठे। दोनों ने एक दूसरे को प्रणाम किया और क्या आश्चर्य? दोनों ही ध्यानस्थ हो गए। दोनों की मुद्रा अत्यंत तेजस्वी और प्रसन्न प्रतीत हो रही थी। थोड़े समय पश्चात ध्यानावस्था से बाहर आने पर प. पू. काका जी ने उनके पास की वंश परंपरा से चली आ रही गायत्री माता की उपासना का महत्व बताया। उनके गुरु प.पू.स्वामी स्वरूपानंद, पावस इनकी प्रेरणा से यह मंदिर कैसा खड़ा हुआ यह कथन करके सभी को बताया। भावी योजनाओं की जानकारी देते हुए कृष्ण के आशीर्वाद प्राप्ति के लिए प्रार्थना की। उसके पश्चात ताई ने बचपन से श्री कृष्ण भगवान और आदिशक्ति दुर्गा माँ ने उन्हें कैसे सँभाला और हमेशा उनके पीछे कैसे खड़े रही और उन्हें कैसे तैयार किया, इस बारे में जानकारी दी। विश्वजननी स्थापना के लिए क्या-क्या योजनाएँ हैं; इस बारे में जानकारी दी।

लेकिन इस संवाद के पूर्व उन दोनों के बीच ध्यानावस्था में जो 'नि:शब्द संवाद' हुआ, उसकी कल्पना किसी को नहीं आयी। यही सत्य है।

अब सबका ध्यान शाम को उद्घाटन होने वाले युवा केंद्र की ओर था। वहाँ के सभी कामकाज, सेवा का कार्य, नव युवा पीढ़ी ही करने वाली थी, ऐसा उनका आग्रह भी था। उनका कहना था कि, कृष्ण खास हमारे लिए आ रहा है, इसलिए सब कुछ हम करेंगे। सभी के माता-पिता ने भी इस कार्य के लिए उन्हें सहर्ष अनुमति देते हुए पूर्ण स्वतंत्रता दी थी। ताई को लेने के लिए कौन जाएगा, स्वागत कैसे किया जाएगा, सजावट कैसे होगी और प्रसाद में क्या बनेगा। सभी कुछ बच्चों ने ही निश्चित किया था। उसके साथ सभी की यह भावना थी कि, कृष्ण को हमें कुछ देना है लेकिन वह कुछ खास होना चाहिए। फिर सभी के मन में अलग-अलग

कल्पनाएँ आने लगी उसमें की दो कल्पनाएँ सभी ने ऊपर उठा ली -

१) कृष्ण को फोन करके उसके लिए क्या लाएँ ऐसा पूछना।

२) कृष्ण हमेशा ताई के द्वारा हमारे लिए बहुत कुछ करता है। अब हम हमारे जीवन में ताई के लिए, कृष्ण के लिए, कुछ ठोस कार्य और सेवा करेंगे ऐसा वचन देंगे। यह सेवा और कार्य क्या होगा, यह हर किसी ने लिखित स्वरूप से निश्चित करना। इस प्रकार हम सब हमारे मनोगत कृष्ण को अर्पण करेंगे।

दोनों बातें निश्चित हो गयी। कृष्ण को फोन करने पर ताई ने कहा, 'कृष्ण कह रहा है कि, मेरे लिए आप चप्पल लेकर आइए। उन्हें पहनकर मुझे आपके लिए लगातार भविष्य में भागना दौड़ना है।'

बच्चों द्वारा लिखी गयी चिठ्ठीयों का ढेर जमा हो गया। उन्हें कृष्ण को अर्पण करने के पश्चात ताई ने कहा, 'अब इन सब को पढ़ कर दिखाओ।' इस प्रकार बाद में केंद्र में अनुभव पढ़ने के समय उन चिट्ठियों में से महत्वपूर्ण भाग पढ़कर दिखाया गया।

इन चिट्ठियों के द्वारा बच्चों के मन में चल रहे अनेक प्रश्न और उनकी बिखरी हुई मानसिक स्थिति के दर्शन हुए। उनके मन में मानवीय रिश्ते नाते, हर मोड़ पर जानलेवा प्रतियोगिता (स्पर्धा), जीवन में धन को आया हुआ अवास्तव महत्व, वैसे ही व्यावहारिक जीवन से संबंधित अस्थिरता का उल्लेख था। इस जानलेवा स्पर्धा में हम कैसे टिक पाएँगे, हम हमारे परिवार की जिम्मेदारीयाँ पूरी तरह से उठा सकेंगे या नहीं। ऐसी अनेक चिंताएँ इन चिट्ठीयों में से झाँक रही थी। इन चिट्ठियों के द्वारा इस बात का एहसास भी हुआ कि, कृष्ण कहो या फिर वह जो भी 'सुप्रीम पॉवर' है, अगर उसके पास पहुँचना है, तो कृष्ण के ऊपर अतूट विश्वास, उसके ऊपर निश्चल प्रेम और सर्वांभूति स्नेह भाव इन तत्वों को आचरण में लाना होगा, उनका पालन करना होगा। इस विश्वास की झलक उसमें देखने को मिली।

केंद्र स्थापना के समय ताई जब संदेश देने के लिए खड़ी हुई। तब उन्होंने कहा, 'आज ही सुबह आलंदी जाने के पीछे कृष्ण की यही योजना थी। वह मुझे अलग-अलग समय पर अलग अलग तरह से बता रहा था, 'तुम्हारे हाथों से मैं जो कार्य खड़ा कर रहा हूँ, उस कार्य के लिए हरि के साथ-साथ हर की उपासना, आराधना होना जैसा आवश्यक है वैसी आदिशक्ति की आराधना होना भी आवश्यक है।

इन तीनों के कृपा आशीर्वाद के सिवा आगे कदम नहीं बढ़ाना। ऐसा भी वह मुझे बार-बार बता रहा था। इस युवा केंद्र की स्थापना करने से पहले इसलिए मैं आलंदी की गुरु माऊली का आशीर्वाद लेकर आयी, वैसे ही गायत्री मंदिर में जाकर आदिशक्ति माँ गायत्री का आशीर्वाद भी लिया। अब कृष्ण के हाथों, उस के आशीर्वाद से ही हम सब मिलकर यह केंद्र शुरू कर रहे हैं।' "मेरी यंग जनरेशन ही मेरा सबसे बड़ा आधार है, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र के द्वारा आपके अंतरंग में स्थित 'मैं' अर्थात् ॐकार अर्थात् आपके अंतरंग में चैतन्य जागृत होने की शक्ति, इसलिए आपको अलग से किसी तरह की योग साधना या तप करने की जरूरत नहीं है सिर्फ आप अपने कर्त्तव्य कर्म मेरे ऊपर नि:सीम भक्ति और विश्वास रखकर कीजिए। पूरी श्रद्धा रखकर कीजिए। मैं मेरी वहीं सेवा समझता हूँ और आपके लिए हमेशा खड़ा रहता हूँ।

आपने आज मुझे जो वचन दिया कि, आप अपने जो भी कर्त्तव्य कर्म है वह प्रेम से करेंगे। इस वचन के कारण आज मैं बहुत ही प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूँ। मुझे अत्यंत समाधान की प्राप्ति हुई है। मेरी आप की ओर से अनेकों अपेक्षाएँ हैं; मैं आपको क्या बता रहा हूँ, क्या कह रहा हूँ यह आपको बराबर समझ में आ रहा है ऐसा जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। ऐसे ही रहिए। आपके हृदय में मुझे स्थान दीजिए लेकिन मेरा यह दिव्य मंत्र पूरे दिन में कम से कम एक बार अत्यंत श्रद्धा के साथ जरूर बोलिए। मुझे पुकारिए, 'कृष्ण आओ!'

आज मैंने जानबूझकर आपसे चप्पल मँगवा ली है क्योंकि मुझे भी आपके लिए समय समय पर तत्काल भागना पड़ेगा लेकिन इन सब के बीच मैं हमेशा आपके साथ हूँ, यह आप बिल्कुल मत भूलिए।"

हडपसर में केंद्र स्थापना के समय कृष्ण ने कहा, "मैं समय के अनुसार बदलता हूँ, इस युग में 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' दिव्य मंत्र के जाप की अत्यंत आवश्यकता है। वह श्रद्धा पूर्वक कीजिए। कर्मकांड में अपने आप को मत उलझाईये। श्रद्धा और विश्वास के साथ मेरे पास आइए और मुझे भावना के फूल अर्पण कीजिए।" ताई ने इस समय मानस पूजा का महत्व सभी को बताया। मानस पूजा से संबंधित एक घटना बदलापूर में हुई थी। एक बार, एक निश्चित दिन सुबह के बराबर ११:०० बजे उसके चरणों पर इत्र से स्वस्तिक बनाने के लिए सभी भक्तों को कहा था। मंदिर में यह बात ताई सभी को बता रही थी। वहाँ पर कुछ कृष्ण भक्त स्त्रियाँ नौकरी करने वाली भी थी। कृष्ण ने जो दिन बताया था, वह दिन ऑफिस का था,

इसलिए सहज रूप से एक महिला भक्त ने उन्हें पूछा, 'कृष्ण, अरे वह ऑफिस का दिन है हम सब ऑफिस में रहेंगे उस समय! हम कैसे करेंगे?' बैंक में काउंटर पर इत्र से स्वस्तिक कैसे निकालेंगे। सामने आदमी खड़े रहते हैं न!' "अच्छा ऐसा बोल रही हो? तो देखो, आपके ऑफिस में रेस्ट रूम है न? अगर न हो तो ऑफिस के किसी एकांत कोने में जाकर वहाँ करो। फोटो, गीता, आदि कुछ भी साथ ले जाने की आवश्यकता नही है। सिर्फ थोड़ा सा पानी लो, दाएँ हाथ से बाएँ हाथ पर पानी से स्वस्तिक निकालो लेकिन समय का पालन ठीक से होना चाहिए! मुझे प्रार्थना करो कि, कृष्ण, तुम्हारे बताएनुसार आज तुम्हारे बताए समय पर मैं स्वस्तिक निकाल रही हूँ। उसका तुम तुम्हारे चरणों पर इत्र से बनाये हुए स्वस्तिक के रुप में स्वीकार करो। यह तो जमेगा न? कि अभी भी कोई मुश्किल है? एक बात ध्यान रखो, आपकी प्रत्येक कृति के पीछे भावना महत्वपूर्ण होती है वह मैं देखता हूँ, मैं भावनाओं का भूखा हूँ लेकिन समय का पालन अत्यंत आवश्यक है। वह निश्चित रूप से करो।"

कृष्ण, हमेशा बताता है कि मेरे पास आते समय दो हाथ और एक मस्तक लेकर आओ, जैसे उसका ही अर्थ उसने आज खोल कर दिखाया।

हडपसर के पास मांजरी की एक नर्सरी में आज केंद्र स्थापना होने वाली थी। इस समय कृष्ण ने बताया "आज मैंने जिस केंद्र की स्थापना की वह मेरा गुप्त केंद्र है। मतलब क्या, 'कांदा मुला भाजी अवघी विठाबाई माझी' (मराठी अभंग) इस उक्ति के अनुसार आप अपने कर्त्तव्य कर्म करते हुए उसी में ईश्वर देखिए। वह करते हुए मेरा स्मरण कीजिए। आपके इस केंद्र के लिए निश्चित समय, जगह, फोटो, समई, बैठक किसी किसी चीज की आवश्यकता नही है। पूरे दिन के किसी भी समय जब आप काम की शुरुवात करते हैं, आप सब इकट्ठा होते हैं उस समय क्षण भर के लिए आँखें बंद करके मेरा स्मरण कीजिए 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की आर्त पुकार से मुझे आवाज दीजिए और अपने काम की शुरुवात करे। हाथों से काम और मुख में नाम। ऐसा करते करते ही आप मेरे पास आ जाएँगे। मेरे कृपांकित हो जाएँगे। यह आज मेरा आपको दिया हुआ वचन है।"

वहाँ काम करने वाले सभी कर्मचारी, ताई का सहज भाव, उनके स्वभाव की सरलता, उनसे मिलने वाली अपनेपन की भावना का अनुभव लेकर अत्यंत आनंदित हुएँ। उनके साथ घूम कर उन्होंने उनकी नर्सरी का पूरा परिसर देखा। जाते समय पूरी नर्सरी में नजरें घुमाते हुए अपने पास के फूलों से अभिषेक करते

हुए ध्यान करना चल रहा था।

इधर धन्वंतरी सभागृह में सभी केंद्रों के सम्मेलन की तैयारी चल रही थी। ताई ने आज बताया था, 'आज कोई भी दूसरे विशेष कार्यक्रम की योजना मत करना। आज जो जो भक्त यहाँ आएँगे उन सभी से मैं मिलने वाली हूँ। किसी के मन में यदि कोई शंका है तो उसका समाधान करने का भी मैं प्रयत्न करने वाली हूँ।'

यहाँ बहुत भीड़ हो गई क्योंकि पुराने भक्तों को नए केंद्र के उद्घाटन के समय आने के लिए मना किया गया था, इसलिए ताई पिछले चार-पाँच दिनों से पूना में रहते हुए भी उनकी मुलाकात ताई से नहीं हुई थी, वह आज हो सकती थी।

ताई ने आज संदेश देते समय बताया, जगह जगह पर शहर में, गाँव में केंद्र की कैसी आवश्यकता है; साथ ही साथ भावी पीढ़ी के कल्याण के लिए इस आराधना की कैसी आवश्यकता है इस बारे में सूचित किया वैसे ही भावी पीढ़ी के मन में उपासना के प्रति लगाव का भाव उत्पन्न करना। यह जिम्मेदारी हर माता-पिता ने उठानी ही चाहिए, यह भी स्पष्ट रूप से बताया। नियमित उपासना होने से शांति, समाधान और युवा पीढ़ी के विकास का गठन सुदृढ़ सशक्त तरीके से होता है। इसका महत्व भी विस्तार पूर्वक बताया। कृष्ण ने तीन साल पहले केंद्र रूपी पौधा लगाया। उसे प्रत्येक भक्त अपनी भक्ति और उपासना से सिंचित कर रहा है, जिसके कारण वह अच्छे से फल फूल रहा है, जल्द ही उसका रूपांतरण वृक्ष के रूप में होगा, इस बारे में कोई शंका नहीं है इसलिए आज मैं सार्वजनिक स्तर पर सभी को बताता हूँ कि, जिसे भी अपने घर में केंद्र करने की इच्छा है, वे आज अपना नाम जरूर देकर जाइए।"

इस प्रकार दस बारह लोगों ने अपनी इच्छा प्रदर्शित की। आगे समयानुसार उनके घर केंद्र की स्थापना भी हुई। अब इस यात्रा का आखिरी काम सातवें केंद्र की स्थापना वह दिन भी गया। जिनके यहाँ केंद्र स्थापना होनी थी। यह दंपत्ति भावी पीढ़ी तैयार करने का काम अत्यंत निष्ठा से कर रहे थे, कोचिंग क्लास को व्यवसाय न समझते हुए कर्त्तव्य समझकर भावी पीढ़ी को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दिन रात मेहनत कर रहें थे। उनके यहाँ जैसे उनके इस कार्य को गति देने के लिए ही केंद्र की स्थापना हुई।

पूना से कृष्ण भक्ति, कृष्ण प्रेम से भरे हुए दिनों को अपने दिल में संजोते हुए ताई ने हरिहरेश्वर के लिए आगे प्रस्थान किया। कृष्ण ने वहाँ तीन दिन सभी भक्तों के

लिए, युवा शक्ति के लिए और भारत के लिए ध्यान करने का आदेश ताई को दिया था। हरिहरेश्वर यह ताई का कुलदैवत। उसके सानिध्य में, समुद्र की अथांग लहरों की गवाही में, प्राकृतिक सौंदर्य से सुसज्जित क्षेत्र में जाकर ध्यान करना ताई को बहुत अच्छा लगता था। हरिहरेश्वर की इस ध्यान यात्रा में कृष्ण ने, ताई को कुछ महत्वपूर्ण बातें बतायी।

● "वर्ष २००२ में विश्वजननी की स्थापना होनी ही चाहिए। उसका मूर्त स्वरूप कैसा होगा, यह मैं तुम्हें ताई श्रीशैलम में आराधना करते समय बताऊँगा।" इस आराधना के समय कौन-कौन से भक्त साथ में होंगे उनके नाम बताए, उनके रहने की व्यवस्था, टिकट की व्यवस्था के बारे में सभी सूचनाएँ दी।

● 'श्रीकृष्णलीलावली' पुस्तक के साथ-साथ 'कृष्णाई' कैसेट की निर्मिती करने के लिए भी अनुमति दी। उस कैसेट में ताई की आवाज में कृष्ण संदेश रहेगा। साथ ही साथ कुछ गजर और कृष्ण जो बताएँगे वह भगवद गीता के श्लोक अर्थ सहित रहेंगे। इस प्रकार से उस कैसेट का स्वरूप रहेगा और वह तैयार करने की जिम्मेदारी कृष्ण ने कृष्णभक्त श्री संजय पंडित के ऊपर सौंपी हुई है। इस कार्य के हेतु ताई दो दिन के लिए पूना में आएँगी, ऐसा भी बताया।

● तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह बताई कि, 'श्रीकृष्णलीलावली' व 'कृष्णाई' कैसेट के पूना में सार्वजनिक प्रकाशन समारोह करने की अनुमति दी। उस समारोह की संपूर्ण जिम्मेदारी पूना के भक्तों के ऊपर सौंपी।

मौका देने वाला भी वही है और उस मौक़े को स्वर्ण रुप में रूपांतरित करने वाला भी वही है यही सत्य है।

# ।। ॐ ।।

कृष्ण, ने श्रीशैलम जाने से डेढ़ महीने पहले ताई को घर की दहलीज भी पार न करते हुए ध्यान करना, ऐसा आदेश दिया। कृष्ण ने शक्ति की स्थापना के समय लगने वाली ऊर्जा ताई को इस ध्यान के माध्यम से दी।

हैदराबाद जाते समय गाड़ी में ताई का लगातार ध्यान चल रहा था। कभी चारों दिशाओं में नजरें घुमाते हुए, तो कभी आँखें बंद करके, ऐसा ध्यान वह कर रही थी। ताई ने साथ आए हुए सभी भक्तजनों को अपने नियमित कर्त्तव्य कर्म, व्यवहार, हँसी मजाक सब चालू रखें ऐसा आग्रह पूर्वक बताया था।

श्रीशैलम में भगवान का दर्शन करके जब सभी लोग रूम पर आए, उस समय ताई ने सभी से कहा कि, कृष्ण ने मुझे ध्यान करने के लिए कहा है इसलिए आप सभी लोग खाना खा कर आए तो भी चलेगा। मुझे ध्यान से उठाना मत। मैं ध्यान करने के पश्चात ही खाना खाऊँगी। आप लोग कमरे को बाहर से ताला लगाकर गए तो भी दिक्कत नहीं।

उस समय ताई के साथ एक कृष्ण भक्त रूम पर रुकी और बाकी के सभी लोग खाना खाने के लिए चले गए। ताई को एकदम चित्र की भाँति ध्यान करना था, मुँह के अंदर की बत्तीसी भी निकाल कर रखने के लिए कहा। इस प्रकार ताई का ध्यान शुरू हुआ। थोड़े समय के पश्चात उस कमरे में अचानक भर्राई हुई आवाज में ॐकार के स्वर घूमने लगे। ताई बेड पर ध्यानावस्था में लेटी हुई थी, शायद उनके मुख से ही ॐकार के स्वर बाहर आ रहे थे, उनके दोनों पैर एकदम सीधे बेड के समांतर और बेड से हाथ भर की ऊँचाई के आसपास हवा में थे। यह मुद्रा बहुत समय तक थी। ताई का ध्यान जब खत्म होने आया उस समय ताई का वर्ण लाल रंग का हो गया था जैसे कि सूरज की लालिमा लिए हुए हो। उनकी अंग कांति पर अनोखा तेज था। चेहरा अत्यंत तेजस्वी प्रतीत हो रहा था। धीरे-धीरे ॐकार का नाद भी कम होता गया और अचानक पैर नीचे की ओर धम्म की आवाज के साथ आए और ताई ध्यानावस्था से बाहर आयी, उन्होंने गिलास भरकर पानी पीया और बताने लगी ‘आज कृष्ण ने इस ध्यानावस्था में मुझे विश्वजननी से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातें बताई।’

● विश्वजननी अर्थात् पूरे विश्व की माता। मेरे एक भक्त की अत्यंत आंतरिक इच्छा थी कि विश्वजननी का मंदिर अमेरिका के लॉस ऐंजेलीस में स्थापित करना। अब उसकी इच्छापूर्ति का समय आ गया है इसलिए विश्वजननी की स्थापना ७ अक्टूबर २००२ को लॉस ऐंजेलीस अमेरिका में ताई करेंगी।

● गोवा की मडकई गाँव की नवदुर्गा देवी भक्तवत्सल रूप लिए हुए हैं। थोड़ी सी तिरछी गर्दन करके भक्तों को हाँ कहने वाली उसकी प्रतिमा विश्वजननी के रूप में स्थापित करना।

● प्रथम विश्वजननी की स्थापना लॉस ऐंजेलीस में, दूसरी भारत के दिल्ली शहर के कंटोनमेंट एरिया में और बाकी सात मूर्तियों की स्थापना कृष्ण के बताएनुसार होगी। ऐसी कुल मिलाकर नौ जगह, एक जैसी विश्वजननी मूर्तियों की स्थापना करनी है।

इस ध्यानावस्था में भगवान श्रीकृष्ण ने ताई को मूर्ति स्थापना से संबंधित सभी महत्वपूर्ण बातों की कल्पना दी। कृष्ण की सभी योजनाएँ पहले से तैयार रहती हैं। इस बात का अनुभव एक बार पुनः आया।

ताई जब बदलापूर वापस आयी तब अचानक एक दिन गोवा के एक श्रीकृष्ण भक्त बदलापूर आए और कहने लगे, 'ताई मुझे पता नहीं, लेकिन मुझे आपकी, कृष्ण की बहुत याद आने लगी; इसलिए मैं खींचा चला आया; मुझे यहाँ आए बगैर रहा ही नहीं जा रहा था इसलिए सीधे उठा और यहाँ निकल आया।'

"अरे निकल नहीं आए, मैंने तुम्हें बुलाया है। बुद्धिदाता आखिर मैं ही हूँ न?" मुझे विश्वजननी की स्थापना करनी है इसलिए मडकई की नवदुर्गा की मूर्ति के जैसी मूर्तियाँ घड़वाने का काम तुम्हें करवाँ लेना है इसलिए तुम्हें यहाँ बुला लिया। कर्नाटक के कारकल गाँव में तुम्हें शिल्पकार मिलेगा। उसे तुम मडकई की देवी के मंदिर में लेकर जाओ। वैसी ही अखंड काले पाषाण से, अंदाजे साडे तीन फुट ऊँचाई की, थोड़ी सी तिरछी गर्दन की हुई, सभी प्रकार के आयुधों और आभूषणों से युक्त मूर्ति उसे तैयार करने का काम बताना है। आगे और ऐसी आठ मूर्तियाँ तैयार करवाँ लेनी है।"

कृष्ण ने उसके काम की जिम्मेदारी मेरे ऊपर सौंपी है, इस एहसास से ही उस व्यक्ति का हृदय भर आया। कृष्ण को साष्टांग दंडवत करते हुए कहने लगे, 'कृष्ण,

मैं अत्यंत निष्ठा के साथ, तत्परता पूर्वक यह काम पूरा करने का जी जान से प्रयत्न करूँगा। कर्ता करविता सब कुछ आख़िर तुम हो। यह कार्य तुम मुझसे करवाँ लो यह मेरी तुम से विनम्र प्रार्थना है। ताई ने प्रसन्नचित्त होकर उसे आशीर्वाद दिया, “यशस्वी भव!” इस प्रकार कृष्ण और उसके भाव भक्ति से परिपूर्ण भक्तों की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम ही है।

एक दिन श्री संजय पंडित जी को फोन आया, ‘संजय, मैं कैसेट के काम के लिए दो दिन पूना आऊँगी ऐसा कहा था न, आने वाले दो हफ्तों में आपके पास कब समय है वह मुझे बताइए।’ यह सुनकर संजय एकदम आश्चर्यचकित रह गए। ताई जैसी उच्च विभूति और कितना सीधा सरल, उच्च भाव। दूसरो के समय की इतनी परवाह। उन्होंने ताई की सुविधानुसार दिन निश्चित किया और इस तरह ताई आगे पूना आयी। ताई सिर्फ यह काम करने के लिए ही पूना आ रही है इसलिए कृष्ण ने सभी को संदेशा दिया कि कोई भी उनसे मिलने न आए और फोन भी न करे।

कभी-कभी लगता है यह भक्तों की परीक्षा ही रहती है कि आप कृष्ण का, अपने गुरु के शब्द का पालन किस प्रकार से करते हैं। फिर भी कुछ अज्ञानी भक्तों का आग्रह था कि, ताई थोड़े समय के लिए तो भी हमारे यहाँ आए, कम से कम हमें मुलाकात तो भी दे या फिर फोन पर तो भी बात करें। ताई को वह आग्रह देखकर मन ही मन बहुत बुरा लगा उन्होंने कहा, ’आप हमेशा कृष्ण के पास जाने वाले, पिछले कई सालों से जानने वाले, अपने आपको कृष्ण के नजदीकी भक्त समझने वाले; फिर भी कृष्ण द्वारा डाले गए इस छोटे से बंधन का पालन आप क्यों नहीं कर सकते? गुरु आज्ञा का पालन शत-प्रतिशत करना यह गुरु सेवा नहीं है क्या? गुरु आज्ञा का पालन न करना अर्थात् गुरु सेवा की हाथ आयी हुई संधि को आप चूक रहे हैं ऐसा नही है क्या? श्रद्धा के साथ सबुरी का होना भी अत्यंत आवश्यक होता है।’ ताई ने सबके सामने बैठकर शायद ही कभी प्रवचन किया हो लेकिन वह आते जाते हुए सहज सरलता से, अनेक घटनाओं के द्वारा, भक्तों को तैयार करने का काम लगातार करती रही और उसका फायदा प्रत्येक भक्त अपनी अपनी क्षमता के अनुसार लेता रहा।

ताई द्वारा लिखित प्रार्थना का ध्वनिमुद्रण का कार्य चल रहा था वह करते समय ऐसा ध्यान में आया कि गायन की दृष्टि से, कुछ शब्द बदलने की आवश्यकता होगी लेकिन ताई जैसे उच्च विभूति को यह कैसे बताना या पूछना। यह काम उन कलाकारों के लिए एक धर्मसंकट ही था, क्या करना चाहिए? इसलिए लगातार

साधक बाधक चर्चाएँ चल रही थी आखिर पूरी स्थिति के बारे में ताई को अवगत कराया जाए, आगे वह जैसा बताएँगी वैसा किया जाएगा, ऐसा सभी का एकमत हुआ। ताई को जब पूछा गया, उस समय ताई ने कहा, 'अरे, इतना संकोच करने की आवश्यकता नही है आपको ऐसा क्यों महसूस हो रहा है? गायन की दृष्टि से अगर कुछ शब्दों को बदलना पड़े या आगे पीछे करना पड़े तो जरूर कीजिए। सिर्फ अर्थ की तरफ ध्यान रखिए। वह बदलना नहीं चाहिए। संजय, कैसेट से संबंधित संपूर्ण जिम्मेदारी कृष्ण ने आपके ऊपर सौंपी हुई है। मुझे पूरा विश्वास है कि, आप और आपके सभी सहकर्मी, यह जिम्मेदारी उत्तम रिती से पूर्ण करेंगे।' ताई का यह भाव देखकर वहाँ सब लोग आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि कला के क्षेत्र में सभी छोटे बड़े कलाकारों के भी कितने नखरे रहते हैं। उन्हें कितना मान सम्मान देना पड़ता है। इसका अनुभव वह लोग हमेशा ही लेते थे और आज ताई जैसी उच्च विभूति ने किसी भी प्रकार की नानूकर न करते हुएँ सहज रूप से स्वीकृति दे दी। उनकी उच्च कोटि की विनम्रता उन्हें बहुत कुछ बता कर, समझा कर गयी।

'श्रीकृष्णलीलावली' पुस्तक का कार्य और 'कृष्णाई' कैसेट का काम अंतिम पडाव पर आ गया था। कृष्ण ने समारोह के उद्घाटन की तारीख बताई ६ जून २००१।

पूना के मनोहर मंगल कार्यालय में, फुलगाँव के स्वामी स्वरूपानंद के करकमलों से 'श्रीकृष्णलीलावली' पुस्तक का और 'कृष्णाई' कैसेट का प्रकाशन हजारों कृष्ण भक्तों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

उस समय संदेश देते हुए ताई ने कहा 'वर्तमान समय में कृष्ण अपने प्रत्येक भक्त की पुकार पर कैसे भाग कर जाता है, उसका वर्णन इस पुस्तक में है। इस पुस्तक को पढ़ने से आपको, कृष्ण का अस्तित्व आपकी श्रद्धा के कारण कैसे जागृत होता है और उसका व्यवहारिकता में कैसे दर्शन होता है, यह पता चलेगा। यह पुस्तक, हम कृष्ण के पास कैसे आए और कृष्ण हमारे पास कैसे आया इसका ही प्रतीक है।'

प्रकाशन के समय इस पुस्तक की हजार प्रतियाँ मुद्रित की गयी। जो कि प्रथम पंद्रह दिनों में ही खत्म हो गई। उसके बाद आज तक सात बार इस पुस्तक के पुनर्मुद्रण का कार्य किया गया है। ताई के देह रखने के पश्चात भी अनेक भक्त यह पुस्तक पढ़ कर उससे प्रेरणा लेकर श्रीकृष्णलीलाकेंद्र में जाकर कृष्ण कृपा का अलभ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

# ।। ॐ ।।

जून महीने से कृष्ण ने बताना प्रारंभ किया, आने वाले छः महीने मेरे लगातार भ्रमण करके कार्य करने के हैं। भारत में जगह जगह पर केंद्र स्थापना करना। साथ ही साथ भारत की चारों सीमाओं पर प्रत्यक्ष रूप से जाकर ध्यान करना है। ताई को विश्वास था कि, जब कृष्ण बता रहा है तो उसके अनुसार समय-समय पर ऐसी घटनाएँ जरूर घटेंगी। इस कार्य के हेतु किससे, किस प्रकार की सेवा स्वीकार करना इस बारे में कृष्ण की सभी योजनाएँ तैयार होगी और समय आने पर योग्य व्यक्ति अपने आप आगे आएँगे।

जुलाई महीने में कृष्ण ने कहा, लोनावला के पास जो दुर्गापरमेश्वरी का मंदिर है वहाँ मुझे ध्यान करने के लिए जाना है और उसके पश्चात गणपतिपुले जाकर भी ध्यान करना है।

कार्ला का जो दुर्गापरमेश्वरी का मंदिर है वह गौड़ सारस्वत समाज का पीठ है। उस समाज के एक कृष्ण भक्त ने वहाँ के ट्रस्टी से बात की और उन्हें ताई की संपूर्ण जानकारी दी तथा वहाँ उनके ध्यान की सारी व्यवस्था की। इस प्रकार १९ जुलाई २००१ को ताई वहाँ मंदिर में जाकर ध्यान करके आयी। वहाँ वे लोनावला के एक कृष्ण भक्त के यहाँ रात में रुकी। वहाँ उनकी पाद्य पूजा हुई। वहाँ एक महिला भोजन बनाने में मदद करने के लिए आयी हुई थी। वह दो-तीन बार ताई के सामने से गयी। आखिर ताई ने उसे पास बुलाया और पूछने लगी, 'अरे, तुम कुछ मुश्किल में हो क्या?' यह सुनकर उस महिला की आँखों में अश्रू आ गये। उसने प्रणाम करके उसकी सारी मुश्किलें और समस्याएँ कृष्ण को बताई। कृष्ण ने उसे मार्गदर्शन करके प्रसाद, तुलसी पत्र दिया और कुछ उपासना करने के लिए कहा। कृष्ण की कृपा किसके ऊपर कब होगी, कहाँ होगी यह उसी को पता रहता है। कृष्ण हमेशा बताता है, "आप अपने काम ठीक तरह से ईमानदारी से कीजिए। उसका भी मैं सेवा के रूप में स्वीकार करता हूँ।"उसी का यह उदाहरण!

गणपति पुले में जाकर गणेश मंदिर में ध्यान करना और आगे वही आसपास सात केंद्रों की स्थापना करना और आख़िरी में हरिहरेश्वर में जाकर ध्यान करके बदलापूर वापस आना ऐसा आगे का कार्यक्रम सुनिश्चित हुआ।

गणपतिपुले का ध्यान विश्व शांति का ध्यान था। किसी भी कार्य का श्रीगणेश गणेश पूजा से ही होता है। इस प्रकार विश्व शांति के लिए, विश्व कल्याण के लिए, जगत् जननी की स्थापना के लिए, यह जो कुछ भी कृष्ण को करना था, उसकी शुरुवात गणेश पूजन से होने वाली थी। वहाँ जाने से पहले ध्यानावस्था में गणेशजी ने योगेश्वर को बताया था, "हे योगेश्वर, तुम मुझसे मिलने आ रहे हो, मैं तुम्हारा भव्य स्वागत करूँगा।"उसका प्रत्यय इस ध्यान यात्रा में सचमुच आया।

गणपति पुले के मंदिर की ऐसी प्रथा है, यदि गर्भ गृह में जाना है, तो नौवारी साड़ी और धुली हुई धोती या कोरी धोती पहनना आवश्यक है, नहीं तो अंदर प्रवेश नहीं मिलता है लेकिन पंडित जी ने ताई को गर्भ गृह में जाकर गणपति बाप्पा के सामने बैठकर ध्यान करने की अनुमति दे दी। जब ताई का ध्यान चल रहा था। तब गणपति बाप्पा ने कहा, "हे योगेश्वर, तुम यहाँ आए, मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, उसके प्रतीक के रूप में तुम्हें मै मेरे शीश के ऊपर का श्वेत पुष्प देता हूँ।" यह संवाद चल ही रहा था इतने में पंडित जी ने गणपति बाप्पा के शीश के ऊपर का श्वेत पुष्प ताई को प्रसाद स्वरूप दिया और अंजलि भरकर मोदक भी दिए।

बाद में साथ आए हुए भक्तों ने पंडित जी से पूछा, 'पंडित जी, आपने मंदिर की प्रथा तोड़ दी और ताई को अंदर कैसे क्या जाने दिया?' तब उन्होंने कहा, 'हमारे यहाँ स्वामी समर्थ की उपासना चलती है, माँ साहब को देखते ही मुझे ऐसा महसूस हुआ कि इनकी बात कुछ अलग ही है। वे अलग ही विभूति है।वह हमारे घर आशीर्वाद देने आएँगी क्या?'

बाद में सभी कृष्ण भक्त प्रकाश कोल्हालकर जी के अभिषेक रिसॉर्ट में रहने के लिए गए। कृष्ण के स्वागत के लिए पूरा रिसॉर्ट फूल पत्तियों से सजा हुआ था, फूलों की पंखुड़ियों के गलीचे बिछाए हुये थे। कृष्ण का स्वागत करने के लिए पूरा स्टाफ तत्परता से निष्ठा के साथ वहाँ उपस्थित था। कृष्ण के स्वागत की तैयारी करने के लिए दो कृष्ण भक्त खास कोल्हापुर से रिसोर्ट में आकर रुके हुए थे। इस पर ताई ने कहा, प्रकाश की इच्छा थी मेरा स्वागत करने की! इसलिए कृष्ण ने यह रचना की। मैं एक भक्त को, दूसरे भक्त की मदद करने की बुद्धि देता हूँ और मेरे भक्तों की इच्छापूर्ति करता हूँ। इस तरह मैं मेरे भक्तों के लिए दौड़ कर जाता हूँ। आपकी नजरों से मै देखता हूँ, आपके हाथों से काम करवाँ लूँगा, "ऐसा जो कृष्ण बताता है, उसी का यह अनुभव था।

कृष्ण ने अभिषेक रिसॉर्ट में केंद्र स्थापित करते समय बताया, "यद्यपि केंद्र स्थापना

करने का समय यदि ३:०० से ४:०० है, फिर भी आपको आपका केंद्र करने के लिए समय का बंधन नहीं है। आप सब यहाँ होटल में काम करने वाले कर्मचारी, आप आपका काम खत्म होने के बाद भी अगर केंद्र करेंगे तो भी चलेगा। रात के १०:०० बजे बैठे तो भी चलेगा। सिर्फ दिन निश्चित रखिए। कर्त्तव्यों में मुझे देखिए।" कृष्ण वचन की ही यह प्रचिति थी।

आगे जांभरी, हरवंडे, वेलंब, सांवर्डे और रत्नागिरी में ऐसे पाँच केंद्रों की स्थापना हुई। रत्नागिरी को छोड़कर बाकी के सभी केंद्र अत्यंत ग्रामीण भागों में थे। छोटी-छोटी बाड़ियों के जैसे वह गाँव थे। प्रत्येक जगह पर केंद्र स्थापित करते समय कृष्ण की संदेश बताने की रीति, केंद्र की संकल्पना बताने की रीति, उस उस जगह के सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के अनुसार बदल रही थी। सारांश एक ही था लेकिन शब्दांकन अलग अलग था। वहाँ के शब्द ऐसे थे जिन्हें वहाँ के लोग समझ सकेंगे और उसका शुद्ध सात्विक आनंद उठा सकेंगे।

इस ध्यान यात्रा में ताई ने कुछ-कुछ बातों का अर्थ विस्तारित कर के बताया। एक बार किसी ने उन्हें प्रश्न पूछा, 'ताई, आप कब सोती हो?'

ताई ने जवाब दिया, 'मेरी नींद उसकी मर्जी पर निर्भर करती है क्योंकि कभी-कभी वह मुझे सोते समय उठाता है और कोई काम तत्काल करने कहता है, कभी तुरन्त ध्यान करने कहता है। कभी-कभी तो पूरी रात ध्यान चलता है।'

'आपको ऐसे समय थकान नही होती क्या? सोने का मन नहीं करता?' 'थकान होने के लिए मैं कहाँ कुछ करती हूँ? वह करवाँ लेता है। ताकत भी वही देता है। सारा प्रबंध उत्तम होता है। उत्कृष्ट मैनेजमेंट (प्रबंधन) का काम उसी से सीखना चाहिए।'

ताई की आँखों से और स्वरों से पूर्ण भक्ति भाव अविरत बह रहा था।

'ताई ध्यान समाप्त होने के पश्चात आप तीन घूँट पानी पीती हो। उसके पीछे क्या कारण है?'

'जब मै घर में रहती हूँ उस समय मुझे ध्यान समाप्त होने पर शिवलिंग पर जल का अभिषेक करने के लिए कहा है। यात्रा के दौरान वह शिवलिंग साथ में लेकर घूम नहीं सकते इसलिए तीन घूँट पानी पीकर अपने अंतरंग में स्थित शिव पर अभिषेक करना, ऐसा कृष्ण ने कहा है।'

बहुत समय ऐसा होता है कि इंसान जप जाप्य करने में, कर्मकांड करने में बहुत ही उलझ जाता है लेकिन कृष्ण ने स्पष्ट रूप से बताया है। ‘इंसानियत को नजरंदाज करके किया गया जप-तप, कर्मकांड यह मेरी सेवा या साधना नही है। आप को दिए गए दैनिक कर्त्तव्य कर्म नि:स्वार्थ भावना से करना यही मेरी सच्ची साधना है।‘

‘ताई, कृष्ण कहता है प्रत्येक व्यक्ति में मुझे देखो इसका अर्थ क्या?‘

“इसका अर्थ बहुत ही मर्यादित स्वरूप में लिया जाता है प्रत्येक जीव मेरा ही अंश है लेकिन यह मानकर इंसान एक दूसरे से व्यवहार नही करते हैं। ताई के पास, मेरे पास आते समय आपके मन में जो स्निग्ध भाव, लीनता, स्नेह भाव, भक्ति भाव रहता है। वही भाव एक दूसरे से व्यवहार करते समय नही रहता है। जिस भाव के साथ आप ताई को, मुझे देखते हो, उसी भाव से सभी को देखिए। उसी भाव के साथ सभी से व्यवहार कीजिए। यह चौबीस घंटे की साधना है। पूरे दिन में जो भी व्यक्ति आपके सामने आएँगे वह मैं ही हूँ ऐसा समझकर सभी के साथ व्यवहार कीजिए।

जप जाप्य, नाम स्मरण से सात्विकता का भाव जागृत होता है। अभी जो चौबीस घंटे चलने वाली साधना का मार्ग बताया वह सात्विकता जागृत करने का सबसे ज्यादा प्रभावी मार्ग है।

मैं प्रत्येक के अंतरंग में स्थित हूँ। वही से मैं आप सभी को योग्य, अयोग्य के बारे में बताता हूँ, मार्गदर्शन करता हूँ लेकिन आप सब अन्य बातों में इतने ज्यादा मशगूल होते हो की अपने अंतरंग की आवाज सुनते ही नहीं। उसको सुनना सीखों। आपके अंतरंग में “मैं“ हूँ। मुझे जागृत कीजिए। मुझे महसूस कीजिए।

अभी तक कृष्ण बता रहे थे, केंद्र में स्थित कृष्ण को जागृत कीजिए। उसके बाद घर घर में स्थित मेरे स्थान को जागृत कीजिए और अब इसके बाद आपके अंतर्मन में स्थित मुझे देखिए और उसे जागृत कीजिए। कृष्ण, जैसे यह सब बता कर हमें भक्ति मार्ग में स्थित एक एक सीढ़ियों की पहचान करवाँ दे रहा था।

‘ताई, आप के संपर्क में अनेक व्यक्ति आते हैं। कुछ व्यक्ति अजीबोगरीब तरह से व्यवहार करते होंगे। ऐसे व्यक्तियों को सहन करते समय आपको उनका गुस्सा नहीं आता क्या?‘

'नहीं,' कृष्ण बताता हैं, "उनके ऊपर तिल भर भी गुस्सा मत कीजिए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्व कर्मों के अनुसार अपना प्रारब्ध साथ लेकर आता है। उसके अनुसार ही उसका आचरण रहता है। यह जब समझ में आता है उस समय गुस्सा न आकर बल्कि ऐसे व्यक्तियों के प्रति दया भाव ही मन में आता है। अगर अपने साथ कोई दुर्व्यवहार करता है तो उसे, उसका और अपना प्रारब्ध समझ कर छोड़ देना चाहिए लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप मूर्खों की तरह व्यवहार करे। प्रश्न को प्रतिप्रश्न तो होना ही चाहिए।"

इस प्रकार सर्वार्थ रीति से प्रबोधन करते हुए कृष्ण की- ताई की यह ध्यान यात्रा हरिहरेश्वर मार्ग से होते हुए बदलापूर में आकर पूर्ण हुई।

जुलाई माह से शुरू होने वाली भारत भ्रमण की यात्रा में कृष्ण ने सर्वप्रथम केरल जाने का आदेश दिया। इस प्रकार २७ जुलाई से ९ अगस्त २००१ के बीच तीस से बत्तीस कृष्ण भक्तों के साथ ताई केरल की ध्यान यात्रा के लिए निकली। केरल यह आदि शंकराचार्य जी का जन्म स्थान। अत्यंत पवित्र पावन पुण्य भूमि। यही से उन्होने किसी प्रकार के संचार साधन उपलब्ध न होते हुए भी, पदयात्रा निकाली और सनातन धर्म की पताका पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओं में ले गए और चार से पाँच जगहों पर धर्मपीठ की स्थापना करते हुए सनातन धर्म का पुनरुज्जीवन भी किया।

सनातन धर्म अर्थात् मानवता धर्म। विश्व कल्याण के लिए विश्व कार्य की यह शुरुवात है। यह कार्य धर्मातीत है। इसमें सभी धर्मियों का समावेश है।

उस विश्व कार्य के लिए, सभी भक्तों के लिए, युवा पीढ़ी के लिए और भारतवर्ष के लिए कृष्ण के आदेशानुसार ताई का लगातार ध्यान चल रहा था। कभी चहूँ दिशाओं में आसपास नजरें घुमा कर, कभी आँखें बंद करके, तो कभी समुद्र के किनारे पर जाकर सागर की गहरी अथांगता पर।

केरल यात्रा की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी की ३ अगस्त को सावन मास की पूर्णिमा के शुभ अवसर पर कृष्ण ने विश्वकलश की स्थापना की और संदेश देते हुए कहा -

● मेरी इच्छा के बगैर झाड़ का पत्ता भी हिलता नही है। आज जो भक्त मेरे साथ विश्व कार्य के लिए आए हैं और जिन्होंने अपना सहयोग मुझे इस कार्य के लिए

दिया है। उन सभी को मैं वचन देता हूँ कि -

*अनन्याश्चिंतयंतो मां ये जना : पर्युपासते।*

*तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ||२२||*

*(भगवद् गीता, अध्याय ९ वां)*

आपके जन्म से लेकर अंत तक आपकी संपूर्ण जिम्मेदारी मेरी है। यह मेरा आपको दिया हुआ वचन है और मैं वचन का पक्का हूँ।

लेकिन अब आपके ऊपर भी उतनी ही जिम्मेदारी आती है।आपकी श्रद्धा, आपका विश्वास आज जितना प्रखर है जितना प्रामाणिक है। उसे उतना ही और वैसा ही बना कर रखिए। तभी मैं आपके लिए खड़ा रह सकूँगा। आज जो भक्त यहाँ आ नहीं सके लेकिन अपने अंतर्मन के द्वारा यहीं पर उपस्थित है उन्हें भी मैं वचन देता हूँ कि मैं, सदैव उनके पीछे खड़ा हूँ और आगे भी खड़ा रहूँगा लेकिन मन में कभी भी संदेह मत आने दीजिए। अपने मन को विचलित मत होने दीजिए।

● मैं अपने भक्त को दिया हुआ वचन कभी नहीं भूलता हूँ। भक्त मुझे भूल गया फिर भी मैं उसे नहीं भूलता लेकिन जब मेरे द्वारा दिए गए वचन कि पूर्तता हो जाती है तब मैं उसके पीछे खड़ा नहीं रह सकता क्योंकि वह मुझे भूल चुका होता है या फिर उसकी श्रद्धा डगमगा गई होती है।

● आज के इस युग में मेरे प्रत्येक भक्त के ऊपर लक्ष्मी का वरद हस्त होना अत्यंत आवश्यक है इसलिए उसकी उपासना, आराधना का मंत्र विधि इस प्रकार है,

*लक्ष्मी देवी महामाये देहि में अनुग्रहम्।*

*तथा च संपत्तिधनम् आयुरारोग्यमसंपदाम्।।*

प्रत्येक शुक्रवार को संध्या समय में ७ से ८ या फिर ९:०० से १०:०० के बीच यह मंत्र ११ बार बोल कर अपनी कुलस्वामिनी को प्रार्थना कीजिए कि योगेश्वर के बताएनुसार यह दूध शक्कर का भोग तुझे अर्पण कर रहे हैं उसको आप स्वीकार कीजिए। पश्चात सभी परिवार जन इसे प्रसाद स्वरूप ग्रहण कीजिए।

कृष्ण ने १० अगस्त २००१ को विश्व कलश की स्थापना कृष्ण कुटीर में करने के लिए कहा। यह कलश सभी के सहयोग एवं एकता के प्रतीक के रूप में कृष्ण कुटीर में हमेशा रहेगा। उसके ऊपर पाँच बार ॐकार अंकित किया हुआ है साथ

ही साथ 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' और 'ॐ महान शक्ति देवताय नमः' मंत्र और केरल यात्रा में ताई के साथ सहभागी हुए कृष्ण भक्तों के उपनाम का पहला अक्षर भी अंकित किया हुआ है।

निश्चित किएनुसार बदलापूर में अनेकों भक्तों की उपस्थिति में कृष्ण के ऊपर फूलों का, इत्र का अभिषेक करके इस कलश की स्थापना की गयी।

# ।। ॐ ।।

कृष्ण का केंद्र स्थापना का काम जोर-शोर से चालू था। सांगली, कोल्हापुर इन शहरों में चार केंद्रों की स्थापना वैसे ही पूना में तीन केंद्रों की स्थापना करना। ऐसा सात दिनों (१७ अगस्त से २५ अगस्त) का कार्यक्रम निश्चित हुआ।

उसी समय पूना के प्रसिद्ध दगडूशेठ गणपति मंडल की ओर से ऋषि पंचमी के उपलक्ष्य में सामुदायिक अथर्वशीर्ष पठन के कार्यक्रम में ताई को प्रमुख अतिथि के रूप में निमंत्रण था। वास्तविकता में सामुदायिक कार्यक्रम में जाना कृष्ण को पसंद नहीं था लेकिन इस मंडल के विश्वस्त की प्रार्थना को कृष्ण ने स्वीकार किया इसलिए ताई ने भी वह निमंत्रण स्वीकार किया।

'जन्म जात शिक्षिका' ऐसा शब्द प्रयोग जिनके लिए सार्थक होगा ऐसे कृष्ण भक्त के यहाँ सांगली में केंद्र की स्थापना हुई। केंद्र स्थापना के समय उनके सभी विद्यार्थी, उनके अभिभावकगण एवं चिर परिचित ऐसे बहुत से लोग वहाँ जमे हुए देखकर कृष्ण ने वहाँ अत्यंत समाधान व्यक्त करते हुए कहा कि, "मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ, आप भावी पीढ़ी को तैयार करने का काम अत्यंत निरपेक्षता से कर रहे हैं। मेरी यंग जनरेशन के कल्याण के लिए जो भागदौड़ करता है, खड़ा रहता है, उनके लिए तो मैं हमेशा के लिए बँध जाता हूँ। आपके पीछे मैं हमेशा खड़ा हूँ, ऐसा आज वचन देता हूँ।"

वहाँ से ताई जब दूसरे कृष्ण भक्त के यहाँ गयी तब उनके घर के अंदर जाते ही बाहर कही भी न रुकते हुए वह सीधे अंदर की ओर जाकर एक कमरे की दीवार के पास खड़ी हुई और कहने लगी, 'आपके घर में मेरी जगह यहाँ है।' उन सभी को इसका बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि पहले उनके गुरु उनके यहाँ जब आए थे, उस समय इसी जगह पर उनकी पाद्य पूजा की गयी थी आख़िर गुरु तत्व एक ही होता है यही सत्य है। केशवं प्रति गच्छति!

वहाँ से ताई पूना आयी। दूसरे दिन प्रातः के साढ़े पाँच बजे सामुदायिक अथर्वशीर्ष पठन का कार्यक्रम दगडूशेठ गणपति मंदिर में था। ताई सह कुछ कृष्ण भक्त सवा पाँच बजे वहाँ पहुँचे। मंडल के लोगों ने ताई को ऊपर मंदिर में ले जाकर आरती

करने का आग्रह किया। साथ आए हुए सभी भक्त आगे क्या होगा यह देखने के लिए उत्सुक थे। इस पर कृष्ण ने कहा, “उसने मुझे बुलाया, इसलिए ताई को आरती करने के लिए देता हूँ।” ऐसा बोलकर ताई ने वहाँ आरती की। चौदह से पंद्रह हजार महिलाएँ वहाँ पारंपरिक वेशभूषा में एकत्रित हुई थी। कार्यक्रम बहुत ही सुंदर एवं सुश्रव्य हुआ। बाद में मंडल की ओर से ताई का सत्कार किया गया। उस समय ताई ने कहा, ’सर्वप्रथम तो आप सभी महिलाएँ इतनी बड़ी संख्या में, इतनी सुबह यहाँ उपस्थित हुई, इसलिए आपकी प्रशंसा करती हूँ। वर्तमान समय में जिस सामूहिक आराधना की आवश्यकता है, उसकी पूर्तता आप की ओर से हो रही है। इस बारे में कृष्ण आप सभी की प्रशंसा कर रहे हैं। कृष्ण का कहना है कि आप जो अपनी नित्यसाधना, उपासना, आपके नित्यकर्म ईमानदारी के साथ कर रहे हैं, उसके साथ ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ इस मंत्र का उच्चारण कम से कम एक बार तो भी जरुर कीजिए।’ “कितनी बार करना या गिनना ऐसा मैं बिल्कुल नहीं बता रहा हूँ। यह मंत्र करने से आपके और मेरे बीच का बंधन दृढ़ होगा। आपकी सेवा का मैं स्वीकार कर सकूँगा और मेरे, यानी परमब्रह्म के मदद के हाथ आप तक पहुँच सकेंगे।”

आज समाज में, घर में स्त्री का सम्मान या उसकी योग्यता को कम आंका जाता है। यह कदापि उचित नहीं है। अगर समाज में सुधार लाना है तो प्रत्येक घर में, प्रत्येक व्यक्ति सुसंस्कृत होनी चाहिए और इस कार्य में स्त्री का योगदान बहुत बड़ा होता है। एक सफल परिवार के पीछे, संस्कारित भावी पीढ़ी के पीछे घर की कर्तृत्ववान स्त्री का बहुत बड़ा हिस्सा होता है। उसकी सफलता को, मान सम्मान को, त्याग के एहसास को ध्यान में रखते हुए पिता से पहले माँ को प्रणाम किया जाता है। यह शास्त्रों में पहले से बताकर रखा है इसलिए समाज सुसंस्कृत होना चाहिए ऐसा यदि लगता है तो स्त्रियों का यथोचित सम्मान होना ही चाहिए। मातृदेवो भव!’

“आप मुझे क्या देते हो यह मैं नहीं देखता। उसके पीछे का स्नेह भाव, भक्ति, श्रद्धा, प्रेम यह सब मेरे पास पहुँचता है। मेरी दृष्टि में वही सबसे महत्वपूर्ण है।”

वर्तमान समय में विश्व को मानवता धर्म की आवश्यकता है। इंसानियत से रहिए, इंसानियत से व्यवहार कीजिए। मानवता धर्म ही श्रेष्ठ धर्म है। उसका प्रचार प्रसार होना चाहिए।

रोज सोने से पहले ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ मंत्र अत्यंत श्रद्धा एवं विश्वास के

साथ बोलिए। आपके अंतर्मन में स्थित ॐकार और मेरे बीच यह मंत्र रूपी पुल है। उसका उपयोग करके मुझे अपना बना लीजिए। आपके अंतर्मन में स्थित ॐकार को जागृत कीजिए। वर्तमान समय की यही आवश्यकता है।"

ऐसा मार्ग दर्शन करने के पश्चात ताई ने एक भक्त के यहाँ, कृष्ण के लिए, 'पवमान अभिषेक' करने का निश्चित किया था। उस सेवा का कृष्ण ने स्वीकार किया और सभी भक्तों को अपनी कृपा के अनेकानेक शुभआशीष प्रदान किए।

२३ अगस्त २००१ को एक कृष्ण भक्त के यहाँ केंद्र स्थापना थी। उस समय ताई ने अचानक एक सज्जन से कहा, 'मुझे मिले बगैर आप जाइए मत! कृष्ण का आपके पास कुछ काम है।' उन सज्जन को इस बात का बहुत आश्चर्य हुआ। वे उनकी बहन के कहने पर इस कार्यक्रम में आए थे। उन्हें ताई, ताई के द्वारा किए जा रहे कार्य के बारे में विशेष जानकारी भी नहीं थी।

केंद्र स्थापना का समारोह अत्यंत उत्साह एवं प्रसन्नता के साथ संपन्न हुआ। ताई ने उन सज्जन को अपने पास बुलाते हुए कहा, 'आप कहाँ और क्या काम करते हैं? कृष्ण का कहना है कि मुझे उनके उड़ीसा के ऑफिस में जाकर ध्यान करना है।' यह सुनकर वह सज्जन आश्चर्य के साथ ताई की ओर असमंजस स्थिति में देखते हुए बोले, 'मैं भारत सरकार की सेवा में शास्त्रज्ञ के पद पर काम करता हूँ। पिछले दिनों तक मैं उड़ीसा के बालासोर में जो बड़ा मिसाइल टेस्टिंग का प्लांट है वहाँ काम करता था। हाल ही में मेरा तबादला पूना में हुआ है।'

इस पर कृष्ण ने कहा "अरे, तुम बताओगे उस दिन और उस समय पर मुझे वहाँ जाकर ध्यान करना है। तुम सोच कर मुझे बताओ।"

इसके पश्चात् एक और केंद्र की स्थापना करके ताई बदलापूर वापस आ गयी। ताई की इस ध्यान यात्रा में कोल्हापुर में एक युवा केंद्र की स्थापना हुई। सांगली से कोल्हापुर जाते समय अष्ट गाँव से पहले एक मंदिर में ताई का सत्संग था। गाँव छोटा सा था। उस गाँव के लोगों की बहुत इच्छा थी कि ताई ने उनके गाँव में आकर उन्हे कृष्ण की बातें, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य की जानकारी देनी चाहिए। इस बात के लिए कृष्ण ने स्वीकृति भी दी थी। उस मंदिर के पहले एक छोटा सा खेत था। उन लोगों ने डरते डरते ताई से पूछा, 'माँ, आप हम गरीबों की झोपड़ी में आएँगी क्या?' कृष्ण ने तुरन्त कहा, "आऊँगा क्या? इसका मतलब क्या, जरुर आऊँगा! मैं जहाँ जाता हूँ वह मेरा राजमहल होता है। मैं तो आपका भाव देखकर

आप पर न्यौछावर हो जाता हूँ।" ऐसा बोलकर ताई उस आदमी के पीछे पीछे जाने लगी। साथ आए हुए भक्त भी पीछे पीछे गए। उस उजाड़ ज़मीन में उनकी छोटी सी झोपड़ी थी। अंदर उस आदमी की बूढ़ी माँ, पत्नी और छोटा बच्चा था। वह दोनों स्त्रियाँ स्वागत करने के लिए बाहर आयी और अत्यंत आदर के साथ ताई को अंदर ले गई। ताई को बैठने के लिए उन्होंने एक पुराना कपड़ा डालते हुए अत्यंत संकोच के साथ पूछा, 'माँ, आपको यहाँ बैठने चलेगा न?' ताई खुशी खुशी वहाँ बैठी। उन्होंने दी हुई लाल रंग की मीठी चाय भी उन्होंने अत्यंत प्रेम से ली। ताई ने झाड़ की सूखी टहनियों पर भूनी हुई मूँगफली के दाने, और रानमेवा (जंगल में मिलने वाले फल जैसे करोंदा, जामुन....) भी अत्यंत प्रेम के साथ खाए। प्रसन्न मन से मैंने सब कुछ स्वीकार किया ऐसा उन्हें बताते हुए, सभी को बहुत सारा प्रसाद, फल, कृष्ण का फोटो, चांदी का तुलसी पत्र दिया एवं आपका सब कुछ बहुत अच्छा होगा, मैं सदैव आपके पीछे हूँ, आपका मुन्ना बहुत बड़ा होगा ऐसा आशीर्वाद देकर वह बाहर आयी।

कृष्ण की दृष्टि से उसके भक्त उसके प्रति सच्चा श्रद्धा भाव रखने वाले होते हैं! उनकी आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक स्थान, धन दौलत, मान सम्मान इन सब बातों की उसकी नजर में कोई कीमत नही होती है।

इधर पूना में क्या हुआ, कृष्ण ने उड़ीसा की ध्यान यात्रा की जिम्मेदारी जिनके ऊपर सौंपी हुई थी उन्हें अचानक एक दिन एक ट्रेनिंग कोर्स करने का ऑर्डर आया। वह कोर्स बालासोर में था इसलिए उन्हें अक्टूबर में ऑफिस की ओर से सप्ताह भर के लिए वहाँ जाना आवश्यक था। उन्हें इस संयोग का अत्यंत आश्चर्य हो रहा था। उन्होंने ताई को फोन किया, 'हम अक्टूबर में बालासोर जा सकते हैं। मेरा ट्रेनिंग होने के पश्चात मैं दो-तीन दिन और रह सकता हूँ।' 'फिर सारा प्रोग्राम तुम ही निश्चित करो।' ऐसा ताई ने उनसे कहा।

बहुत दिनों से कलकत्ता के कृष्ण भक्त ताई के वहाँ आने की राह देख रहे थे। आठ दस लोगों ने हमारे यहाँ केंद्र स्थापित कीजिए ऐसी ताई से प्रार्थना भी की थी। इस प्रकार प्रथम कोलकाता में एक सप्ताह रूककर केंद्र की स्थापना करना और वहाँ से आगे बालासोर जाकर कृष्ण के बताएनुसार ध्यान करना ऐसा कार्यक्रम निश्चित हुआ। १ से १३ अक्टूबर २००१ के बीच पहले छः दिनों में नौ केंद्रों की स्थापना कलकत्ता और वहाँ के उपनगरों में हुई।

८ तारीख को कुछ कृष्ण भक्त पूना से आगे बालासोर जाने के लिए कलकत्ता पहुँचे। वहाँ से सब ताई के साथ शाम के समय बालासोर पहुँचे। स्टेशन पर पूना के वह शास्त्रज्ञ आए हुएँ थे। उनके साथ सभी लोग होटल गए। थोड़े समय पश्चात वह सज्जन और उनका मित्र ताई से मिलने आए। दोनों के चेहरे पर गंभीर भाव थे, इसलिए साथ के भक्तों ने पूछताछ की तो वह बताने लगे अनुमति मिल नही सकी। 'ताई आप इतनी दूर आयी हैं लेकिन मैं कुछ भी नही कर सका मुझे माफ कर दीजिए' ताई ने कहा, 'रुको, यह आपका मित्र है न वह यह काम करेगा। अरे, दो-तीन साल पहले तुमने कुछ अच्छा काम किया था उसी की रसीद देने के लिए आज तुम्हारी और मेरी मुलाकात हुई है तुम अनुमति लेने के लिए जाओ। वह काम हो जायेगा ऐसा कृष्ण बता रहा है।'

वह सोचने लगे, तब उन्हें याद आया कि तीन साल पहले चंडीपुर मिसाइल टेस्टिंग सेंटर की मेस का चार्ज उनके पास आया था। उनके चार्ज लेने से पहले मेस में मिलने वाले भोजन का दर्जा अत्यंत निकृष्ट था। भोजन करने वाले सभी लोग घर से दूर अकेले रह रहे थे इसलिए उन्हें भोजन से संबंधित काफी मुश्किलें आ रही थी। यह सब जानकर उन्होंने सबसे पहले भोजन का दर्जा सुधारा। स्वादिष्ट एवं पौष्टिक भोजन देने की व्यवस्था की। इस अनुशासन का पालन सभी ने किया। अर्थात् उत्तम भोजन व्यवस्था से सभी की आत्मा तृप्त हो गयी। सर्वांभूति संतुष्टता यही उनके लिए एक पुण्य कर्म था। कृष्ण ने बताया उनकी इसी सेवा का उसने स्वीकार किया है। वह दूसरे दिन वहाँ के अधिकारियों से मिले। कृष्ण के कहे अनुसार उन्हें अनुमति मिल गयी। जहाँ प्रत्यक्ष शास्त्रज्ञ काम करते हैं वहाँ जाकर ध्यान करने की ताई की इच्छा पूरी हो गयी।

ताई को बालासोर शहर में भी नजरें घुमाकर ध्यान करना था। इस प्रकार पूरा शहर घूम कर ध्यान किया। कृष्ण ने कहा बालासोर में समृद्धि होगी। अच्छी फसल और पानी प्रचुर मात्रा में रहेगा। नए कारखाने बनेंगे और रोजगार की संधि बढ़ेगी। मेरा इस भूमि को आशीर्वाद है।

कृष्ण ने चंडीपुर सागर किनारे से मिसाइल टेस्टिंग सेंटर की दिशा में नजरें घुमाकर ध्यान किया।

दूसरे दिन बाद में धामरा जाकर सभी महत्वपूर्ण जगह पर रुककर, नजरें घुमा कर ध्यान किया। अनेक ड्यूटी ऑफिसर, शास्त्रज्ञ को आशीर्वाद एवं प्रसाद दिया।

वहाँ की डिफेंस कॉलोनी के कम्युनिटी हॉल में ताई का एक सत्संग भी हुआ। वहाँ ताई ने कृष्ण कुटीर, उनके द्वारा किया जा रहे कृष्ण कार्य, वर्तमान समय के अनुसार कृष्ण द्वारा बतायी गयी साधना उन्हें समझा कर बतायी और साथ ही साथ कृष्णानुभव भी बताये।

उस कम्युनिटी हॉल के वॉचमैन को कृष्ण ने आगे बुलाकर एक फोटो दिया और कहा की "तुम्हारे घर में मेरी सेवा सुचारू रूप से हो रही है। उस सेवा का मैं स्वीकार करता हूँ।" इस वॉचमैन का परिवार अत्यंत भक्ति भाव से कॉलोनी के मंदिर की पूजा अर्चना करता है।

यहाँ किसी ने प्रश्न पूछा, 'ताई, ध्यान कैसे करना?' उस समय ताई ने स्वयं के सिर के बीच में हाथ रख कर कहा, 'इधर से कॉन्सन्ट्रेट करके एनर्जी रिसीव करना। इसका मतलब ध्यान ही है।"

इन तीन दिनों में से एक दिन कृष्ण ने कहा सुबह ग्यारह बजे तक मेरा ध्यान है यदि कोई मिलने आने वाला हो तो उन्हें उसके बाद बुलाना, ऐसा कृष्ण ने बताया। साथ आए हुए भक्त उनके कमरे में सुबह प्रणाम करने के लिए गए, तब उन्होंने कहा यही सब नाश्ता करेंगे। उस समय ताई अपने बचपन की बहुत सारी यादें बता रही थी। उनके जीवन में कितने लोगों ने समय-समय पर उन्हें कैसी मदद की। बातें करते करते १०:३०-१०:४५ कब बज गए पता ही नहीं चला। किसी ने कहा, 'ताई, कृष्ण का आज ध्यान था, हमारे ध्यान में आया ही नहीं। हम सब यहाँ बातचीत करते बैठे।' इस पर कृष्ण ने तुरन्त कहा, "अरे, हमें जिन्होंने मदद की उनकी याद करना, उनकी मदद के बारे में कृतज्ञता व्यक्त करना यह भी मेरा ध्यान ही है। आज इस समय ताई ने जिनकी जिनकी याद की वे सभी जहाँ कहीं भी होंगे वहाँ उन्हें गति अवश्य मिलेगी।" कृष्ण ने आज ध्यान का एक नया पहलू खोल कर दिखाया था।

ताई वहाँ से आगे दिल्ली गयी और साथ आए भक्त पूना वापस आ गए। ताई दिल्ली से लेह - लद्दाख जाने वाली थी। वह फ्लाइट दिल्ली -श्रीनगर -लेह और वापस आते समय सीधे दिल्ली आने वाली थी लेकिन वह एक दिन के अंतर से थी।

जिन्होंने ताई के लेह- लद्दाख जाने की व्यवस्था की थी वे दिल्ली में ही थे। वह ताई से मिलने होटल आए और बोलने लगे, 'माँजी मौसम बहुत खराब है। मैं हर १५ मिनट बाद जानकारी ले रहा हूँ। खराब मौसम की वजह से यह फ्लाइट कैंसिल भी

हो सकती है।' इस पर कृष्ण ने कहा, "आप चिंता मत करो। कल फ्लाइट उड़ान जरुर लेगी। वेदर की जिम्मेदारी मेरी है। आप चिंता नही करना।" यह सुनकर वे आश्चर्यचकित रह गए। उनकी पूरी नौकरी की कालावधी में उन्होंने मौसम से संबंधित इतना पक्का विश्वास रखने वाली व्यक्ति कभी नही देखी थी। कृष्ण जब मौसम की जिम्मेदारी लेता हूँ ऐसा कहता है तब क्या हो सकता है यह बताने वाले कुछ अनुभव उन्हें बताए। इस पर उन्होंने सिर्फ प्रश्नांकित चेहरा बनाया और ताई को प्रणाम करके वे निकले।

दूसरे दिन सुबह मौसम एकदम सुहाना था। चारों दिशाओं में स्वच्छ सूर्य प्रकाश फैला हुआ था। निश्चित किए हुए समय पर ताई दो-तीन कृष्ण भक्तों के साथ लेह लद्दाख जाने के लिए निकली। समय पर वह लेह पहुँचे। वहाँ का दृश्य अत्यंत विलोभनीय था। एक ओर आइसकॅप धारण किए हुए उत्तुंग पर्वत थे तो दूसरी ओर रेगिस्तानी रेतीली पर्वत श्रंखला जिनके ऊपर नजर रुक ही नहीं रही थी। जब से दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुँचे तब से कृष्ण का लगातार ध्यान चल रहा था। लेह में जहाज नीचे आते समय अचानक बिना कारण से खड़ाड खड़ाड ऐसा कुछ आवाज आने लगा।

सभी लोग होटल पहुँचे। ताई ध्यानावस्था में थी। वहाँ पहुँचकर थोड़ी देर पश्चात ताई ने कहा, 'कृष्ण कह रहा है, मुझे होटल की छत पर जाकर ध्यान करना है।' जब से निकले तब से कृष्ण का अखंड ध्यान चल रहा था। मध्य रात्रि में कृष्ण ने ताई को बताया, "ताई, मेरा यहाँ का ध्यान हो गया है। कल सुबह हम वापस जाएँगे।, "ताई ने कहा, 'ठीक है, कृष्ण!'

सुबह उन्होंने साथ आए भक्तों को कृष्ण का संदेशा बताया। सभी के सामने प्रश्न उपस्थित हुआ, आज ही वापस कैसे जाना? वापस जाने की फ्लाइट तो कल है। कोई बात नहीं पूछताछ करके देखते हैं। ऐसा सोच कर, वह हवाई अड्डे पर पूछताछ करने गए तो वहाँ पता चला, आज दिल्ली जाने वाली फ्लाइट है। इसमें आश्चर्य करने जैसा क्या? जैसी कृष्ण की इच्छा! कल जहाज नीचे आते समय जो खड़ाड आवाज आया था उसके पीछे कृष्ण की ही योजना थी ऐसा बोलना ही पड़ेगा। उस आवाज के कारण श्रीनगर से टेक्नीशियन को बुलाना पड़ा और तुरन्त वापस जाने वाला जहाज रद्द कर दिया गया इसलिए दूसरे दिन समय सारणी में न होते हुए भी ताई के साथ यह जहाज दिल्ली रवाना हुआ। कृष्ण को जैसा चाहिए था वैसा लद्दाख का ध्यान हुआ।

इसके बाद ताई तुरन्त जम्मू गयी। प्रथम वे एयरपोर्ट स्टेशन पर ध्यान के लिए जाने वाली थी और वहाँ से आर्मी एरिया पर नजरें घुमाकर ध्यान करने वाली थी।

राह में यदि कोई भारतीय जवान या किसी विंग के ऑफिसर्स ऐसा कोई दिखता तो ताई का आविर्भाव एकदम बदलता था वे अत्यंत उत्साहित, प्रफुल्लित दिखती और कड़क सेल्यूट मार कर ही उनके स्वागत का स्वीकार करती।

इन सभी लोगों को आशीर्वाद देने के लिए, विशेष 'कृष्ण ऊर्जा' देने के लिए ताई स्वयं जगह जगह पर जा रही थी। विशेष बात तो यह थी कि, सभी जगह का खर्चा, जाना, आना, रहना ताई स्वयं का स्वयं करती थी। हिसाब में किसी प्रकार का आगे पीछे, उन्नीस बीस किया हुआ उन्हें नहीं चलता था। कृष्ण तुरन्त समझा-बुझाकर कर सामने की व्यक्ति को योग्य पैसे देने लगाता था।

जम्मू के जो स्टेशन कमांडर थे, वह स्वामी योगानंद के अनुग्रहित थे। उन्होंने ताई को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। मिष्ठान में दूध पाक बनाया था। उस दूध पाक के ऊपर हाथ से लिखे हुए जैसा 'ॐ' को आया हुआ देखकर वह आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें यह सब अनुभव करके अत्यंत प्रसन्नता हुई। इस उम्र में ताई, स्वयं के खर्चे से इतनी दूर सिर्फ कृष्ण आज्ञा है इसलिए तीनों दलों के जवानों को आशीर्वाद देने के लिए, किसी भी प्रकार की कोई अपेक्षा न रखते हुए आयी। यह सब जानना उनके लिए अभूतपूर्व था।

दूसरे दिन ताई आर्मी के जवानों के साथ महत्वपूर्ण जगह पर जाकर ध्यान करके आयी। बाद में वे मुंबई वापस आयी। इस समय जम्मू में दो केंद्रों की स्थापना हुई।

# ।। ॐ ।।

ताई के बदलापूर आने के पश्चात कल्याण और ठाणे में एक एक केंद्र की स्थापना हुई। अब कृष्ण ने आदेश दिया कि १ से ३ नवंबर २००१ को श्रीवर्धन, दिवेआगर और हरिहरेश्वर में जाकर ध्यान और केंद्र स्थापना करना। भारत भ्रमण करने का अर्थ क्या होता है इसका अनुभव आ रहा था। ताई अब बाहर कहीं से भी वापस आने पर बदलापूर में कम से कम दो-तीन दिन ही रुकती थी। उस समय भी आसपास कहीं न कहीं केंद्र स्थापना का कार्यक्रम रहता था या तो फिर गहरा ध्यान या कृष्ण मार्गदर्शन करता था। ताई का लगातार ध्यान करना, केंद्र स्थापना का कार्य और जगह जगह पर जाकर ध्यान यात्राएँ करना ऐसा सब चल रहा था। अपनी जान की परवाह न करते हुए ताई, कृष्ण आज्ञा का पालन कर रहीं थी। गुरु सेवा करना ही सर्वार्थ समर्पण होता है। यह वस्तु पाठ ही वह हम सभी भक्तों को दे रही थी। 'ताई, पन्द्रह साल के बाद तुम्हें कृष्ण कुटीर छोड़ना पड़ेगा। कृष्ण कुटीर और तुम्हारा अब कोई संबंध नहीं रहा।' इन कृष्ण वचनों का अर्थ अब समझ में आने लगा था।

निश्चित कियेनुसार श्रीवर्धन में तीन जगह केंद्र स्थापना हुई। बदलापूर से निकलने के समय से ताई अखंड ध्यानावस्था में थी। श्रीवर्धन और उसके आसपास के सभी गाँव सागर किनारे से लगे हुए हैं। ताई को बड़े बड़े घर, नारियल के बाग, बड़ी बड़ी वाडिया, घर के पिछवाड़े पार करके समुद्र किनारे पर आना, उन्हें बहुत अच्छा लगता जैसे वे गोवा में आ गई है। समुद्र की ओर नजरें स्थिर करके उनका लगातार ध्यान चल रहा था।

बदलापूर से निकलते समय कृष्ण ने कहा था कि, शेटवाड़ी में ध्यान करने के लिए जाना है। शेटवाड़ी वह जगह है जहाँ मार्च १९९३ में हुए बम धमाके में जो आर डी एक्स इस्तेमाल किए गए थे, वह इस किनारे पर उतारे गए थे। यहाँ रहने वाला कोली समाज अत्यंत गरीब है। इस पथरीले किनारे पर हमेशा कर (टेक्स) न चुकाया हुआ स्मगलिंग का माल उतारा जाता है। इन लोगों को तो यह अंदाज़ा भी नहीं था कि वे आरडीएक्स उतार रहे है। इस किनारे पर ऊँची ऊँची दीवारें बनी हुई है। आसपास का पूरा एरिया (भाग) पथरीली चट्टानों का है। हम गए उस

समय समुद्र में ज्वार कम था इसलिए पानी बहुत अंदर की ओर गया हुआ था। पलक झपकते ताई आवेश में आगे की ओर बढ़ी और बहुत अंदर तक जाकर खड़े होकर उन्होंने वहाँ ध्यान किया। दांडाकोली बस्ती के पास सौ साल पुराना भगवान नारायण का मंदिर है वहाँ ताई गयी। इस मंदिर के गर्भ गृह में किसी को जाने की अनुमति नहीं दी जाती है, लेकिन जाने कैसे वहाँ के पंडित जी ने ताई से कहा 'माँ साहब, आप अंदर आए तो भी चलेगा।' इस प्रकार ताई अंदर जाकर ध्यान करके आयी और सभी कृष्ण भक्तों की ओर से दूसरे दिन पंडित जी को पवमान अभिषेक करने के लिए कहा। वहाँ से सीधे हरिहरेश्वर जाकर उन्होंने दर्शन करके ध्यान किया और अभिषेक करके वह वापस बदलापूर आयी।

वहाँ से आते ही ताई ने तुरन्त अंबरनाथ में दो केंद्रों की स्थापना की और आगे रत्नागिरी, कुडाल और गोवा में केंद्र स्थापना करने, ध्यान करने, मडकई में माँ नवदुर्गा और श्री मंगेशी के दर्शन करने के लिए वे गयी।

उस समय ताई ने सोचा क्यों न विश्वजननी की मूर्ति की घडावन करने वाले मूर्तिकार से मिल लिया जाए। वह मूर्ति की घडावन कैसे कर रहा है यह देखकर आया जाए। इस प्रकार ताई जब गोवा में ध्यान कर रही थी उस समय उन्होंने कृष्ण से पूछा, 'कृष्ण कल हम कारकोल जाकर उस मूर्तिकार से मिल कर आए क्या?' "अरे ताई तुमको उसमें क्या समझ आएगा। मूर्तिकार मूर्ति की घडावन कर रहा है। वह देखने की जिम्मेदारी मैंने मेरे एक भक्त को दी है फिर तुम्हें वहाँ जाने की क्या आवश्यकता है? तुम क्यों बीच-बीच में कर रही हो?" ताई बता रही थी, 'इस पर मैं क्या बोलूँगी?' इसलिए आगे मूर्तिकार के यहाँ जाने का कार्यक्रम रद्द किया। ऐसी थी ताई, कृष्ण के आधे वचन में रहने वाली, उसके आदेश का लगातार पालन करने वाली। एक बार उसके न बोलने पर वहीं रुकने वाली आगे न बढ़ने वाली।

ताई ने आगे शांति से श्री मंगेशी के मंदिर में और नव दुर्गा के मंदिर में जाकर कृष्ण के बताएनुसार पूजा -अर्चना और ध्यान किया और बदलापूर वापिस आ गयी।

कृष्ण ने अब बड़ौदा में एक केंद्र स्थापना करके आगे द्वारका, सोमनाथ में ध्यान करने के लिए जाएँगे ऐसा बताया। ताई संग बत्तीस तैंतीस भक्त इस ध्यान यात्रा के लिए निकले। कृष्ण ने बताया इस यात्रा में मैं साक्षात् रुप से आप सभी के साथ रहूँगा और उसकी प्रचिती भी आप सभी को आएगी।

बड़ौदा में केंद्र स्थापना के पश्चात, आगे डाकोरनाथजी के दर्शन किए और

प्रभासपट्टण के भालकातीर्थ स्थान जहाँ कृष्ण ने अपना देह रखा था वह देखकर सभी लोग सोमनाथ पहुँचे। दूसरे दिन सभी की ओर से अभिषेक पूजा करने वाले थे। उस समय ताई ने पूजा का संकल्प कृष्ण आज्ञा के अनुसार भारत देश की समृद्धि, युवा पीढ़ी का तेजोवर्धन और सभी कृष्ण भक्तों का कल्याण ऐसा किया। पंडित जी के गोत्र पूछने पर 'कृष्णभक्त' ऐसा बताया। प्रथम तीन दंपत्ति और ताई ऐसे ७ लोगों ने अभिषेक किया। ताई बाद में मंदिर में एक जगह ध्यानस्थ बैठी। आज कृष्ण ने उन्हें कर्पूर होम करते हुए ध्यान करने के लिए कहा था।

द्वारका के द्वारकाधीश मंदिर में पादुका पूजन का समारोह तो अवर्णनीय हुआ। हाथ भर लंबाई की स्वर्ण पादुकाएँ मंदिर के प्रांगण में संपूर्ण जरी के वस्त्र पर रखी गई थी। उस पर समंत्रक १००८ चांदी के तुलसी पत्र का अभिषेक हुआ और ताजी तुलसी का हार अर्पण किया गया। वहाँ कृष्ण ने उसका पसंदीदा और इच्छा पूर्ति करने वाला आम्ररस सभी को प्रसाद के रूप में बाँटने के लिए कहा। मंदिर में आए हुए सभी भक्तों को पूजा अभिषेक करने मिला और प्रसाद का लाभ भी मिला। जिस चांदी के तुलसी पत्र से अभिषेक किया गया था। वह चांदी के तुलसी पत्र ताई अमेरिका जाते समय विश्वजननी की स्थापना समारोह के लिए साथ ले जाने वाली थी।

उसी मंदिर के प्रांगण में ताई की दाल और चावल से तुला की गई। कृष्ण ने ताई की तुला करने की अनुमति देकर जैसे सभी कृष्ण भक्तों की इच्छा का गौरव ही किया था। उस समय सभी कृष्ण भक्तों के लिए, यंग जनरेशन के लिए और भारत के कल्याण के लिए संकल्प किया गया। वहाँ कुछ कृष्ण भक्तों को ताई के सिर के पीछे हाथ भर लंबाई के बराबर तेजोवलय के दर्शन हुए।

बेट द्वारका के दर्शन लेकर सभी लोग राजकोट की ओर निकले। ताई राजकोट में उतर कर आगे लखनऊ, जयपुर, जैसलमेर जाने वाली थी और बाकी के लोग अहमदाबाद से होते हुए पूना वापस आने वाले थे।

ताई मथुरा, इलाहाबाद में ध्यान करके लखनऊ गयी। वहाँ उन्हें लखनऊ के आयआयएम के एरिया (भाग) में युवाशक्ति के लिए ध्यान करना था। इस प्रकार आयआयएम के एरिया में उनका ध्यान संपन्न हुआ। वहाँ से सब लोग जयपुर आए। वहाँ भी ताई का जगह जगह पर नजरें घुमाकर ध्यान चल रहा था। वहाँ से आगे जैसलमेर में जाकर भारतीय सीमा के आखिरी गाँव 'तनोद' वहाँ भी ध्यान करना था।

जैसलमेर -किशनगढ़, तनोद ऐसा तीस चालीस किलोमीटर का सीधा सीधा रास्ता है। वहाँ का पूरा क्षेत्र रेतीला है। जहाँ-जहाँ आर्मी के बेस कैंप थे वहाँ वहाँ ताई ने नजरें घुमाकर ध्यान किया। जाते समय राह में पोखरण लगा। वहाँ भी ध्यान किया। जगह जगह पर कृष्ण के बताएनुसार कभी रुक कर, कभी खड़े होकर, तो कभी बैठकर ताई ध्यान कर रही थी। ताई पोखरण से थोड़े आगे गई उस समय गाड़ी का टायर अचानक रेती में फँस गया, गाड़ी आगे जा नहीं रही थी। ड्राइवर ने बहुत प्रयत्न किया लेकिन कुछ उपयोग नहीं हुआ। आखिर कृष्ण ने ड्राइवर से कहा तुम यहीं रुको। हम पैदल दस पन्द्रह मिनट में आजू-बाजू घूम कर आते हैं। वहाँ नजरें घुमाकर कृष्ण ने ध्यान किया। वापस आने पर ड्राइवर से कहा, अब फिर से गाड़ी शुरू करने की कोशिश करो। क्या आश्चर्य! गाड़ी थोड़े समय में चालू होकर आगे निकली। ताई का दिन-रात ध्यान चल रहा था। उनका चेहरा अत्यंत तेजस्वी हो गया था। उस पूरे क्षेत्र में दायें बायें बाजू में आर्मी, एयर फोर्स के जवानों का अभ्यास, ट्रायल्स ऐसा लगातार कुछ न कुछ चलता हुआ दिख रहा था शायद युद्ध के पहले की फिटनेस योजनाएँ चल रही थी। कृष्ण ने कहा, "यह सब चल भी रहा हो, लेकिन युद्ध नहीं होगा। उसी के अनुसार आगे वैसा ही हुआ।"

ऐसा करते करते ताई और साथ के भक्त तनोद गाँव तक पहुँचे। यह बॉर्डर का सबसे आखिरी गाँव है। बॉर्डर को बांधी हुई तार की बाड़ी जैसे दिख रही थी। उसके आगे No Man’s Land और उसके आगे पाकिस्तान की बॉर्डर थी। उस कोने तक जाकर (अपनी सीमा के) ताई को ध्यान करना था। इस प्रकार ताई आगे गयी। वहाँ भारत की सीमा से लगा देवी का मंदिर है, जैसे नासिक की सप्तश्रृंगी देवी है। कुछ वैसा ही रूप ली हुई यह देवी है। वहाँ के पंडित जी बता रहे थे यह देवी इस पूरे क्षेत्र की रक्षणकर्ता है। सन १९४७ से इस गाँव पर कई बार बम फेंके गए। मशीनगन से कई बार गोलियाँ चली। प्रचंड नुकसान हुआ, लेकिन इस मंदिर का कभी भी किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं हुआ सिर्फ लिपाई पुताई का काम ही किया गया, मरम्मत की आवश्यकता कभी हुई नहीं।

उस मंदिर के गर्भगृह में ताई ध्यान के लिए बैठी। ताई बता रही थी, ध्यानावस्था में देवी और कृष्ण का संवाद चल रहा था। देवी बता रही थी, "कृष्ण, तुम यहाँ आए बहुत प्रसन्नता हुई। आज मुझे तुम्हारा कोई वस्त्र दो न।" वहाँ देने योग्य वस्त्र मतलब, ताई के गले में यंग जनरेशन के लिए हमेशा बाँधने के लिए कहा हुआ स्कार्फ ही था लेकिन वह कैसे देना? ताई ने गले में बाँधा हुआ स्कार्फ पंडित जी

देवी को कैसे बाँधेंगे? ताई की हिम्मत हो नहीं रही थी। आखिर पूरी हिम्मत करके ताई ने अपने गले का स्कार्फ निकालकर पुजारी को देते हुए पूछा, 'आप यह देवी को अर्पण करेंगे क्या?' पुजारी जी ने पल भर ताई की ओर देखा, स्कार्फ हाथ में लिया और देवी के गले के चारों और पहनाया। जैसे कि देवी ने ताई के रूप में उन्हें दर्शन देकर संकेत दिया कि वह मेरे गले में पहनाओं।

कृष्ण ने कहा अब दिसंबर के आखिरी सप्ताह में अहमदाबाद में केंद्र की स्थापना करनी है। वडोदरा में केंद्र स्थापना के समय अहमदाबाद के अनिरुद्ध मावलणकरजी से कृष्ण ने पूछा, "तुम्हारे यहाँ केंद्र स्थापना करनी है। चलेगा क्या?" उन्हें ताई, उनके द्वारा किए जा रहे कार्य के बारे में कोई जानकारी नहीं थी इसलिए उन्होंने किसी प्रकार का जवाब नहीं दिया जैसे ही वह प्रणाम करने के लिए झुकें और उन्होंने ताई के चरणों पर अपना माथा रखा वैसे ही उन्हें लगा जैसे एक बिजली की लहर उनके पूरे शरीर में सनसना कर गई। घर वापिस आने पर उन्होंने परिवारजनों से चर्चा की और ताई को 'केंद्र करेंगे' ऐसा सूचित किया। यह बात सच है कि किससे, कैसी सेवा करवाँ लेना यह कृष्ण ही निश्चित करता हैं क्योंकि ऐसा भी हुआ है कि किसी किसी ने तो दो दो साल तक केंद्र करने के लिए इंतजार किया लेकिन कृष्ण ने अनुमति नहीं दी।

उन्हें ऐसा लग रहा था कि २४ तारीख को दत्त जयंती के दिन केंद्र स्थापना होनी चाहिए। किंतु कृष्ण ने २७ दिसंबर की तारीख बतायी। २४ और २५ की रात को उन्हें एक अद्भुत सपना आया जैसे ही वह सोते उनकी आँखों के सामने संपूर्ण ब्रह्मांड 'ॐ' के आकार में आता था। उसमें से एक बार 'ॐ' और एक बार 'श्री' ऐसे थ्रीडी में लगातार घूम रहे थे। रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे, आखिर थक-हारकर उन्होंने प्रार्थना की, 'कृपा करके यह सब रोको' तब वह रुका। केंद्र स्थापना के पश्चात जब यह बात उन्होंने ताई को बतायी तब वह मुस्कुराई और उन्होंने उनके एक हाथ पर अंकित ॐकार और दूसरे हाथ पर अंकित श्री दिखाया।

वहाँ से ताई मुंबई वापस आयी और माहीम में एक केंद्र स्थापना करने के पश्चात वे बदलापूर वापस आयी।

३१ दिसंबर साल का आखिरी दिन। इस पूरे साल में ताई का लगातार ध्यान और अथक भ्रमण चालू रहा। उनकी यह भागदौड़ अपने भक्तों के लिए, युवा पीढ़ी के लिए, भारत के लिए, विश्व कल्याण और विश्व शांति के लिए चल रही थी।

कृष्ण ने आज भी नव वर्ष के लिए संदेश दिया।

● सभी को केंद्र में जाना आवश्यक है। स्वयं के लिए, परिवार के लिए, भारत के लिए और विश्व के लिए।

● केंद्र में आने वाले प्रत्येक भक्त का भार मैं उठाता हूँ, जिम्मेदारी लेता हूँ। जो केंद्र में जाते हैं उन्हें ही मैं मार्गदर्शन करूँगा। केंद्र में जाना यह मेरी सेवा है यह समझ कर जाइए।

● आगामी वर्ष में 'ग्यारह' अंक को बहुत महत्व है। प्रसाद कोई भी रखो लेकिन वह ग्यारह की संख्या में होना चाहिए। फल, कोई सामग्री एक हो तो भी चलेगा लेकिन उसके ११ भाग करो और वह मुझे अर्पण करो।

● फिर से एक बार बताता हूँ केंद्र में आने वाले मेरे सभी भक्तों की संपूर्ण जिम्मेदारी मेरी है। उन्हें कभी भी किसी बात का पश्चाताप करना नहीं पड़ेगा। मैं आप सभी के साथ विचरण करता हूँ, लेकिन उसके लिए फिर मेरे ऊपर पूर्ण श्रद्धा भाव रखो।

अब कृष्ण को कोचीन में नेवी के बेस कैंप में जाकर ध्यान करना था। ताई ध्यान के लिए जिनके यहाँ गयी थी वे सज्जन पूरे नास्तिक थे। ईश्वर को न मानने वाले। साधु साधक के ऊपर इनका बिल्कुल विश्वास नहीं था। जब ताई उनके यहाँ गयी तब उन्होंने उन्हें अनेक शंका कुशंकाएँ पूछी। आपका यहाँ आने का उद्देश्य क्या है? ऐसा भी उनका प्रश्न था।' कुछ नहीं कृष्ण ने कहा और मैं यहाँ आयी इस एरिया की सकारात्मक ऊर्जा बढ़ाने के लिए मैं आशीर्वाद देने आयी हूँ।' ताई ने बिना किसी हिचकिचाहट के सीधा सरल उत्तर दिया। यह सुनकर उन सज्जन को लगा इनकी बात कुछ अलग ही है। आगे उन्होंने पूछा, 'आपके विचार से ईश्वर की पूजा, अर्चना कैसी करनी चाहिये।' "अरे तुम जो काम करते हो वह पूरी ईमानदारी से, एकाग्र होकर करो, यही मेरी सच्ची पूजा है। उसी का मैं सेवा के रूप में स्वीकार करता हूँ। पूजा के नाम पर मेरे सामने घंटो घंटो नाक पकड़ कर बैठने की या असुहाते व्रत वैकल्य करने की आवश्यकता नहीं है। भूखे इंसान को दो निवाले देना, दूसरे की खुशी में अपनी खुशी समझना, सभी के साथ इंसानियत से व्यवहार करना, यही सच्ची ईश्वर पूजा है। मानवता का धर्म ही सच्चा धर्म है। उसी से विश्व शांति और विश्व कल्याण साध्य किया जा सकता हैं।

यह सब सुनने के पश्चात वे ताई के शुद्ध, सात्विक, निर्मल इरादे के बारे में आश्वस्त हो गए। वे स्वयं अनुमति निकालकर ताई को ध्यान की महत्वपूर्ण जगहों पर लेकर गए। उनकी शिप पर जाकर भी ताई ध्यान करके आयी। इस बेस कैंप में आगे खूब बदलाव होंगे और भविष्य में इस कैंप का महत्व भी खूब बढ़ेगा, ऐसा भी उन्हें ताई ने बताया।

यहाँ रहते समय ध्यानावस्था में ताई के मस्तक पर गहरा खड्डे के जैसा भाग तैयार हुआ। उस पर कृष्ण ने गुलाब जल का अभिषेक करने के लिए कहा। उस खड्डे में दो गिलास अभिषेक का जल समा गया, एक बूँद भी ताई की गर्दन पर नहीं आयी।

ताई, बाद में बेंगलुरु में दो तीन भक्तों के यहाँ ध्यान करके, हुबली में एक केंद्र की स्थापना करके बदलापूर वापस आयी।

कृष्ण ने एक भक्त को बताया, “मुझे तीन दिन ध्यान करने के लिए अज्ञात जगह पर जाना है, जगह तुम ढूँढो लेकिन मुझे जनसंपर्क नहीं चाहिए इसलिए ध्यान हो सके ऐसी शांत जगह निश्चित करो, लेकिन तुम्हारे पूरे परिवार को साथ में ले लो।” ताई और वह पूरा परिवार २८ से ३० अप्रैल २००२ को कोकण के सागर किनारे में ‘कर्दे‘ नामक गाँव में ध्यान के लिए गए। कृष्ण ने जाते समय ही कहा था, “ताई, मेरे एक भक्त के लिए सप्तशती का पाठ करना है, तुम ध्यान करो और साथ आए हुए भक्त को पाठ करने के लिए कहो।” इस प्रकार वहाँ ताई का लगातार ध्यान चल रहा था और सप्तशती का पाठ भी हुआ।

ताई साथ में भगवद् गीता लेकर गयी थी। उसके ऊपर फूलों का अभिषेक करती और बाहर भ्रमण करके ध्यान करते समय वे अभिषेक के फूल इधर उधर बिखेरती थी।

हुबली में सिद्धारूढ़ स्वामी जी की समाधी है। ताई वहाँ दर्शन के लिए गई थी। समाधी के पास जाने पर कृष्ण ने ताई से कहा, ”ताई, तुम्हारा भी ऐसा ही होगा।” साथ आए हुए भक्त बोलने लगे, ’कृष्ण, क्या यह? ऐसा क्यों बोल रहे हो, अभी तो जगत् जननी की कामों की शुरुवात हो रही है।’ इस पर ताई सिर्फ मुस्कुराई और हमेशा की तरह स्वयं के सिर पर उन्होंने हाथ घुमाया।

“ताई, भक्त प्रह्लाद का इस युग का अवतार कहलाएँ जाए ऐसे राघवेंद्र स्वामी, उनके दर्शनों के लिए जाना हैं।” ऐसा कृष्ण ने बताया स्वामी जी और ताई में कुछ

तो अतूट बंधन है। दोनों नारायण भक्त तो है ही साथ ही साथ कृष्ण कुटीर के भूमि पूजन के समय भी स्वामी जी की समाधी पर लगाकर लाए हुए चांदी के तुलसी पत्र से यहाँ का भूमि पूजन उसने किया था। विद्यावाचस्पति श्री शंकर अभ्यंकर जी यह सकल संतकोश गाथा तैयार कर रहे थे। वे बदलापूर में दर्शन के लिए आए। कृष्ण ने उस समय सभी कृष्ण भक्तों की ओर से पैसे देकर राघवेंद्र स्वामी जी की जानकारी इस कोश में डालने के लिए कही। जगत् जननी की स्थापना के पहले कृष्ण, ताई को राघवेंद्र स्वामी जी की मुलाकात लेने के लिए जाने कह रहा था। उस हिसाब से कुछ कृष्ण भक्त और ताई मंत्रालय पहुँचे। वहाँ का वातावरण पूरी तरह से कन्नड संस्कृति का। वहाँ सभी लोग अत्यंत कर्मठ, अनुशासन का पालन, छुआछूत साथ ही साथ उतने ही कड़ी रीति से धार्मिक आचरणों का पालन करने वाले थे।

वहाँ स्वामी जी का मंदिर तथा अंदर जाकर समाधी का वृंदावन है। वहाँ तक कोई भी नहीं जा सकता। महिलाएँ तो बिल्कुल भी नहीं जा सकती। वहाँ जाकर कृष्ण ने बताया, "हम पहले नाश्ता करेंगे और फिर दर्शन के लिए जाएँगे।"साथ आए हुए भक्तों को लगा ऐसे कैसे जाना। देर हो जाएगी, मंदिर भी बंद कर देते हैं लेकिन कृष्ण बोल रहा है इसलिए सभी लोग नाश्ता करने के लिए गए। वहाँ से आकर देखा, तो मंदिर बंद हो चुका था। इतने में कृष्ण ने कहा, "वापस मत जाओ। एक प्रदक्षिणा पूरी लगा लो," इसलिए सभी भक्त बाहर से प्रदक्षिणा लगाने लगे। इतने में मंदिर का एक आदमी ताई के भक्तजनों में से एक व्यक्ति को (जिससे उनकी पहले ही थोड़ी पहचान थी।) बोला, 'काका, आप लोग यहाँ क्या कर रहे हो?' 'प्रदक्षिणा लगा रहे है, मंदिर बंद हो गया न।' जरा चिढ़ते हुए उस सज्जन ने कहा। 'ऐसा कीजिए, इस दरवाजे से अंदर आ जाईए।' ऐसा बोलकर उस सज्जन ने उनकी कमर में बँधी हुई चाबी से दरवाजा खोला, और इन सभी को अंदर लिया और समाधी के सामने बिठाया। अब कृष्ण कहने लगा, "मुझे समाधी के पास जाकर ध्यान करना है और यह तुलसी पत्र भी समाधी को लगा कर लाना है।" यह सुनकर वह काका अत्यंत अस्वस्थ हो गए, क्योंकि किसी महिला ने वहाँ वृंदावन के पास जाना, यह तो बिल्कुल असंभव था। वैसा विचार भी मन में लाना यहाँ पाप समझते हैं लेकिन कृष्ण का यह वाक्य पूरा होने से पहले ही पुजारी जी आए और ताई से कहने लगे, 'माँ साहब, आप इधर से अंदर आइये और वहाँ अंदर बैठकर भी ध्यान करेंगी तो भी चलेगा।' अब तो सभी भक्त आश्चर्यचकित हो गए लेकिन कृष्ण का काम हो चुका था। ताई का ध्यान पूर्ण हुआ। तुलसी पत्र भी समाधी

को लगा कर लाए गए। एक तो बुद्धि दाता मैं हूँ यह कृष्ण का वचन और ताई के रूप में ही साक्षात् नारायण विचरण करते हैं। पुजारी जी को शाय़द इसी बात की पुष्टी मिल जाने पर ताई को वे अंदर समाधी के पास ले गए होंगे। पुजारी जी महा भाग्यवान!

# ।। ॐ ।।

अब ताई का पूरा ध्यान विश्वजननी की आगे होने वाली स्थापना की ओर लगा था। लॉस एंजेलिस में अभी तक मंदिर की जगह के संबंध में कुछ निश्चित नहीं हुआ था। उससे संबंधित वहाँ के लोगों के फोन लगातार आ रहे थे। बहुत लोग देवी के लिए ले जाने वाली वस्तुएँ लाकर देने की इच्छा प्रकट कर रहे थे। उनके भी फोन लगातार आ रहे थे। ध्यान का समय भी बढ़ गया था। ताई लगातार ध्यानावस्था में ही रहती थी। उस समय कृष्ण ने बताया कि, विश्वजननी की स्थापना होना अत्यंत आवश्यक क्यों है।

"आज तक योगेश्वर की प्रार्थना हुई। अब उसके साथ शक्ति की आराधना होना भी अत्यंत आवश्यक है। संपूर्ण विश्व का कार्य करने के लिए, विश्व शांति के लिए अर्थात् पूरे विश्व को संभालने के लिए शिव और शक्ति दोनों की आराधना होना अत्यंत आवश्यक है। आज के युग में ऋषि-मुनियों के जैसी कठोर तपस्या करना किसी के लिए भी संभव नहीं है इसलिए विश्वजननी की मूर्ति स्थापित करना और उसकी भरपूर आराधना करना यह तपस्या के जैसे ही महत्वपूर्ण है।

शिव शक्ति की आराधना की जो आवश्यकता आज निर्माण हुई है, उस आवश्यकता को ही मैं 'विश्वजननी' मानता हूँ। आराधना का मतलब तो भी क्या है? आपके अंतरंग में स्थित ॐकार और शक्ति को जागृत करना। इस हेतु से ही मैंने विश्वजननी मंदिर की योजना बनायी है।

हमारे ऋषि-मुनियों ने मानव कल्याण के लिए जो तपस्या की, कार्य किया वह समय के प्रवाह में वहीं रुक गया। वर्तमान समय के अनुरूप वह काम पुनः चालू करना होगा। इसे ही कार्य कहते हैं। इस कार्य के एक भाग के रूप में विश्वजननी की स्थापना करना, ऐसी मेरे एक भक्त की दिली इच्छा थी। उस समय उसकी वह इच्छा पूरी नहीं हुई इसलिए उसकी इच्छा पूर्ति के प्रतीक के रूप में पहली विश्वजननी स्थापना अमेरिका के लॉस एंजेलिस में करना निश्चित किया।"

इसलिए देवी से प्रार्थना करने ताई मडकई गई थी। पंडित जी ने देवी को फूल चढ़ाकर नौ जगहों पर देवी की स्थापना करने की स्वीकृति माँगी। बहुत समय बीत

गया, लेकिन स्वीकृति मिल नहीं रही थी। सभी लोग अस्वस्थ हो गए। ताई, पंडित जी पूरे समर्पण भाव से देवी से बिनती कर रहे थे लेकिन कुछ उपयोग नहीं हो रहा था। अचानक ताई कृष्ण भाव में जाते हुए आगे की ओर गयी और बताने लगी, "अरे, उससे मत पूछो मैं बताता हूँ। प्रथम स्थापना एलए में दिनांक ७ अक्टूबर २००२ को और दूसरी भारत में, दिल्ली में करनी है। वह भी मिलिट्री एरिया में। बाकी की मूर्तियों के बारे में बाद में बताऊँगा।" इन दो स्थापनाओं के बाद कृष्ण की योजना कुछ अलग ही थी।

बाद में कारकोल के प्रसिद्ध मूर्तिकार श्री राधा माधव शेणवी जी को मूर्ति की घड़ावन का काम बताया। उन्होंने मडकई में आकर देवी की प्रार्थना की और मूर्ति का सूक्ष्म निरीक्षण करके उसे अपनी आँखों में समाहित कर लिया तथा अपने आगे के काम की शुरुवात की।

ताई जुलाई महीने में अमेरिका गयी। उस समय तक मूर्ति किस मंदिर में, किस जगह पर स्थापित करनी है यह बिल्कुल निश्चित नहीं हो रहा था। वहाँ के भक्त जगह की खोज कर रहे थे। अब ताई के प्रत्यक्ष रूप से वहाँ आ जाने से इस काम में गति आ गयी। कुछ भक्तों ने ताई से कहा, हमारे घर में मूर्ति की स्थापना की तो भी चलेगा लेकिन इस बात पर ताई ने कहा, 'कृष्ण कह रहा है, "ऐसा नहीं होगा, क्योंकि मुझे वह मंदिर जैसा ही होना चाहिए। उस जगह पर कभी भी, कोई भी दर्शन के लिए, आराधना के लिए आ सके ऐसी जगह होनी चाहिए जो कि घर में असंभव है इसलिए कोई मंदिर ही देखो।"

लॉस एंजेलिस में निवास करने वाले श्री उनियाल जी। उनके आउटहाउस में श्री दुर्गा देवी का मंदिर था। वह देवी के उपासक थे। उनके मंदिर में श्री गणेश जी, दुर्गा देवी और श्रीयंत्र की स्थापना की हुई थी। वह उसकी पूजा- अर्चना शास्त्रोक्त रीति से करते थे। वहाँ विश्वजननी की स्थापना कर सकते हैं क्या? ऐसा उनसे पूछने का निश्चित हुआ। इस प्रकार कुछ भक्त उन्हें जाकर मिले। उन्हें ताई के कार्य, कृष्ण कार्य इन सब बातों की कल्पना दी। कृष्ण ने अब विश्वजननी की स्थापना करने के लिए कहा है तथा हम जगह की खोज में हैं यह भी बताया। उनियाल जी ने स्वयं से संबंधित जानकारी दी और यहाँ देवी की स्थापना की तो चलेगा ऐसा भी बताया। हम इस देवी की भी पूजा, अर्चना, आराधना पूरे शास्त्रोक्त रीति विधी विधान के साथ करेंगे ऐसा आश्वासन भी सबको दिया।

ताई को जब इस बारे में सूचित किया तब ताई न्यूयॉर्क से दो दिनों के लिए लॉस एंजेलिस में आकर श्री उनियाल जी से मिली। ताई ने कहा इस जगह के लिए कृष्ण की सहमति है और अब आप सब सात अक्टूबर को होने वाले कार्यक्रम की तैयारी कीजिए।

उनियाल जी जब अठारह साल पहले भारत आए थे, तब उन्होंने अपने गुरु से अमेरिका में आने की प्रार्थना की थी। तब उन्होंने कहा था, 'अरे, मुझे आना संभव नहीं है लेकिन अठारह साल बाद भारत से एक संत स्वरूप महिला तुम्हारे यहाँ आएँगी। ताई से मिलने पर श्री उनियाल जी को उन संवादो का स्मरण हुआ। दूसरे दिन उनियाल जी बता रहे थे, 'आप लोगों के जाने के बाद मुझे रात में सपना आया, जिसमें एक घाघरा चोली पहनी हुई बालिका मेरे पास आयी और मुझे अठारह साल पूर्व का मेरे और मेरे गुरु के संवाद का स्मरण हुआ। मुझे उस संवाद से प्रमाण मिल गया कि वह संत स्वरूप महिला अर्थात् प. पू. ताई ही है इसलिए मैंने तुरंत विश्वजननी की मूर्ति स्थापना से संबंधित स्वीकृति दे दी लेकिन मेरी एक ही प्रार्थना है कि नवरात्रि के नौ दिनों में प. पू. ताई ने मंदिर में आराधना करने के लिए प्रतिदिन आना चाहिए। शायद उन्हें भी कृष्ण के, ताई के, सहवास का मोह मोहित कर रहा था।

भारत के कृष्ण भक्त भी विश्वजननी की स्थापना में कुछ ना कुछ सहयोग देना चाहते थे। सभी ने अपने अपने तरीके से वस्तु या सेवा देने की पेशकश की। मंगलसूत्र, तुलसी हार, चाफे का गजरा, मखर, छत्र, चूड़ियाँ, पायल, कमर पट्टा, नथ, नौ दिनों में परिधान करने के लिए अलग-अलग रंग की रेशमी साड़ियाँ, सूखा प्रसाद, भिन्न भिन्न प्रकार के इत्र, अष्टगंध, धूप, दीये ऐसा पूजा साहित्य था। उसी प्रकार आए हुए भक्तों को प्रसाद के रूप में देने के लिए नवदुर्गा की प्रतिमा, लॉकेट, फोटो ऐसी असंख्य वस्तुएँ इकट्ठा हो गई थी। भगवान द्वारकाधीश के चरणों पर रख कर लायी हुई तथा राघवेंद्र स्वामीजी की समाधी पर लगाकर लाए हुए बारह सौ चांदी के तुलसी पत्र भी थे। ऐसी सब जय्यत तैयारी हुई थी। मूर्तिकार का संदेशा आया मेरा काम पूरा हो गया है, आप कभी भी मूर्ति लेने आ सकते हैं। मूर्ति वहाँ से मुंबई लाकर अमेरिका भेजनी थी।

अब मूर्ति भेजना कैसे? हवाई जहाज से भेजना तो बहुत खर्चीला होगा। मूर्ति काले पाषाण से बनी हुई और साडे तीन फुट ऊँचाई की होने के कारण बहुत वजनदार थी। या जहाज से भेजी जाए? कृष्ण भक्तों का एक-एक पैसा योग्य जगह पर ही

खर्च होना चाहिए। भक्तों ने मुझे स्नेहपूर्वक दी हुई कोई भी चीज व्यर्थ नहीं जानी चाहिए, ऐसा कृष्ण का कटाक्ष था और ताई वह जान से भी ज्यादा सँभालती थी इसलिए मूर्ति समुद्र मार्ग से ही भेजी जाए ऐसा निश्चित हुआ। कृष्ण का आदेश आया, “मेरे भक्त भी हवाई जहाज से आते जाते हैं तो साक्षात् विश्वजननी को समुद्र मार्ग से इतनी यात्रा करने क्यों लगा रहे हो? उसे हवाई जहाज से लेकर आओ।”

श्री गायतोंडे काका गोवा से मूर्ति लेकर मुंबई आने के लिए निकले। गाड़ी में पीछे की सीट पर मूर्ति का लंबा चौड़ा लकड़ी का बॉक्स रखा हुआ था। ठाणे के क्रीक ब्रिज पर पहुँचने में रात हो गयी। वहाँ चेकपोस्ट था। वहाँ गाड़ियों को रुकवा कर चेकिंग चल रही थी। उस समय उनके ध्यान में आया की मूर्ति लेकर तो वह निकले लेकिन उसका बिल, तैयार करने का सर्टिफिकेट यह कुछ भी साथ नहीं लिया। अब तो उनकी आँखों के सामने तारें चमकने लगे। मूर्ति से संबंधित कागज पत्र पास न होते हुए बॉक्स चेक पोस्ट से सही सलामत बाहर निकालना अत्यंत कठिन काम था। आखिर उन्होंने कृष्ण से प्रार्थना की, ‘अरे, तुम्हारा ही काम है, तुम ही संभालो, मूर्ति से संबंधित कागज पत्र न लेते हुए निकला, गलती हो गई, क्षमा करो और संभाल लो।’ ऐसी प्रार्थना वह कर ही रहे थे तब तक गाड़ी चेक पोस्ट के पास आ गयी। गाड़ी चेकिंग के लिए रुकवाई, उस आदमी ने गाड़ी में टॉर्च मारा और कहा, ’जाने दो।‘ बॉक्स में क्या हैं, वजन कितना है, अंदर क्या है, किसी प्रकार की कोई जाँच नहीं हुई। कागज पत्र देखने की माँग भी नहीं की जैसे उसे कुछ दिखा ही नहीं। यह तो सिर्फ है कृष्ण कृपा से ही संभव है!

लेकिन मुंबई से गोवा वापस जाते ही मूर्ति से संबंधित सभी कागज पत्र उन्होंने तुरंत नारकर काका के यहाँ भेज दिए।

कृष्ण की ओर से मूर्ति हवाई जहाज से भेजने की अनुमति मिलने पर, काका कृष्ण से प्रार्थना करके एक एजेंट से मिलने गए। वहाँ जाते समय साथ में ‘श्रीकृष्णलीलावली‘ पुस्तक की एक प्रति लेकर गए। उस आदमी को ताई के बारे में पूरी जानकारी दी।‘ ‘श्रीकृष्णलीलावली‘ किताब दी। कृष्ण के आदेशानुसार विश्वजननी मूर्ति की स्थापना लॉस एंजेलिस में होने के बारे में बताया। इस पर उसने कहा ‘आप दो दिनों के बाद आइए फिर मूर्ति कब भेजी जा सकेगी, एयर फ्रेट कितना होगा यह सब बताऊँगा आगे सिर्फ एक वाक्य बोला, यह सब मैं सेवा के रूप में करूँगा।’

काका ने दो दिनों के बाद जब फोन किया। तब उसने जो कुछ भी कहा, उस पर काका का विश्वास बैठ नहीं रहा था। मैं कुछ गलत तो नहीं सुन रहा हूँ ऐसा उन्हें लगा। समुद्र मार्ग से यदि मूर्ति भेजी गयी होती तो जितना खर्च आता उससे भी कम खर्चे का मूल्यांकन उसने किया था। उस आदमी ने 'मैं सेवा के रूप में करूँगा' यह जो वाक्य कहा था उसका अर्थ अब समझ में आया था। यह तो सिर्फ कृष्णकृपा से संभव हैं।

इस तरह मूर्ति लॉस एंजेलिस आ गई लेकिन मूर्ति की जगह निश्चित नहीं हुई थी इसलिए मूर्ति फिलहाल हवाई अड्डे से लाकर कहाँ रखी जाए, इस बारे में भक्तों के बीच एकमत न होने के कारण मूर्ति वैसी ही एयरलाइंस के गोडाउन में रही। आखिर जब उनियाल जी के यहाँ जगह निश्चित हुई तब मूर्ति गोडाउन से लाने के लिए गए, उस समय मूर्ति निश्चित दिनों के अंदर नहीं ले जायी गयी, इसलिए बहुत अधिक डीमरेज चार्जेस भरने पड़े। कृष्ण को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आयी। कृष्ण ने ताईसे कहा, "ताई, ऐसे डीमरेज भरकर मेरे भक्तों का पैसा व्यर्थ खर्च हुआ। मुझे बिल्कुल पसंद नहीं आया। यह गलती हुई है और उसकी कीमत तुम्हें देनी होगी।" इस पर ताई ने कहा, 'कृष्ण तुम इतने दयालु हो और इस पूरे प्रकरण में मेरी गलती क्या और कितनी यह सब तुम जानते हो! इसलिए तुम जो कहोगे वह सजा मुझे कबूल है सजा देने वाले भी तुम और उसको भोगने की शक्ति देने वाले भी तुम हो।' कितना उच्च समर्पण!

उनियाल जी के मन में यह मंदिर भविष्य में और बड़ी जगह में ले जाने का था इसलिए ताई ने कहा, फिलहाल यह मूर्ति चल स्वरूप में यही रखेंगे इसलिए एक लकड़ी का बड़ा प्लेटफार्म तैयार किया गया और उसके बीच में मूर्ति के आकार की विशेष चौखट बनाई गयी। जिससे मूर्ति उसमें बराबर बैठ सकें।

ताई ने मूर्ति मंदिर में लाने के लिए दोपहर का समय दिया था। सही मुश्किल तो मूर्ति उतारते समय हुई। मूर्ति उठा सके ऐसे सात आठ लोग ही थे। अब सही परीक्षा की घड़ी थी। मूर्ति का वजन बहुत ज्यादा होने के कारण गोडाउन से लाकर गाड़ी में चढ़ाना इसी में बहुत कष्ट हुए। मूर्ति अब गाड़ी से उतार कर और आगे बीस पच्चीस कदम चलकर मंदिर में लाकर रखनी थी। बड़ा मुश्किल काम था। कोई मदद कर सके ऐसा आसपास भी कोई दिख नहीं रहा था। ताई, शांति के साथ सभी की भागदौड़ देख रही थी। आखिर थोड़ी देर बाद वे बोली, 'अरे कृष्ण को पुकारो, प्रार्थना करो, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' जाप करना शुरू करो और

फिर देवी को उठाओ।' आपको आश्चर्य लगेगा लेकिन थोड़ी देर में ही भक्तों ने मूर्ति उठाकर दहलीज पर लाकर रखी। पैकिंग खोलकर मूर्ति बाहर निकाली तो मूर्ति एकदम व्यवस्थित थी।

उनियाल जी के मन की उत्सुकता तो कुछ और ही थी। उन्हें वह मूर्ति कितनी ऊँची है, उनकी दुर्गा माँ से तो ऊँची नहीं है, ऐसी चिंता लग रही थी। मूर्ति खड़ी करने पर उन्होंने देखा तो दोनों मूर्तियों की ऊँचाई एक जैसी थी। वह बोले बहुत पहले से उन्हें ऐसा लगता था कि इस मंदिर में एक और देवी आएँगी। उसी प्रकार हुआ भी, दुर्गा माँ के साथ साथ काली माँ भी आ गयी।

ताई का शांति से बातचीत करना, कृष्ण पर उनका अतूट विश्वास, उनमें कथित दैवीय शक्ति, इन सब के कारण उनियाल जी बहुत अधिक प्रभावित हो गए। उनियाल जी ने जगह देते समय एक पैसे की भी अपेक्षा नहीं रखी थी। उनका कहना था कि, माँ दुर्गा के यहाँ उनकी बहन काली आयी है तो मैं किस बात के पैसे लूँ बल्कि मेरी सेवा को ही दोनों के चरणों में पहुँचने दो।

आखिर वह सुवर्ण दिन का उदय हुआ। ७ अक्टूबर २००२ नवरात्रि का प्रथम दिवस। विश्वजननी का स्थापना समारोह संपन्न हुआ। योगेश्वर के वैभव को शोभा दे, इसी ठाठ-बाट से हुआ। ताई को अत्यंत समाधान महसूस हुआ।

ताई ने उस दिन संदेश देते हुए कहा, 'वर्तमान समय में विश्वजननी की आराधना की अत्यंत आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति मैं मेरे भक्तों की ओर से ही करती हूँ। मैं एक सीधी-साधी सामान्य औरत! कृष्ण ने मुझे अपनी ताई कहा इसलिए आज यहाँ खड़ी होकर मैं बोल सकती हूँ।

इतने दिन कृष्ण बता रहा था, "ताई अब तुम ताई नहीं रही। कृष्ण कुटीर का और तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। अब तुम्हें पूरा विश्व ही मेरा घर (वसुधैव कुटुंबकम्) इस भावना से रहना, विचरण करना चाहिए। विश्व मेरा और मैं विश्व की ऐसी भावना रखते हुए तुम विश्वजननी बननी चाहिए।" कल रात के ध्यान में बताया, "अब तुम विश्वजननी बन गयी हो। अब मैं तुम्हें ताई नहीं कहूँगा। इसके आगे से मैं तुम्हें अपनी साथी समझूँगा।" जैसे कृष्ण ने संकेत दे दिया कि ताई की आध्यात्मिक तैयारी कितनी उच्च कोटि की है।

आगे वह बताने लगी, 'कृष्ण ने हमेशा का संदेश दिया' "मेरे ज्ञात और अज्ञात

ऐसे सभी भक्तों के लिए, यंग जनरेशन के लिए, भारत के लिए और विश्व के लिए समय-समय पर मुझे दौड़ना पड़ेगा। उनके पीछे खड़ा रहना पड़ेगा। इसके लिए जिस ऊर्जा की आवश्यकता है वह कैसे प्राप्त होगी, तो वह आपको सामुदायिक प्रार्थना से प्राप्त हो सकती है इसलिए मैंने जगह-जगह पर श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना की है। हर सप्ताह केंद्र में उपस्थित रहकर नियमित उपासना कीजिए। वहाँ आकर मुझे सिर्फ भावना के फूल अर्पण कीजिए और भक्ति का भोग दिखाइए। आप अपने घर में जो कुछ भी खाते-पीते हो, वह मेरा ही प्रसाद है। विश्वजननी और विश्वसखा उनका ॐकार रूप, इसलिए 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' यह जाप १५ मिनिट और 'ॐ महान शक्ति देवताय नमः' यह जाप ५ मिनट कीजिए।

सभी कृष्णभक्तों के स्नेहस्वरूप विश्वजननी स्थापित हुई है। सभी भक्तों को कृपाछत्र का अनुग्रह देने के लिए खड़ी है। सभी भक्त यहाँ आइए, आराधना कीजिए। आराधना का महत्व अपनी अपनी योग्यतानुसार जान लीजिए।"

आगे विश्वजननी ने, अपने और भक्तों के बीच के रिश्ते के बंधन को उजागर करते हुए कहा, "समय के अनुसार ओटी (गोद भरना) शब्द का अर्थ भी बदल गया है। प्राचीन रीति-रिवाजों के अनुसार ओटी अर्थात् साड़ी, चोली, नारियल, पाँच फल ऐसी सामग्री से सजी ओटी की थाली अपनी आँखों के सामने आती है। अब वह सब लाने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। मुझे ओटी के रूप में कोई फल अर्पण कीजिए और वह प्रसाद के रूप में घर ले जाइए। संपूर्ण श्रद्धा भाव के साथ आते समय अपने दो हाथ और एक मस्तक इतना ही लेकर आइए। मैं भावनाओं की भूखी हूँ लेकिन एक बात ध्यान में रखिए, मैं योगेश्वर के जैसी दयालु बिल्कुल नहीं हूँ। जो भी जिस भावना से मेरी ओर देखेगा, मुझे शरण आएगा उसके पास उसी हिसाब से मैं दौड़ कर जाऊँगी लेकिन अपराध के लिए मेरे पास कृष्ण जैसी-योगेश्वर जैसी क्षमा नहीं है। जो जिस भाव से मुझे पूजता है उसी प्रकार से मैं उससे व्यवहार करूँगी, नहीं तो उन्हें उनकी गलती का एहसास कभी नहीं होगा। उनमें नम्रता की भावना आएगी ही नहीं वैसे ही उनके जीवन में सुधार भी नहीं होगा। उनकी भलाई के लिए ही मुझे यह सब करना पड़ेगा, उन्हें बुरा लगा तो भी चलेगा। योगेश्वर ने जो कार्य मुझे सौंपा है वह सुचारू रूप से करने के लिए इन सब नियमों का पालन करना ही पड़ेगा ऐसा करने से सभी को अपने कर्त्तव्य का एहसास होगा। 'भक्ति' का अर्थ उन्हें समझ में आएगा। उन्हें समझा देना यह भी मेरा ही काम है।"

इतना बोलकर ताई ने नवदुर्गा देवी की प्रार्थना की।

*नवदुर्गामाते, माँ, अगाध तुम्हारी माया,*
*भक्तों को तुम, देती हो छाया*
*माया की चादर ओढ़ाकर,*
*लाज रखती हो तुम हमारी।*
*क्षण क्षण का एहसास, स्मरण करते रोमांच होता।*
*स्पष्ट बोलों से, गलतियाँ हमें दिखाती हो।*
*क्षमा याचना करने पर माया का,*
*कृपा का हाथ घुमाती हों।*
*माँ एक ही दुआ तुम्हारे से, माँ एक ही दुआ तुम्हारे से*
*अच्छी बुद्धि दो, तुम्हारे भक्तों को, तुम्हारे भक्तों को*

*ॐ नमो भगवते वासुदेवाय*
*ॐ महान शक्ति देवताय नमः*

उनियाल जी की बिनती के अनुसार ताई नौ दिन रोज मंदिर जाकर योगेश्वर के सुझाएनुसार वैसा ध्यान, जाप, पूजा करके देवी की यथासंभव आराधना कर रही थी।

● कृष्ण ने उन नौ दिनों में कहा, यह मंदिर स्थापित करने जिन भक्तों ने प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से मदद की उन सबके लिए तुम ध्यान करो।

● कुलदेवता की आराधना करो।

● इस आराधना के हेतु कृष्ण ने नीचे दिये निम्न मंत्रों का जाप करते हुए आराधना करो ऐसा बताया और वहाँ उपस्थित भक्तों की ओर से जप करवाँ भी लिया। वह मंत्र नीचे दिए हुए हैं।

अ) *लक्ष्मीदेवि महामाये, देहि मे अनुग्रहम्।*
*तथा च संपत्तिधनम्, आयुरारोग्यमसंपदाम्।।*

ब) *ॐ नमो भगवते वासुदेवाय*

क) *सर्वमंगलमांगल्ये, शिवे सर्वार्थसाधिके*
*शरण्ये त्रयम्बके गौरी, नारायणि नमोऽस्तुते।*

ड) *ॐ महान शक्ति देवताय नमः*

इ) *शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे*
*सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणी नमोऽस्तुते*

उ) *विश्वजननि नमोऽस्तुते, विश्वजननि नमोऽस्तुते*

ऐसी आराधना होने के पश्चात, कृष्ण ने वहाँ उपस्थित भक्तों को अंजलि अंजलि भरकर पुष्प देते हुए कहा, “यह पुष्प आप अपने घर के मंदिर में भगवान के पास संभाल कर रखिए। मैं तीन साल बाद फिर से आऊँगी, तब मैं वह माँग लूँगी लेकिन प्रतिदिन इसे नमस्कार अवश्य कीजिए।”

# ।। ॐ ।।

इस उत्सव के समय कृष्ण ने बताया, “यहाँ जैसा उत्सव हुआ है वैसा ही उत्सव कृष्णकुटीर में करना है। मेरे जिस किसी भक्तों को आना है वह सब बदलापूर में अवश्य आइए। सुबह शाम महाप्रसाद रहेगा। वह भी क्या बनेगा यह भी भगवान ने बताया।”

यह उत्सव सभी भक्तों की उपस्थिति में अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। दूर गाँव गाँव के कृष्ण भक्त अपनी उपस्थिति लगाकर गए। ताई, नहीं बल्कि साक्षात् विश्वजननी के हाथों विश्वजननी की स्थापना का प्रसाद, फोटो, आशीर्वाद ऐसा सब कुछ भरभर कर लेकर गए। सभी ओर खुशियाँ ही खुशियाँ थी।

पूना के कुछ कृष्ण भक्त इस उत्सव के लिए गए थे। हमेशा की तरह ताई, कृष्ण की कुछ लीलाएँ बता रही थी। बताते बताते वह बोली, ‘कृष्ण ने मुझे बताया है कि मेरे इस प्लेटफार्म पर तुम्हारा फोटो रखूँगा!‘ ऐसा बोला और तुरन्त उन्होंने अपने सिर पर हाथ घुमाया और वह स्वयं से ही बोली, - रुकती हूँ कृष्ण - वह बोल रहा है अभी मत बताओ।‘ ऐसा बोलते बोलते, फिर से एक बार अपने सिर पर हाथ घुमाया। बाद में अत्यंत स्नेह से कृष्ण के चरणों पर हाथ घुमाकर उसकी ओर नजर लगाते हुए वह ध्यानवस्था में गयी।

किसी को क्षण भर कुछ समझ में नहीं आया। अनेकों बार कृष्ण उन्हें ऐसा रुकने के लिए कहता था। इस समय उसकी माया अलग होती थी। हॉल में पैंतीस चालीस लोग एक साथ बैठे थे। इतने लोगों ने एक साथ यह सुना था कि, ‘तुम्हारा फोटो यहाँ रखूँगा।‘ लेकिन उसका मतितार्थ किसी के भी समझ में नहीं आया? और उसका अर्थ समझ में आने के लिए १० फरवरी २००३ का दिन उदय हुआ। वे महिलाएँ बता रही थी, इस प्रकार की कोई शंका हमारे मन को स्पर्श भी नहीं हुई। अजब है कृष्ण की माया! भक्तों के दुखों की चिंताओं का बोझ वही उठाता है।

कृष्ण ने ताई से कहा था अब तुम जगत् जननी बन गयी हो। ऐसा होते हुए भी ताई अपने व्यवहार के द्वारा अनन्य भक्ति या समर्पण भाव कैसा होना चाहिए, यह जैसे वह हमें दिखा रही थी, कुछ ऐसा ही अनुभव दर्शानेवाली आगे एक घटना घटी-

फूल वाली मौसी प्रतिदिन शाम के समय दर्शन के लिए आती और ताई के साथ थोड़ी बहुत बातचीत करके जाती। यह उत्सव चलते समय एक दिन वह आयी भीड़ थोड़ी कम थी इसलिए वह ताई के साथ बातचीत करते बैंठी। उन्होंने तीसरी बार सोलह सोमवार के व्रत किए थे। उसका दिसंबर में उद्यापन करना था। वह बोली इस बार सोच रही हूँ, सोलह दंपतियों को साड़ी चोली, धोती ऐसा सब कुछ देकर उद्यापन करना। उस पर ताई बोल गई, 'मौसी, खर्च की दृष्टि से यह बहुत ज्यादा होगा है कि नही? देखो कैसा होगा।'

सभी कार्य होने के पश्चात ताई ध्यान करने के लिए बैठी लेकिन कृष्ण का अपना बार-बार एक ही बताना शुरू हो गया, "मुझे तो बाबा किसी के बीच बोलना अच्छा नहीं लगता।" ताई याद करने लगी, आज मैं जाने अनजाने में किसी को कुछ बोल गयी क्या? कृष्ण का ताई के लिए एकदम कड़क नियम था। ताई ने अपने तीनों बच्चों के साथ-साथ और किसी ओर के बारे में भी कोई भी सलाह पूछे बगैर देना नहीं। वह याद करने लगी कि, मैं किसी से ऐसा क्या बोली, लेकिन उन्हें कुछ याद नहीं आ रहा था लेकिन कृष्ण तो अपनी ज़िद्द छोड़ने के लिए तैयार ही नहीं था। ऐसा रात भर चलता रहा। प्रातः काल के ध्यान में ताई ने कहा, 'नहीं मेरे लाल, मुझे समझ में नहीं आ रहा मैं क्या बोली?' इस पर उसने तुरन्त कहा, "कल शाम को तुम मौसी को बोली थी खर्च की दृष्टि से यह बहुत ज्यादा होगा है कि नहीं? वह मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। मेरा नियम तुमने तोड़ा। अब क्या करना? गलती की सजा तो होनी ही चाहिये! अब एक काम करो, अब सुबह जब मेरे भक्त आने लगेंगे तब तुम अनुभव बताती हो, उस समय सबके सामने खड़े होकर तुम्हारे हाथों से कैसी यह गलती हुई वह बताना और मेरी माफी माँगना। रोज ऐसा सुबह-शाम मैं बताऊँगा तब तक करते रहना।"

सुबह से ताई यह प्रसंग बताकर अभी भी उनके हाथों से कैसी गलतियाँ होती हैं, और उन्हें तैयार करने के लिए अभी भी परब्रह्म को कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं यह सबको बता रही थी और माफी माँग रही थी।

कितना उच्च कोटि का आत्मसमर्पण! कितनी विनम्रता! विश्वजननी पद की मानकरी होकर भी सभी भक्तों के सामने माफी माँगना अर्थात् गुरु आज्ञा का शत प्रतिशत पालन कैसे करना, इसका आदर्श उन्होंने पालन करके हमें प्रत्यक्ष रूप से दर्शाया। नहीं तो हम अपने स्वयं के विचार और सोच पर इतने दृढ़ रहते हैं कि हमारा अहम् ही हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है। इस बारे में हम ने अंतर्मुख

होकर विचार करना आवश्यक है। इन छोटी बड़ी घटनाओं के द्वारा कृष्ण स्पष्ट रूप से अपने भक्तों को यह दिखा रहा था कि, उसके भक्तों ने कैसा व्यवहार और कैसा विचार करना उसे हमसे अपेक्षित है।

बड़ौदा के महाजन काका ने बड़ौदा में शंकर अभ्यंकर जी की व्याख्यानमाला आयोजित की थी। महाजन काका जब उत्सव के समय आए थे, उस समय कृष्ण ने स्वयं के गले का एक फूलों का हार निकालकर उनके शरीर पर डाला और कहा, “अरे, उस व्याख्यानमाला में मुझे यह हार पहनाना और सातों दिन वह वैसा ही रखना?” अब वह फूलों का हार पहले बदलापूर से बड़ौदा यात्रा करेगा और फिर सात दिन वहाँ कृष्णमूर्ति के ऊपर रहेगा! कृष्ण का क्या हिसाब होता है यह उसका उसे ही पता रहता है आखिर सच यही है। हमें तो सिर्फ कृष्णाज्ञा का पालन करना है यही सही होगा।

कृष्ण ने उस समय दो स्त्री भक्तों को प्रसाद स्वरूप साड़ियाँ देने के लिए कहा था। दोपहर का समय था इसलिए मंदिर में भक्तों का आना जाना भी कम हो गया था। ताई ने साड़ी और नारियल निकाल कर लाए और उसके साथ फूल देने के लिए वह फूल देखने लगी, तो कृष्ण के चरणों के पास छुट्टे फूल नहीं थे। एक महिला ने कहा, ‘ताई, कृष्ण के गले में चंपा का हार पहनाया हुआ है उसमें से दो फूल निकाल लूँ क्या?‘ ‘नहीं नहीं ‘ ऐसा कहते हुए ताई फिर से अंदर गयी। थोड़े समय पश्चात फिर से बाहर आयी। ऐसा दो-तीन बार हुआ। चौथी बार जब कृष्ण के पास आकर देखा, तो दो ताजे बड़े-बड़े फूल कृष्ण के चरणों के पास! ताई को अत्यंत आनंद हुआ। वह भक्त महिलाएँ पूछने लगी, ‘ताई, हम तो यहीं पर हैं मंदिर में कोई आया भी नहीं फिर यह फूल आए कहाँ से?’ ताई ने कहा, ‘अरे, कृष्ण की कृपा! वह रहने दो, आप पहले यह प्रसाद की ओटी लीजिए।’ ऐसा बोलते हुए उन्होंने फूलों के साथ दोनों महिलाओं को ओटी दी। वह दिव्य प्रसाद आज भी उन महिलाओं ने संजो कर रखा हुआ है।

उत्सव संपन्न हो चुका था। कृष्ण को अब ध्यान करने के लिए ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड जाने निकलना था। उसके पश्चात अंदमान, मद्रास यात्रा करके २००२ की ध्यान यात्रा संपन्न होने वाली थी।

एक कृष्ण भक्त परिवार को कृष्ण ने सात आठ साल पहले बताया था की हमें ऑस्ट्रेलिया जाना है; लेकिन कुछ कारणों से जाना संभव नहीं हुआ लेकिन इस

साल कृष्ण ने बताया, ' किसी भी स्थिति में हमें इस साल जाना ही है।' इस प्रकार वे दिसंबर २००२ में ऑस्ट्रेलिया पहूँचे।

वहाँ एक बार ताई कमरे में ध्यान कर रही थी। बाहर अनेकों फूल खिले हुए थे। उस कृष्ण भक्त की बेटी ताई के साथ कमरे में थी। ताई ने उससे कहा, 'मैं अभी ध्यान में सामने के फूलों का अभिषेक करने वाली हूँ। थोड़े समय पश्चात तुम्हें मेरे मस्तक पर क्या दिखाई देता है वह देखो! उसने देखा तो क्या उनके मस्तक पर किसी ने अंकित किया हो ऐसा ॐ प्रकट हुआ था। ताई ने बाद में उससे कहा, 'ऐसा मौका (ॐ देखने का) बहुत कम लोगों को मिलता है तुम्हारे ऊपर कृष्ण की कृपा है।'

वहाँ ऑस्ट्रेलिया में चार जगहों पर और न्यूजीलैंड में एक जगह पर कृष्ण ने केंद्र की स्थापना की। ताई ने बहुत जगह पर नजरें घुमाकर ध्यान किया। हॉट एयर बलून में बैठकर भी ध्यान करके आयी।

न्यूजीलैंड से आने के पश्चात ताई तुरन्त दूसरे दिन अंदमान जाने के लिए मद्रास जाने निकली। हम सभी को जैसे जेट लेग, यात्रा की थकान आदि आदि...ऐसा बहुत कुछ होता है। ताई का इन सब बातों से कोई संबंध नहीं था। उन्हें सिर्फ और सिर्फ कृष्ण कार्य दिखाई देता, वह बताएगा वहाँ जाना, जैसा कहेगा वैसा ध्यान करना, केंद्र स्थापना करना। इतना ही उनकी आँखों के सामने रहता। ऐसा लगता था जैसे हर बात की बहुत जल्दी है।

ताई जिस दिन मद्रास पहूँची उस दिन गीता जयंती थी। कृष्ण ने उस दिन पाद्य पूजा करने की अनुमति दी। नारकर काका से कहा, "रमेश, तुम मेरे सभी भक्तों की ओर से मेरी पाद्य पूजा करो। मैं उसका स्वीकार करता हूँ।" साथ गए हुए भक्तों की ओर देखते हुए कहा, "रमेश, मतलब मेरा उद्धव है।"

साथ में सी एम ई के एक ऑफिसर थे। उनसे कहा, "भारत की ओर से तुम पाद्य पूजा करो। मैं उसका स्वीकार करता हूँ।" साथ में दो कृष्ण भक्त कन्याएँ थी। उनसे कहा, "तुम सभी यंग जनरेशन की ओर से मेरी पूजा करो उसका मैं स्वीकार करता हूँ। आज मैं आपको वचन देता हूँ कि वर्तमान काल में जो अराजकता का माहौल फैला हुआ है, उसकी स्थिति मेरी युवा पीढ़ी ही बदल सकती है। इसके लिए मैं उनके पीछे खड़ा रहूँगा और उन्हें ऊर्जा, ताकत और बुद्धि भी प्रदान करूँगा। मेरा मेरी यंग जनरेशन के ऊपर बहुत विश्वास है।"

चरणों पर इत्र और अष्टगंध से स्वस्तिक निकालकर, सुंदर हार पहनाकर, ग्यारह दीयों से आरती करके सुंदर पाद्यपूजा संपन्न हुई। उस समय सभी को स्वामी विवेकानंद जी का स्मरण हुआ। उनके कार्य की शुरुवात भी मद्रास से ही हुई थी।

लेकिन अंदमान जाते समय ताई लगातार ध्यानावस्था में थी। भारत के उस ओर के संपूर्ण सागरी किनारे के लिए तथा अंदमान निकोबार के लिए ध्यान चल रहा था। कभी आँखें बंद करके, कभी आराधना करने के शिवलिंग पर इत्र का अभिषेक करके, तो कभी साथ लायी हुई गीता की पुस्तक पर फूलों का अभिषेक करके, कभी घूमकर, कभी समुद्र किनारे पर पानी में खड़े रहकर, जगह जगह पर नजरें घुमाकर ध्यान करना चल रहा था। बाहर जाते समय जब यह गीता ताई के पर्स में रहती तब कृष्ण पर्स की चेन लगाने नहीं देता था। एक बार गलती से चेन लग गई, तब कृष्ण ने कहा, "ताई, पहले पर्स की चेन खोलो। मुझे घुटन हो रही है। (गीता यह मेरी वाङ्मयीन मूर्ति है। यह उसी का अनुभव था!)।"

शाम के समय में वहाँ सेल्यूलर जेल में प्रकाश और ध्वनि के कार्यक्रम में जाने पर कृष्ण ने कहा, "भारत की स्वतंत्रता सावरकर जैसे अनेक देशभक्तों के निःस्वार्थ भावना तथा बलिदान के पैरों पर खड़ी है लेकिन आज की स्थिति बहुत भयानक है! स्वार्थ, लोभ, सामाजिक अस्वस्थता, खींचातानी इनसे वह ग्रसित है। यह सब बदलना ही चाहिए। वह सब बदलने की ताकत मेरी युवा पीढ़ी के पास है। मुझे लगातार उनके पीछे खड़ा रहना पड़ेगा। सभी लोग अत्यंत भावविभोर अवस्था में स्वतंत्र वीरों को वंदन करके वहाँ से बाहर आए।

दूसरे दिन सुबह ताई एक मंदिर में गई। वहाँ सभी देवी देवताओं की मूर्तियाँ थी। साथ आए हुए भक्तों ने ताई के कृष्णकार्य की वहाँ जानकारी दी। बाद में ताई ने मंदिर के पंडित जी के कुछ प्रश्नों के उत्तर दिए। वर्तमान समय की आवश्यकता को देखते हुए उन्हें 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करने के लिए कहा। कृष्ण का फोटो और कृष्णाई कैसेट दी और उन्हें पूछा, 'यह कैसेट मंदिर में रोज लगाएँगे क्या?' उन्होंने कहा, 'जरुर लगाऊँगा। प्रतिदिन सुबह और शाम के समय आरती के बाद लगाता जाऊँगा। माँ साहब, आप इतनी दूर मुंबई से सिर्फ कृष्णाज्ञा है इसलिए इस भूमि को, यहाँ के लोगों को आशीर्वाद देने के लिए आयी। यह अत्यंत प्रशंसनीय बात है।' ऐसा कहते हुए उन्होंने ताई को साष्टांग प्रणाम किया। आगे वह कहने लगे, 'हमारे मंदिर में अनेक संत, बड़े साधक आते हैं। अपने-अपने पंथों की जानकारी स्वयं के नाम और गाँव के साथ बताते हैं लेकिन माँ साहब

आपकी बात तो कुछ अलग ही है। जब से आप आयी हैं आपने हमें सिर्फ कृष्ण ने ऐसा किया, कृष्ण ने ऐसा बताया, ऐसा ध्यान करने के लिए कहा, कृष्ण ने यह मंत्र दिया, ऐसा ही बता रही हैं। कृष्ण के अलावा आप के मुख से दूसरा कुछ बाहर नहीं आता है। मैं इतने दिनों से इस मंदिर में हूँ आज तक मैंने ऐसी व्यक्ति देखी नहीं। कम से कम हमें आप अपना नाम और पता तो भी बताइयें। ऐसी बिनती करके उन्होंने तुरन्त कृष्णाई कैसेट लगायी।

कृष्ण को वहाँ के महत्वपूर्ण द्वीपों, बंदरों और जेट्टी पर जाकर ध्यान करना था। इस प्रकार वहाँ जाकर ध्यान हुआ। कुछ जेट्टीयों पर फूलों का अभिषेक करके ध्यान हुआ। एक गश्त (पहरा) देने वाले जहाज पर जाकर ध्यान हुआ। इस तरह कुल मिलाकर कृष्ण व्यवस्थित रूप से कार्य हो जाने के कारण बहुत प्रसन्न था। ताई के भी मन जैसा ध्यान हो रहा था।

ताई को निकोबार जाकर ध्यान करना था इसलिए वहाँ जाने की कुछ व्यवस्था हो सकती है क्या यह देखा जा रहा था क्योंकि समुद्र मार्ग से वहाँ जाने में तीन दिन लगते हैं। इस प्रकार आने जाने में छः दिन लगेंगे जो कि संभव नहीं था। हेलीकॉप्टर की सेवा उपलब्ध थी लेकिन वह रसद की आपूर्ति के लिए थी। उसमें से भी यदि ताई का जाना संभव हो सके तो भी चलेगा ऐसा सोच कर उस दिशा में प्रयास चल रहे थे। रात के समय कृष्ण ने अचानक कहा, “कल मेरा लगातार सात घंटे का ध्यान है। मैं सुबह से ही ध्यान में रहूँगा। आप सभी लोग बाहर प्राकृतिक सौंदर्य देखने के लिए गए तो भी चलेगा।”

आखिर एक व्यक्ति ताई के साथ होटल पर रुकेगी और बाकी के सभी लोग घूमने के लिए जाएँगे ऐसा निश्चित हुआ। साथ गए हुए भक्तों में एक भक्त रेकी मास्टर थी। जब से निकले थे, तब से उसकी ताई से -कृष्ण से प्रार्थना चल रही थी, ‘कृष्ण, रेकी की सेवा स्वीकार करोगे न?’ उसके मन में मासुमियत से भरी चिंताएँ थी, ताई को उम्र के ६८ साल में इतनी लंबी यात्रा और कृष्ण कार्य के लिए की गई भागदौड़ से थकान हो रही होगी। अगर उन्हें रेकी दी तो उन्हें आराम महसूस होगा उनके चरणों में मैं अपनी सेवा अर्पित कर सकूँगी। कृष्ण - ताई हमेशा भक्तों की भावनाओं का स्वीकार करते हैं तथा उनकी भावनाओं का सच्ची ईमानदारी के साथ, सेवा करने का भाव देखकर उसकी सराहना करते हुए उनकी भावनाओं की दाद भी देते हैं।

कृष्ण ने - ताई ने सुबह उससे कहा, “अब मैं ध्यान के लिए लेटने वाली हूँ। आज तुम्हारी रेकी की सेवा स्वीकारता हूँ दोगी न?” ‘कृष्ण, आती हूँ।’ ऐसा बोलते हुए वह ताई के बेड के पास गयी। ताई ने कहा ‘जैसे ही इसकी रेकी देकर हो जाएगी आप सभी लोग बाहर घूमने जाइये।’ मुझे अब किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। जो साथ में रुकने वाली थी उससे कहा तुम भी तुम्हारे भोजन का समय होने पर भोजन कर लेना। मैं ध्यान होने के पश्चात ही भोजन करूँगी। मुझे किसी चीज की आवश्यकता लगी तो मैं बताऊँगी। तब तक मुझे कोई भी आकर मत उठाओ। मैं लेट कर ध्यान करती हूँ और तुम रेकी की सेवा देना शुरू करो।’ ऐसा बोलकर ताई ने ध्यान की शुरुवात की।

यह रेकी मास्टर बाद में अपना अनुभव बता रही थी -

मैंने कृष्ण को - ताई को और रेकी शक्ति को प्रणाम करके प्रार्थना की और प्रथमत: आँखों पर हाथ रखकर रेकी के लिए शुरुवात करने ताई के सिरहाने आकर बैठी। रेकी को आवाहन करके आँखों पर हाथ रखा और थोड़े ही समय में रेकी का इतना अद्भुत प्रवाह शुरू हो गया कि मैं होश खो बैठी। मेरी आँखों के सामने भारत का पूरा नक्शा साकार हो गया। बाईं ओर नीचे की तरफ अंदमान निकोबार द्वीपों के साथ वह साकार हुआ, (आज भी यदि किसी ने मुझे हाथ से नक्शा निकालने के लिए कहा तो भी इतने छोटे-छोटे विवरणों के साथ निकालना मुझे संभव नहीं हो सकेगा।)

भारत के उत्तर दिशा की ओर पाकिस्तान की बॉर्डर की ओर से शुरुवात करके रेकी शक्ति (कॉस्मिक शक्ति) अत्यंत तीव्रता के साथ बाई ओर से आगे की ओर अग्रेसर होने लगी। प्रत्येक बॉर्डर पर घूम कर तीव्रता से नीचे की ओर कन्याकुमारी के कोने तक पहूँची वहाँ से आगे फिर से किनारे की ओर सौराष्ट्र, पाकिस्तान के बॉर्डर से होते हुए जहाँ से निकली थी वहाँ पहूँची। उसकी तीव्रता और प्रवाह बहुत ही प्रचंड था। ऐसी वह तीन बार भारत की सभी बॉर्डर के ऊपर घूमी अर्थात् रेकी में यह सीलिंग प्रोसेस होती है वह उसने पूरी की अर्थात् उस शक्ति ने भारत को सभी ओर से सील कर दिया वहाँ से वह दिल्ली आयी। मुझे दिल्ली का लोकेशन तुरन्त पहचान में आ गया। दिल्ली में सबसे पहले प्रधानमंत्री बाजपेई जी, अडवाणी जी और एक तीसरी व्यक्ति (जो मुझे समझ में नहीं आयी) उन्हें सील किया। बाद मैं तीनों फोर्स के चीफ का सीलिंग किया, जो कि मुझे स्पष्ट रूप से प्रतीत हुआ। कलकत्ता, आसाम का भाग पूरी तरह से सील किया। रेकी की पुनरावृत्ति तीन

तीन बार करके नीचे मद्रास की ओर आयी। यहाँ तीन तीन पुनरावृति या सीलिंग की। आगे अंदमान निकोबार को तीन बार पूरी तरह से सीलिंग करके, फिर से एक बार पूरे भारत का सीलिंग करके रेकी का प्रवाह धीरे-धीरे शांत हुआ। मैं भी होश में आ गई। तीनों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए हाथ ऊपर किए और वहाँ से बाजू हटी। घड़ी की और देखा तो पूरे पच्चीस मिनट हो चुके थे। मुझे लगा जैसे सब कुछ पलक झपकते ही हो गया। प्रसन्नता के कारण मेरे नेत्र अश्रुपूरित हो रहे थे। मुझे ही समझ में नहीं आ रहा था की मैंने जो अनुभव लिया वह क्या था? या यह मेरे मन का खेल था इसलिए मैंने निश्चित किया जब तक ताई की ओर से इस बारे में संकेत नहीं मिलता तब तक किसी से कुछ भी नहीं कहना।

निश्चित किएनुसार हम सब घूमने के लिए बाहर गए और शाम साढ़े चार बजे होटल पर वापस आए। देखा तो ताई का ध्यान भी हो चुका था। सभी लोग फ्रेश होकर ताई के रूम पर मिलने गए। वहाँ जाते ही ताई प्रसन्नता के साथ मुस्कुराते हुए बोली, 'कृष्ण, को जैसा चाहिए था वैसा ध्यान हो गया। अब निकोबार जाने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें वैसा सूचित कर दीजिए।' और मुड़कर बोली, 'क्या? कृष्ण ने आज तुम्हारी रेकी की सेवा स्वीकारते हुए ध्यान का अनुभव भी दे दिया!' मेरा तो खुशी के मारे सिर्फ उड़ना ही बाकी रह गया था। कितनी बड़ी अनुभूति आज मुझे मिली थी। अब निश्चित रूप से वह मेरे मन का खेल या संभ्रम नहीं था। ताई देश के लिए ध्यान करती है, अर्थात् क्या करती है इसकी अनुभूति कृष्ण ने मुझे आज दी थी।

ताई के साथ जो कृष्ण भक्त महिला रुकी हुई थी वह भी बता रही थी, 'ताई का ध्यान निश्चिलता के साथ चल रहा था सिर्फ ओंकार का नाद अत्यंत धीमी गति से सुनाई दे रहा था प्रथमत: तो मुझे समझ में नहीं आया लेकिन ध्यानपूर्वक सुनने पर ऐसा प्रतीत हुआ कि वह स्वर ताई के मुख से ही आ रहा था। साथ ही साथ ताई के पैर गद्दे से फुट भर ऊँचाई पर हवा में बहुत समय तक थे। ताई का ध्यान समाप्त होने पर उन्होंने एक गिलास पानी देने के लिए कहा और बोली, 'मेरी दोनों हथेलियों की ऊँगलियों के बाजू से एड़ियों तक ऐसे सात बार हाथ घुमाओ!'

इन सभी मुद्राओं का अर्थ तो वह परमात्मा ही जाने। ताई का चेहरा अत्यंत तेजस्वी, प्रसन्न प्रतीत हो रहा था। सभी ने उन्हें प्रणाम किया।

इस प्रकार ताई की वर्ष २००२ की आखिरी ध्यान यात्रा कृष्ण को जैसी चाहिए थी

वैसी उसने पूरी करवाँ ली। इस बारे में भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी स्वयं की डायरी में मनोगत लिख कर रखा, 'मैं ताई के द्वारा जहाँ जहाँ जाता हूँ। वहाँ आनंद की निर्मिती हुई नहीं ऐसा कभी नहीं होगा क्योंकि मेरे अस्तित्व का मतलब ही आनंद है। सुखशांति, समाधान के साथ विश्वजननी का अस्तित्व भी मै जागृत करता हूँ क्योंकि आज उसके अस्तित्व की अत्यंत आवश्यकता है और उस आवश्यकतापूर्ति के लिए मुझे वहाँ जाकर ध्यान करने की आवश्यकता महसूस होती है। विश्व का भार और भक्तों की आस्था मेरे ऊपर होने के कारण ही मैं ऐसा करता हूँ इसलिए वर्ष २००५ तक मुझे एक स्थान पर रुकना संभव नही है। सभी का कृपाछत्र में हूँ। सभी का आधार मैं हूँ इसलिए उसकी योग्य व्यवस्था करने के लिए मैं लगातार योजनाएँ बनाता हूँ। उन योजनाओं की संपूर्ण जिम्मेदारी मेरी और सिर्फ मेरी है। उनका अर्थ भी समझना आपके लिए अत्यंत कठिन है, क्योंकि इसके अंतर्गत घटने वाली घटनाओं को साधारण नयन चक्षुओं से देखा जा सके ऐसा भी संभव नहीं है। विश्व का यह एक गूढ़ रहस्य है। आपके लिए उस रहस्य को खोजना अत्यंत कठिन है उसे जानने वाला सिर्फ मैं अकेला हूँ। योग्य समय आने पर उसे मैं स्पष्ट करके आपको बताऊँगा। यह गूढ़ तत्व मुझे मेरे पास ही रखना होगा। इन तत्वों का कर्ता धर्ता मैं स्वयं होने के कारण मैं आपको बता सकता हूँ कि, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' यह उसी में का महान तत्व है। इस मंत्र का जाप करना यह उस रहस्य को जान लेने का सरल मार्ग है इसलिए मैं आपको बार-बार बताता हूँ 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस मंत्र का जाप करो, इस मंत्र से मुझे पुकारो। यह पुकार ही आपके और मेरे बीच की डोर है सिर्फ यही डोर आपको और मुझे एक साथ ला सकती हैं। यह मंत्र ही अपनी नौका है और यही अपना खिवैया है। सुख का आगर और प्रेम का सागर है। प्रशंसा का मेरु है और जीवन का मूल तत्व है। इस मंत्र के कारण ही हम एकत्रित आएँगे। प्रसन्नतापूर्वक इस भव सागर को पार करेंगे और अंतिम ध्येय की प्राप्ति करेंगे। यही हमारा लक्ष्य भी है और हमारे लिए कल्याणकारी भी है। यह मंत्र ही अपनी नाव की पताका है और वही केवट भी है। 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' यह मंत्र ही अपना आधार है और यह बताने का यही समय भी है। नीचे हस्ताक्षर थे कृष्ण के 'ॐ'।

भगवान श्री कृष्ण का यह मनोगत व्यक्त होने के पश्चात ताई कहती हैं, कृष्ण की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम ही है प्रशंसा करने के लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। हे प्रभु, भक्तों के लिए तुम क्या क्या करते हो यह तुम्हारा तुम्हें ही पता। 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' यही तुम्हारा तत्व, यही तुम्हारा मंत्र, यही तुम्हारी शक्ति,

यही तुम्हारी माया, यही तुम्हारी कृपा और यही तुम्हारे भक्तों की वैभवता।

'।। ॐ महान शक्ति देवताय नमः ।।' '।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।'

अंदमान से ताई २५ तारीख को वापस आयी। मुंबई में दो-तीन जगह पर ध्यान के लिए जाना था। वहाँ जाकर आने के पश्चात वह बदलापूर वापस आयी। भगवान श्रीकृष्ण के बताएनुसार ३१ दिसंबर को पूरे दिन सभी भक्तों के लिए ध्यान किया और नववर्ष के लिए ताई ने संदेश दिया।

वर्ष २००२ यह अत्यंत कष्टदायी एवं मुश्किलों से भरा हुआ था इसलिए जगह जगह पर केंद्र स्थापना की है। सभी को मेरा यही कहना है कि मेरे ऊपर पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखकर जो नियमित रूप से केंद्र में जाएँगे उनकी संपूर्ण जिम्मेदारी मेरी रहेगी।

वर्ष २००२ में ग्यारह इस संख्या को अत्यंत महत्व था। अब वर्ष २००३ के लिए दूसरा आदेश दे रहा हूँ।

● इस साल से सात अलग-अलग रंगों के फूल अर्पण करना (इसमें एक रंग के दो फूल चलेंगे) साथ ही साथ ग्यारह अखंड चावल के दाने 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करते हुए श्रद्धापूर्वक अर्पण करना।

● मुश्किल की घड़ियों में प्रतिदिन दो नीले फूल अर्पण करके अपनी मुश्किल बताकर प्रार्थना करना।

● सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि फूल अर्पण करते समय, चावल के दाने अर्पण करते समय यह ध्यान रखना कि मैं आपके पास लगातार खड़ा हूँ, इस तरह पूर्ण श्रद्धा एवं भावनाओं के साथ मुझे सर्वस्व अर्पण करना।

● जिस दिन मुझे दिल से भोग दिखाने की इच्छा हो ऐसा लगे उस दिन दही चावल का दिखाना एवं घर के सभी सदस्यों ने उसका सेवन करना।

● यह सब जिसके द्वारा पूर्ण श्रद्धा के साथ किया जाएगा, उसके लिए मैं सदैव खड़ा रहूँगा। इसी प्रकार आप मुझे जैसे पुकारेंगे, उसी प्रकार से मैं आपके लिए दौड़ कर आऊँगा। यह आपको मेरा दिया हुआ वचन है।

'मैं आपका और आप मेरे' यह रिश्ता जोड़ा जाता है श्रद्धा और विश्वास के दो

नाजुक धागों से। एक बार बंध गए की कभी तोड़े नहीं जाते। यह मेरे सभी भक्तों ने हमेशा ध्यान में रखना चाहिए अर्थात् ‘मैं आपका और आप मेरे‘ यह रिश्ता कभी मत भूलना।

# ।। ॐ ।।

आज एक तारीख। नववर्ष के प्रथम दिन की शुरुवात। कृष्ण ने आज ताई से कहा, “ताई, आज बारह बजे तक तुम बिल्कुल बैठना नहीं। सभी काम आज तुमको खड़े होकर ही करना है। ताई को तो प्रश्न पडने का सवाल ही नहीं उठता। उनके सभी काम खड़े होकर चल रहे थे। इतने में फोन की घंटी बजी। फोन ताई के लिए ही आया था। उन्होंने फोन उठाया और बातें करते करते वह पीछे रखे हुए टेबल पर टिक गयी। टिकते ही उन्हें ऐसा झटका लगा कि वह तुरंत जल्दी जल्दी खड़ी हो गई। फोन के ऊपर की बात खत्म होने पर कृष्ण ने कहा, ”ताई, तुम नीचे क्यों टीक गयी। बैठने के लिए मना किया था न?” गलती हो गई, अब सजा के तौर पर तुम बारह के बजाए एक बजे तक बैठ नहीं सकती। “बाद में ताई ने कृष्ण की आज्ञा का शत-प्रतिशत पालन किया। ताई को कृष्ण के अनेकों नियमों का पालन करना पड़ता था और वह उसका पालन अत्यंत कसौटी के साथ करती थी। यह उसी का उदाहरण था। ताई इस पर कहती, ’देखो तो, मुझे तैयार करने के लिए कृष्ण को अभी भी कितने कष्ट उठाने पड़ते हैं।’ इससे हमें यह समझ लेना चाहिए कि ताई योगिनी स्वरूप होते हुए भी कृष्ण के प्रति कितना निर्मल, निकोप, समर्पित भाव आखिरी क्षणों तक रखे हुए थी।

कृष्ण ने दूसरी विश्वजननी की स्थापना की तारीख बताई थी ८ फरवरी २००३। वह भी दिल्ली के मिलिट्री एरिया में करना ऐसा कहा था। साथ ही साथ किसी अस्तित्व में रखे हुए मंदिर में ही स्थापना करना। इसके लिए नया मंदिर बनाने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के मंदिर के लिए जगह की खोज चल रही थी।

कृष्ण ने मूर्ति स्थापना के लिए ८ फरवरी की तारीख दी। इस दिशा में तैयारियाँ शुरू हो गई। स्थापना के समय कम से कम भक्तों ने ही समारोह में शामिल होने के लिए आना ऐसा कृष्ण ने कहा और उसका कारण बताया कि आर्मी की जगह में स्थापना होने के कारण समारोह में कम लोग शामिल हुए ही अच्छा रहेगा क्योंकि वहाँ के कायदे कानूनों का पालन हमें करना ही चाहिए इसलिए दूसरे शहरों के भक्तों ने स्थापना के समय अभी यहाँ नहीं आना।

जनवरी मास के प्रथम सप्ताह में एक कृष्ण भक्त बदलापूर में दर्शन के लिए आयी। बातचीत करते समय ताई ने उनसे कहा, 'अरे, मुझे कृष्ण कह रहा था कि अब तुम्हें ध्यान करने के लिए अज्ञात स्थल पर ले जाने वाला हूँ। अब कहाँ ले जाएगा क्या पता?' ऐसा बोलते बोलते उन्होंने अपने सिर के ऊपर से हाथ घुमाया। बहुत बार कृष्ण उन्हें उनके सिर के ऊपर से हाथ घुमाने के लिए कहता था। यह करने के पीछे कृष्ण की योजना रहती की ताई के द्वारा उस समय जो भी बोला गया वह उनके स्मरण में न रहे। कृष्ण उन्हें ऐसा सूचित कर रहा होगा कि अज्ञात स्थल मतलब महानिर्वाण के बारे में। फरवरी मास में क्या घटित होने वाला है इसकी कल्पना ताई को शायद पहले से होगी इसलिए अपने भक्तों के बारे में चिंतित होकर उन्होंने किसी के मन में संदेह भी न आने देते हुए वे दिल्ली जाने से पहले निर्वाणी के कार्य कर रही थी।

इस बार कृष्ण ने नंदा, संतोष (मुन्ना) और वैभवी तीनों को सहपरिवार दिल्ली आना ही पड़ेगा ऐसा कहा। इसी के साथ कुछ भक्तों को भी दिल्ली आने के लिए आग्रह किया। उन सभी के रिजर्वेशन करने के लिए कहा।

मूर्तिकार का भी संदेशा आ गया कि बीस बाईस जनवरी तक मूर्ति तैयार हो जाएगी। उसके बाद आकर आप कभी भी मूर्ति ले जा सकते हैं। इस तरह पहले मूर्ति मुंबई आएगी फिर दिल्ली ले जाएँगे ऐसा निश्चित हुआ।

इतने में अचानक नारकर काका को शारीरिक परेशानियाँ होने लगी। डॉक्टरों ने समस्या का निदान किया कि बायपास सर्जरी करना आवश्यक है। इस बात पर कृष्ण ने भी स्वीकृति दी। इस प्रकार १८ जनवरी को काका की बायपास सर्जरी करना निश्चित हुआ। इस कार्य के हेतु ताई भी मुंबई आ गयी। अभी तक दिल्ली में जगह निश्चित नहीं हुई थी इसलिए दिल्ली में कुछ भक्त भागदौड़ कर रहे थे। आखिरकार कृष्ण को जैसी मिलिट्री एरिया में जगह चाहिए थी वैसी मिल गयी। वहाँ राधाकृष्ण का मंदिर था। उस मंदिर के कार्यकारी मंडल ने वही विश्वजननी की स्थापना के लिए अनुमति दे दी।

२५ तारीख को देवी की मूर्ति मुंबई आएगी और ४ तारीख को आगे दिल्ली जाएगी ऐसा निश्चित हुआ। मूर्ति माहिम में श्री तोनसे जी के यहाँ लाएँगे ऐसा निश्चित किया। मूर्ति सुबह के दस बजे के आसपास आ जाएगी ऐसा अंदाज था। भगवान श्रीकृष्ण ने ताई से कहा, "देवी के स्वागत के लिए हम तोनसे जी के यहाँ जाएँगे।"

साथ में देवी को देने के लिए सुंदर लाल गुलाब लेने के लिए भी कहा।

ताई दस बजे ही तोनसे जी के यहाँ आकर रुकी। बोरीवली बस से मूर्ति आने वाली थी। मूर्ति को माहिम में उतार सकें इसलिए बस चालक ने भी स्वीकृति दे दी थी लेकिन वैसा न होने के कारण मूर्ति तोनसे जी के यहाँ पहुँचने तक शाम के साढ़े चार बज गए।

प्रसाद के भोजन की संपूर्ण तैयारी की हुई थी। विलंब होता देखकर सभी भक्तों ने प्रसाद का भोजन ले लेना चाहिए ऐसा निश्चित हुआ। भगवान को भोग दिखा दिया। प्रसाद की बर्फी जैसे सभी को दी वैसी ताई को भी दी। ताई जैसे ही वह बर्फी खाने के लिए मुख तक ले गयी वैसे ही अचानक उनका हाथ पीछे की ओर खींचा गया और आवाज आयी, "कृष्ण, तुम मुझे छोड़कर प्रसाद खाओगे? मेरी राह नहीं देखोगे?" ताई ने तुरंत हाथ का प्रसाद नीचे रखा और कहा मैं विश्वजननी आने के बाद लूँगी।

इधर हॉस्पिटल में नारकर काका के खून में शक्कर की कमी होने के कारण वे बेहोश हो गए। वहाँ से काकी का घबराहट भरा फोन आया। यह सुनकर ताई भी अस्वस्थ हो गयी। वह बोली, 'मैं थोड़ी देर ध्यान करती हूँ।' थोड़े समय पश्चात ध्यानवस्था से बाहर आने पर उन्होंने कहा, 'मेरे हाथ पर शक्कर दो। शक्कर खाता हूँ। काका की शक्कर कम हो गई थी अब वह ठीक है। ताई ने ऐसा कहते समय ही नारकर काकी का फोन आया, 'काका अब होश में आ गए हैं डॉक्टरों ने कहा है चिंता की कोई बात नहीं है। ताई ने यहाँ आने की जल्दबाजी करने की आवश्यकता नहीं है।' देवी साढ़े चार बजे आयी। कृष्ण ने लाया हुआ लाल फूल, प्रसाद देकर उसकी पूजा और स्वागत किया। उस दिन देवी ने ताई के मुख से प्रसाद ग्रहण किया।

कृष्ण हमेशा दसवीं एवं बारहवीं में पढ़ रहे बच्चों को परीक्षा के लिए पेन देता था। उस समय तोनसे जी की बेटी दसवीं में थी। २५ तारीख को वापस जाने से पहले ताई ने उसे पास बुलाया और परीक्षा के लिए पेन दिया। किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि परीक्षा के लिए तो अभी अवकाश है फिर कृष्ण इतनी जल्दी में आज ही पेन क्यों दे रहा है?

उसी दिन ताई ने तोनसे जी के यहाँ कुछ कृष्ण भक्तों को फोन करके बुला लिया। वैसे ताई कभी किसी को स्वयं फोन करके नहीं बुलाती थी। उन सभी के साथ ताई

ने बातचीत की और कहा, "'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' लगातार बोलते रहो। यही तुम्हारा कवच है। वर्तमान समय के अनुसार इसी मंत्र की अत्यंत आवश्यकता है।'" सभी की ओर नजरें घुमाते हुए कहा, 'हमेशा इस मंत्र की छत्रछाया में रहने की कोशिश करो। वही तुम्हारा तारणहार है।' जाने अनजाने में ताई सभी से विदाई ले रही थी क्या?

नारकर काका हॉस्पिटल में थे तब वैभवी उनसे मिलने गई। उस समय ताई वही थी। उस समय ताई ने वैभवी से कहा, 'वैभवी, कृष्ण कह रहा है, "मुझे तुम्हारी ओर से एक वस्तु चाहिए।" वैभवी को अत्यंत प्रसन्नता हुई क्योंकि पिछले कई दिनों पहले कृष्ण ने वैभवी से कहा था कि, "जब तक मैं बताऊँगा नहीं तब तक तुम दोनों कुछ भी नहीं लाना।" और आज कृष्ण कुछ माँग रहा था। 'कृष्ण, क्या लाऊँ तुम्हारे लिए?' बताओ न।' "सुनो, ताई के लिए एक श्वेत वस्त्र ला कर दो।" वहाँ पास में ही दिनेश बैठे हुए थे, वह तुरंत बोले, 'कृष्ण, सिर्फ सफेद लाने से अच्छा कुछ सेल्फ प्रिंट किया हुआ लाने का क्या?' कृष्ण ने अत्यंत गंभीर स्वर में कहा, "दिनेश ऐसा नहीं चलेगा। वैभवी, एकदम श्वेतवस्त्र हो ऐसी ही लाओ।" इस प्रकार वैभवी ने उसी दिन एकदम नरम, मुलायम ऐसी पूर्ण श्वेत साड़ी लाकर कृष्ण को अर्पण की।

इसके थोड़े दिनों के पश्चात, वैभवी को ऐसा सपना आया कि एक बड़ा जुलूस निकला है। जिसमें ताई को सरकारी प्रथानुसार ध्वज में लपेटा हुआ है। वहाँ सब कुछ लष्करीप्रथानुसार चल रहा था। वैभवी यह देखकर अत्यंत अस्वस्थ हो गई। उसने तुरन्त ही माँ को फोन किया और सपने के बारे में बताया। ताई ने उसकी बात हवा में हँसते-हँसते उड़ा दी और कहा, 'अरे, ऐसे सपने क्या सच होते हैं? बल्कि सपने में यदि कोई गया हुआ दिखता है तो उस व्यक्ति का जीवन बढ़ जाता है।' ऐसा बता कर ताई ने उसे समझा दिया।

काका के ऑपरेशन के सिलसिले में ताई १५ जनवरी से २ फरवरी तक मुंबई में ही थी। चुनिंदा भक्तों के अलावा इस बात की खबर किसी को नहीं थी। सभी को लग रहा था कि कृष्ण ने विश्वजननी की स्थापना से पहले ताई को ध्यान करने के लिए कहीं जाने के लिए कहा होगा।

ताई ३ तारीख को बदलापूर आ गयी है, यह खबर पता चलते ही मंदिर में ताई को मिलने वालों का ताँता लग गया। यहाँ भी ताई ने मुंबई की ही तरह कुछ भक्तों

को संदेशा भेजकर बुला लिया। उन्हें भी आश्चर्य हुआ। मिलने के लिए आइए ऐसा संदेशा ताई की ओर से कभी नहीं आता था। इस बार यह क्या अलग हो रहा है?

बदलापूर में भी घर में बच्चो को एवं हमेशा सेवा के लिए आनेवाले भक्तो को भी ताई के व्यवहार में आया हुआ बदलाव महसुस हो रहा था लेकिन यही वह बदलाव है ऐसा दिखाया नहीं जा सकता था। ताई ने दिल्ली जाने की बैग भरी। वैभवी से जो सफेद साड़ी ली थी उसे याद से उन्होंने बैग में रखने के लिए कहा। सभी को बता रही थी, 'यह मेरा अत्यंत महत्वपूर्ण ध्यान का वस्त्र है। यदि किसी ने देखने के लिए बाहर निकाला तो याद से अंदर रखिए।'

ताई ने स्वयं की अलमारी पूरी खाली की। अनेक भक्तों को प्रसाद के वस्त्र दिए। किसी को वस्तुएँ दी। सभी को लग रहा था विश्वजननी की स्थापना के लिए जा रहीं है इसलिए ऐसा सब चल रहा है। ताई को खाँसी आ रही थी, आवाज तो एकदम बैठ ही गई थी, बोलते समय भी परेशानी हो रही थी।

ताई उस दिन ऊपर रेशमा (स्नुषा) के घर जाकर पूरा घर घूम कर आयी। उसी तरह नीचे बगीचे में भी चारों दिशाओं में घूमकर आयी। अनेक पेड़-पौधे उन्होंने और बाबा ने लगाए हुए थे जैसे वे उस वास्तु के कण-कण से अलविदा ले रही थी। बच्चों को बुलाकर कहा, किसी का यदि कोई बिल देना बाकी रह गया हो, तो वह दे डालो। दूधवाला, पेपरवाला, फोन का बिल, लाइटबिल, किराना, व काम करने वाली औरतें सभी के पैसे याद कर के दे दिए गए। इतना ही नहीं उन्होंने म्युनिसिपालिटी का बिल भरा है क्या? इस बारे में भी सुनिश्चित कर लिया। किसी किसी ने पूछा भी, 'ताई यह क्या?' 'अरे नहीं नहीं, कृष्ण ने कहा है, किसी का भी कुछ देना बाकी नहीं रखना।' इसलिए आज जानबूझकर फिर से बैंक के पेंशन अकांउट से पैसे निकलवाये।

ऐसा सब करते करते ताई का मुंबई जाने का दिन आ गया। उस दिन सुबह से ही ताई का मूड कुछ अलग ही था। उस दिन आने वाले सभी भक्तों को 'ॐनमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की कृपा छत्र में रहिए। आपके जीवन का एकमेव आधार कृष्ण ही है यह बात कभी मत भूलिए।' ऐसे बता रही थी। बीच-बीच में अपने सिर के ऊपर से बार बार हाथ घुमा रही थी फिर से एक बार घर के सभी कमरों में घूम कर आयी। भोजन पकाने वाली मौसी को बुलाया उन्हें मुन्ना के भोजन का ध्यान रखने के लिए कहा। कृष्ण के पास गयी, बाबा के फोटो के पास जाकर कृष्ण को

नमस्कार करके, मंगेश के आशीर्वाद लिए फिर से अपने सिर के ऊपर से हाथ घुमाया और निमिषार्ध में घर से बाहर आ गयी और सीधे गाड़ी में जाकर बैठ गयी!

अब यह सभी घटनाएँ याद आने पर लगता है कि १० तारीख को क्या होने वाला है इसकी उन्हें पूर्ण कल्पना थी लेकिन उन्होंने किसी के मन में तिलमात्र भी संदेह आने नहीं दिया। परब्रह्म की माया ही वह।

# ।। ॐ ।।

ताई मुंबई पहुँची। नारकर काका से मिलकर आगे वैभवी के यहाँ गई। वैभवी बता रही थी, ‘माँ को दिल्ली जाने के लिए स्टेशन पर छोड़ने संतोष जाने वाले थे लेकिन माँ का आग्रह था कि, वैभवी तुम भी मुझे पहुँचाने चलो। उस समय अवंती स्कूल गई हुई थी उसे लाने वाली कोई और दूसरी व्यक्ति भी नहीं थी, इसलिए अत्यंत मजबूरी में मैंने (माँ से) कहा मुझे आना संभव नहीं है। इस पर लेकिन वह कुछ नहीं बोली। माँ का इस प्रकार का व्यवहार बहुत ही अचरज में डालने वाला था। माँ ऐसा आग्रह कभी नहीं करती थी। मुझे आश्चर्य इस बात का लग रहा था की तुरंत दूसरे दिन ही हम दिल्ली जाने के लिए निकलने वाले थे फिर मैंने उसे इस बात की याद दिला दी।

७ तारीख को ताई एवं अन्य भक्तजन दिल्ली पहुँचे। ७ तारीख की शाम को मूर्ति स्थापना के पहले दिन जो पूजा विधि किए जाते है वह संपन्न हुए और सभी लोग होटल में वापस आ गए।

दूसरे दिन सुबह शास्त्रों के अनुसार पूजा, विधि विधान के साथ संपन्न हुई और विश्वजननी की स्थापना हुई। ताई ने विश्वजननी को, राधाकृष्ण को फूल अर्पण किए और सभी भक्तों ने ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय‘ के गजर के साथ ताई के शीश पर गुलाब की पंखुड़ियों का अभिषेक किया। यह पूजा स्वीकार करने के पश्चात ताई बोलने लगी, कृष्ण का संदेश देने लगी।

‘कृष्ण कह रहा है प्रथम विश्वजननी की स्थापना लॉस एंजेलिस में होने के पश्चात, दूसरी विश्वजननी की स्थापना दिल्ली में और वह भी मिलिट्री एरिया में ही स्थापित होनी चाहिए ऐसा मुझे लग रहा था। अपने भारत देश की रक्षा करने के लिए जो जवान लगातार दिन रात खड़े रहते हैं उनके लिए और युवा पीढ़ी के लिए मुझे अब खड़ा रहना पड़ेगा इसलिए दिल्ली और मिलिट्री एरिया आवश्यक है।’

“मेरा भक्त मुझे मेरे प्राणों से प्रिय है। उसके हृदय से पुकारने पर, मैं दौड़ कर जाता हूँ रुक नही सकता, यह जो कार्य चलता है वह सब भक्तों की आराधना से ही पार होता है। अकेले-दुकेले का यह काम नहीं है, इसलिए सामुदायिक प्रार्थना

की आवश्यकता है। मेरे सभी ज्ञात और अज्ञात भक्तों के लिए, भारत के लिए, युवा पीढ़ी के लिए वैसे ही विश्व के उत्कर्ष के लिए श्रीकृष्णलीलाकेंद्र में नियमित जाना अत्यंत आवश्यक है।“

आप सभी भक्तों के प्रेम, भक्ति, श्रीकृष्ण के प्रति मोह और विश्वजननी के स्नेह के कारण इस मूर्ति की स्थापना हो रही है। स्थापना होने के पश्चात विश्वजननी ने मुझे बताया, ”हे योगेश्वर, तुमने मेरे ऊपर जो कार्य सौंपा है वह मैं शत प्रतिशत पूरा करूँगी। जो भक्त मेरी श्रद्धा, भक्ति से आराधना करेंगे, उनके लिए मैं तुरंत दौड़कर जाऊँगी। मुझे जागृत करने की शक्ति आप सभी में है। आपकी भक्ति के कारण, प्रेम के कारण ही मुझे जागृति मिलेगी। भगवान श्रीकृष्ण अपने हैं और हम सब श्रीकृष्ण के हैं आप सभी यह कभी भी मत भूलना।” भगवान कहते हैं, “मैं किसी की सेवा का जब स्वीकार करता हूँ तो अत्यंत जाँच परख कर करता हूँ। अभी और सात जगह विश्वजननी की स्थापना होगी। उसमें से सातवीं स्थापना दोहा में करूँगा।”

भगवान श्रीकृष्ण और विश्वजननी आपके लिए खड़े हैं। श्रद्धा और विश्वास के साथ आप उनका आवाहन कीजिए, उनकी आराधना कीजिए। उनकी कृपा दृष्टि सदैव आपके ऊपर रहे; यही मैं उनके चरणों में प्रार्थना करती हूँ।’ ऐसा ताई सबसे आखिरी में बोली। बाद में एक कृष्ण भक्त को कृष्ण ने उसकी सोने की बाँसुरी प्रसाद स्वरूप दी। इसके पश्चात महाप्रसाद हुआ।

इस महाप्रसाद की ऑर्डर जिस कैटरर को दी थी वह, ताई की असाधारण सादगी देखकर, उनके चेहरे का अलौकिक तेज एवं उनके द्वारा दिया हुआ संदेश सुनकर इतना भाव विभोर हो गया कि वह पूरे प्रसाद भोजन के पैसे लेने को ही तैयार नहीं था। ताई से वह कहने लगा, ‘मेरी तरफ से कृष्ण भगवान और माता जी को भोग चढ़ाया है।’ ताई ने उसे हर तरह से समझाया फिर भी वह तैयार नहीं हो रहा था। तब ताई ने कहा, ‘यह सिर्फ पैसा नहीं है, यह कृष्ण भगवान का आशीर्वाद है क्योंकि यह उनके भंडार से दिया है। भगवान की तरफ से जो मिलता है उसे ना नहीं कहते, इसलिए आपको यह लेना ही पड़ेगा।’ ऐसा बोलने पर उसने वह पैसे अत्यंत मजबूरी के साथ लिए।

उस दिन बाद में फिर ताई ने श्रीकृष्ण के बताएनुसार ध्यान किया।

९ तारीख को सुबह विश्वजननी को अभिषेक करना था। उसके बाद कर्नल शर्मा

जी के यहाँ श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना होने वाली थी। दोपहर के तीन बजे कैंटोनमेंट एरिया के हनुमान मंदिर में जाना और बाद में ध्यान करना। ऐसा ताई का पूरे दिन का भरा पूरा कार्यक्रम था।

सुबह साढ़े आठ बजे ताई विश्वजननी मंदिर में जाने के लिए बाहर आयी। अनेक कृष्ण भक्तों की बड़ी-बड़ी आलीशान शानदार गाड़ियाँ बाहर खड़ी थी। हर किसी को ताई को अपनी गाड़ी से ले जाना था। कृष्ण किसकी गाड़ी से जाएगा, यह उत्सुकता सभी के मन में थी। एक भक्त के पास मारुति ८०० का पुराना मॉडल था। वह संकोच से दूर खड़े थे। ताई जब सीढ़ियाँ उतरकर नीचे आयी तब उन्होंने बराबर उसे ही पूछा, 'अरे, तुमने गाड़ी लाई है क्या? यह सुनकर तो वे सकपका गए, बोलने लगे, 'हाँ ताई, लायी है, लेकिन मेरी गाड़ी छोटी और पुरानी है।' ताई ने कहा, 'अरे, कोई भी चलेगी। कृष्ण को तुम्हारी गाड़ी से ही जाना है।' यह सुनकर उसकी खुशी तो जैसे आसमान छूने लगी। वह अपनी गाड़ी लाने के लिए दौड़कर गए। सच है शुद्ध सात्विक आनंद तो सिर्फ कृष्ण ही दे सकते हैं।

विश्वजननी के ऊपर अभिषेक हुआ। ताई ने वैभवी को पास बुलाया और कृष्ण ने उसे एक कलश दिया। वैभवी ने कहा, 'कृष्ण, मुझे अभी कलश क्यों दे रहे हो? माँ, मेरे घर की वास्तुशांती के समय जब आप आओगी, तभी यह कलश देना! तुम ही तो मेरे नये घर की वास्तुशांति करने वाली हो तभी मैं लूँगी, अभी नहीं चाहिए।' इस बात पर कभी ऐसा हुआ नहीं और उस दिन कृष्ण ने वैभवी को रोष में कहा, 'वैभवी, मैं क्या बताता हूँ वह सुनो, यह कलश अभी दे रहा हूँ, वह तुम लो।" और आखिर वह उसे लेने पर मजबूर किया।

ताई दो तीन भक्तों को साथ लेकर शर्मा जी के यहाँ केंद्र स्थापना के लिए गई। केंद्र स्थापना हुई। बाकी सभी भक्तों का वहाँ भोजन हुआ लेकिन कृष्ण ने ताई को वहाँ भोजन करने नहीं दिया।

ताई होटल में वापस आयी। समय बहुत कम था। उस समय दामाद जी ने पूछा, 'कल १० तारीख को मेरे माँ पिताजी की शादी की सालगिरह है। संयोग से आप भी साथ में है। हम सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं तो कल सुबह की मेजवानी हमारी तरफ से देकर, क्या हम सालगिरह मना सकते हैं?' इस पर ताई ने सिर्फ, 'संतोष, वह संभव होगा ऐसा लग नहीं रहा।' ऐसा उत्तर दिया। संतोष को अत्यंत आश्चर्य हुआ, क्योंकि कृष्ण का दूसरा कोई कार्यक्रम निश्चित नहीं हुआ था फिर भी माँ ऐसा क्यों

कह रही है कि, संभव नहीं होगा? उन्हें थोड़ा बुरा भी लगा।'

ताई हनुमान मंदिर में ध्यान करने के लिए गई। जब वह मंदिर से होटल में वापस आयी तब उनके चेहरे पर अत्यंत थकान दिख रही थी। धीमे धीमे कदम डालते हुए ताई कमरे में आयी और दरवाजा बंद हो गया। थोड़े समय पश्चात ताई का संदेशा आया यदि किसी को बाहर जाना हो तो जाकर आइए। मेरा आठ बजे तक ध्यान है मुझे कोई भी आकर मत उठाइए। ताई ने सुबह से थोड़ा सा डोसा व जूस उसके अलावा कुछ भी नहीं लिया था और उन्होंने इंसुलिन का डोस भी लिया था। यात्रा, ध्यान के कारण अत्यंत व्यस्तता, यह सब सोच कर साथ आए हुए भक्तों को चिंता होने लगी। क्या डॉक्टर को दिखा देना चाहिए? ऐसा भी विचार उन्होंने किया। अब वह सब आठ बजने की राह देखने लगे।

ध्यान होने के पश्चात ताई हँसते मुस्कुराते हुए बाहर आयी। वे एकदम तरोताजा दिख रही थी। उन्हें देखकर सभी ने शांति की साँस ली, सभी को अत्यंत प्रसन्नता हुई लेकिन फिर भी अत्यंत धीरज के साथ क्या हम डॉक्टर को बुला ले? ऐसा ताई से पूछा गया। ताई प्रसन्नता से मुस्कुराई और बोली, 'देखो डॉक्टर को बुलाने के झंझट में मत पड़ो, जब जब ऐसी स्थापना होती है उस समय कृष्ण मुझे तीन दिन ध्यान करने के लिए कहता है इसलिए आप सभी लोग मत घबराइए। अगर आवश्यकता महसूस हुई तो मैं डॉक्टर को बुलाने के लिए स्वयं कहूँगी।

बाद में संतोष जी की ओर मुड़ते हुए बोली, 'संतोष जी, कृष्ण कह रहा है, "आज आप मेरे लिए लस्सी मँगवाइए," तभी मैं लस्सी लूँगी।'

ऐसा बोलकर उन्होंने सभी को भोजन करने के लिए भेज दिया। लस्सी के भी सिर्फ तीन घूँट लिए और वे ध्यान करने के लिए उठी और ध्यान करने लगी। उसके पहले उन्होंने सभी के लिए संदेशा दिया, 'कल सुबह नौ बजे तक मेरा ध्यान चलने वाला है। मुझे कोई भी आकर मत उठाओ।'

१० तारीख का दिन उदय हुआ। ताई के बताएनुसार कोई भी सुबह उनके पास प्रणाम करने के लिए भी नहीं गया। उनके कमरे की दोनों कृष्ण भक्त महिलाओं ने भी धीरे धीरे बिना आवाज किए अपने सारे काम कर लिए।

नौ बजे के आसपास ताई को प्रणाम करने के लिए वैभवी आयी। उसने पास जाकर देखा तो ताई के शरीर पर उससे माँगकर ली हुई सफेद साड़ी थी। एक हाथ

आशीर्वाद के रूप में ऊपर की ओर था। उसने पास आकर माँ को पुकारा, 'माँ, ऐसा हाथ ऊपर करके ध्यान क्यों कर रही हो?' ऐसा बोलते हुए उसने चरणों को हाथ लगा कर प्रणाम किया। प्रणाम करने पर उसे चरण ठंडे लगे। उसने ताई को हिलाकर जगाने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ प्रतिसाद नहीं दे रही थी। ऐसा देखकर उसने तुरन्त ज़ोर ज़ोर से आवाज देकर अन्य भक्तों को बुलाया और कहने लगी, 'कोई जाकर जल्दी डॉक्टर को बुलाओ माँ उठ नहीं रही है।'

किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर क्या हुआ है? डॉक्टर को बुलाने के लिए एक व्यक्ति भागी। सभी के मन में यह विश्वास था कि जब ताई ने स्वयं कहा है कि, मैं ध्यान कर रही हूँ तो वे निश्चित रूप से ध्यानावस्था में है इसमें से वे जरूर बाहर आएँगी। सभी लोग घबराकर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' जाप करने लगे।

थोड़े समय पश्चात डॉक्टर आए उन्होंने ताई का निरीक्षण किया और एक साँस में बोले 'नो होप्स!' डॉक्टर के शब्दों पर कोई विश्वास रखने को तैयार नहीं था। कई बार ताई मृतावस्था के जैसे ध्यान करती थी वैसे ही आज भी होगा। ऐसा ही सबके मन में विश्वास था फिर भी ताई को अपोलो हॉस्पिटल में ले जाने का निश्चित हुआ।

अपोलो हॉस्पिटल के आईसीयू में ले गए। वहाँ सभी प्रकार की कोशिशें और परीक्षण किए गए और आखिर डॉक्टरों ने कहा, 'वह अब नहीं है।' साथ आए हुए लोगों को डॉक्टर के द्वारा कहे गए शब्द सुनकर बार-बार लग रहा था कि डॉक्टरों की कहीं गलती हो रही है। अनेक संतों के चरित्र में ऐसा देखा गया है कि जब वे गहरी ध्यानवस्था में रहते हैं। उस समय उनमें जीवन से संबंधित कोई लक्षण नजर नहीं आते हैं वैसा ही कुछ हमारी गुरु माँ के साथ भी होगा लेकिन आखिर सभी को सत्य परिस्थिति का सामना करना ही पड़ा। कुछ लोग आगे की तैयारियों में लगे। आगे की सभी कार्यवाही पूरी करके जल्द से जल्द ताई के साथ सभी बदलापूर जाने की व्यवस्था करने लगे। होटल में जाकर संदेशा दिया। सभी लोग अपना-अपना सामान जमा कर लो कभी भी निकलना पड़ेगा।

वहाँ के सभी कार्य नियम के अधीन पूर्ण कर के सब लोग ६:१५ बजे के हवाई जहाज में चढ़े और जहाज छूटा।

यह दु:खद समाचार मुंबई में सुबह ही नारकर काका, नंदा एवं मुन्ना को भेज दिया गया। इस बात पर किसी का विश्वास नहीं बैठ रहा था उन्होंने यह समाचार सभी कृष्ण भक्तों को सूचित करने के लिए कहा। ताई ने समाधी ले ली है। यह समाचार

हवा के झोंके की तरह चारों दिशाओं में फैल गया और फिर लगातार फोन बजने लगे। विदेश से, परप्रांत से, पूना, मुंबई के साथ महाराष्ट्र के अनेक गाँव गाँव से इस बारे में पूछताछ होने लगी। अनेक लोगों का यह कहना था कि यह भी ताई का मृतावस्था की तरह ही ध्यान है, इसलिए आगे की कार्यवाही करने से पहले पूरी जाँच-पड़ताल अच्छी तरह से कर ले लेकिन इस बार यह विश्वास झूठा साबित हुआ।

जनमानस के झुंड के झुंड मुंबई हवाई अड्डे पर और बदलापूर की ओर आने लगे।

११ तारीख की दोपहर को बदलापूर की शमशान भूमि में ब्रह्मवृंदो की उपस्थिति में, वेद घोषो में ताई के दोनों पुत्रों ने उन्हें मंत्राग्नी दिया। 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' और 'ॐ महान शक्ति देवताय नमः' के मंत्र घोष में परम् पूज्य ताई अनंत में विलीन हो गई।

दसवें दिन तिलांजलि के समय अनेक भक्त आए थे। वहाँ के सभी विधि प्राचीन परंपरा के अनुसार चल रहे थे। सभी के मन में इच्छा थी पिंड को होने वाला काकस्पर्श देखने की। उस समय ताई का विश्वजननी पद सार्थक सिद्ध हो कुछ ऐसा ही दृश्य सभी को देखने मिला। पिंड रखने पर एक कौआ अपने पिल्लों के साथ आकर वहाँ बैठा उसने पहले पिंड का चावल अपनी चोंच में लेकर प्रथम अपने पिल्लों को खिलाया। यह देख कर वहाँ खड़े एक व्यक्ति ने कहा, 'ताई, मतलब साक्षात् विश्वजननी है। सभी की माँ है इसलिए तो पहले पिल्लों को खिलाए बगैर कौआ स्वयं कैसे खाएगा?'

विश्वजननी की स्थापना के पश्चात कृष्ण ने जो घोषणा की थी कि, "ताई, आज से तुम विश्वजननी हो गयी हो। अब मैं तुम्हे ताई नहीं कहूँगा, अब तुम मेरी साथी हो गई हो।" इस प्रकार कृष्ण ने ताई को अपनी साथी बना कर अपने आप में विलीन कर लिया।

ताई का अचानक अकल्पित समाधिस्थ होना सभी का दिल दहलाकर गया। अनेक लोगों को जबरदस्त मानसिक धक्का बैठा। ताई के परिवारजनों के साथ साथ कृष्ण भक्तों के लिए भी यह एक बहुत बड़ा आघात था।

ताई ने समाधी लेने के पश्चात एक तप से ज्यादा का समय बीत चुका है। दिल्ली में विश्वजननी स्थापना के बाद कर्नाटक, हल्दीपूर, बदलापूर, मुंबई, पूना, रत्नागिरी

और रांची ऐसे कुल मिलाकर आठ जगहों पर विश्वजननी की स्थापना हुई। आगे की स्थापना दोहा में होने वाली है। भगवान श्रीकृष्ण की इच्छा से वह भी योग्य समय पर हो जाएगी।

ताई की प्रेरणा से आज देश-विदेश में ४९० के आसपास श्रीकृष्णलीलाकेंद्र है। अन्य देवताओं के स्थापित हुए मंदिरों में भी सामूहिक आराधना चालू है। अनेक भक्त वहाँ से प्रेरणा लेकर अपनी आध्यात्मिक प्रगति के पथ पर अग्रेसर हो रहे हैं। इस संयोग से 'ॐनमो भगवते वासुदेवाय' 'ॐ महान शक्ति देवताय नमः।' मंत्र की गूंज अनंत समय तक आसमाँ में गूँजती रही है, गूँजती रहेगी!!

# ।। ॐ ।।

ताई के पास आने वाले व्यक्ति प्रथमत: इस उत्सुकता के साथ आते कि 'कृष्ण बोलता है' मतलब क्या या फिर अपनी व्यावहारिक (प्रापंचिक), आध्यात्मिक मुश्किलों पर उपाय पूछने के लिए आते थे। चूंकि उनके आने का उद्देश्य यद्यपि भिन्न भिन्न रहता फिर भी जब वे लोग एक बार आने लगते तो धीरे धीरे जाने अनजाने में वे कृष्ण प्रेम की ओर, कृष्ण भक्ति की ओर मुड़ जाते। कृष्ण द्वारा मिलने वाले प्रेम, आकर्षण, वात्सल्य का अनुभव लेने के लिए वे बार-बार बदलापूर फिर आते रहते और ताई के संपर्क में बने रहने के लिए भरसक प्रयत्न करते रहते। वैसे ही अनेक लोग अपने मन में आने वाली नाना शंका कुशंकाओं का समाधान करने के लिए ताई से प्रश्न पूछ लेते। कृष्ण भी अत्यंत स्नेह के साथ सभी का समाधान करता। ऐसे ही कुछ प्रश्न उत्तर नीचे दिए गए हैं:

**प्रश्न १:** ताई, कृष्ण आपसे बात करता है, आदेश देता है, आपके माध्यम से विचरण करता है, तो यह सब होने के लिए आपने कितने वर्ष तपस्या या आराधना की है?

उत्तर: सच बताऊँ तो, यह माँ -बेटे के रिश्ते की तरह है। माँ अपने पुत्र को, वह कुछ करें या न करें बार-बार गोदी में लेकर उसे दुलारती रहती है वैसा ही मेरा माँ नवदुर्गा (महान शक्ति) और कृष्ण के साथ रिश्ता है। इस कार्य के लिए मैंने इस जन्म में तो भी कुछ पढ़ाई लिखाई, ध्यान धारणा, तपस्या नहीं की है लेकिन इन दोनों ने मुझे उनके निकट, एकदम खींचकर ले लिया है। यह उनकी ही कृपा का भाग है।

(प. पू. ताई का जन्म ईश्वरी संकेत के अनुसार हुआ था वैसा दृष्टांत उनकी माँ को उनके जन्म से पहले ही हुआ था। तपस्या के बारे में कहे तो, ताई का पूरा जीवन ही तपस्या था क्योंकि उनके जीवन का उद्देश्य ही था कृष्ण के शब्दों का शत-प्रतिशत पालन करना और इसके लिए उन्होंने अपने सर्वस्व की आहुति देकर भी सदैव उन नियमों का पालन किया।)

**प्रश्न २:** कृष्ण, तुम पंखुड़ियों का अभिषेक क्यों करते हो?

उत्तर: मैं मेरे हजारों भक्तों की जिम्मेदारी उठाता हूँ। उनके पीछे खड़ा रहूँगा, ऐसा उन्हें वचन देता हूँ। उसके प्रतीक के रूप में मैं ऐसा पंखुड़ियों का अभिषेक करता हूँ। आप सिर्फ एक बात का ध्यान रखिए। आपकी मेरे ऊपर की श्रद्धा को कभी विचलित मत होने दीजिए मैं सदैव आपके पीछे खड़ा था, खड़ा हूँ और आगे भी वैसे ही खड़ा रहूँगा। यह मेरा आप को दिया हुआ वचन है।

**प्रश्न ३:** कृष्ण, जीवन मतलब सिर्फ आयु क्या? वह सफल होने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर: सिर्फ आयु मतलब जीवन नहीं है वैसे देखा जाए तो मूक पशु पक्षियों को भी बहुत आयु होती है लेकिन उसे जीवन नहीं कहा जा सकता। जीवन में आने वाली सभी सुख, दुख, कष्ट, जिम्मेदारियाँ उठाते हुए जीवात्मा की मानसिक स्तर पर होने वाली द्वंद स्थिति का नाम ही जीवन है।

ऐसा जीवन जीते समय व्यवहार करते समय सच झूठ बोलना पड़ता है। जाने अनजाने में किसी का मन दुखाना पड़ता है। अपने मन को, इच्छाओं को मारना पड़ता है। सभी को यह करना पड़ता है। ऐसा जरूर कीजिए लेकिन सोते समय एक बार हृदय से मेरा स्मरण करते हुए 'श्रीकृष्णार्पणमस्तु' बोलकर पूरे दिन में किए गए सभी कर्म मुझे अर्पण कीजिए। अपने द्वारा किए गए स्वकर्म मुझे अर्पण करना इतना आसान नहीं है क्योंकि कुछ अच्छा हुआ तो यह मेरे कारण हुआ यह अहंकार बीच में आता है; और यदि कुछ अच्छा नहीं हुआ और मुझे अर्पण कर भी दिया तो भी जिसके कारण अच्छा नहीं हुआ है, उसके ऊपर का राग द्वेष मन से जाता नहीं है।

किए गए सभी सत्कर्मों का कर्तृत्व भी मेरी ओर दो। मेरी इच्छा से सभी भोग भोगों। इस प्रकार सभी कर्म मुझे अर्पण करते हुए सुख दुःख का सामना करते हुए जीवनयापन करो। मेरा सहारा लो। मेरी छत्रछाया में रहो। सभी संत सज्जन भी मेरी ओर सहज रीति से आ नहीं सकते। वे भी अपना पूरा जीवन, जननिंदा, अवहेलना, अपमान, बहिष्कार के कड़वे घूँट पीकर शांति के साथ व्यतीत करते हैं। मेरे ऊपर उनकी दृढ़ विश्वास और पूर्ण श्रद्धा रहती है। ये संत मेरा ही रूप है। उनके संकट के समय मैंने उन्हें अपना हाथ दिया और उनसे बँध गया, वह केवल उनका मेरे ऊपर का शुद्ध भोला भक्ति भाव देखकर। इन संतो ने मेरे ऊपर अपना

सर्वस्व न्यौछावर किया है। ऐसे भोले भक्तों का तो मै दास, सखा था लेकिन ऐसी भोलीभाली भक्ति करना जितना दिखता है, इतना आसान नहीं होता है। ऐसी भक्ति में संपूर्ण शरणागति होती है। पूर्णतः अहंकार रहित होकर अनन्य भाव से मुझे समर्पित होकर रहना। मुझ में पूर्णतः विलीन हो जाना है।

(अक्कलकोट के गुरुमंदिर में जब सेवकों ने स्वामी की चरण पादुकाएँ ताई के हाथों में रखी। उस समय ताई उनके ऊपर अत्यंत स्नेह से, धीरे धीरे, वात्सल्यपूर्ण भाव से हाथ घुमाते हुए एक वाक्य बोल गयी, "हम संतो को कितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं लेकिन इसके लिए ही उनका जन्म होता है।" अभी उसकी यहाँ याद आयी।)

**प्रश्न ४:** कृष्ण, कुलदेवी मतलब क्या?

उत्तर: अरे, कुलदेवी मतलब क्या यह मुझे पूछ रहे हो? घर में तुम्हारे माँ, बाप, बुजुर्ग व्यक्ति कोई होंगे न, उनसे पूछो। उसकी जानकारी लो। उसका चिंतन करो, ध्यान करो, सेवा करो और फिर मुझे प्रश्न पूछने आओं। कृष्ण ने उसे ऐसा अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहा।

"अब देखो, हमारी जो कुलदेवता होती हैं वह अपने घर का, कुल का पूरा भार उठाती हैं। वह हमारा रक्षण करती हैं इसलिए कुल देवता की सेवा किए बगैर यदि मेरी सेवा की, तो ऐसी सेवा मेरे पास नहीं पहुँचती है। मैं उसका स्वीकार नहीं कर सकता हूँ। तुम्हारा प्रथम आद्य कर्त्तव्य है कि तुम्हारे कुल का, घराने का अभिमान रखने वाली जो कुल देवता है उसकी सेवा करना।"

**प्रश्न ५:** ताई, मैं ईश्वर की बहुत सेवा करता हूँ लेकिन मेरी परेशानियाँ, कष्ट, भोग किसी भी स्थिति में कम नहीं होते सामने वाले को मेरे भोग देखकर दया आती है लेकिन भगवान को नहीं आती। ऐसा क्यों?

उत्तर: इस पर कृष्ण ने उत्तर दिया, "तुम्हारे भयंकर भोगों की तुलना ऋषि मुनियों के कष्टों से, उनकी कठिन तपस्याओं से करके देखो फिर तुम्हें पता चलेगा कि भोग मतलब क्या होता है। यह समस्या अनेक लोगों की होती है लेकिन जीवन में हमेशा अपने से नीचे की स्थिति के लोगों की ओर देखना चाहिए, ऊपर की स्थिति के लोगों की ओर नहीं देखना चाहिए फिर अपनी मुश्किल तो बहुत कम है; सिर्फ कम नहीं हम तो बहुत सुखी है। यह बात आपके मन को अच्छे से समझ में आ

जाएगी। पैदल चलने वाले व्यक्ति ने हमेशा मोटर गाड़ी में बैठे हुए की तरफ नहीं देखना चाहिए बल्कि जो बिना चप्पल के जा रहा है उसकी और देखना चाहिए।

हमने पुनर्जन्म पर विश्वास रखना ही चाहिए। प्रत्येक जीव जन्म लेते समय अपने पूर्वजन्म के संस्कार, अपने पूर्वकर्म, और पारिवारिक विरासत लेकर जन्म लेता है। अभी आप जो कर्म करते हैं उसका उपयोग पूर्वजन्म के दोष खत्म करने में होता है। एक बात हमेशा ध्यान में रखो, मैं हमेशा सत्य की बाजू से खड़ा रहता हूँ। किसी के ऊपर अन्याय होने नहीं देता हूँ। मुझे आपके जीवन के तीनों पन्नें (भूत, भविष्य और वर्तमान) पता होते हैं। उसके अनुसार मैं आपको उचित समय, पर उचित फल देता हूँ। मेरे ऊपर विश्वास रखिए।

**प्रश्न ६:** एक साधक महिला ने ताई से प्रश्न पूछा, 'ताई, कितना भी जाप किया, ध्यान किया फिर भी मन का द्वैत समाप्त नहीं होता है। सृष्टि के कण-कण में रामकृष्ण का दर्शन हो ऐसी मेरी इच्छा है। उसके लिए मैं क्या करूँ?'

उत्तर: 'आप आपके गुरु ने दिया हुआ नाम लेते हो उसका जाप करते हैं। उन्होंने दी हुई साधना करते हो। इससे आपके अंतर्मन में ॐकार की जागृति होगी, लेकिन उस गुरु मंत्र के साथ वर्तमान समय के लिए आवश्यक मंत्र 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का भी जाप कीजिए, अर्थात् इससे आपके अंतर्मन में स्थित ॐकार की जागृति त्वरित होने में मदद होगी। ॐकार की जागृति होने पर, आपको सर्वत्र रामकृष्ण दिखने लगेंगे।

**प्रश्न ७:** ताई, कृष्ण ने प्रसाद स्वीकार किया क्या?

उत्तर: मेरा स्वरूप ॐकार है, इसलिए प्रसाद का स्वीकार होने पर वहाँ वह पद चिन्हित होता है। यह कोई चमत्कार नहीं है।

**प्रश्न ८:** ताई कृष्ण तीन निवाले ही क्यों खाता है?

उत्तर: सच मायने में परब्रह्म को किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। वह तो सिर्फ खुशबू का धनी है फिर भी वह तीन निवाले खाता है। क्यों? उसके खाने से भक्तों को बहुत प्रसन्नता होती है; और अब तीन ही निवाले क्यों तो एक निवाला भक्तों के लिए, दूसरा निवाला जो ताई को पहचानते नहीं हैं ऐसे अज्ञात भक्तों के लिए और तीसरा निवाला परब्रह्म के लिए। सृष्टि में स्थित त्रिगुणात्मक तत्व अर्थात् सत्व, रज और तम; ब्रह्मा, विष्णु, महेश; सत्यम, शिवम, सुंदरम; स्वर्ग, मृत्यु,

पाताल आदि आदि तत्वों का पालनकर्ता अर्थात् परब्रह्म (ही)।

**प्रश्न ९:** ताई, आपने मुझे मैंने लाया हुआ प्रसाद ही दिया?

उत्तर: 'मतलब? वह तुमने मुझे नहीं दिया था क्या? एक बार दिया मतलब दिया। वह अर्पण की हुई वस्तु तुम्हारी आँखों के सामने चोरी हो गयी। फिर अब वह भगवान की वस्तु गयी, तुम्हारी नहीं, यह ध्यान में रखो।'

**प्रश्न १०:** ईश्वर दर्शन कैसे होता है?

उत्तर: ईश्वर स्वयं प्रकट होकर कभी दर्शन नहीं देते है। तुम इंसान में ईश्वर को देखो। अपने स्वयं के द्वारा की गयी कृति में ईश्वर को देखो। तुमने कृष्ण के लिए सुन्दर हार लाया। उसका सौंदर्य एवं खुशबू दो दिनों तक रही। सभी ने उसकी प्रशंसा की तुम्हें स्वयं को भी अत्यंत आनंद महसूस हुआ। यही है ईश्वर दर्शन !

**प्रश्न ११:** ताई मुक्ति अर्थात् क्या?

उत्तर: मुक्ति अर्थात् सर्वार्थ रीति से मेरी ओर आना। यहाँ आकर ही आपको अखंड समाधान और नित्यानंद मिलेगा। वही सच्ची मुक्ति है।

इस कलियुग में मनुष्य विचरण करते समय, पूर्ण श्रद्धा रखकर गुरु की सेवा करते है। वह करते समय कर्त्तव्य दक्ष रहकर योग्य प्रयत्न करने के पश्चात, जो भी परिणाम आएगा, वह परब्रह्म की इच्छा से आया है। ऐसा मानकर प्राप्त फल का स्वीकार करना उसी से आपको अखंड समाधान और नित्यानंद मिलेगा।

इसलिए सभी को बताता हूँ, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र की आराधना करना यही मुक्ति का, शांति का, अध्यात्मिकता का, परब्रह्म की ओर पूर्णावतार को साकार करने वाला एकमात्र मार्ग है। ध्यान में रखिए 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।'

**प्रश्न १२:** ताई, कृष्ण कहता है तुम सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ना सीखो, इसका अर्थ क्या है?

उत्तर: मेरी इच्छा के बगैर झाड़ का पत्ता भी हिलता नहीं है। मैं जगन्नियंता हूँ। सभी घटनाओं का सूत्रधार मैं हूँ। व्यवहारिक दृष्टि से देखा जाए तो आप कहते हैं दाने दाने पर लिखा है खाने वाले का नाम! जब आप किसी के लिए कुछ करते हैं लेकिन प्रत्यक्ष वस्तुस्थिति में कोई अन्य व्यक्ति ही आकर खाकर जाती है तो यह

कैसे होता है?

वैसे ही अनेकों बार आप देखते हैं किसी पौधे की अत्यंत निगरानी रखी फिर भी वह मुरझा गया। अब ऐसा क्यों हुआ? यह किसी को पता नहीं है। प्रत्येक जीव की कितनी साँसे हैं यह निश्चित रहता है। आप कितनी भी निगरानी रखिए, कुछ भी कीजिए, लेकिन जब साँसें खत्म होती है तो झाड़ मरता ही है इसलिए कोई भी व्यक्ति किसी भी बात के अच्छे से होने का श्रेय यदि स्वयं की ओर लेता है और यह कहता है कि यह सब मेरे कारण हुआ तो ऐसा बोलकर आप उस बात का घमंड मत कीजिए; या फिर झाड़ मुरझा गया, उसका दुख भी मत कीजिए। अगर खुशी मनानी ही है तो इस बात की मनाईऐ कि यह आनंद मुझे परब्रह्म की कृपा से मिला है। यदि ऐसा मानते हैं तो उस आनंद की अनुभूति परमोंच्च होगी और अगर यह सब मेरे (स्वयं) कारण हुआ ऐसा मानते है, तो उस आनंद का अंत कभी न कभी निश्चित रूप से होगा इसलिए सुख दुख सभी कुछ आप मेरे ऊपर छोड़िये। जैसी श्रीकृष्ण की इच्छा होगी वैसा होगा, ऐसा जब आप कहते हैं तब उस बात की संपूर्ण जिम्मेदारी मेरे ऊपर आती है और उसका मैं स्वीकार भी करता हूँ लेकिन मानवीय जीवन में ऐसा मानकर चलना सहज सरल नहीं है। यह साध्य करने के लिए मैं हमेशा बताता हूँ, 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप कीजिए। मुझे जिसकी ओर से जो करवाँ लेना रहता है, वह मैं उससे करवाँ ही लेता हूँ। जिसका मुझे स्वीकार नहीं करना होता है वह मैं नहीं लेता हूँ मतलब स्वीकार नहीं करता ऐसा नहीं है लेकिन आपके प्रारब्धानुसार जितना होगा उतना ही मैं देता हूँ और उतना ही मैं लेता भी हूँ क्योंकि मैं नियति के बाहर कभी भी जा नहीं सकता। मैंने बनाए हुए नियम मैं स्वयं कभी नहीं तोड़ता हूँ। मैं मुफ्त में किसी को कुछ देता नहीं हूँ और मुफ्त में किसी से कुछ लेता भी नहीं हूँ इसलिए मुझे योगेश्वर कहते हैं।

ईश्वर शब्द का अर्थ ही ऐसा है जो नश्वर संसार में रहकर भी, उसमें सम्मिलित नहीं होता, वह ईश्वर है इसलिए मुझे कहते हैं, योगेश्वर!

आप अपने मन मंदिर में योगेश्वर की स्थापना कीजिए। सभी कुछ उसके ऊपर सौंपिएँ अर्थात् इससे सभी कुछ सुचारू रूप से संपन्न होगा।

**प्रश्न १३:** अगर घर के सदस्यों की साधना भिन्न है, तो स्त्रियों ने स्वयं को पसंद आने वाली साधना कैसे करना चाहिए?

उत्तर: घर के सदस्यों के विरोध में व्यवहार नहीं करना चाहिए। अपने विचार ,

अपनी साधना किसी के बीच नहीं आने देनी चाहिए। हो सके तो अपरोक्ष रीति से करनी चाहिए या फिर रात में सोने से पहले सब काम खत्म होने के बाद करनी चाहिए लेकिन करनी जरूर चाहिए। अपनी साधना के कारण घर का वातावरण बिगड़ने नहीं देना चाहिए।

**प्रश्न १४:** ताई, टी. वी. के कारण बच्चे बिगड़ रहे हैं। घर में उपलब्ध सभी सुख-सुविधाओं के कारण वह आलसी, बेफिक्र, मनमौजी बनते जा रहे हैं। इस पर क्या उपाय है?

उत्तर: घर में यदि हम थोड़ा अनुशासन रखते हैं तो टी. वी. बुरा नहीं है। कितनी अच्छी बातें देखने को मिलती हैं। सारी दुनिया टी. वी., फोन, परिवहन के साधनों के कारण पास आ गयी है। विज्ञान की प्रगति के कारण ही यह सब संभव हुआ है। ऐसी वैज्ञानिक प्रगति भविष्य में भी होती रहेगी। कालगति का चक्र घूमता ही रहेगा इसलिए समय समय पर परिस्थितियों के साथ होने वाला परिवर्तनों को, अपने स्वभाव, आचार, विचार में लाकर हमने जोड़ लेना चाहिए। यह सब करते हुए अनुशासन का पालन भी करना चाहिए। स्वयं के साथ-साथ बच्चों को भी अनुशासन पालन का महत्व बताना चाहिए। तभी समाज अनुशासित होकर सुचारु रूप से चल सकेगा। अपनी श्रद्धा का जतन करते समय दूसरों की श्रद्धा का भी आदर करना सीखना चाहिए।

वर्तमान समय में प्रचलित होने वाले गलत रवैये के कुपरिणाम बच्चों को समझा कर बताना चाहिए। अपनी आर्थिक क्षमता का एहसास बच्चों को देना ही चाहिए। पिक्चरों में क्षण भर में मिलने वाले बंगले, गाड़ी, अन्य सुख सुविधाएँ जीवन में प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करने में पूरी जिंदगी समाप्त हो जाती है, वह समझ सके इस तरह से उन्हें यह अच्छे से समझा दीजिए। अपने समाज की ओर, सामाजिक संस्थाओं की ओर आँखें खोल कर देखना सीखाईए। साधु संतों पर, ईश्वर पर, अपने माता-पिता पर विश्वास रखना सिखाएँ।

**प्रश्न १५:** यदि दाएँ हाथ में माला लेकर जाप किया तो क्या होगा?

उत्तर: दोनों हाथ हमारे ही है फिर दायां क्या और बाया क्या? है कि नहीं? अपने सभी नित्यकर्म हमें बाएँ हाथ से करने की आदत होती है। शुभ कामों में दायां हाथ निषिद्ध माना गया है, लेकिन अपना हृदय दायी ओर ही स्थित है और वह दाएँ हाथ के ज्यादा करीब है इसलिए दोनों हाथों से काम कीजिए। जाप भी जरूर कीजिए।

**प्रश्न १६:** सत्पात्री दान अर्थात् क्या?

उत्तर: सत्पात्री दान इस शब्द का अर्थ ही ऐसा है कि जिस इंसान को जिस समय, जितनी आवश्यकता है, उतना ही देना अर्थात् इस प्रकार से किया गया दान। एक उदाहरण देखते हैं एक अमीर इंसान है, उसे बहुत भूख लगी है, आस पास कोई होटल भी नहीं है, उसके पास खाने के लिए भी कुछ नहीं है। उसकी उस अमीरी का, पैसे का उस समय उसकी क्षुधा शांत करने में कोई उपयोग नहीं है। ऐसे समय पर यदि कोई उसे कुछ खाने को देता है तो उसे हम सत्पात्री दान कहते हैं। जब जिसे जिस समय जिस चीज की आवश्यकता नहीं है, उसका महत्व नहीं है, सिर्फ हमारे देने पर लेना पड़ेगा, इसलिए वह लेता है, वहाँ कुछ भी देना सत्पात्री दान बिल्कुल नहीं है। भूखे व्यक्ति को अन्नदान करना यह सबसे बड़ा दान है क्योंकि भूखे व्यक्ति को अन्न देने से उसका आत्मा तृप्त होता है। भोजन के पश्चात जब वह तृप्ति की डकार देता है, तब आप की दृष्टि से वह क्षुधा शांत होने का लक्षण होता है लेकिन मेरी दृष्टि से वह समाधान का, संतोष का ॐकार है।

अनेक संस्थाओं को वृद्धाश्रम को, अनाथालयों को, जब आप दान देते हैं तब यह बात जरूर ध्यान में रखिए कि उस संस्था को इसकी आवश्यकता है कि नहीं? क्योंकि आपके द्वारा दिए गए दान से वहाँ आनंद निर्माण होना चाहिए। जब आनंद की निर्मिति नहीं होती है तब वह सत्पात्री दान नहीं कहलाता है।

**प्रश्न १७:** ताई, महाशिवरात्रि के दिन लोग गगरी गगरी भर कर दूध का इस्तेमाल अभिषेक के लिए करते हैं और बाद में वह व्यर्थ जाता है। दूसरी ओर गरीब लोगों को दूध मिलता नहीं है इसलिए दूध के लिए तरसते हैं। इस स्थिति में हमने क्या करना चाहिए?

उत्तर: ऐसे समय पर जब बहुत लोग अभिषेक के लिए दूध लाते हैं उस समय थोड़ा दूध निकालकर बाकी दूध उन्हें प्रसाद स्वरूप वापिस दे देना चाहिए अथवा अभिषेक का सारा दूध एकत्रित करके, उसे गर्म करके सभी में प्रसाद के रूप में बाँट देना चाहिए लेकिन किसी भी स्थिति में व्यर्थ बिल्कुल जाने नहीं देना चाहिए। यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

**प्रश्न १८:** फिर बर्तन भरकर यदि दूध का अभिषेक किया तो नहीं चलेगा क्या?

उत्तर: क्यों नहीं चलेगा? तुमको 'एकदम छोटी सी कटोरी भर कर दूध' की कहानी

मालूम है न लेकिन यदि तुम यह किसी को बताओगी तो किसी का उस पर विश्वास बैठना बहुत कठिन है। एक बार किसी ने तीन लीटर दूध का अभिषेक किया और फिर तुरन्त उसके ऊपर ही इत्र का अभिषेक भी किया और फिर पूछने लगा, कृष्ण, तुम्हें अभिषेक पहुँचा क्या? मैंने तुरन्त कहा मैं इसका स्वीकार नहीं कर सकता। वह मुझे नहीं पहुँचा क्योंकि ऐसा इत्र मिश्रित दूध कोई भी पी नहीं सकता इसलिए दूध और इत्र ऐसा एकत्रित अभिषेक कभी मत कीजिए। दूध से अभिषेक होने के पश्चात उसे अलग निकाल लीजिए, फिर पानी डालकर बाद में इत्र से अभिषेक कीजिए। आजकल अनेक प्रकार के कर्मकांड अलग-अलग प्रकार की कल्पनाएँ, कृतियाँ बहुत प्रचलित हो रही हैं लेकिन सभी ने यह ध्यान में रखना चाहिए कि कोई भी चीज कभी भी व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। मेरा भक्त मुझे जो भी अत्यंत श्रद्धा भाव के साथ अर्पण करता है। उसका कोई भी हिस्सा व्यर्थ कभी नहीं जाना चाहिए।

**प्रश्न १९:** ताई, पिछले इक्कीस साल से मैं प्रत्येक पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण की पूजा करती हूँ। अब उम्र के अनुसार होता नहीं है इसलिए ऐसा लगता है कि मैं एक मंडप में एक सौ आठ सत्यनारायण पूजा करके उसका उद्यापन कर लूँ क्या?

उत्तर: तुम मैं बताऊँगा वह सुनोगी या तुम्हारे पंडित जी (ब्राम्हण) बताएँगे वह सुनोगी। 'कृष्ण, अर्थात् तुम जो बताओगे वही सुनूँगी।' फिर सुनो, एक मंडप के अंदर १०८ पूजा रचाकर कैसे चलेगा? मैं तो एक ही हूँ न। फिर एक ही पूजा करना। वह भी तुम स्वयं करना। (वह महिला विधवा थी) और १०८ दंपत्ति को प्रसाद के लिए बुलाना। मतलब सभी कुछ व्यवस्थित रूप से संपन्न होगा व मैं उसका स्वीकार कर सकूँगा।

**प्रश्न २०:** ताई अनेक पंथों में खाने पीने से संबंधित अनेक बंधन होते हैं। वह बंधन प्रत्येक व्यक्ति सहन कर सकेगा ऐसा नहीं होता। व्रत वैकल्य करने से परेशानी होती है फिर क्या करूँ?

उत्तर: मुझे किसी भी प्रकार का बंधन अच्छा नहीं लगता। मैं बन्धनो से परे हूँ, खाने पीने से संबंधित बंधन तो मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। आप जो भी मुझे प्रसाद के रूप में देते हैं, वह मैं खुशबू के रूप में स्वीकार करता हूँ क्योंकि सुगंध ही मेरा स्वरूप है इसीलिए किसी ने कुछ खाया पीया, तो उससे मेरा कोई संबंध नहीं है। हृदयके अंतः करण से 'कृष्ण आओ' यह पुकारने में ही मैं हूँ। यह अत्यंत

गूढ़ रहस्य है, सत्य है। ऐसे पाँच मिनट में समझ में नहीं आएगा।

आप सदैव यह ध्यान में रखिए कि मुझे किसी भी प्रकार का कोई बंधन नहीं है। मैं बंधन मुक्त हूँ। भक्तों की हृदय से आयी आर्त पुकार पर दौड़ कर जाना सिर्फ इतना ही मेरा काम है और उन्होंने मुझे हृदय से पुकारना यह मेरे भक्तों का काम है। यही दो बातें अत्यंत महत्वपूर्ण है यदि इन दो बातों का पालन आपने और मैंने स्वयं किया, तो उसके फलस्वरूप आपके और मेरे बीच का बंधन कभी भी नहीं टूटेगा।

**प्रश्न २१:** कृष्ण, मुझे तुम्हारे अलावा किसी ओर को नमस्कार करना अच्छा नहीं लगता। जब तुम गुरु स्थान पर हो फिर बाकी औपचारिकताओं की क्या आवश्यकता है?

उत्तर: यह क्या बोल रही हो? तुम्हें पता है न, मैं सभी में जागृत हूँ, वास्तव्य करता हूँ इसलिए ध्यान में रखो, नमस्कार कहीं भी किया फिर भी वह वहाँ उपस्थित मुझे ही नमस्कार किया और वह कृष्णार्पण करके मुझे ही अर्पण कर दो, बस हो गया! ज्यादा हो जाए तो इतना कह दो, कृष्ण, तुम आज मेरे सामने इस रुप में उपस्थित हो। मेरा प्रणाम स्वीकार करो।

तुम्हें रामकृष्ण परमहंस की कहानी मालूम है न? एक बार एक वेश्या उनके सामने सज धज कर रात के समय उनके कमरे में परीक्षा लेने आयी। उसकी ओर देखते ही उन्होंने कहा, माँ, आज इस रूप में आयी हो। तुम्हें मेरा प्रणाम हो, ऐसा बोलकर वे समाधीमग्न हो गए और वह स्त्री लज्जित होकर वहाँ से निकल गई।

ऐसा भाव होना चाहिए। मैं भाव का भूखा हूँ।

**प्रश्न २२:** कृष्ण, अमेरिका में वास्तव्य के कारण तिथि समझ में नहीं आती। सामग्री पास में नहीं रहती, पंडित जी नहीं रहते। इसलिए हमारे हाथों से पूर्वजों के श्राद्ध कर्म आदि नहीं हो पाते, फिर उसका हमें पाप लगेगा क्या?

उत्तर: जिस वक्त आपको ऐसा लगे कि, मेरी पूर्वजों के लिए कुछ करने की दिल से ईच्छा है लेकिन यहाँ की मुश्किलों के कारण वह मुमकिन नहीं हो पा रहा है। ऐसे समय आप दिल से प्रार्थना तो कर सकते हैं न? पूरे श्रद्धा भाव के साथ, कृष्ण को बताइए, कृष्ण संपूर्ण विश्व तुझमें समाया हुआ है इसीलिए मुझे जो कर्म करना मुमकिन है वह मैं तुम्हें अर्पण करती हूँ। उन्हें (पूर्वजों) सद्गति मिलने दो।

ऐसे समय पर संपूर्ण जिम्मेदारी मेरे ऊपर आती है। इसके लिए अन्य कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

किसी भी बात का आडंबर मत कीजिए। हर किसी ने अपना वर्चस्व दिखाने के लिए कुछ नियम बनाए, कुछ बंधन डाले; लेकिन मैं तो निर्विकार, निर्विकल्प, निराकार हूँ। मुझे किसी के कोई बंधन नहीं चाहिए। श्रद्धा और विश्वास यह दो बातें ही हर कोई हर समय पर मुझे दे सकता है। उसकी उन भावनाओं का मैं स्वीकार भी कर सकता हूँ और यह ताकत पूर्ण भाव से की गयी प्रार्थना में है।

**प्रश्न २३:** कृष्ण, यदि घर में किसी की मृत्यु पंचक नक्षत्र में होती है तो पंडित जी कुछ पूजा विधि करना चाहिए ऐसा बताते हैं। अन्यथा घर में मृत्यु होना संभावित है। यह सत्य है क्या?

उत्तर: वह नहीं किया तो भी चलेगा, लेकिन शिवजी पर अभिषेक करके उस अभिषेक का तीर्थ घर के सभी सदस्यों ने ग्रहण करना अर्थात् इससे दोष नहीं होगा।

**प्रश्न २४:** मृत्यु के पश्चात हम कहाँ जाते हैं? वहाँ कितने समय तक वास करते हैं?

उत्तर: वैसे बताया नही जा सकता है क्योंकि यह तो उस व्यक्ति के संस्कारों पर निर्भर रहता है लेकिन जो सच्चा आत्मा होता है वह सिर्फ मेरी ओर आने वाला होता है। आत्मा कभी भी नष्ट नहीं होता। आत्मा इस शब्द का अर्थ ही है 'ॐकार'! अपने-अपने कर्मो के हिसाब से गति मिलती है और एक न एक दिन वह मेरी ओर आता है।

**प्रश्न २५:** यदि किसी ने आत्महत्या की होगी, तो उसके लिए मैं कुछ कर सकता हूँ क्या?

उत्तर: नहीं। उसके लिए आप कुछ नहीं कर सकते। वह जो भी आत्मा है, वह अनेक जन्म लेते लेते अपनी गति से सुधरता है और अंत में मुझे आकर मिलता है।

**प्रश्न २६:** मेरे पास बहुत सारी आध्यात्मिक धार्मिक किताबें हैं। वह मैंने पढ़नी चाहिए कि नहीं?

उत्तर: अगर पढ़ने से आनंद मिलता है तो पढ़िए। पढ़ना ही चाहिए ऐसा नहीं है।

हम जो कुछ भी करते हैं उससे यदि हमें आनंद मिलता है तो वह जगह हमारी है ऐसा समझना चाहिए और वह करना भी चाहिए। आनंद लेना भी चाहिए और उसे टिकाना भी चाहिए और वह टिकाने के लिए जो शक्ति लगती है, वह मेरी ओर से प्राप्त कीजिए। प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग कार्यो में आनंद महसूस होता है। किसी को पढ़ने में, किसी को मंत्र जाप करने में, तो किसी को सेवा करने में, इस प्रकार जो कार्य करने से हमें आनंद महसूस होता है। उस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। सच्चा आनंद प्राप्त करना चाहिए। उस आनंद के द्वारा ही मेरी प्राप्ति होती है।

**प्रश्न २७:** कृष्ण, तुम्हें क्या पसंद है? प्रसाद के रूप में क्या दूं?

उत्तर: कुछ भी दो। जो तुम खाने वाली हो वह प्रेम से मुझे भी दो। वही मेरा प्रसाद है।

**प्रश्न २८:** कृष्ण, अब तुम चाय पीते हो? तुम्हारे समय में चाय थी क्या?

उत्तर: मेरे समय में चाय नहीं थी लेकिन वर्तमान समय में मेरे जो गरीब भक्त हैं उन्हें दूध लेना संभव नहीं है, वे ले नहीं सकते, इसलिए मुझे चाय देते हैं और उसका मैं अत्यंत प्रसन्नता से स्वीकार भी करता हूँ।

कृष्ण अभी भी झोपड़ी में रहने वाले भक्तों के यहाँ जाता है उस समय यदि उस भक्त ने कहा ‘कृष्ण, तुम आए लेकिन मेरे पास तुम्हें देने लायक कुछ नहीं है रे’ ऐसा यदि बोलने लगा तब कृष्ण कहता है “अरे, तुम्हारे पास थोड़ा आटा है क्या? वह लाओ। उसमें थोड़ी शक्कर या गुड होगा तो मिलाओं और उसमें थोड़ा सा पानी डालकर उसका लड्डू बनाकर वह मुझे प्रेम से दो। वह मैं स्वीकारता हूँ लेकिन मेरे पास देने को कुछ नहीं है ऐसा मत कहो! मैं तो प्रेम का भूखा हूँ। आप प्रेम से मुझे जो कुछ भी अर्पण करते हैं उसका मैं स्वीकार करता हूँ।

**प्रश्न २९:** कृष्ण तुम काले सांवले हो क्या?

उत्तर: नहीं !नहीं! मैं तो तेज:पुंज हूँ। जैसे कोई तेज का गोल। मैं ज्योतिर्मय हूँ।

**प्रश्न ३०:** कृष्ण, कभी-कभी तुम्हारे - ताई के पास की व्यक्ति अचानक दूर हो जाती है ऐसा क्यों होता है?

उत्तर: मैं आपको हमेशा बताता हूँ कि मुझे कर्त्तव्यों में देखिए। वह प्रेम से कीजिए क्योंकि इस प्रकार कर्त्तव्य करते समय आपकी यौगिक शक्ति में वृद्धि होती है। वह भी सिर्फ इस जन्म के लिए नहीं तो वह ऊर्जा आपके अगले जन्म में भी आपके साथ रहती है। जब आपकी यह शक्ति खत्म होती है। उस समय आप अपने आप मुझसे दूर हो जाते हो। आपको उस प्रकार की ही बुद्धि होती है इसलिए कृष्ण हमेशा बताता है कि आप अपने कर्त्तव्य प्रेम से, सेवाभाव के साथ, श्रद्धा से करिए। यही आपकी आद्य भूमिका है फिर व्रत वैकल्य, पूजा पाठ करने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है सिर्फ कर्त्तव्यों के प्रति जागृत रहिए।

**प्रश्न ३१:** ताई गृहस्थाश्रमी लोगों को आप क्या उपदेश करेंगे?

उत्तर: ईश्वर के प्रति ओतप्रोत प्रेम भाव अपने हृदय में भरा रहना अत्यंत आवश्यक है। उस प्रेम की महती हमने जाननी ही चाहिए। माँ अपने सब बच्चों को प्रेम करती है लेकिन जिस बच्चे का अपनी माँ पर अनन्य प्रेम भाव रहता है। उस पर माँ के प्रेम का वरदहस्त हमेशा बना रहता है। वैसे ही ईश्वर का भी है। भगवान ने वचन ही दिया है कि वह उनके भक्तों के पीछे खड़े रहते ही हैं। जो भक्त परब्रह्म को अपना प्रेमनिधान मानते हैं, उनके निकट परमेश्वर सदैव वास करते हैं। ईश्वर के प्रति प्रेम-भाव यह हमारे जीवन की अत्यंत नितांत आवश्यकता है, इसका हमें सदैव एहसास रखना आवश्यक है।

**प्रश्न ३२:** आज के आधुनिक समय में मनुष्य की आयु मर्यादा बढ़ती जा रही है। जेष्ठ नागरिकों की संख्या भी बढ़ रही है। आप उन्हें क्या बताएँगे?

उत्तर: हम सभी ने परब्रह्म के लिए और उसकी भक्ति करने के लिए बचपन से ही समय निकालना चाहिए। ईश्वर पर श्रद्धा और विश्वास रखना ही चाहिए। जेष्ठ नागरिकों ने हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि जीवन में उतार-चढ़ाव आएँगे ही। अपना आनंद दूसरे पर निर्भर रखने की अपेक्षा परब्रह्म के ऊपर श्रद्धा रखनी चाहिए और अपने कर्त्तव्य के प्रति चूकना नहीं चाहिए। कर्त्तव्य करते समय फल की अपेक्षा मत कीजिए। वह योग्य समय पर और जितना योग्य है उतना निश्चित रूप से मिलेगा इस पर विश्वास रखिए। ईश्वर कभी किसी पर अन्याय नहीं होने देता है। उसके इस वचन पर दृढ़ श्रद्धा रखकर व्यवहार कीजिए। एक समय ऐसा

आएगा जब परब्रह्म का अस्तित्व चरचर में महसूस होगा और आनंद की, सुख की अनुभूति आएगी।

**प्रश्न ३३:** ताई, वृद्धाश्रम के बारे में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: जब अपने बच्चे और समाज जेष्ठ नागरिकों को पर्याप्त समय और प्रेम नहीं दे पाते हैं, उस समय ऐसे आश्रमों की आवश्यकता महसूस होती है। वहाँ यह जेष्ठ नागरिक एक दूसरे के सानिध्य में स्नेह के साथ रममाण होते हैं। सद्य स्थिति में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ रही है। यह निश्चित है। कालाय तस्मै नमः यही सत्य है। यह काल की महिमा है।

**प्रश्न ३४:** बच्चों के पालन पोषण के बारे में आप उनके पालको को क्या बताएँगे?

उत्तर: पालक और बच्चों के बीच संघर्ष यह तो इस आधुनिक समय की जैसे निशानी ही है। पालकों ने बच्चों को सिर्फ मार्गदर्शन करना चाहिए। उनके ऊपर किसी भी प्रकार की जोर जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। उस जबरदस्ती के विपरीत परिणाम होने की संभावना ही ज्यादा रहती है।

# ।। ॐ ।।

## ।। गीता।।

भगवान श्रीकृष्ण ने जगह जगह पर ताई के माध्यम से गीता से संबंधित अनेक बातों के बारे में मार्गदर्शन किया। उन सभी संदर्भो को यहाँ संकलित करने का प्रयत्न किया है।

१) भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं, गीता यह मेरी वाङ्मयीन मूर्ति है। मोहग्रस्त अर्जुन को निमित्त बनाकर वह पूरे मानव जाति के कल्याण के लिए मैंने बतायी है। अलग-अलग धर्मो के नाम पर चलने वाले शाब्दिक जंजाल की गलतफहमियों को शह मत दीजिए। मानवता धर्म यही मेरा गीता का सबसे सच्चा धर्म है। उसे देश-काल, समाज, संप्रदाय, भौगोलिक स्थिति अथवा परंपराएँ किसी बात की कोई बाधा नहीं आएगी। इंसानियत ही मानवीय जीवन का सबसे बड़ा अलंकार है। वह मेरे ऊपर श्रद्धा रखकर ही जतन किया जा सकता है। जब आपकी मानसिक स्थिति अर्जुन की तरह संभ्रमित होती है, उस समय यह गीता ही आपको योग्य मार्गदर्शन करती है।

२) गीता सिर्फ मुँह जबानी मत बोलिए। उसे आचरण में लाने का भरसक प्रयत्न कीजिए। परिवार के सदस्य के रूप में मुझे देखिए। बड़े बूजुर्गो की सेवा कीजिए। निष्काम सेवा की शुरुवात अपने स्वयं के घर से कीजिए। वह सब सेवा मुझे निश्चित रूप से पहुँचती है।

३) श्रीमद्भगवद् गीता ग्रंथ हमारे भारत की 'नींव' है। गीता बताने वाला योगेश्वर श्रीकृष्ण और आज आप सभी के माध्यम से विचरण करने वाला श्रीकृष्ण अलग-अलग नहीं है।

४) प्रत्येक जीवात्मा मतलब अर्जुन ही है। कोई भी कार्य करते समय यह करुँ कि वह करुँ। ऐसा जीवात्मा को लगता रहता है उस समय उसके अंदर का अर्जुन जागृत होता है। उस समय उसके अंतःकरण में ॐकार रूप में परमात्मा जागृत रहता है। जीवात्मा को योग्य बुद्धि देकर मैं ही उसकी ओर से कार्य करवाँ लेता हूँ,

अर्थात् फिर इससे योग्य कर्म ही घटित होते है।

५) गीता में दिए हुए श्लोक मेरे वचन ही है। मेरे वचनों पर विश्वास रखें। उसके अनुसार कार्य कीजिए। कर्त्तव्य के रूप में मुझे देखिए।

६) गीता पढ़ो, ऐसा मैं सबको बताता था, लेकिन वर्तमान स्थिति में संस्कृत भाषा किसी को ठीक से नहीं आती है। पढ़नी भी नहीं आती है वैसे ही पढ़ा हुआ सही है या गलत, ऐसा मन में संदेह उत्पन्न होता है इसलिए ध्यान रखिए, संदेह कि हवा मत आने दीजिए। अध्यात्म मार्ग में चलते समय मन में संदेह रहना यह फिसलन भरी सीढ़ियाँ है इसीलिए किसी को भी जो भी करना है वह प्रेम से, श्रद्धा से कीजिए अर्थात् ऐसा करने से वह कृष्ण को पहुँचेगा ही, ऐसी भावना रखकर करे। अगर गीता पढ़ना नहीं आता है तो वह न पढ़ते हुए 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस तारक मंत्र का जाप कीजिए।

७) यदि आपने गीता का एक अध्याय या एक श्लोक ही सिर्फ पढ़ा है फिर भी उसके पश्चात सात श्लोकी गीता महात्म्य पढ़ना कभी मत भूलिएँ।

८) किसी भी शारीरिक, मानसिक बीमारी से बाहर आने के लिए कृष्ण को वैसी प्रार्थना करके श्रीमद्भगवतगीता के ग्यारहवें* अध्याय का, छत्तीसवें श्लोक का कम से कम एक माला (१०८ बार) जाप कीजिए। निश्चित रूप से आपका दुख कम होगा। (स्थाने ऋषिकेश ......अ.११ श्लोक ३६) अनेक कृष्णभक्तों ने इसका अनुभव लिया हुआ है।

*स्थाने ऋषिकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।*

*रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घा: ।।३६।।*

९) जिन्हें संभव है उन्होंने प्रत्येक सोमवार को दोपहर तीन से छ: के बीच जितनी गीता पढ़ना संभव हो सके उतनी पढ़नी चाहिए और उसके बाद सात श्लोकी गीता महात्म्य (गीताशास्त्र मिदं पुण्यं .....) भी पढ़ना चाहिए।

गीताशास्त्रमिदं पुण्यं य: पठेत्प्रयत: पुमान् ।
विष्णो: पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जित: ।।१।।

गीताध्ययनशीलस्य प्राणायामपरस्य च ।
नैव सन्ति हि पापानि पूर्वजन्मकृतानि च ।।२।।

मलनिर्मोचनं पुंसां जलस्नानं दिने दिने ।।
सकृद्गीताम्भसि स्नानं संसारमलनाशनम् ।।३।।

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यै शास्त्रविस्तरै: ।।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनि: सृता ।।४।।

भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनि: सृतम् ।।
गीतागङ्गोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते ।।५।।

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दन: ।।
पार्थो वत्स: सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ।।६।।

एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवों देवकीपुत्र एव ।।
एको मंत्रस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा ।।७।।

# ।। ॐ ।।

'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' तारक मंत्र प. पू. ताई ने सभी कृष्णभक्तों को दिया है। इस मंत्र का अर्थ एवं महत्व हम उन्हीं के शब्दों में देखते हैं।

अपने प्रत्येक दिन की शुरुवात 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र से कीजिए। इस मंत्र में हरि, शिव और शक्ति तीनों को प्रणाम है। ॐ अर्थात् शिव को प्रणाम, भगवती मतलब भगवती शक्ति को और वासुदेव मतलब कृष्ण (परब्रह्म) को प्रणाम। अब आगे से मैं शिव शक्ति को साथ लेकर कार्य करने वाला हूँ इसलिए हम तीनों को प्रणाम करके यदि आप अपने दिन का प्रारंभ करेंगे तो हम तीनों की आपको मदद मिलेगी।

ॐ ही मेरा रूप है। मैं प्रत्येक व्यक्ति में उसी रूप में वास करता हूँ। भक्तों को अनुभूति देने वाला यही मेरा रूप है। इसी रूप पर, अक्षर पर मैंने सारे ब्रह्मांड को उठा रखा है उस रूप को नमो अर्थात् नमस्कार है।

नमो शब्द की कृति जब हम देखते हैं तो, जब आपके दोनों हाथ जुड़ते हैं तब मेरे प्रति प्रेम, नम्रता और अपनापन व्यक्त होता है। श्रद्धा की शक्ति का जब यह प्रकटीकरण होता है उसके प्रतीक के रूप में आँखें बंद हो जाती है, साँसे थम जाती है। सिर विनम्रता से झुक जाता है और दोनों कर जुड़कर हृदय के निकट आ जाते हैं। आपके हृदय में स्थित मेरा स्थान जागृत करने के लिए यह कृति अनजाने में हो जाती है। इसके अलावा न मतलब - नहीं। मोह माया, मद, मत्सर सब समाप्त होकर हे ईश्वर तुम्हारे इस रूप की ओर मैं नम्र होता हूँ अर्थात् नमो।

भगवते वासुदेवाय मतलब शक्ति और शिव। शिवशक्ति की ताकत पर ही संपूर्ण विश्व की उत्पत्ति निर्भर रहती है और उसका स्वरूप अर्थात् ही ॐ। ॐ अर्थात् शिव शक्ति के मिलन से निर्माण होने वाला ॐकार। ॐ का अर्थ ही है कि शक्ति, उत्साह, प्रेम, धैर्य, कर्म इन सभी की जागृति होना। चराचर में विद्यमान मैं अर्थात् ॐ कार, उसे मै नमस्कार करता हूँ।

मैं कण-कण में जहाँ जहाँ उपस्थित हूँ वहाँ इस अभिवादन का स्वीकार करता हूँ।

गीता की तुल्यता रखने वाला, आपके जीवन को ताकत देने वाला, आपके जीवन में स्थिरता निर्माण करने वाला, आपकी मन:शक्ति बढ़ाने वाला, ऐसा यह दिव्य मंत्र है।

अपना जीवन सुख दु:ख का मिलाप है। देखा जाए तो यह दोनों शब्द ही तुलनात्मक है। वैसे सुख-दु:ख यह अपने मानने के ऊपर है। यह दोनों तुलनात्मक शब्द झेलने के लिए मन को जिस ताक़त की आवश्यकता होती है। वह ताकत इसी मंत्र से मिलने वाली है, इसलिए आज के युग में इस मंत्र के जाप की अत्यंत आवश्यकता है इसीलिए पूरे दिन के कुछ क्षण तो भी सभी ने चलते, बोलते, घूमते फिरते इस मंत्र का जाप करना चाहिए अर्थात् ऐसा करने से मैं लगातार आपके सानिध्य में रहते हुए आपके साथ विचरण करता रहूँगा। ऐसा भगवान श्रीकृष्ण बार-बार बताते हैं और अपने भक्तों को वैसा अनुभव भी देते हैं।

मेरे ऊपर पूर्ण श्रद्धा रखकर मुझे अपना बनाने के लिए आप जिस मंत्र से मुझे पुकारेंगे वह मंत्र है 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इसी मंत्र का जाप कीजिए, ऐसा मैं आपको आग्रह करता हूँ क्योंकि इस युग की (समय की) आवश्यकता इसी मंत्र से पूरी की जाने वाली है। इसी मंत्र से आप मुझे पुकारिए, मेरी आराधना कीजिए। मुझे बुलाइए और अपना बना लीजिए। इसी में पूरे जीवन का तथ्य (सारांश) है। इसी तथ्य और पथ्य का पालन करके जीवन को आवश्यक लगने वाली ताकत बढ़ाइए। अपनी कार्य क्षमता बढ़ाने के लिए मुझे अपना बनाकर मेरी मदद प्राप्त कीजिए। जीवन का यही लक्ष्य है उसे प्राप्त कीजिए।

आपके अंतर्मन में स्थित ॐकार और मुझे जोड़ने वाला यह मंत्ररूपी पुल है। इसका उपयोग कीजिए। मुझे अपना बना लीजिए। आपके अंतर्मन में स्थित ॐकार को जागृत कीजिए। यह समय की आवश्यकता है।

इस मंत्र के कारण जीवन में चैतन्य की निर्मिती होती है। मैं आपको यथायोग्य मार्गदर्शन कर सकूँगा। जीवन में आने वाली मुश्किलों का सामना करने के लिए मानसिक शक्ति दी जा सकेगी वैसे ही इस महान मंत्र के जाप के कारण अध्यात्मिक पथ पर अग्रेसर होने वाली राह सीधी सरल एवं जल्द हो जाएगी, जीवन में शांति की प्राप्ति होकर आपका जीवन पथ सुकर हो जायेगा।

।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।

# ।। ॐ ।।

कृष्ण के अनुसार मैं भक्त किसे कहता हूँ, उनके प्रकार कैसे होते हैं, उनकी ओर से मेरी क्या अपेक्षाएँ हैं। यह कृष्ण ने ताई के माध्यम से लिख कर दिया वह इस प्रकार है:-

'अनन्य' भक्ति भाव के साथ जो मेरा भजन पूजन करता है उसका संपूर्ण भार मैं उठाता हूँ किंतु अनन्य शब्द का अर्थ अथांग है। ऊपर ऊपर से दिखने पर यह तीन अक्षरों का शब्द लेकिन इसमें त्रैलोक्य की शक्ति समायी हुई है। जीवन में आने वाली अनंत मुश्किलें हमें हमेशा सताती रहती हैं। ऐसे समय किसी के आधार की हमें आवश्यकता महसूस होती है। उस समय हमारी मानसिक स्थिति भावनाविह्वल हुई होती हैं और हम आकर रुकते है दैवयोग (किस्मत के संयोग से) के पास या देवता के पास। इन दोनों शब्दों में अत्याधिक साम्यता है। बुद्धिवादी लोग रुकते हैं दैवयोग के पास और श्रद्धावादी लोग रुकते हैं देवता के पास। वैसे देखा जाए तो कुल मिलाकर दोनों अज्ञात स्थान। इन दोनों शब्दों के अर्थ आज तक स्पष्ट रूप से किसी को ज्ञात नहीं हुए ऐसे यह शब्द है।

अब मेरे श्रद्धावान भक्तों के प्रकार देखते हैं प्रथम भाग में मेरे वह भक्त आते हैं, जो सिर्फ मुश्किलों की घड़ियों में परब्रह्म को पुकारते हैं। दूसरी भाग में वह भक्त होते हैं जो सदैव मेरा स्मरण करते हैं। अपने दैनंदिन कार्यकलाप करते हुए उसमें मग्न रहकर, मुझे न भूलते हुए, हमेशा मेरे स्मरण में रहने वाले और तीसरे भाग में वे भक्त होते है जो अपने दैनंदिन व्यवहार मेरी इच्छा से हो रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे ऐसा मन ही मन मान कर चलते हैं और पूर्ण श्रद्धाभाव मेरे ऊपर रखकर जीवन के व्यवहार करते हैं। ऊपर दिए गए शब्दों का अर्थ व्यक्तिश: प्रत्येक के बारे में कितने हिसाब से, कितना और कैसा लागू पड़ेगा और मैं किसी के लिए कितना बँध सकता हूँ। यह आप ही स्वयं निश्चित कीजिए। इन तीनों प्रकार में हम कहाँ आते हैं। यह हमें स्वयं निश्चित करना चाहिए अर्थात् किसके लिए मैं कितना दौड़ सकता हूँ। यह उसका उसे खुद पता चलेगा अर्थात् यह सब एक क्षण में घटित होगा, ऐसी अपेक्षा मत कीजिए। इन बातों पर यदि विचार किया जाए तो हमारे निर्देशन में आता है कि व्यवहार और मुझे सहजता के साथ जोड़ा जा सकता है।

जितना आकर्षण दूसरे को आपके बारे में लगता है, उतना ही आकर्षण आपको भी उसके बारे में लगता है क्योंकि सभी में मेरा ही अंश विद्यमान है।

इन तीनों प्रकार में हम हमारा वर्गीकरण कर सकते हैं क्या? मैं कोई आपसे अलग नहीं हूँ, आपके माध्यम से ही मैं विचरण करता हूँ इसलिए आपके अंतर्मन में स्थित आचार विचार मैं जान सकता हूँ लेकिन वह कब? यह तभी संभव हो सकेगा जब मैं आपके अंतर्मन में जागृत हूँ यह जागृति आपके अंदर आएगी। यह जागृति आने के लिए अपनी स्वयं के ऊपर श्रद्धा होनी चाहिए। अपनी अपने आप के ऊपर श्रद्धा मतलब क्या? यह भी बताता हूँ।

आप व्यवहारिक भाषा में बोलते समय कहते हैं, प्रत्येक कृति करते समय मन साक्षीदार होता है।लोगों को फँसाया जा सकता है, लेकिन मन को फँसाया नहीं जा सकता। अपने मन को साक्षीदार रखकर की गई कृति मतलब ही स्वयं के ऊपर रखी गई श्रद्धा। स्वयं के मन की ऊपर रखी गई श्रद्धा हमें मन:शांति देती है।आप अन्य कोई भी वस्तू खरेदी कर सकते हैं, लेकिन मन:शांति ही एक ऐसी बात है जो, जब तक आप अपने आप के ऊपर नितांत श्रद्धा नहीं रखते, तब तक आप उसे प्राप्त नहीं कर सकते। उसे प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए यह बताता हूँ।

आज तक मेरे जो भक्त हो चुके हैं, उनके अंतरंग का 'मैं' संपुष्ट हो चुका था। मैं, मेरा, मुझे यह सब भूलने का अत्यंत कठिन व्रत मेरे इन भक्तों ने अंगीकार किया था और उसका आजीवन पालन भी किया था। उनके प्रत्येक श्वास में गूँजती है मेरे नाम की गूँज, उनकी प्रत्येक कृति के द्वारा मेरा अस्तित्व साकार होता है, ऐसा वे मानते है और प्रत्येक क्षण क्षण में जो घटित हो रहा है वह मेरी इच्छा से हो रहा है ऐसा भी वे मानते हैं। अपने मन को इस प्रकार से तैयार करने के लिए अनेक प्रकार के सुखदु:ख झेलने पड़ते है, उठना गिरना पड़ता है। व्यावहारिक जीवन में मार्गक्रमण करतें समय अनेक प्रकार के धक्के मुक्के खाने पड़ते है। इस प्रक्रिया में बहुत वर्षों का समय बिताना पड़ता है। अनेक अच्छे बुरे अनुभवों की गठरियाँ बाँधनी पड़ती है। नाते रिश्तेदार दूर हो जाते हैं या फिर दूर करने पड़ते हैं। इसे ही हम व्यावहारिक भाषा में ऋणानुबंध ऐसे कहते हैं और यह सब मेरी इच्छा से घटित हो रहा है ऐसा एहसास कदम दर कदम बनाये रखना अत्यंत कठिन कार्य है। ऐसे समय मानव को मेरी मदद की अत्यंत आवश्यकता होती है। मानव अपना जीवनयापन तीन तत्वों के मिलाप से करता है। पहला है पीढ़ी दर पीढ़ी मिली हुई विरासत, दूसरा है पिछले जन्मों के अच्छे बुरे कर्म और तिसरा इस जन्म के उनके

अच्छे बुरे व्यवहार। इसमें हम पहले और दूसरे तत्वों के बारे में सिर्फ विश्वास कर सकते हैं और तीसरा तत्व मतलब वर्तमान काल। वह आईने के समान है। आईने में हम हँसता हुआ चेहरा देखेंगे तो हँसता हुआ दिखेगा और रोता हुआ चेहरा देखेंगे तो रोता हुआ ही दिखेगा। सारांश में कहें तो जैसा बोएँगे वैसा ही उगेगा यही तो न्याय होता है।

इसलिए मैं ऐसा कहना चाहूँगा कि मेरे ऊपर विश्वास रख कर यदि आप मार्गक्रमण करते हैं तब घटने वाली प्रत्येक घटना मेरी इच्छा से घट रही है, मैं हमेशा सत्य की ओर से खड़ा रहता हूँ और आपके द्वारा की गई प्रत्येक कृति का उचित फल, उचित समय पर आपको देता ही हूँ, ऐसा जब आपका विश्वास हो जाता है और आप उसके अनुरूप व्यवहार करने लगते हैं, तब मन:शांती आपसे दूर नहीं रहती। वैसा व्यवहार करना सीखिए यही आपकी जीवन भर की साधना है।

# || ॐ ||

भगवान श्रीकृष्ण ने सामुदायिक उपासना करने के हेतू से अनेक जगहों पर श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना की। उन केंद्रों के संबंध में कृष्ण के क्या विचार हैं वह हम देखते हैं।

प्राचीन समय में हमारे ऋषि-मुनियों ने घोर तपस्या की यज्ञ, याग, जप, तप करके दैवी स्पंदनो की निर्मिती की तथा समय समय पर आयी प्राकृतिक और सामाजिक आपदाओं का सामना किया लेकिन वर्तमान समय में इतनी तपश्चर्या, यज्ञ, याग, जप, तप करने के लिए किसी के पास वक्त नहीं है फिर यह कार्य साध्य करने के लिए क्या किया जाए? तो इस संदर्भ में भगवान श्रीकृष्ण का कहना है कि, सामुदायिक उपासना के द्वारा, आराधना करके यह बल, यह शक्ति आप निश्चित रूप से प्राप्त कर सकते हैं। ऐसी सामुदायिक उपासना किसकी, कहाँ और कितने समय तक करनी चाहिए? यह साध्य करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण ने योजना बनाई वह योजना है श्रीकृष्णलीलाकेन्द्र की स्थापना! केंद्र का कार्यक्रम, समय सब निश्चित कर दिया है।

भगवान श्रीकृष्ण बता रहे हैं, यह आधे घंटे की आराधना यदि आपने की तो उसका उपयोग आपके लिए, आपकी युवा पीढ़ी के लिए, आपकी आने वाली भावी पीढ़ी के लिए एवं विश्व कल्याण के लिए होने वाला है। यह एक प्रकार की तपश्चर्या ही है।

केंद्र के आधे घंटे के समय में मैं वहाँ जागृत रहता हूँ। आने वाले प्रत्येक भक्त के ऊपर से मेरी कृपा दृष्टी घूमती रहती है। नियमित रूप से और पूर्ण श्रद्धाभाव से आने वाले सभी भक्तों की संपूर्ण जिम्मेदारी मैं स्वीकारता हूँ और उन्हें मेरे कृपाछत्र के नीचे लेता हूँ।

इन केंद्रों के माध्यम से भक्ति और प्रेम की गंगा बहती रहेगी। अभी यह छोटे-छोटे दिखने वाले केंद्र भविष्य के मार्गदर्शक सिद्ध होंगे। वहाँ आने वाले सभी भक्तों के अंतर्मन में सच्चे आनंद और प्रेम की जागृति होकर, वे जीवन का सुगंध लूट सकेंगे।

केंद्रों से संबंधित कुछ नियम बताएँ। वे इस प्रकार है:

१) जिनके घर केंद्र शुरू होने वाला है वह केंद्र प्रमुख होंगे। उन्होंने सभी की सहूलियत से केंद्र का दिन एवं समय निश्चित करना।

२) केंद्र आधे घंटे का ही होगा।

प्रथम पन्द्रह मिनट 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप।

आगे के पाँच मिनट 'ॐ महान शक्ति देवताय नमः'

पाँच मिनट अनुभव कथन अथवा गीता पठन।

पाँच मिनट गजर अथवा भजन।

ऐसा यह आधे घंटे का कार्यक्रम।

३) यह एक उपासना है इसमें संपूर्ण एकाग्रता होनी चाहिए।

४) केंद्र में पूजा साहित्य, प्रसाद, सजावट ऐसा किसी भी प्रकार का कोई आडंबर नहीं होना चाहिए। अत्यंत सादगी के साथ संपूर्ण समर्पण भाव से केंद्र कीजिए।

५) जहाँ तक संभव हो सके प्रसाद एक ही होना चाहिए। सभी की ओर से अर्पण करके; केंद्र समाप्त होने पर प्रसाद सभी ने अपने अपने हाथ से लेना चाहिए।

६) केंद्र समाप्त होने पर वहाँ न रुकते हुए, इधर उधर की बातें न करते हुए, कृष्ण प्रेम का खजाना साथ लेकर तुरंत अपने अपने घर जाना चाहिए। इससे कृष्ण भक्ति का बीज उस परिवार में अंकुरित होगा।

७) नियमित रूप से केंद्र में आने वाले किसी भक्त को यदि केंद्र अपने घर करने की इच्छा है तो वैसी पूर्वसूचना देकर तीन बैठकों के लिए केंद्र स्थानांतरित किया जा सकता है लेकिन उस घर में केंद्र तीन सप्ताह होना आवश्यक है।

८) केंद्रप्रमुख को भगवान श्रीकृष्ण का फोटो एवं समई (पंचारती) दी जाएगी। उस फोटो के सामने समई लगाकर उपासना कीजिए।

९) किसी को भी केंद्र में आने के लिए बार-बार आग्रह मत कीजिए। केंद्र का वर्धापन दिन अत्यंत सादगीपूर्ण मनायें। सभी की ओर से सत्यनारायण का प्रसाद बनाइए।

१०) केंद्र में किसी भी प्रकार का निधि संकलन, व्यवसायिक लेनदेन, अन्य आर्थिक व्यवहार भी करना नहीं है। इस बारे में चर्चा भी नहीं की जानी चाहिए।

११) किसी को नया केंद्र शुरू करना है तो वे कृष्ण कुटीर में संपर्क करें। वहाँ से उन्हें केंद्र का फोटो, समई और केंद्र क्रमांक दिया जाएगा।

१२) अहमदाबाद में केंद्र स्थापना होने के पश्चात कुछ लोग प्रश्न पूछ कर अपनी शंकाओं का समाधान कर रहे थे। एक भक्त ने पूछा 'कृष्ण, आधे घंटे के केंद्र का कार्यक्रम समाप्त होने के पश्चात यदि हम सत्संग जैसा कुछ करते हैं तो चलेगा क्या? केंद्र की जानकारी देते समय आधे घंटे का केंद्र क्यों करना यह बार-बार बता कर भी यह प्रश्न पूछने पर कृष्ण ने स्पष्ट रूप से बताया "अरे, मैं वहाँ सिर्फ आधे घंटे ही उपस्थित हूँ। वह कालावधी समाप्त होते ही आप मेरे सहवास का आनंद, प्रेम भाव साथ लेकर अपने अपने घर जाइए और कृष्ण भक्ति का बीज अपने परिवार में अंकुरित कीजिए ऐसा मुझे लगता है।

केंद्र में आते समय आपके आने का उद्देश्य भगवान श्रीकृष्ण के प्रेम के लिए एकत्रित होना और श्रीकृष्ण भक्ति का प्रेम लूटते लूटते घर जाना यही होना चाहिए। ऐसा मुझे स्पष्ट रूप से बताना है। अब इसी में आप क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए वह समझ लीजिए।"

कुछ केंद्र खास युवा पीढ़ी के लिए शुरू किए गए हैं। वहाँ संदेश देते समय श्रीकृष्ण ने कहा "बच्चों, जीवन में मानव को कहीं ना कहीं थोड़ी राह देखनी पड़ती है और वह राह देखी, धीरज रखा तो आप अपना जीवन पूर्णतः यशस्वी बना सकते हैं। वह करने के लिए आपको मेरी आवश्यकता है। आज के युग में मैं आपको ईश्वर की भोली भाली भक्ति करो ऐसा नहीं बताऊँगा। आज सही मायने में आवश्यकता है कर्त्तव्यपूर्ति की। सभी ने अपने कर्त्तव्य योग्य तरह से पूर्ण किए तो उसे मैं मेरी सेवा ही समझता हूँ और उनके लिए मैं सदैव खड़ा रहूँगा ऐसा आपको वचन भी देता हूँ।

विद्याअध्ययन के समय में आपका कर्त्तव्य है अभ्यास करना। वह मन लगाकर कीजिए वही मेरी पूजा है ऐसा मैं मानता हूँ और दिन भर के कर्त्तव्य कर्म पूर्ण होने के पश्चात सोते समय पहले 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' यह मंत्र बोलिए और मुझे एक बार ही पुकारिए, 'कृष्ण, आओ'। यह मंत्र कितनी बार बोलना है यह मैं नहीं बताऊँगा लेकिन ऐसा करके आप मुझे अपना बना लीजिए। मेरी मदद प्राप्त कर

लीजिए। कृष्ण आपका और आप कृष्ण के, यह हमेशा ध्यान में रखिए।

गणपति पुले के अभिषेक होटल में कर्मचारियों के लिए श्रीकृष्णलीलाकेंद्र की स्थापना हुई। उस समय कृष्ण ने उन्हें कहा, "आपका मुख्य कर्त्तव्य है होटल में आने वाले लोगों को सेवा देना। वह करते समय किसी भी प्रकार की कोई कामचोरी मत करो इसलिए आप सिर्फ केंद्र का दिन निश्चित कीजिए, समय का बंधन आपके लिए नहीं है। उस निश्चित किए हुए दिन पर, जिस समय आप सभी के होटल से संबंधित कामकाज खत्म हो जाएँगे और आप सब एक साथ इकट्ठा हो सकेंगे उस समय केंद्र करेंगे तो भी चलेगा क्योंकि आपको आपका कर्त्तव्य पहले करना चाहिए जो कि जरूरी है वह पहले होना ही चाहिए। रात के साढ़े दस बजे के बाद भी आप सभी ने केंद्र का कार्यक्रम किया तो भी चलेगा।"

कृष्ण ने पूना के पास मांजरी गांव की नर्सरी में 'गुप्त केंद्र' की स्थापना की। वहाँ काम करने वाले सभी लोगों को संदेश देते समय उन्हें बताया "आपको आपके केंद्र में न दिन का, न समय का, न आधे घंटे का बंधन है। आपको जब सुविधा होगी उस समय आप जितना हो सके उतना 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप कीजिए। इसका मैं केंद्र में की गई उपासना के रूप में स्वीकार करूँगा।"

इन सब माध्यमों के जरिए कृष्ण जैसे यह साबित कर रहे थे कि अपने कर्त्तव्य कर्म ईमानदारी से, प्रेम से और शत प्रतिशत सही तरीके से करना ही उसकी सेवा है। ऐसी सेवा करते समय पूर्ण श्रद्धा भाव और विश्वास के साथ 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र से यदि हम उसे पुकारेंगे तो वह निश्चित रूप से प्रतिसाद देगा। वह तो भाव का भूखा है। उसका कृपाशीर्वाद सदैव आपको मिलता रहेगा।

केंद्र के लिए जो योगेश्वर का फोटो देते हैं उस फोटो का नाम श्रीकृष्ण ने 'प्रेरणा' बताया है। वह फोटो सिर्फ फोटो नहीं है उसके ऊपर प. पू. ताई के द्वारा दो तप की आराधना हुई है। दो तप की तपस्या उसमें समाहित है और उसके साथ संलग्न संदेश अर्थात् वह भगवान श्रीकृष्ण ने समय-समय पर ताई के माध्यम से जो नसीहतें हमें दी, जो मार्गदर्शन किया उसका सारांश है।

वह संदेश इस प्रकार है-

- मैं समय के अनुसार बदलता हूँ।
- वर्तमान समय में प्रेम की, अपनेपन की, भक्ति की, श्रद्धा की और कर्त्तव्यों की अत्यंत आवश्यकता है।
- कर्त्तव्य में मुझे देखिए, प्रेम से जीत लीजिए, श्रद्धा से अपना बना लीजिए, पूर्ण विश्वास से मेरे पास आइए।
- इन तत्वों का उपयोग किया तो ओंकार की जागृति होने में अत्याधिक मदद होगी।
- मेरी मदद के हाथ यदि आपको अपेक्षित हैं तो श्रद्धा एवं विश्वास को टूटने मत दीजिए।
- यदि आप मेरा कृपाशीर्वाद चाहते हैं तो कर्त्तव्य को मत भूलिए और कर्त्तव्य करते समय प्रेम से कीजिए अर्थात् इससे मेरा कृपाशीर्वाद आपको सदैव मिलता रहेगा।
- ऊपर दी गई सभी बातों में मैं हूँ इस बात का पूरा एहसास रखिए अर्थात् इससे आपको आपके अंतर्मन में स्थित ओंकार का एहसास होगा।

प. पू. ताई की द्वारका के
मंदिर में की गयी तुला

**स्व. बाबा एवं ताई**

सोमनाथ मंदिर में ध्यान करते हुए

ताई का जन्म स्थान, मंगेशी, गोवा

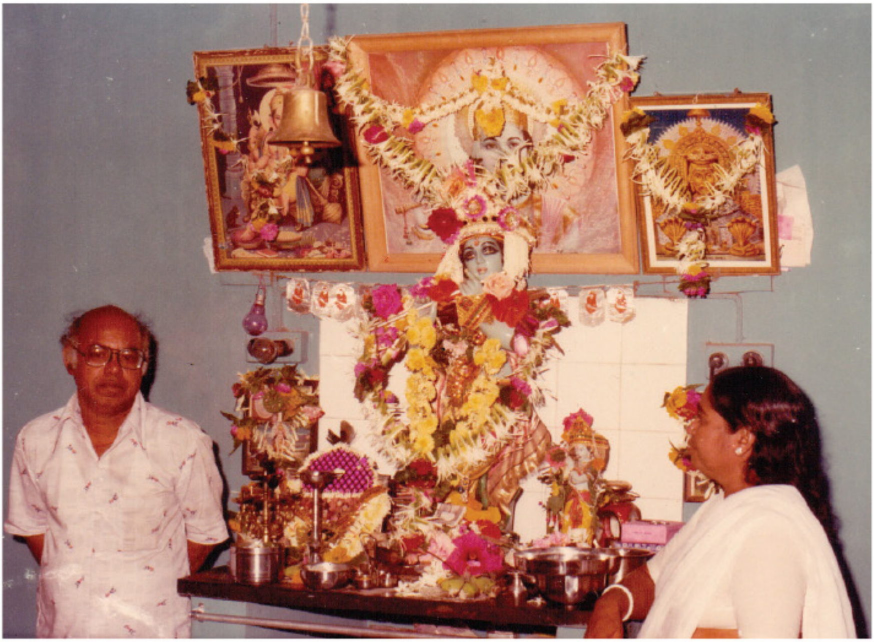
बाबा के साथ कृष्ण कुटीर में, बदलापूर

**एल.ए. विश्वजननी स्थापना के समय का अनुभव**

**।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।**

**।। ॐ महान शक्ति देवताय नमः ।।**

वर्ष २००२ में प. पू. ताई पाँचवी बार अमेरिका गई। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य विश्वजननी नवदुर्गा माता की मूर्ति स्थापना करना तथा कृष्ण भक्तों से मुलाकात करना ऐसा था। कृष्णाज्ञा के अनुसार प.पू. ताई ने न्यूयॉर्क के एक कृष्ण भक्त से विश्वजननी को सात सफेद रंग के फूल अर्पण करने के लिए १० डॉलर लिए। नियोजित किएनुसार मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का समारोह दिनांक ७ अक्टूबर को नवरात्रि के प्रथम दिन संपन्न हुआ। ताई ने देवी की आराधना करके कारनेशन के सात बड़े फूल उनमें से तीन फूल देवी के बाई ओर क्रमशः काँधेपर, कटीप्रदेश पर एवं चरणों के पास ऐसे तीन और वैसे ही तीन दाई ओर एवं एक फूल देवी के शीश पर अर्पण किया। पूज्य ताई नवरात्र होने के कारण प्रतिदिन देवी की पूजा, आराधना एवं ध्यान करने के लिए मंदिर जाती थी। नवरात्रि के तीसरे दिन अर्थात् ९ अक्टूबर को देवी की पूजा करते समय देवी के शीश का पुष्प ताई के हाथों पर गिरा एवं देवी जागृत हुई। विश्वजननी श्रीकृष्ण के साथ संवाद करने लगी........

"कृष्ण तुम बहुत दयालु हो और भक्तों के द्वारा किये गए अपराध को अत्यंत सहजता के साथ माफ करते हो। अब तुमने मुझे सभी भक्तों के कल्याणार्थ तथा आगे २००५ से आने वाली क्रांति से भक्तों के संरक्षण के लिए खड़ा किया है। मैं सभी का ध्यान रखूँगी लेकिन अपराधियों को बिल्कुल क्षमा नहीं करूँगी, उन्हें सजा जरूर करूँगी। नहीं तो उन्हें उनकी गलती कभी समझ में नहीं आयेगी और वह कभी सुधरेंगे ही नहीं।"

प. पू. ताई ने वह फूल मंदिर में उपस्थित सभी भक्तों को दिखाया तथा विश्वजननी एवं श्रीकृष्ण के बीच हुआ संवाद कथित किया। उस क्षण के अविस्मरणीय अनुभव की याद में ताई का हाथ में फूल लिया हुआ फोटो निकाला गया ।

श्री विश्वजननी की स्थापना के समय (एल ए ) प.पू. ताई।

सोमनाथ मंदीर में प.पू ताई आशीर्वाद मुद्रा में

शिवस्वरूप प.पू. ताई

प.पू. ताई

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुःगुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरूः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

विश्वशांती कलश, केरल

श्री द्वारकाधीश मंदिर में प.पू.ताई की तुला की गई |

धुलीखेल (नेपाल यात्रा) में प.पू.ताई कृष्ण भक्तों को अपनी अंजली से पसाय प्रदान करते हुए।

भारत के राजस्थान बॉर्डर से लगा हुआ जैसलमेर, किशनगढ़ एवं आखिरी का गाँव तनौद उसके आगे फेंसिंग है। सन २००२ की ध्यान यात्रा में प. पू. ताई ने कृष्णाज्ञा से तनौद के देवी मंदिर में ध्यान किया। यह देवी यहाँ की रक्षणकर्ता कहलाई जाती है। सन् १९७१ के युद्ध में यहाँ अनेकों बार बम गिरे, गोलियाँ चली; लेकिन मंदिर को किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई। कृष्ण ने वहाँ आकर ध्यान करने पर देवी अत्यंत प्रसन्न हुई। उस समय कृष्ण एवं देवी के बीच जो संवाद हुआ उस प्रसंग के स्मर्णार्थ देवी ने कृष्ण से अर्थात् ताई के गले का स्कार्फ माँग लिया। प.पू. ताई इस मंदिर में देवी के साथ।

# संदर्भसूची

१. श्रीकृष्णलीलावली : संपादक: श्रीमती वसुंधरा पटवर्धन

२. श्रीकृष्ण उवाच : संपादक: श्री एवं श्रीमती सविता दिनेश तोनसे

३. परब्रम्हाची दीपशिखा : लेखिका: श्रीमती रत्नप्रभा कर्वे

४. गुरुमाँ : लेखक: श्री दिलीप गायतोंडे

५. प. पू. ताई से संबंधित व्हीडियो और ऑडियो टेप्स

६. जीवन गंगा (हिंदी) से लिए गए कुछ छायाचित्र

## YouTube के व्हीडियो और ऑडियो लिंक्स

1. Leelatai Karve Shrikrishnavani part 1 to part 4
2. Leelatai Karve documentary.
3. Krishna ani Gita -Marathi lecture.
4. Krishna Leela Center Establishment at Pune.
5. Leelatai Karve speech - Vishwajanani installation.
6. Vishwakarya in Kerala.
7. Krishnaleela  Prakashan.
8. P.P. Leelatai Marathi discourse.
9. Leelatai Karve audio clips by Neelima Joshi

प. पू. ताई ने समय-समय पर मानस पूजा का महत्व बताया है। सातारा के तत्वज्ञ संत डॉ. सुहास पेठे द्वारा रचित मानस पूजा यहाँ साधकों के लिए दी जा रही है।

## श्री सद्गुरू की मानसपूजा

**प.पू. डॉ. सुहास पेठे**

**यह सद्गुरू की अलग मानस पूजा है। वह किसी एक विशिष्ट गुरु के प्रति ही लागू नहीं होती है। मानवीय जीवन में सद्गुरु का अपरंपार महत्व होता है इस बात का जिसे एहसास होता है, जिनके हृदय में सद्गुरु के प्रति कृतज्ञता है, और उस कृतज्ञता के एहसास को हम प्राणों से भी ज्यादा जतन करके रखें ऐसा जिसे लगता है उन्हें यह मानस पूजा निश्चित रूप से उपयोगी हो सकती है।**

नमन श्री गजवदना यावे मम हृदयसदना
माझिया मानसपूजना निर्विघ्न करावे गणराया ।।१।।
जगी उगवता दिनकर सकळांसी वाटे आधार
तैसा आपुला वरदकर असता धीर वाटतसे ।।२।।
माझिया पूजेचे प्रयोजन सद्गुरूंचे व्हावे स्मरण
कृपेचे घडों चिंतन अखंड टिको अनुसंधान ।।३।।
जीवपणी जन्मासी आलो मी माझे करिता रमलो
आनंदाचे निजघर विसरलो कधी कैचे कळेना ।।४।।
म्हणून दुःखी जाहलो चिंता नैराश्ये ग्रासलो
अज्ञानअंधारी बुडालो बेसावध होऊनी ।।५।।
तेव्हा श्री सद्गुरूरायासी कळवळा उपजला मानसी
जागवुनी विचारी मजसी वाया का भ्रमसी ।।६।।
जागे होता जाते स्वप्न क्षणी पाहता नष्ट होऊन
दुःख चिंता अज्ञान नाहीसे केले झडकरी ।।७।।

आभाळाएवढे उपकार सद्गुरूंचे निरंतर
देवचि झाले साकार दीनजीवा उद्धरावया ।।८।।
त्या सद्गुरूंचे टिकविण्या स्मरण मांडिले हे मानस पूजन
सुलभ सोपे साधन उपाधिविरहित ।।९।।
बाह्य पूजेचे नाना विधी अनंत बंधने देहादि
मानसपूजेने उपाधी अवघीची निरसिली ।।१०।।
म्हणोनी मानस पूजेचा संकल्प तळमळीचे घेऊनी उदक
सर्वभाव करुनी एक आर्ततेने सोडिला ।।११।।
गुरूंच्या गुरुवरा श्री दत्तगुरु धाडून द्यावे आमुचे सद्गुरु
सप्रेम स्वीकारावया उपचारू या मानसपूजेचे ।।१२।।
कृतज्ञतेचा सडा घालूनी आदराच्या पायघड्या पसरुनी
उत्सुकतेचा चौघडा लावुनी प्रतीक्षा मी करीतसे ।।१३।।
संकल्पविकल्पांची दारे उघडिली मिया निर्धारे
भगवदिच्छेचे वारे हृदयमंदिरी खेळतसे ।।१४।।
यावे यावे श्री गुरुराया प्रवेशुनी हृदयी माझीया
अतर्क्य तुमची किमया साकार झाला गुरुपदाची ।।१५।।
निष्ठेचे ठेविले सिंहासन वरी आज्ञापालनाचे आसन
आनंदे बैसावे आपण मानसपूजन स्वीकारावया ।।१६।।
कृपा स्मरणाचे जळ चरण प्रक्षाळण्या कोमळ
देहभावाचा अर्घ्य निर्मळ विनीत भावे अर्पीतसे ।।१७।।
सत्कर्माचे पंचामृतस्नान घालावया अधीर मन
कर्मकृष्णार्पणाचे शुद्धोदक स्नान पूर्णोपचार व्हावया ।।१८।।
विमलवाणीचे चंदन श्वासनि:श्वासाचे वस्त्र अर्पून
सद्भावांची पुष्पे वेचून सादर करितो गुरुराया ।।१९।।
मीपणाचे धूपखडे वेचिले वैराग्यनिखारी घातले
तुमचेपणाचे सुगंध दरवळले गाभारी मनाच्या गुरुराया ।।२०।।

अनुसंधानाची निरांजने चेतविली अनुग्रहज्योतीने<br>
सदा तेवती आर्ततेने प्रसन्न गुरुमुख पाहावया ।।२१।।<br>
नामनैवेद्य वाढीला प्रेमपाण्याने अर्पिला<br>
लोभ भिजवूनी ठेविला दक्षिणा म्हणोनी गुरुराया ।।२२।।<br>
क्षमायाचनेची अक्षता न्युनाधिकाची करो पूर्तता<br>
मम हृदयी विश्रांती आता सदैव घ्यावी गुरुराया ।।२३।।<br>
जे जे आदरे कल्पिले उपचारी मने अर्पिले<br>
मम जीवनी उतरो तेतुले कृपाप्रसादे गुरुराया ।।२४।।<br>
तुमचिया कृपे लाभला दिवस सद्गुरूपूजा घडली खास<br>
दीनभक्ताचा मानस मानसी परिपूर्ण जाहला ।।२५।।

**।। सद्गुरु नाथ महाराज की जय ।।**

नीचे दी गई मानसपूजा प. पू. काकाजी ने कृष्ण भक्तों के लिए विशेष रूप से लिखकर भेजी है इस रुप में उन्होंने उनके आशीर्वाद ही भेजे हुए है।

**ताई सद्गुरु कृष्णरूप बनूनी, बदलापूरी राहती ।**

**आम्ही दूर जरी सदैव स्मरतो,**

**त्यांच्या पवित्र स्मृती ।।**

**आलो मानसपूजनास करण्या, भूमीसही वंदना ।**

**स्मरणी राहून बोध नित्य जगूदे,**

**कृष्णास ही प्रार्थना ।**

**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।**

**ॐ महान शक्ती देवताय नमः ।**

## ।। नित्य उपासना ।।

अपने प्रत्येक दिन का शुभारंभ 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र' से कीजिए। प्रतिदिन ग्यारह अखंड कच्चे चावल के दाने प्रसाद के रूप में अर्पण कीजिए और वह वैसे ही दूसरे दिन ग्रहण कीजिए। प्रतिदिन सात अलग-अलग रंग के फूल भगवान श्रीकृष्ण को अर्पण कीजिए।

आर्थिक एवं प्रापंचिक विवंचना के समय प्रतिदिन दो नीले फूल अर्पण कीजिए। उसकी शुरुवात सोमवार से कीजिए, विवंचना दूर होने पर नीले फूल शनिवार तक अर्पण कीजिए और बाद में नीले फूल अर्पण करना बंद कीजिए।

फूल अर्पण करते समय एवं अभिषेक करते समय 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का उच्चारण कीजिए। इसी तरह रात में सोने से पहले भी इसी मंत्र से कृष्ण को पुकारिए ।

## ।। सप्ताह की आराधना ।।

**सोमवार :** दोपहर १२.०० के अंदर शिवलिंग पर जल से अभिषेक करना (व्यक्तिगत)। दोपहर तीन से छ: के बीच जितनी हो सकी उतनी गीता सात श्लोकी गीतामहात्म्य के साथ पढना।

**मंगलवार :** दोपहर तीन से चार के बीच 'ॐ महान शक्ति देवता नमः' मंत्र कम से कम ग्यारह बार बोलना।

**बुधवार :** 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करना।

**गुरुवार :** 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करना।

**शुक्रवार :** शाम ७:०० से ८:०० के बीच या रात ९:०० से १०:०० के बीच 'लक्ष्मी देवी महामाये देही में अनुग्रहम् तथा च संपत्तिधनं आयुरारोग्यमसंपदाम्' मंत्र ग्यारह बार बोलकर अपनी कुलस्वामिनी व कृष्ण को दूध शक्कर का भोग दिखाना। कुलस्वामिनी को भोग दिखाते समय योगेश्वर के बताएनुसार यह भोग दिखा रही हूँ, सदैव तुम्हारी कृपा बनी रहने दो ऐसे बताना। यह आराधना शाम ८:०० से ९:०० के बीच नहीं करना।

**शनिवार :** दोपहर २:०० बजे तक 'ॐ महान शक्ति देवताय  नमः' एवं 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप कम से कम ११ बार करना।

**रविवार :** 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करना।

जब जब आपको श्रीकृष्ण को भोग दिखाना हो तब दही चावल का भोग दिखाइए।

## ।। बदलापूर में मनाये जाने वाले वार्षिक उत्सव ।।

दर्शन के लिए कृष्ण कुटीर में आते समय सभी भक्त कृपया हार, फूल, फल, प्रसाद या अन्य किसी प्रकार की कोई वस्तु मत लाइए।

भक्तिभाव के साथ आकर योगेश्वर के दर्शन कीजिए और विश्वजननी का आशीर्वाद प्राप्त कीजिए।

१. १० फरवरी - प .पू . ताई की पुण्यतिथि

२. महाशिवरात्रि - दोपहर १२ बजे तक अभिषेक

३. २९ मई - प. पू. ताई की जयंती

४. गुरुपूर्णिमा - अभिषेक आदि

५. गोकुलाष्टमी - कृष्ण जन्म

६. गोकुलाष्टमी - गोपालकाला (दूसरा दिन)

७. ७ नवंबर - विश्वजननी बदलापूर वर्धापन दिन

इन सभी दिनों पर मंदिर में प्रातः काल से अभिषेक, नामजप, आरती एवं प्रसाद रहता है। साथ ही साथ रोज शाम को ७:०० बजे छोटे बच्चों के लिए संस्कार केंद्र भी होता है।

**मंदिर का पता  -**

कृष्ण कुटीर, बदलापूर पश्चिम, जाधव कॉलोनी, बदलापूर,  जिला ठाणे

समय: सुबह १०:०० से १२:००, शाम : ६:०० से ८:००

पूरे विश्व में अशांति का साम्राज्य फैला हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने अहम्, धर्म, पंथ में अटका हुआ है। इंसान इंसान के बीच बैर की भावना, स्पर्धा, मत्सर का भाव बढ़ता जा रहा है। ऐसी मुश्किल भरी घड़ियों में ताई का कार्य पूरे विश्व में स्नेह की भावना का निर्माण करना है। जात पात, छूत अछूत की सीमाओं से मानव जाति को उबारना तथा मानवता धर्म की पताका को लहराना है। कृष्ण मतलब ही आकर्षित करने वाला। अपने भक्तों को स्वयं के अंदर समाहित करने वाले कृष्ण की भक्ति के महात्म्य को जन जन के मानसपटल में अंकुरित करने का कार्य ताई को करना है। अध्यात्म शक्ति की आधारशिला ही जनजागृति, अपनापन, सर्वांभूति स्नेहभाव, एकात्मता है और इसे जन जन के मन मंदिर में अंकित करने का कार्य अर्थात् ही कृष्ण कार्य है।

ईश्वर है या नहीं, वह प्राप्त होगा या नहीं, व्रत वैकल्य किए बगैर वह मिलेगा या नहीं ऐसे संभ्रम जिनके सामने कभी आए ही नहीं और सबसे महत्वपूर्ण तो यह है कि कृष्ण भेंट से संबंधित आशंकाएँ भी जिनके मन में कभी झांक न सकी ऐसी महान हम सबकी गुरु माँ प. पू. लीला ताई कर्वे हैं। उनकी अनन्य भक्ति और कृष्ण प्रेम की ही यह कहानी है।